# एक आम जिज्ञासा !!!

- जिन्होंने श्रमण संस्कृति को नई ऊँचाईयाँ दी, नई पहचान दी।
- जिन्होंने आगमोक्त चर्या का पालन कर भगवान महावीर/आचार्य कुन्दकुन्द का स्मरण दिलाया।
- जिन्होंने भारतीय अहिंसक संस्कृति का पुनरुत्थान किया।
- जिन्होंने ७५ गौशालाओं की स्थापना का आशीर्वाद देकर, एक लाख से अधिक गौवंश की रक्षा कराई।
- जिन्होंने बालिकाओं की सुरक्षित शिक्षा हेतु प्राचीन-आधुनिक गुरुकुल ज्ञानोदय विद्यापीठ, आवासीय पाँच प्रतिभास्थली की स्थापना कराई।
- जिन्होंने गरीबी उन्मूलन, बेरोजगारों को रोजगार, अहिंसक लोगों को स्वास्थ्यकारी अहिंसक वस्त्रों का उत्पादन एवं उपयोग हेतु हथकरघा का उपदेश दिया।
- जिन्होंने गौपालन कर शुद्ध दूध-घी-छाछ पाकर स्वस्थ शरीर से धर्म ध्यान करने का संदेश दिया।
- जिन्होंने भारतीय संस्कृति की आधारशिला आयुर्वेदिक चिकित्सा को वृद्धिंगत करते हुए पूर्णायु महाविद्यालय एवं शोध संस्थान की स्थापना कराई।
- जिन्होंने गरीबों की चिकित्सकीय सेवा हेतु भाग्योदय तीर्थ की स्थापना कराई।
- जिन्होंने इण्डिया नहीं भारत बोलो, भारत लिखो, भारत को भारत ही रहने दो, का अभियान चलाया।
- जिन्होंने भारतीय शिक्षा, भारतीय भाषा में हो तभी देश का विकास संभव है का शंखनाद किया।
- जिन्होंने भारतीय न्याय का निर्णय भारतीय भाषा में हो का विचार प्रदान किया।
- जिन्होंने उच्च शिक्षित युवाओं को देश की सेवा के लिए प्रेरित किया।
- जिन्होंने हजारों उच्च शिक्षित युवा, युवतियों को श्रमण संस्कृति में दीक्षित-शिक्षित किया।
- जिन्होंने श्रमण जिन आस्था के अनेकों मजबूत स्मारक स्थापित कराये।
- जिनके दर्शनार्थियों की कतार में राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, केन्द्रीयमन्त्री, मुख्यमन्त्री, राज्यपाल, राज्यमन्त्री, न्यायाधीश, कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक आदि समाज सेवी, मानव सेवी, गौसेवी, पर्यावरण सेवी, साहित्य सेवी, वैज्ञानिक, विद्वान्, राजनेता आदि के साथ-साथ आम जनता की बहुसंख्या होती है, वे सभी अपने मनोनुकूल पाकर आनंद से भरकर जाते हैं।
- ऐसे युगान्तरकारी, अहिंसा क्रांति के अग्रदूत युग महापुरुष जन-जन के हृदय सम्राट परमपूज्य श्रद्धेय आचार्य श्री विद्यासागरजी गुरु महाराज हम सबके बीच से कैसे प्रयाण कर गए? क्या उनकी पूर्व से तैयारी थी ? तैयारी का क्या कारण रहा ? अंतिम प्रण पथ पर प्रयाण कैसे किया? क्या गुरुदेव ने कोई घोषणा की थी ? यदि घोषणा की थी तो जग जाहिर क्यों नहीं की ? आदि जिज्ञासाओं के समाधान के लिए खोज-पड़ताल करती लेखनी...
  और अपेक्षा करती है गुरु भक्त श्रद्धालुओं से कि-
  मुझे पूरा पढ़कर गुरु आस्था के सहारे जिन पथ पे आगे बढ़ते जायेंगे,
  लो समर्पित करती गुरु सी –

**''लोकोत्तर महापुरुष की महायात्रा''** यह कृति।

# काल की महाधारा के मध्य मृत्युञ्जयी महापुरुषार्थ

आत्मानुशासन में सचेत और आगमोक्त चर्या में केन्द्रित एवं तीन परमेष्ठियों को जीवन्त प्रकट करने वाले आचार्य गुरुदेव का जीवन एक खुली किताब की तरह पूर्ण दिगम्बर रहा। जो चाहे जहाँ से भी पढ़े उसे काल के भाल पर अंकित पूज्य आदर्श चरण के दर्शन होंगे।

ज्ञानात्मक वृत्ति अन्तर्मुख स्वभावी गुरुदेव ने महासमाधि में लीन होने के लिए मृत्युञ्जयी महातपस्या का विचार सन् २०१४ में बना लिया था। उनका विचार ऐसे प्रकट हुआ कि सन् २०१४ में चातुर्मास स्थापना से पूर्व मेरा स्वास्थ्य खराब हुआ और बहुत कमजोरी महसूस हो रही थी। उसी समय ब्र. संजय भैया आये हुए थे, आचार्यश्री के पास जा रहे थे तो हमने कहा आचार्यश्री को मेरी ओर से निवेदन करें, मेरा स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है कमजोरी बहुत अधिक है, बैठने पर भी थकान आती है, कृपया कृपाकर मुझे अपनी शरण प्रदान करें और भगवती आराधना का स्वाध्याय आपने अभी किया ही है, उसका प्रेक्टिकल मेरे ऊपर करें, मुझे सल्लेखना व्रत देकर मेरी समाधि करा दें। तब आचार्यश्री जी ने सुनकर कहा–सभी को अपनी चिन्ता है, हमारी किसी को नहीं। अब हम अपना विचार कर रहे हैं, बहुत समय दे दिया गणपोषण काल को। सुनो! धैर्यसागरजी को कह देना, जिस दिन दीक्षा होती है साधु की सल्लेखना उसी दिन से प्रारम्भ हो जाती है। कषायों को जीतना वो प्रारम्भ कर देता है। विकल्प न करें, सब ठीक हो जाएगा।

कुछ दिन बाद पता चला कि आचार्यश्री जी ने अपने विचारों को क्रियान्विति प्रदान कर दी। सन् २०१४ चातुर्मास विदिशा में अपने संघस्थ सबसे बड़े शिष्य मुनि श्री समयसागरजी के पास मुनि श्री संभवसागरजी के हाथ से प्रायश्चित ग्रन्थ पहुँचाये और संदेश दिया–"आपको इन प्रायश्चित ग्रन्थों का अध्ययन करना है", तब मुनि श्री समयसागरजी ने लेने से मना कर दिया। इस प्रसंग से यह स्पष्ट होता है कि आचार्यश्री जी संघ के दायित्व से निवृत्त होने के लिए संघस्थ ज्येष्ठ श्रेष्ठ मुनि को योग्य समझकर उन्हें आचार्य पद हेतु तैयार कर उचित समय पर पद पर प्रतिष्ठित करना चाह रहे थे, किन्तु मुनि श्री समयसागरजी की निस्पृहता देखकर शास्ता के अनुसार कर्तव्य के अहंकार से दूर गुरुवर ने समता की मुस्कान से समय के संदेश को पहचाना कि "समय से पहले कुछ नहीं होता, सब समय पर हो जाएगा" इसे स्वीकार कर शून्य में समय के परिणमन को निहारने लगे, कभी न कभी यह प्रभात भी होगी...।

सदा अप्रमत्त, पूर्ण सावधान, धैर्य के सागर गुरुवर ने पूर्वबद्ध असाता वेदनीय कर्म के तीव्रोदय से आयु कर्म की उदीरणा और उससे आती शारीरिक शिथिलता को बड़ी सूक्ष्मता से पहचान लिया। सन् २०१७ चातुर्मास रामटेक में समापन से एक दिन पूर्व कार्तिक वदी त्रयोदशी को आकस्मिक शारीरिक बाधा उत्पन्न हुई। तब गुरुवर पूर्णतः सचेत हो गए। तब संघस्थ साधुओं ने विचार किया कि गुरुवर की अत्यधिक अस्वस्थता है, यदि अपन लोग कल चतुर्दशी का उपवास आचार्यश्री से मांगेगे तो वो भी उपवास का संकल्प करेंगे। ऐसे में कुछ हो गया तो...इसलिए सभी ने आचार्यश्री जी से आत्म निवेदन किया कि गुरुदेव! निष्ठापन का उपवास एक दिन बाद कर लेंगे, ऐसी विनती हम सभी की है। यह सुनकर पूर्ण प्रचेतस गुरुदेव संघ के निवेदन पर ध्यान न देते हुए अपनी स्थिति को भाँपकर, कल तक क्या हो जाए, पता नहीं और थोड़ी देर बाद बोले–"कल हमारा उपवास रहेगा, आप लोग अपना देख लो।" निष्ठापन का उपवास करके उस दिन दोपहर में ढाई घण्टे एक आसन से बैठकर एकाग्रचित्त हो बिना हिले-डुले प्रतिक्रमण किया। बीच-बीच में संघस्थ साधुओं ने आसन बदलने को कहा, तो बिना कोई संकेत दिए अपने आप में लीन हो प्रतिक्रमण

करते रहे। जैसे औत्तमार्थिक प्रतिक्रमण कर रहे हों। प्रतिक्रमण के बाद आसन खोला हल्की मुस्कान के साथ बोले–''पता नहीं यह कौन–सा पेपर है? किन्तु पेपर पूर्ण तैयारी के साथ अच्छे से देना होता है। परिणाम की चिन्ता नहीं, जो हो सो हो। हाँ! पेपर अच्छा गया है तो परिणाम भी अच्छा ही होता है।''

उपरोक्त अनुभव से पास आते यमराज के पदचापों की झंकार को सुन इदम् से तत्, सान्त से अनन्त के संवादी रूप से सहजोत्पन्न सम्यग्ज्ञानानुभवक गुरुवर चेतना के अनोखे उल्लास में उन्मेषित हो शाश्वत स्वाधीनता के लिए आन्दोलित हो उठे।

जब मौन मुखर होता है तो सृष्टि का स्रोत और उसकी सर्व अभिव्यक्तियाँ एवं तमाम आयाम स्वतः ही प्रकट होते चले जाते हैं, हुआ भी यही आचार्य भगवन् २०१४ से चार वर्ष तक आगम के आधार से अपने संघ–संचालन के दायित्वों से निवृत्त होने के लिए आगम–सूत्रों, गाथाओं, श्लोकों, व्याख्याओं में खोजते रहे, अकस्मात् ललितपुर पञ्चकल्याणक उपस्थित हो गया, तब तपकल्याणक के दिन २८.११.२०१८ को ज्येष्ठ श्रेष्ठ मुनि श्री समयसागरजी को निर्यापक मुनि घोषित किया और अपने उपदेश में उन्होंने सांस्कृतिक सन्देश को स्पष्ट किया–

ज्येष्ठ श्रेष्ठ मुनि श्री समयसागरजी को निर्यापक मुनि घोषित करते हुए आचार्यश्री

आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने प्रवचनसार में स्पष्ट लिखा है–अच्छे–अच्छे लोगों की दृष्टि नहीं जाती है किन्तु उसका उल्लेख अपने आप में गरिमा पूर्ण है। क्या लिखा है आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने? सुनो, परम्पराओं को निर्मल और अक्षुण्ण बनाने के लिए यह अनिवार्य तत्त्व है। आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने संक्षिप्त किन्तु बहुत गरिमामय शब्दों के साथ उसका उल्लेख किया है। वो लिखते हैं–''जिन्हें अपने जीवन काल में स्वयं का निर्वाह करते–करते और इस पवित्र धर्म का पालन करते–करते बरसों हो जाते हैं, तब कहीं जाकर के उनको परम्परा जो गुरुओं की है, वह आचार्य पद पर स्थापित कर देती है और तब से संघ का निर्माण जो हुआ है, उसका निर्वाह होता और वो आचार का क्या रहस्य है ? इसको समझाते हुए चलते हैं किन्तु संघ में जब अनुभवी साधुओं का भी समूह तैयार होता है तो जो दीक्षित करते हैं, वे आचार्य कहलाते हैं और इसके उपरान्त जो नए–नए दीक्षित होते हैं, उनके निर्वाह के लिए निर्यापक होते हैं, उन्हें आचार्य तो नहीं लिखा लेकिन निर्यापक श्रमण का रूप दिया है उन्होंने।''

निर्यापक का अर्थ है–जिनको निर्यापक श्रमण बनाया जाता है वो जैसे आचार्य महाराज कहते हैं, उसके अनुसार वह करते हैं। हम यह नया प्रयोग नहीं कर रहे हैं शास्त्रोक्त पद्धति से है। (समयसागरजी की तरफ इशारा करते हुए) महाराज लोग बहुत विलम्ब कर रहे थे तो हमें भी ज्यादा आग्रह करना अच्छा नहीं समझ में आया, समय पर सब हो जाएगा। वह ललितपुर में योग था और आज आप लोगों के सामने हुआ है, ये जितने भी नए श्रमण बने हैं। इनके लिए प्रशिक्षण देने का श्रेय जाता है समयसागरजी निर्यापक को। वहाँ पर दीक्षा देने वाले आचार्य महोदय होते हैं और उनके अनुसार जो दीक्षित होते हैं और चूँकि व्यवस्था नई–नई देनी पड़ती है। जैसे सब समूह के साथ सही नहीं हो पाता है। घर

में पंगत बैठ जाए लेकिन बच्चों को वहाँ इस ढंग से भोजन नहीं कराया जाता है। घर वाले समझते हैं, इनको किस प्रकार भोजन कराना है। बहुत ही चिंता के साथ, बहुत मृदुता के साथ, किसी भी प्रकार से घुट्टी पिलाई जाती है। ऐसा ही यहाँ एक उपक्रम समयसागरजी के माध्यम से चलाना प्रारम्भ किया है। आगे भी इसी प्रकार का निर्वाह होगा। संघ को भी इसका बहुत लाभ मिलेगा और सभी प्रकार से सब लोग आज्ञाकारी बने रहेंगे क्योंकि यह हमारी व्यवस्था नहीं है। आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने परम्परा से महावीर भगवान से प्राप्त जो भी मिला उनको निभाया। एक बहुत मुख्य बात कहना चाहता हूँ कि यह तो श्रमणों की व्यवस्था के लिए उन्होंने किया है किन्तु मूलाचार में एक वह भी व्यवस्था है, कुन्दकुन्द ने भी उसको स्वीकारा है। प्रकारान्तर से तो फिर संघ में एक प्रकार से दीक्षित करके आर्यिका वगैरह जो रहते हैं, उनकी कैसी व्यवस्था होगी इसके लिए मूलाचार में स्पष्ट लिखा है–आर्यिकाओं के निर्वाह के लिए दीक्षा देना, शिक्षा देना, प्रायश्चित देना आदि जो कुछ भी जिम्मेदारी के कार्य हैं, वे सारे के सारे उनकी 'अज्जाणाम् गणधरो होदि' ऐसे शब्दों के माध्यम से घोषणा हुई है। आर्यिकाओं का गणधर कोई होगा तो अलग विशेष रूप से उसका व्यक्तित्व रहेगा। मूलाचार में इसका स्पष्टीकरण होता है। यदि मान लो इसमें जल्दी में और कुछ गड़बड़ हो जाता है तो उसके लिए प्रायश्चित इत्यादिक का भी विधान किया है क्योंकि हर व्यक्ति एक प्रकार से आर्यिकाओं को संभाल नहीं सकता है। उसके लिए विशेष रूप से योग्यता की आवश्यकता है। ऐसा कह करके वहाँ बालाचार्य, एलाचार्य और निर्यापक आदि गणधराचार्य, प्रवर्तकाचार्य आदि करते हुए अलग व्यवस्थित किया है। आर्यिकाओं को सम्भालने वाले का अलग रूप से व्यक्तित्व रहता है। उसके लिए दो–तीन गाथाओं को दे करके उनके पास कैसे गुण होना चाहिए आदि–आदि का उल्लेख किया है। मूलाचार को पढ़ने से ऐसा लगता है कि हम लोग इससे बहुत अनभिज्ञ हैं। संक्षिप्त में कहना चाहूँगा यह परम्परा तभी सुरक्षित रह सकती है जिसके पास योग्यता है, वही यह कार्य करें ताकि यह निर्मल परम्परागत अहिंसा धर्म, श्रमण धर्म, आत्मोद्धारक धर्म हम लोगों को लाभान्वित हो सके। संक्षिप्त में कहता हूँ कि आवश्यकता के अनुसार निर्यापकों की संख्या बढ़ाई भी जा सकती है। योग्यता के अनुसार यह कार्यक्रम हो। वह शेष संघ के सामने भी हमने प्राय: करके सभी लोगों के सामने रखा है। कौन चाहता है जिम्मेदारी लेना लेकिन लेना तो पड़ेगी, तो समयसागरजी को बहुत आग्रह करना पड़ा है। ४० साल होने के बाद 'हओ' (हाँ) कहा है। बच्चों को तैयार करना बहुत कठिन होता है। आप लोगों को देखकर हमें कुछ समझ में आ गया। गुरुजी ने कहा था ज्यादा बाध्य नहीं करना लेकिन बीच–बीच में वह चीज सामने रखो, एक आध बार 'हओ' (हाँ) हो जाएगा। ज्यादा नहीं कहा था और यहाँ पर इस ओर आ जाओ, कहाँ किस ओर आ जाऊँ, मैं जा रहा हूँ, उस ओर आ जाओ पीछे–पीछे। योग से इनका सतना में ही चातुर्मास हुआ। खजुराहो में अपना हुआ और हमारा दूज के दिन ही वहाँ से विहार हुआ, दूज के दिन ही मध्याह्न में इनका विहार हुआ। चार दिन हम पहले आए, पाँचवे दिन ये भी आ गए, कल आए हैं, आते ही यहाँ पर इन लोगों का उपवास लेने का उपक्रम हुआ और बताया कि ऐसे तैयारी हुई है। मुहूर्त निकला है। वैसे भगवान का पञ्चकल्याणक हो रहा है। ज्यादा पब्लिसिटी भी नहीं की लेकिन फिर भी यहाँ पर रिकॉर्ड सब ब्रेक होता जा रहा है। शेष महाराजों को भी यह अवगत पहले से ही कराया है। आर्यिका संघ के सामने इस ढंग से भले ही नहीं रखा लेकिन फिर भी यह व्यवस्था है। हम लोगों को इसके बारे में भी सोचना है। अब वह प्रश्न आएगा पत्रिका में हमें लिखना पड़ेगा तो उत्तर तो मिलने ही थे। इसका अध्ययन आप लोग भी करो। ऐसा कहने से सब लोगों ने स्पष्ट रूप से 'हओ' (हाँ) नहीं कहा था लेकिन अब 'हओ' (हाँ) हो ही जाएगा।

**''अहिंसा परमो धर्म की जय''**

## पूर्ण निवृत्ति की ओर बढ़ते चरण...

पौरुष सृजन और ज्ञान की अनगिन शलाकाओं से युगान्तरकारी परिवर्तन लाने वाले युग महापुरुष श्रमण संस्कृति के उन्नायक शास्त्रोक्त मार्ग-दिग्दर्शक आचार्यश्रीजी ने प्रथम मुनिराज समयसागरजी महाराज को निर्यापक घोषित कर कुछ मुनिराज एवं ब्रह्मचारी देकर जवाबदारी सौंप दी और भविष्य का विचार बनाते हुए आगमानुसार परिभ्रमण करते हुए खुरई (म.प्र.) में जनवरी-फरवरी माह में प्रवास किया। इस दौरान असाता कर्म पुनः उपस्थित हो गया किन्तु गुरुदेव की अपनी दिनचर्या क्रिया में दृढ़ता देख शीघ्र पलायन कर गया। गुरुदेव अपने गुरु के बताए अनुसार निवृत्ति के लिए पूर्णतः तत्पर थे ही अतः उन्होंने बीनाजी-बारहा, जिला-सागर (म.प्र.) में १८ अप्रैल, २०१९ को द्वितीय मुनि श्री योगसागरजी महाराज को निर्यापक घोषित कर कुछ मुनिराज एवं ब्रह्मचारी देकर उन्हें भी संघ की जवाबदारी सौंपी। पुनः १४ जुलाई, २०१९ को नेमावर जिला देवास (म.प्र.) में आषाढ़ सुदी तेरस, रविवार के दिन दूरस्थ मुनि श्री नियमसागरजी एवं मुनि श्री सुधासागरजी को निर्यापक मुनि घोषित किया, जवाबदारी सौंपी।

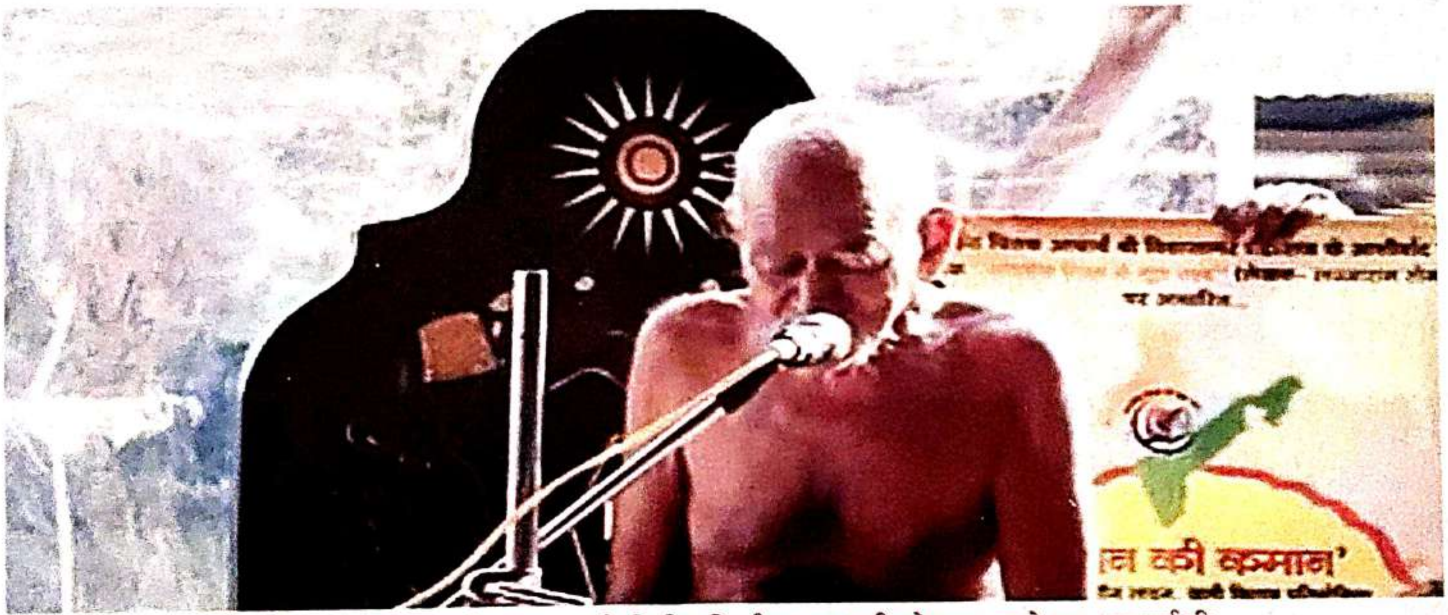

मुनि श्री योगसागरजी महाराज को द्वितीय निर्यापक पद की घोषणा करते हुए आचार्यश्री

ऐतिहासिक महापुरुष आचार्य श्री विद्यासागरजी महामुनिराज भगवान महावीर के बाद ऐसे अद्वितीय श्रमणाचार्य हुए जिन्होंने श्रमण संघ के साथ-साथ बहुसंख्यक श्रमणी (आर्यिका) संघ की भी स्थापना की एवं आगम के अनुसार श्रमण संघ से भिन्न छोटे-छोटे संघों में व्यवस्थित किया।

स्वभावगत संवादी सुखी शान्तिपूर्ण जीवन के स्वामी गुरुवर, तीर्थंकरों की कैवल्य ज्योति के नये-नये पटलों को कलिकाल में उद्घाटित कर धर्म प्रभावना की ऐतिहासिक यात्रा को आगे बढ़ाते चल ही रहे थे कि पुनः ३०-३१ दिसम्बर, २०१९ को बड़वाह से इन्दौर जाते समय असाता कर्म ने आकर बाधा पैदा की और यमराज को बुलाया किन्तु जागृत गुरुवर को देख कुछ ही दिन में दोनों ही रफू-चक्कर हो गए। गुरुदेव की धर्म प्रभावना यात्रा आगे बढ़ गई।

संसारी प्राणी कर्म तो करता है, बन्ध करता है किन्तु वे कर्म पौद्गलिक जड़ होते हैं, उन्हें किसी पर दया नहीं आती, चाहे बालक हो या वृद्ध, साधु हो या असाधु, राजा हो या भिखारी किसी को नहीं छोड़ता। इस प्रकार गुरुदेव अपाय-विचय, विपाक-विचय धर्मध्यान करते हुए २०२० रेवती रेंज, इन्दौर चातुर्मास में पुनः अस्वस्थ हुए, कोरोना का काल चल रहा था। पूरा संघ चिन्तित हो गया। पूरे देशभर में आचार्य गुरुवर की गंभीर रूप में अस्वस्थता के समाचार से जैन-अजैन समाज दुखी हो उठी, देशभर में उनके स्वास्थ्य लाभ हेतु जाप, भक्ति, विधान, पाठ, विशेष अनुष्ठान, प्रार्थना सभा आदि आयोजित किये गए, पवित्र दुआओं एवं गुरु की पवित्र तपस्या के प्रभाव से असाता कर्म अपने मुँह की खाकर भाग खड़ा हुआ किन्तु जग-हितैषी गुरुवर की जर्जर काया होते देख मौसम के सन्धिकालों में निमित्त पा आक्रमण करता रहा, कभी तो भयानक रौद्ररूप में उपसर्ग करता फिर भी वो आत्म-साधक गुरुवर को विचलित कर आर्त-रौद्र ध्यान की ओर न ले जा पाता, कारण कि गुरुदेव ने अपने गुरु महाराज ज्ञानसागरजी से स्वानुभूतिरूप समयसार का स्वाध्याय कर अध्यात्म की परम ऊँचाइयों पर आरोहित होकर आत्मा और शरीर के भेदविज्ञान से उत्पन्न होने वाले परम आह्लाद का रसास्वादन जो कर रखा था, फलस्वरूप दुस्सह पाप कर्मों का फल

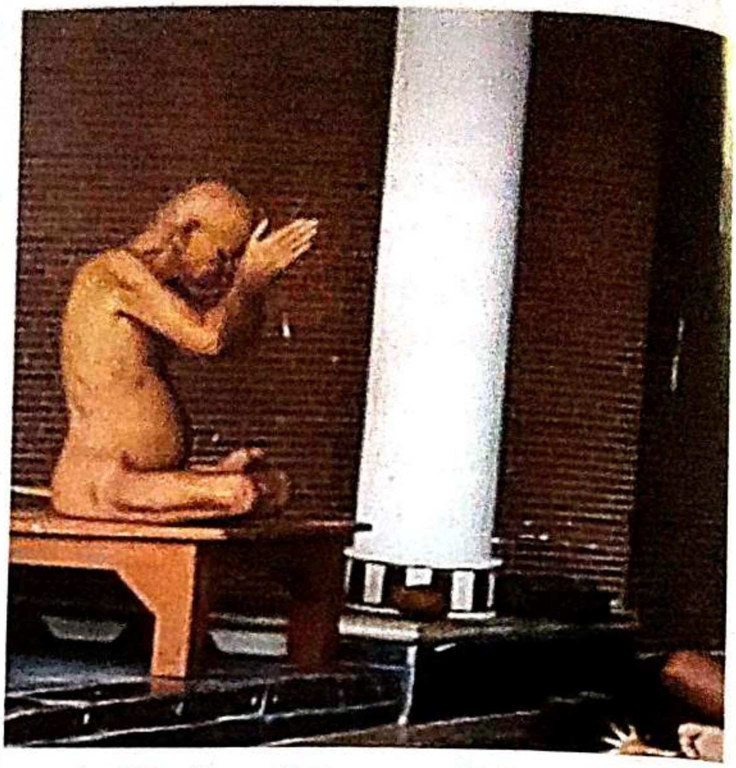

२०२० रेवती रेंज में आचार्यश्री अस्वस्थता में भी आवश्यकों में लीन

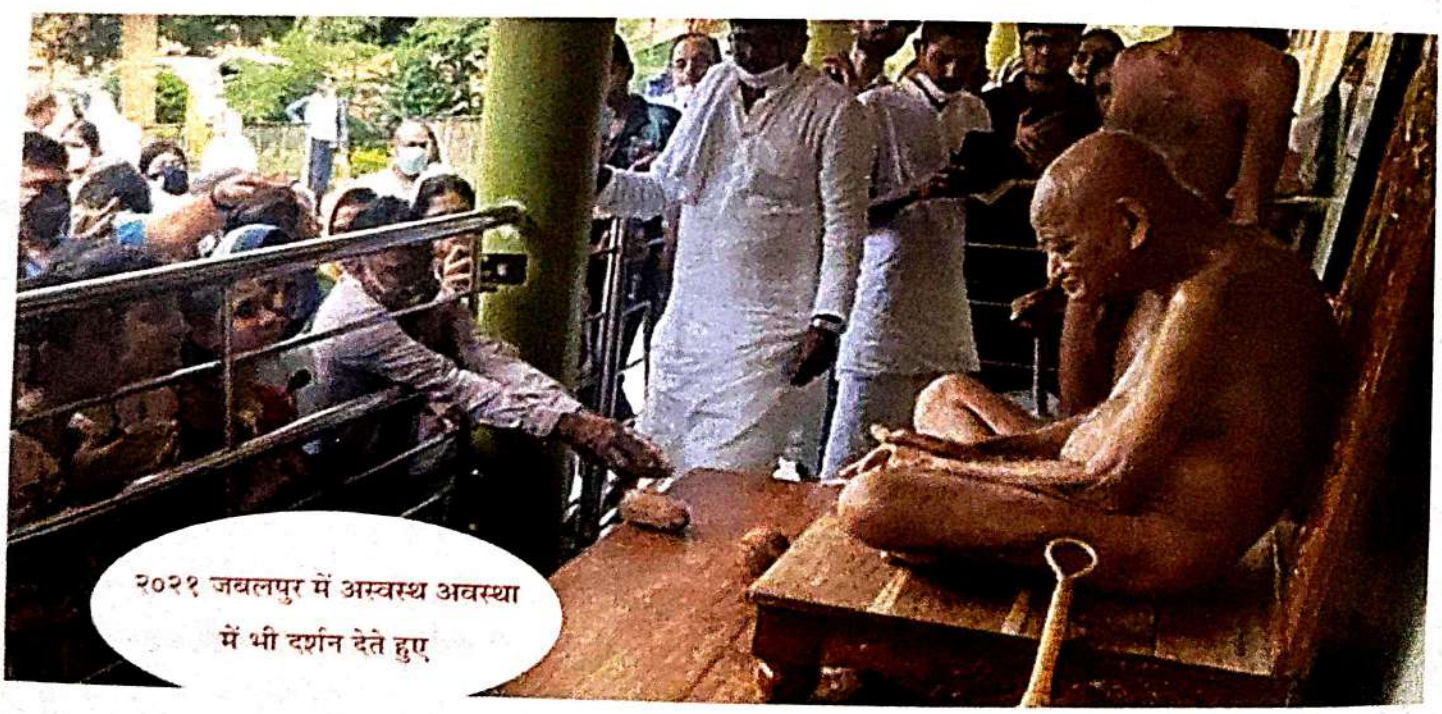

२०२१ जबलपुर में अस्वस्थ अवस्था में भी दर्शन देते हुए

भोगते हुए भी खेद-खिन्न नहीं होते। पुनः सन् २०२१ जबलपुर चातुर्मास के अन्त समय में एवं सन् २०२२ कुण्डलपुर में पञ्चकल्याणक के समय पर अस्वस्थ हुए। इसके बावजूद कुण्डलपुर में मुनि संघ, आर्यिका संघ को पर्याप्त धर्म चर्चा, आत्म चर्चा, साधना, स्वास्थ्य, प्रभावना, संघ व्यवस्था, वैय्यावृत्य, वात्सल्य अंग आदि विषयों पर आगम के आधार से चिन्तन देते रहे। इसी दौरान गुरुदेव ने अपनी निवृत्ति के संकेत भी दिए। स्पष्ट रूप से घोषणा तो नहीं की क्योंकि संघ बहुत विशाल है, छोटे-छोटे साधक-साध्वियाँ हैं, नये प्रवेशार्थी हैं, जिनका प्रारम्भिक दशा में गुरु से अत्यधिक स्नेह-समर्पण हुआ करता है, तो किसी के मन को आघात न पहुँचे इसलिए गुरुदेव ने समय की नजाकत को पहचानते हुए दबी जुबान से संघ को सावचेत किया। वह दिन था २० जनवरी, २०२२ कुण्डलपुर में दोपहर में पूज्य मुनि श्री विनीतसागरजी एवं मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी की अगवानी का। उस दिन आचार्यश्री जी ने मुनि और आर्यिका संघों के समक्ष अपने अंतरंग भावों को बड़ी ही प्रसन्नता के साथ रख दिया। वार्ता इस प्रकार है-

## गुरु-शिष्य की वार्ता और निवृत्ति रहस्य का उद्‌घाटन

**आचार्यश्री जी**—सुदूर राजस्थान में चातुर्मास करने के बाद हमने संकेत दिया था, सबको आने का संकेत दे ही रहे हैं, लेकिन जल्दी-जल्दी न करते हुए उस परिसर में जो भव्य जीव छोटे-छोटे गाँव में रह रहे हैं उनको भी लाभान्वित यथाशक्ति करते हुए इस क्षेत्र की ओर आ जायें, बड़े-बाबा की वन्दना हो जाए, रास्ता यदि जानते हो तो आ जायें। (हँसी)

**मुनि विनीतसागरजी**—आचार्यश्री जी यहाँ पर आये थे गुरुवार के दिन सन् १९९२ में, उसके बाद अभी तक यहाँ चातुर्मास नहीं मिला। इस पञ्चकल्याणक के बाद यहीं आपके सान्निध्य में चातुर्मास मिल जाए। (तालियाँ बजी)

**आचार्यश्री जी**—देखो! आजकल श्रावकों/गृहस्थों को धीरे-धीरे कोई भी रोग होता है तो सामान्य रूप से पहले (जड़ी-बूटी के चूर्ण की) 'फाँकी' दी जाती है, फिर इसके उपरान्त भी ठीक न होने पर काढ़ा दिया जाता है, फिर भी ठीक न हो तो 'क्वाथ' दिया जाता है और यदि गड़बड़ होता ही चला जाता है तो फिर उनको कहा जाता है आप अपनी चर्या धीरे-धीरे करते हुए इस 'सत्व' सार (एसेन्स) को जैसे-गिलोय सत्व है आदि को ले लो तो जीर्ण-शीर्ण जो कुछ भी है सब ठीक हो जाएगा।

हम भी चार भागों में दवाई सब लोगों को देना प्रारम्भ कर चुके हैं। आप भी आ गए, तो आप भी ले सकते हो। अब अपने को भी एक प्रकार से समेटना है, क्या बोलते हैं? बाजार का दिन आता है तो हाट लगता है, बहुत लम्बा-चौड़ा होता है, दिन ढलते-ढलते सबको समेटना भी पड़ता है। हम तो समेटने में लगे हुए हैं समझ लो बस!!! बहुत अच्छा, आप लोग धर्मध्यान में प्रभावना के साथ काम कर रहे हैं, ये बहुत अच्छा काम है लेकिन सब लोगों को अपने जीवन का वर्गीकरण करना चाहिए। आप लोग बाकी सब पूछताछ तो करते हो, महाराज! लेकिन जीवन का क्या वर्गीकरण है मैं पूछता हूँ! जब विद्यालय जाते थे तब एक हफ्ते का टाइम-टेबिल तैयार करते थे, एक ही दिन में सात-सात पीरियड्स रहते थे, उसके अनुसार विषयों का टाइम-टेबिल बनाते थे। सोमवार को कितने विषय, मंगलवार को कितने विषय, खेलकूद कब क्या?

उसी प्रकार जीवन भी एक खेलकूद है, उसके बारे में भी हमारे आचार्यों ने हम लोगों को बताया है कि जीवन में जिसने वर्गीकरण नहीं किया है, उसको सफलता के बारे में स्वप्न में भी नहीं देखना, सोचना चाहिए कि वो कभी

सफल होगा। आज यह एक बहुत ही गंभीर विषय है। आचार्यों ने साधु जीवन का वर्गीकरण इस प्रकार किया है, सर्वप्रथम दीक्षा काल होता है, फिर शिक्षा काल है, फिर गणपोषण काल होता है, फिर आत्म संस्कार काल होता है, तत्पश्चात् सल्लेखना काल होता है और अंतिम छटवाँ-औत्तमार्थिक काल होता है।

इस प्रकार हमारा तो समझ लो, आप सभी से कई बार कहा है, आप लोगों का कर्तव्य है कि गणपोषण काल में यथायोग्य हम लोगों को सहयोग देंगे। ये ही एक मात्र आप लोगों का गणपोषण काल है। आगम के अनुरूप साधर्मियों के साथ इस ढंग से वातावरण बनायें कि श्रावक लोग भी उससे लाभान्वित हो सकें। इसके उपरान्त शरीर की क्षमता देख करके आत्मसंस्कार क्या करना है तो अभी तक जो फैलाव था, उस फैलाव से बचते हुए अपने को समता मुख्य रख के सामायिक को मुख्यता देकर के आगम के अनुसार द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार शरीर कहाँ तक काम कर रहा है केवल भाड़ा देकर के उससे काम लोगे तो गाफिल कर देगा वो, इसलिए महाराज अच्छी भूख लग रही है कि कम लग रही है, शरीर की क्षमता कितनी रह गई है चलने की, आहार-विहार-निहार आदि-आदि, नेत्र ज्योति आदि पाँच इन्द्रियों की क्या दशा है? और पाचन क्रिया किस ढंग से चल रही है इन सबका अध्ययन करते हुए उसको नियंत्रण में रखने का काम करते हैं।

जैसे-रेलगाड़ी जब स्टेशन पर आती है तो एक-दो किलोमीटर पूर्व से ही ड्रायवर वॉर्निंग-घंटी देती है, संकेतानुसार गाड़ी का गेयर बदलकर स्पीड को कम करके लोगों को स्टेशन पर उतरने की सुविधा बनाता है। यह सब संकेत के बिना नहीं होता, यदि तात्कालिक ब्रेक लगाया जाए तो पक्का है कई व्यक्तियों को लेकर चला जाए। इसी प्रकार यह शरीर भी एक गाड़ी है, हम पहले से कह रहे हैं भैया! जिसको जिस स्टेशन पर उतरना है उतर सकता है, बस शेष जो भी कार्य रह गया है उसको आगम के अनुसार एवं अपनी शक्ति के अनुसार द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार पूर्ण कर लेना। फिर '**पच्छिम सल्लेहणामरणं**' ये सबके लिए अनिवार्य है इसीलिए छहों कालों का गुरुजी के सामने संकल्प लिया था। उन्होंने ही बताया था कि यह आगम के अनुसार वर्गीकरण किया गया है। यह वर्गीकरण किसी मोह के कारण आगे पीछे नहीं कर सकते। महाराज अभी तो आपका शरीर बहुत अच्छा है, आहार-पानी थोड़ा-सा बढ़ाना चाहिए और वो सब श्रावक लोगों को भी कह देते हैं, उनके पास विवेक नहीं, ये सब बातें आप लोग मेरे सामने नहीं करो, तो बहुत अच्छा है। हाँ! इस प्रकार घर के दद्दा के माध्यम से दुकान चलाने वालो वो दद्दा तो चाहते हैं लेकिन हम उसमें से नहीं हैं, गुरुजी के सामने हमने संकल्प लिया है, जैसे आपने किया, वैसे ही आपकी कृपा से हमारा भी यह अन्तिम क्षण जो एक प्रकार से भविष्य की भूमिका के लिए बहुत बड़ा जबरदस्त कार्य करने वाला है। हम जो-जो भविष्य में चाहते हैं, धर्मध्यान के योग्य द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव वह हमें मिल जाए।

गुरुजी ने ये कहा था-'**जीवित-मरणाशंसा-मित्रानुराग-सुखानुबंध-निदानानि**' ये पाँच सल्लेखना व्रत के अतिचार माने गए हैं, इन अतिचारों से दूर होते हुए हमें न जीवन की इच्छा रखना है और जल्दी-जल्दी मरण की भी इच्छा नहीं रखना। मित्रानुराग-मित्रों के प्रति कोई राग नहीं और जो द्वेष रखते हैं अपने से उनके प्रति कोई द्वेष नहीं, '**न पूजयार्थस्त्वयि वीतरागे न निन्दया नाथ विवान्तवैरे**' इस प्रकार राग-द्वेष से रहित हो करके सुखानुबन्ध, जो कुछ बहुत खाया पिया है या काम किया आदि-आदि उसमें गाफिल होकर के उन सुखों को याद न करना और अन्त में जो अभिशाप का काम करता है ऐसा 'निदान बन्ध' के भाव न हों। हे भगवन् ! हमने इतने काम किये हैं आपकी कृपा से,

अब हमें अच्छे स्थान पर भेज दो, ये भाव भी न रखते हुए हे प्रभु! आपकी चरण-शरण हमें बार-बार मिलती रहे, हम और कुछ भी नहीं चाहते हैं बस '**आबाल्याज्जिन देव देव! भवत: श्री पादयो: सेवया**' जब से बुद्धि काम करना प्रारम्भ कर दे तब से आपके प्रति प्रेम, स्नेह, भक्तिभावमय ये भाव हमारे बने रहें और कुछ भी नहीं चाहते हैं। हम निदान नहीं किन्तु एक मात्र सर्व सुखों का निदान है जो ऐसा रत्नत्रय को याद करते रहें। अन्त में 'गुरुवयणं' जो कि बहुत ही श्रेष्ठ सूत्र है, जीवन में जब बहुत ज्यादा उथल-पुथल होती है तब वह काम करता है, गुरु के वचन को याद रखते हुए आगे का जीवन उन्हीं का नाम स्मरण करते हुए बीते। इन पाँच दोषों में से कोई भी दोष न लगे। संयोग-वियोग जो भी होते हैं वो क्षणिक कर्म के ऊपर आधारित हैं, ऐसा समझ करके किसी के प्रति भी रागद्वेष नहीं करते हुए 'खम्मामि खमंतु मे' मैं क्षमा करता हूँ, क्षमा माँगता हूँ, ये दो शब्द संक्षेप से हैं और कोई भी हमारा दोष हो, दोष तो बहुत हैं, दोषों का पिटारा हूँ, बस हम क्षमा चाहते हैं। यह विधि है।

हे भगवन्! यह अंतिम समय में घटित हुआ है, हमारी यात्रा सफल हो गई, (गला भर आया)। फिर जैसे हमने किये हैं उसके अनुसार अंक मिलने वाले हैं लेकिन हम माँगने वालों में से नहीं हैं, हम पुरुषार्थ से ही अच्छे अंक प्राप्त करेंगे। सबको प्रेरणा मिले ऐसे भाव रखना है। अभी और दो तीन महाराज कल आने वाले हैं।

मुनिमहाराज, कल पाँच महाराज आना है।

**मुनि विनीतसागरजी**—गुरुदेव! आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने ये तो कहा कि जो कल्याण के लिए आता है उसे शरण देना, यह तो एक पक्ष हो गया, लेकिन आपके लिए दूसरा पक्ष दिया होगा ना! स्वयं के लिए। जो आत्म कल्याण के लिए शरण आता है उसको शरण देना-संघ को गुरुकुल बनाना।

**आचार्यश्री जी**—हाँ बिल्कुल। मुनिश्री जी यह तो एक पक्ष हो गया लेकिन आपके लिए भी व्यक्तिगत कुछ दिया होगा ना!!! वो तो व्यवहार की बात हो गई।

**आचार्यश्री जी**—देखो! हमने कभी भी गुरु से रत्नत्रय के सिवा कुछ भी नहीं माँगा (तालियाँ)। चूँकि उनका जीवन (गला भर आया) बहुत लम्बा-चौड़ा दीर्घकालिक था। सभी क्षेत्रों का उनके पास प्राविण्य विद्यमान था। कई लोगों ने कहा, गुरु महाराज से कह दो जैसे आपने कहा था—दक्षिणा तो दे दो, उसी प्रकार आपके पास जो कुछ भी इकट्ठा हुआ है, वह जहाँ आप जा रहे हैं, वहाँ उसकी कोई आवश्यकता है ही नहीं, यदि हमें दे दें तो बहुत अच्छा होगा किन्तु हमने ऐसा कुछ भी स्वप्न में भी नहीं कहा। उन्होंने सदा यह कहा '**देवा वि पणमंति जस्स धम्मे सयामणो**', बिल्कुल ! जिनके हृदय में अहिंसा धर्म वास करता है, उसके लिए देव लोग भी हाथ जोड़ करके देते हैं (तालियाँ)। आप मांगों ही नहीं, वे कर्तव्य मान करके आपकी सेवा करने के लिए तैयार होंगे बस! यदि उनका भी सहयोग इस पवित्र कार्य में होता है तो हम उनको मना नहीं करेंगे, लेकिन हम बुलायेंगे नहीं।

**गुरुजी ने कहा था**—''किसी भी चीज की इच्छा नहीं करना, जीवन हो या मरण कुछ नहीं, ये इच्छाएँ बाधक हैं।'' बस 'पच्छिम सल्लेहणामरणं' और कुछ नहीं, समता के साथ जीवन का उपसंहार हो और ये पक्का है कि—''**संघर्षमय जीवन का उपसंहार हर्षमय होता है**'' और कोई उपमा है ही नहीं अपने पास और कुछ चाहिए भी नहीं। ग्रन्थों में लिखे अनुसार अंतिम समय में मुख से णमोकार मन्त्र निकले यही भावना है, णमोकार मन्त्र याद रह जाये, हमारी और कोई इच्छा नहीं है, इसमें सब सारभूत आ जाता है।

'पञ्चगुरु चरण शरणो दार्शनिकस्तत्त्वपथगृह्यः' सुन रहे हो ? हमारा क्या होगा ? ऐसा न सोचिए! पूर्वजों ने जो रास्ता बताया है, उसके अनुसार सब ठीक होगा। गैर गेल की ओर मत देखो बस! बाकी सब ठीक होगा। गैर समझते हो? हाँ! गलत मार्ग की ओर दृष्टि ना जाये और वाह! वाह!! में कहीं फँस न जाओ। गुरु जी कहा करते थे 'मैं तो साधक हूँ, साधना ही मेरे लिए प्रिय है, मैं प्रभावक नहीं हूँ, प्रभावना होती है वह भावना रखो, प्रभावना जितनी होनी है होगी, बस! उसमें भी ख्याति, पूजा, लाभ का कोई समावेश न हो' और इसके अलावा बड़े बाबा की जो सेवा हुई, सो माँगने की बात ही नहीं, वो सब बरसेगा (तालियाँ), प्रभावना के कारण बनेंगे यह ही भाव है बाकी सब...। आप लोग हमसे कछु नहीं मांगियो!!! (हँसी)।

मुनि विनीतसागरजी—आचार्यश्री आपने तो इतना दिया है...।

आचार्यश्री जी—हमने आशीर्वाद तो बाँटा है, पर्याप्त है, हमें संतुष्टि भी है, गुरु के वचन फलते हैं,

"मेरा यहाँ क्या
आशीष फल रहा
शीर्ष जा बैठूँ।" (हाइकु)

शेष रह गया है, गुरुओं का आशीष फलता है-फूलता है, उन्होंने भी नहीं कहा कुछ चाहता हैं क्या ? ऐसा पूछा तक नहीं।

मुनि विनीतसागरजी—आपने मांगा नहीं, उन्होंने पूछा नहीं।

आचार्यश्री जी—उन्होंने ये ही कहा है माँगने से क्या होता है, कभी माँग लिया तो क्या होगा? देने वाले यदि बहुत देने वाले हैं तो, वो उतना ही देंगे जितना माँगा है। हम ऐसा काम नहीं करते, हाँ! योग्य होंगे तो वो अवश्य देंगे और क्या देना? आशीर्वाद दे दिया, अब गुरुकुल बनाओ, बिल्कुल ठीक वो ही सब बना रहे हैं, कुछ है ही नहीं अपना।

आर्यिका जी—आचार्यश्री जी! गुरुदेव ने आपको बुन्देलखण्ड जाने को कहा था क्या?

आचार्यश्री जी—गुरुकुल बनाओ कहा था, तो जहाँ पर बने वहाँ पर जाओ (हँसी) सीधे ही आ गए। यहाँ पर आ गए तो यहाँ से जा नहीं पाये।

मुनि विनीतसागरजी—बहुत बड़ा गुरुकुल बन गया।

आचार्यश्री जी—ध्यान रखो! एक को भी मांगा नहीं लेकिन जो-जो आए वो सारे-सारे निश्चय करके ही आये थे (तालियाँ)।

देखो! पुष्पदंत-भूतबली महाराज जब धरसेन महाराज जी के पास आये संघ के भेजने से आए जब विधिवत् उन दोनों की परीक्षा हुई और अध्ययन करा करके और कहा धरसेन महाराज ने, आप लोगों का अध्ययन पूर्ण हो चुका है, पास में चातुर्मास का काल आ रहा है, आप लोग यहाँ से विहार कर उचित स्थान पर अपना वर्षायोग स्वीकार करिये। बताते हैं तब पुष्पदंत या भूतबली मुनिराज ने धरसेनाचार्य जी से निवेदन किया, गुरु महाराज! अब इतना अधिक समय हो गया है, चातुर्मास का काल पास ही है, सात-आठ दिन भी नहीं रह गए और आप भेज रहे हैं, तभी दूसरे महाराज ने कहा, अरे! कुछ माँगो नहीं, आज्ञा मिली है ये महान् पुण्य का उदय है (तालियाँ)। कहीं आज्ञा पलट गई तो घाटा लग जायेगा। उठ जाओ जल्दी, ऐसा ही हो गया।

इसी प्रकार हमारा आप लोगों से भी कहना है कि आगे की यात्रा करना है महोत्सव समाप्त होने से पूर्व ही आप सभी को सोच करके कुछ संकेत दे देंगे। बीच में कुछ मांगें नहीं, उसके अनुसार आपकी यात्रा सब ठीक हो जायेगी।

मुनि समतासागरजी—कभी मन बोलता है, कभी वचन बोलते हैं, आज आप मन से भी नहीं वचन से भी नहीं बोल रहे, आज आप अन्तःकरण से बोल रहे हैं, पूरा अन्तःकरण।

मुनि विनीतसागरजी—आज गुरुवार है, आज गुरु का दिन है (हँसी)।

आचार्यश्री जी—उन्होंने ही तो बनाया, वो हम बता रहे हैं। कई बार सोचता हूँ उपदेश की मात्रा कम हो जाए, लेकिन उस दिन ज्यादा हो जाता है (हँसी)।

मुनि विनीतसागरजी—लेकिन, दुकान समेटने के समय ग्राहकी ज्यादा होती है, ग्राहकी बहुत है।

आचार्यश्री जी—हाँ ! आ जाते हैं, गुरुजी ने ऐसा माल दिया है तो होगी भी लेकिन हमारी वजह से कुछ नहीं हो रहा (तालियाँ)

मुनि विनीतसागरजी—समेटते-समेटते ग्राहकी ज्यादा होती है।

आचार्यश्री जी—हाँ! आयेंगे, कोई बात नहीं, कई बार ग्राहकों को लौटाना भी पड़ता है, क्या करें? बहुत अच्छा...अहिंसा परमोधर्म की जय...।

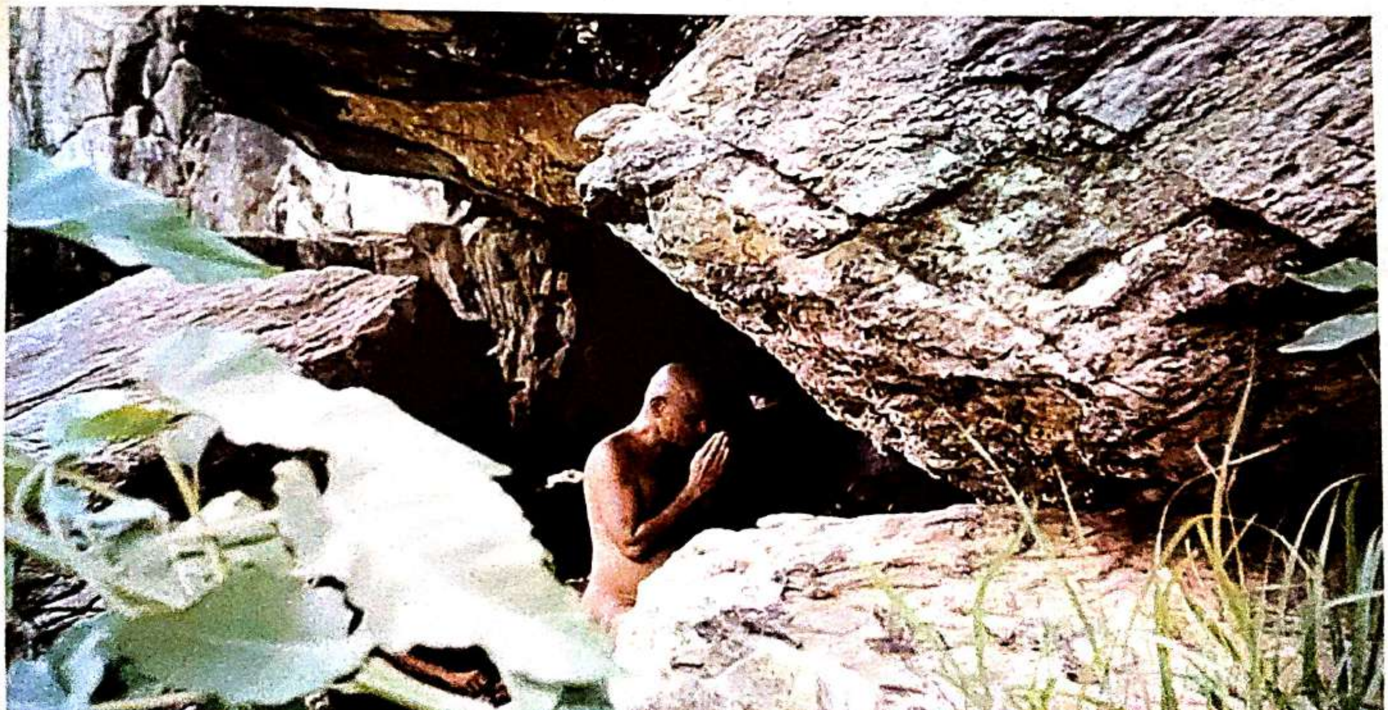

एकान्त आत्म साधना में लीन आचार्यश्री

## लोकोत्तर महापुरुष ने प्रकट किया निवृत्ति का गूढ़ रहस्य
## साधु जीवन का वर्गीकरण और उसकी सफलता

पूर्व लेख में शिष्यों के द्वारा आगमाचार्य गुरुदेव से किये गए वार्तालाप में, गुरुदेव ने अपने गुरु महाराज के मुख से साधु जीवन का वर्गीकरण सुनकर, उसी के अनुसार जीवन को सफल बनाने का जो संकल्प किया था, वह स्पष्ट किया। इस स्पष्टीकरण से निवृत्ति लेने का गूढ़ रहस्य प्रकट हो जाता है कि श्रमण जीवन का उद्देश्य पूर्ण करके अपने जीवन को सफलता की श्रेष्ठतम ऊँचाइयों पर पहुँचाना चाह रहे थे और जिसमें वो सफल हुए हैं।

किन्तु कोई भी विशाल-विस्तृत महान् कार्य को एकाएक न तो स्थापित किया जा सकता है, न ही उससे निवृत्त ही हुआ जा सकता है। गुरुदेव ने साधु जीवन के छह कालों में से छह ही काल धीरे-धीरे पूर्ण किये। जिसकी साक्षी उनका जीवन एक खुली किताब की तरह रहा, तो आइए पढ़ें छह कालों के अध्याय और परमोपकारी गुरुदेव के प्रति दृढ़ आस्था व उनसे प्राप्त शिक्षाओं से अपने जीवन को सजाते हुए अपना कल्याण भी सुनिश्चित करें।

### ❑ प्रथमकाल-दीक्षाकाल-

सन् १९६६ जुलाई माह में विद्याधर ने घर छोड़ा, आचार्य श्री देशभूषणजी से खानियाँ जी चूलगिरि, जयपुर में २० वर्ष की उम्र में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत की दीक्षा ली, सन् १९६७ फरवरी माह में श्रवण-बेलगोला में गोम्मटेश्वर बाहुबली भगवान का महामस्तकाभिषेक करके अत्यधिक प्रसन्नता एवं विशुद्धता का अनुभव करते हुए आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से सात प्रतिमा व्रतों की दीक्षा ले ली। सन् १९६८ में ३० जून को अजमेर (राज.) में मुनि श्री ज्ञानसागरजी महाराज से दिगम्बर मुनि दीक्षा ग्रहण कर सर्व परिग्रह से मुक्त सुखी हो गए।

गोमटेश यात्रा में आचार्य देशभूषण के ब्र. विद्याधर

गोम्मटेश बाहुबली के महामस्तकाभिषेक में जाते हुए ब्र. विद्याधर

ब्र. विद्याधर को मुनि श्री ज्ञानसागरजी महाराज मुनि दीक्षा देते हुए

❑ द्वितीयकाल-शिक्षाकाल–

मुनि दीक्षा से पूर्व मार्च १९६७ में महाकवि, ज्ञानमूर्ति, मुनिश्रेष्ठ श्री ज्ञानसागरजी की शरण प्राप्त कर किशनगढ़ (अजमेर-राज.) में जैनाचार्य प्रणीत ग्रन्थों की शिक्षा प्रारम्भ हुई। सन् १९७२ नवम्बर नसीराबाद (अजमेर-राज.) तक सतत् जारी रही। गुरु से एवं उनके निर्देशानुसार ज्ञानार्जन किया। लगभग ३ वर्षों में जैन-सिद्धान्त, अध्यात्म, न्याय, साहित्य, व्याकरण, छन्द, नीति, आचारपरक ग्रन्थों के साथ-साथ, संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, अँग्रेजी भाषा का भी ज्ञानार्जन कर श्रमण संस्कृति के उपादेयत्व को जाना-समझा-अनुभव किया।

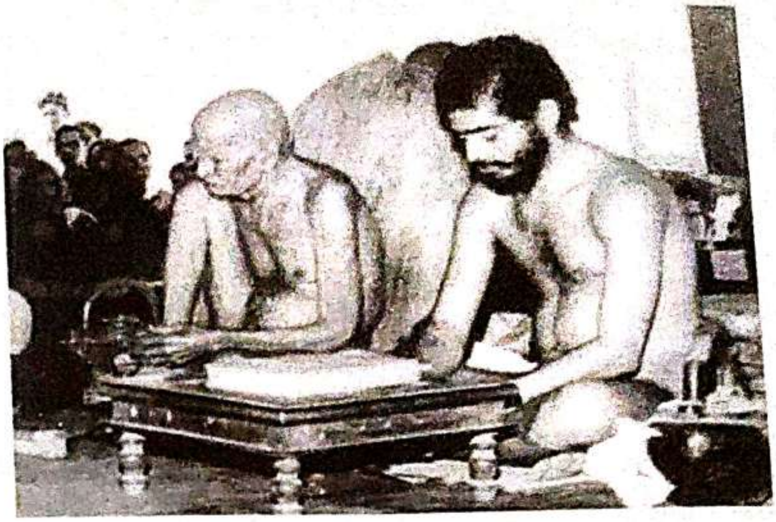

आचार्य ज्ञानसागर जी के साथ मुनि विद्यासागर जी, नसीराबाद

❑ तृतीयकाल-गणपोषणकाल–

आचार्य गुरुवर श्री ज्ञानसागरजी मुनिराज ने आपकी तपस्या एवं ज्ञान का क्षयोपशम मेधा-प्रज्ञा-अभिधाशक्ति को एवं प्राचीन आचार्यों की परम्परा को आगे बढ़ाने की योग्यता-क्षमता को समझते हुए आपको २२ नवम्बर, १९७२ को नसीराबाद में अपना पट्टाचार्य घोषित किया तथा स्वयं अपने आपको उनके हवाले करते हुए एक शिष्य की भाँति सल्लेखना कराने हेतु निवेदन किया तथा दिगम्बर संस्कृति का श्रेष्ठ आचार्य बनाकर उनके समक्ष भावना रखी कि संघ को गुरुकुल बनाना। इस भावना को पूर्ण करते हुए जगत्गुरु विद्यासागरजी ने बिना बुलाये ही जो भी वैराग्य से भरकर आता और अपना कल्याण करना चाहता तो उसे योग्य निर्देशन देते हुए उनका उत्साहवर्धन करते, एक दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत देते और फिर सर्व परीक्षा में पास होने पर उन भाइयों को संघ में प्रवेश देते और युवतियों को भी धीरे-धीरे व्रत प्रदान कर माता-पिता की आज्ञा के मिलने पर ही मोक्षमार्ग में लगाते किन्तु ब्रह्मचारिणी बहनों को अपने साथ में नहीं रखते हुए उनके लिए समाज के निवेदन पर सर्वप्रथम कुण्डलपुर जी (दमोह, म.प्र.) में दिसम्बर १९७८ को 'ब्राह्मी विद्याश्रम' की स्थापना की, जो बाद में सागर (म.प्र.) स्थानान्तरित हो गया।

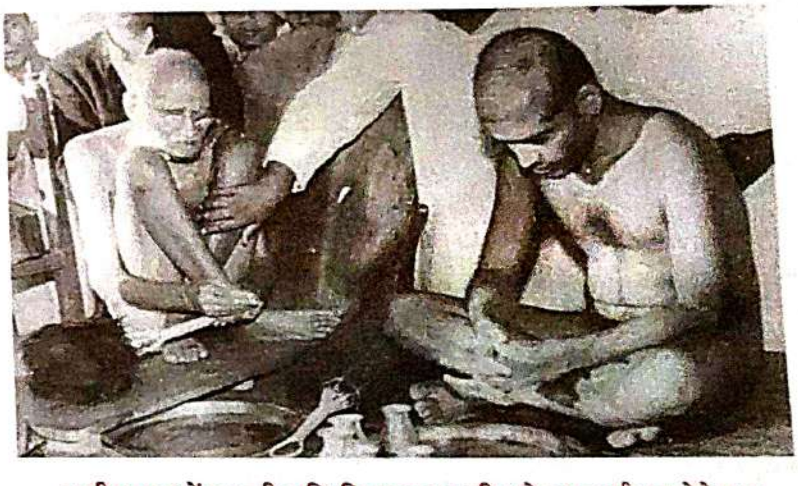

नसीराबाद में गुरुजी मुनि विद्यासागर जी को आचार्य पद देते हुए

गुरुदेव की साधना-तपस्या-ज्ञान प्रवचन की दिव्य प्रभावना बढ़ती गई फलस्वरूप पढ़ी लिखी युवा पीढ़ी आकर्षित होती चली गई। सन् १९८४ जबलपुर में गुरुदेव का महाप्रभावक चातुर्मास हुआ, इस दौरान बालयोगिनी

ब्रह्मचारिणी बहनों की बढ़ती संख्या को देखते हुए आचार्य भगवन् ने द्वितीय 'ब्राह्मी विद्याश्रम' मढ़िया जी जबलपुर (म.प्र.) में स्थापित करने हेतु समाज को आशीर्वाद प्रदान किया। साथ ही मढ़ियाजी में गणेश प्रसाद वर्णी गुरुकुल को पुनरुज्जीवित कराया और उसमें बाल योगी ब्रह्मचारी भाइयों को अध्ययन हेतु रखा।

ब्राह्मी विद्या आश्रम, जबलपुर

इसके साथ ही श्रमणाचार्य गुरुदेव ने जिनका मजबूत वैराग्य देखा तो उन्हें मोक्षमार्ग में योग्यता आदि के अनुसार साधना के सोपानों पर आगे बढ़ाया। आचार्यश्री जी ने १६ बार मुनि दीक्षाएँ प्रदान कीं, जिनमें १३१ मुनि बने। १३ बार आर्यिका (साध्वी) दीक्षाएँ प्रदान कीं, जिनमें १७२ आर्यिका (साध्वी) बनीं। २३ बार ऐलक दीक्षा प्रदान कीं, जिनमें ५८ ग्यारह प्रतिमाधारी ऐलक महाराज बने। २० बार क्षुल्लक दीक्षाएँ प्रदान कीं, जिनमें १४१ ग्यारह प्रतिमाधारी क्षुल्लक महाराज बने। इन सभी दीक्षाओं में ९९.९९ प्रतिशत साधु-साध्वियाँ बालब्रह्मचारी हैं।

शताधिक प्रतिभामण्डल की बहनें

इनके अतिरिक्त युगप्रवर्तक गुरुदेव ने उच्चकोटि की लौकिक शिक्षा प्राप्त लगभग ५०० युवतियों को बालब्रह्मचर्य व्रत की दीक्षा देकर २ प्रतिमाओं के व्रत प्रदान किये और उन्हें प्रतिभास्थली परिसर में संचालित ज्ञानोदय विद्यापीठ में बालिकाओं को सुशिक्षा प्रदान करने के कर्त्तव्य निर्वहन में निहित किया।

अहिंसा महामन्त्र के सच्चे ध्याता-श्रेष्ठ उद्गाता-महान् प्रणेता गुरुवर के अहिंसा यज्ञ में अनेक उच्चशिक्षित युवा खिचे चले आए, तो गुरुदेव ने उन्हें बालब्रह्मचर्य की दीक्षा दी और अहिंसक वस्त्र उत्पादन-विपणन करने की प्रेरणा देकर, गरीबों को रोजगार, भारत को आत्मनिर्भर बनाने की ओर प्रोत्साहित किया। कुछ ब्रह्मचारियों को प्राचीन

# तृतीयकाल–गणपोषणकाल

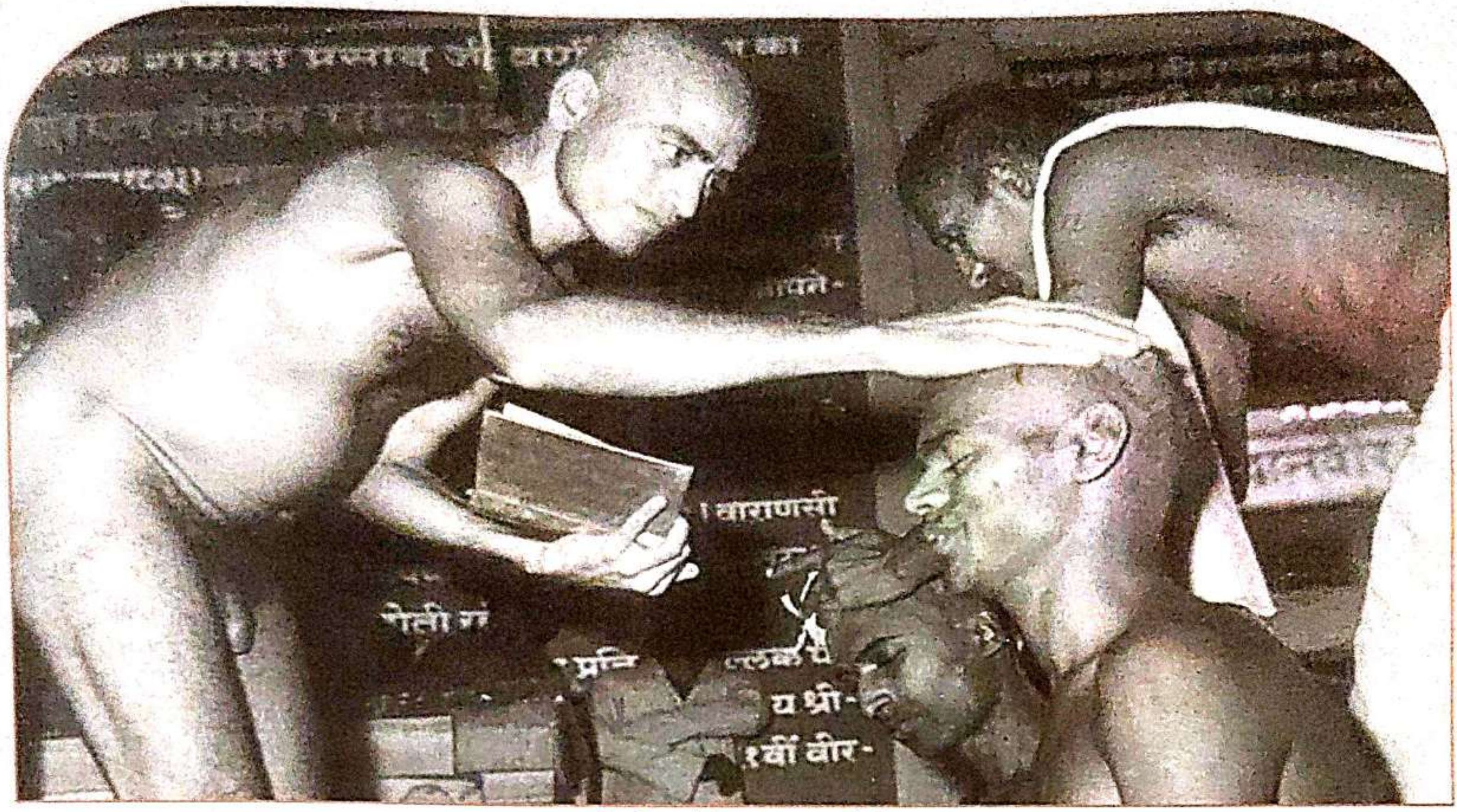


मुनि दीक्षा देते हुए आचार्यश्री

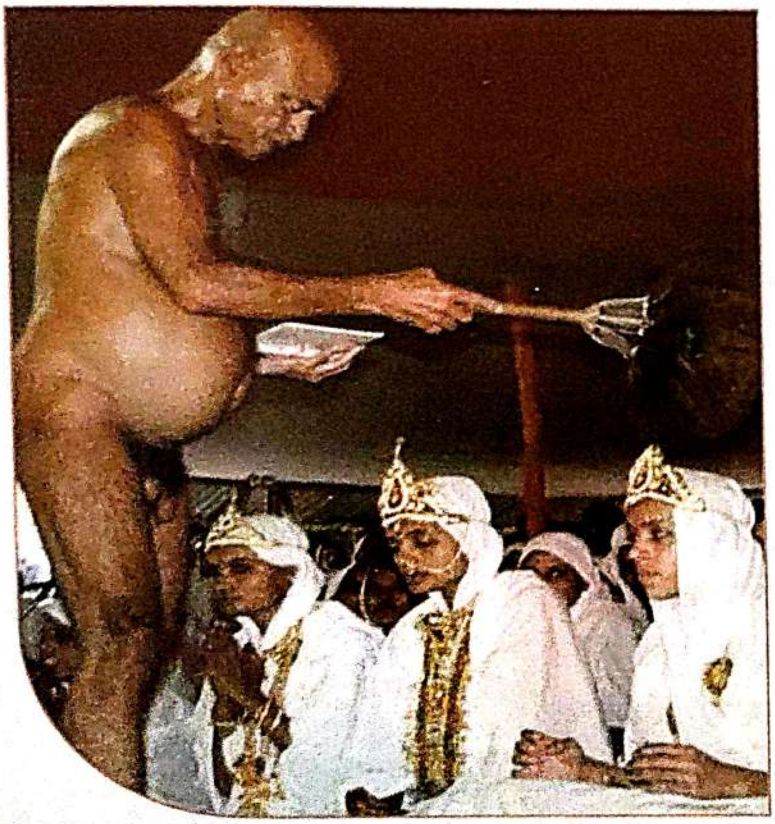

आर्यिका दीक्षा देते हुए आचार्यश्री

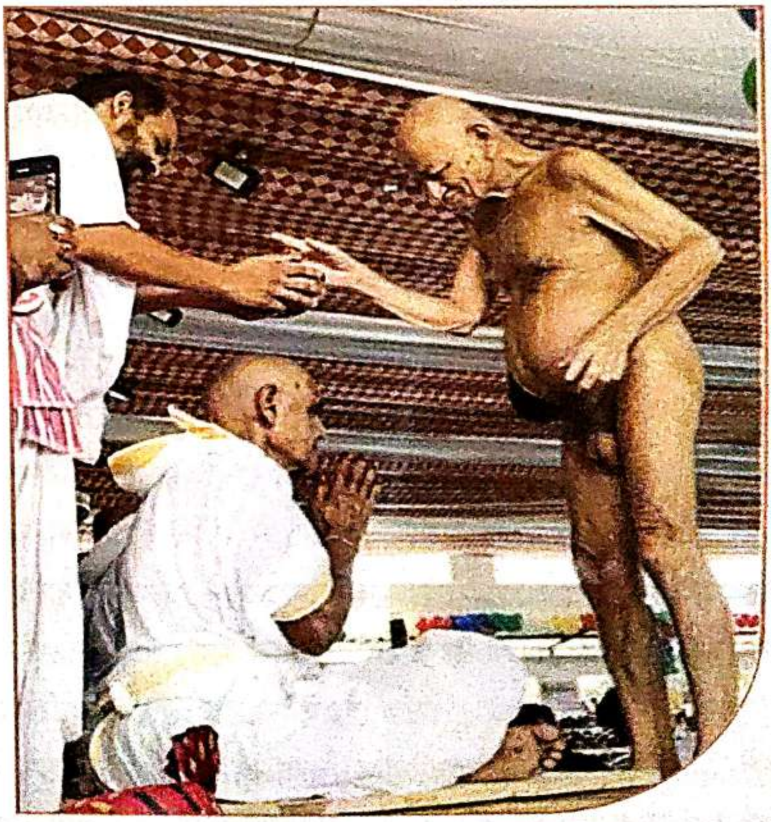

क्षुल्लक दीक्षा देते हुए आचार्यश्री

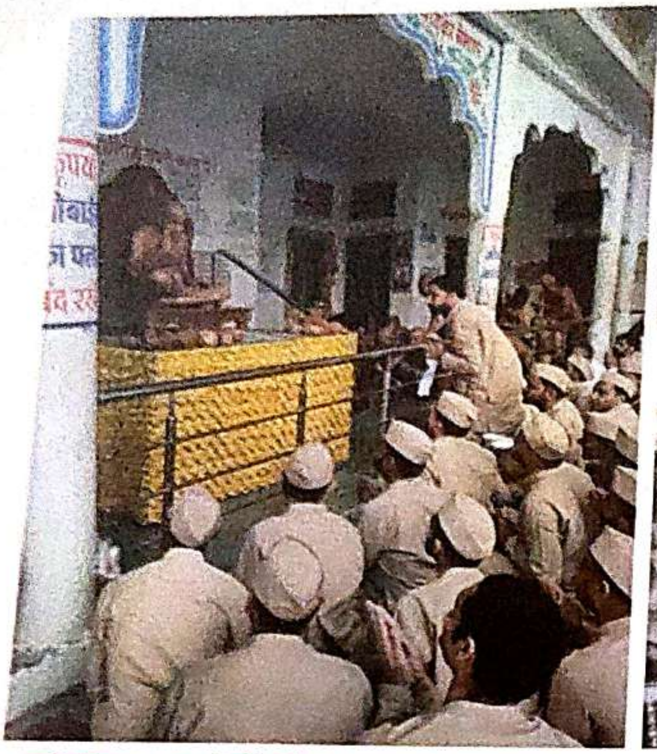

सुशिक्षित ब्रह्मचारियों को हथकरघा में संलग्न किया

पूर्णायु आयुर्वेदिक महाविद्यालय परिवार, जबलपुर

१९८३ ईसरी में समाधि कराते हुए आचार्यश्री

भारतीय चिकित्सा (आयुर्वेद) के प्रचार-प्रसार के लिए पूर्णायु आयुर्वेदिक महाविद्यालय में निबद्ध किया और लगभग २०० बाल ब्रह्मचारी भाई-बहनें गृह पर साधनारत हैं।

गणपोषणकाल के अन्तर्गत समाधिसम्राट करुणा के सागर गुरुदेव ने उन भव्यात्माओं को भी शरण प्रदान कर उनका कल्याण किया जो अपने जीवन की संध्या बेला पर आए और मृत्यु का अंधेरा होने से पूर्व अग्रिम सुगति का मार्ग तय करना चाह रहे थे। लगभग १०० भव्य धर्मात्माओं को निर्देशन दिया, जो सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण कर मृत्यु महोत्सव मनाते हुए गाते गए –

**अपनी ही अर्थी के आगे-आगे मैं गाता चलूँ।**
**सिद्ध नाम सत्य है अरिहन्त नाम सत्य है....॥**

साधिकाश्रम सागर की साधिकाएँ

पञ्चमकालेश्वर स्वरूपी संस्कारों के निर्माता आचार्य भगवन् गुरुदेव ने स्वर्णिम गणपोषण काल को पूरा करते हुए लम्बे समय से पुकारती आ रहीं उन माताओं की आवाज भी सुनी जिनका कोई नहीं या बुढ़ापे का सहारा बेटा नहीं या घर में रहकर आत्म कल्याण के लिए धर्मध्यान नहीं कर पा रहीं थीं। गुरुदेव ने कुण्डलपुर (दमोद म.प्र.) में पञ्चकल्याणक २०२२ के पावन अवसर पर उन माताओं के लिए साधिका आश्रम की घोषणा कर मध्यप्रदेश के सागर शहर, बण्डा (सागर), आरोन (गुना) की समाज को आशीर्वाद दिया और वहाँ पर रहने के लिए लगभग ५०-६० माताओं को १० और ७ प्रतिमाओं के व्रत की दीक्षा देकर साधना

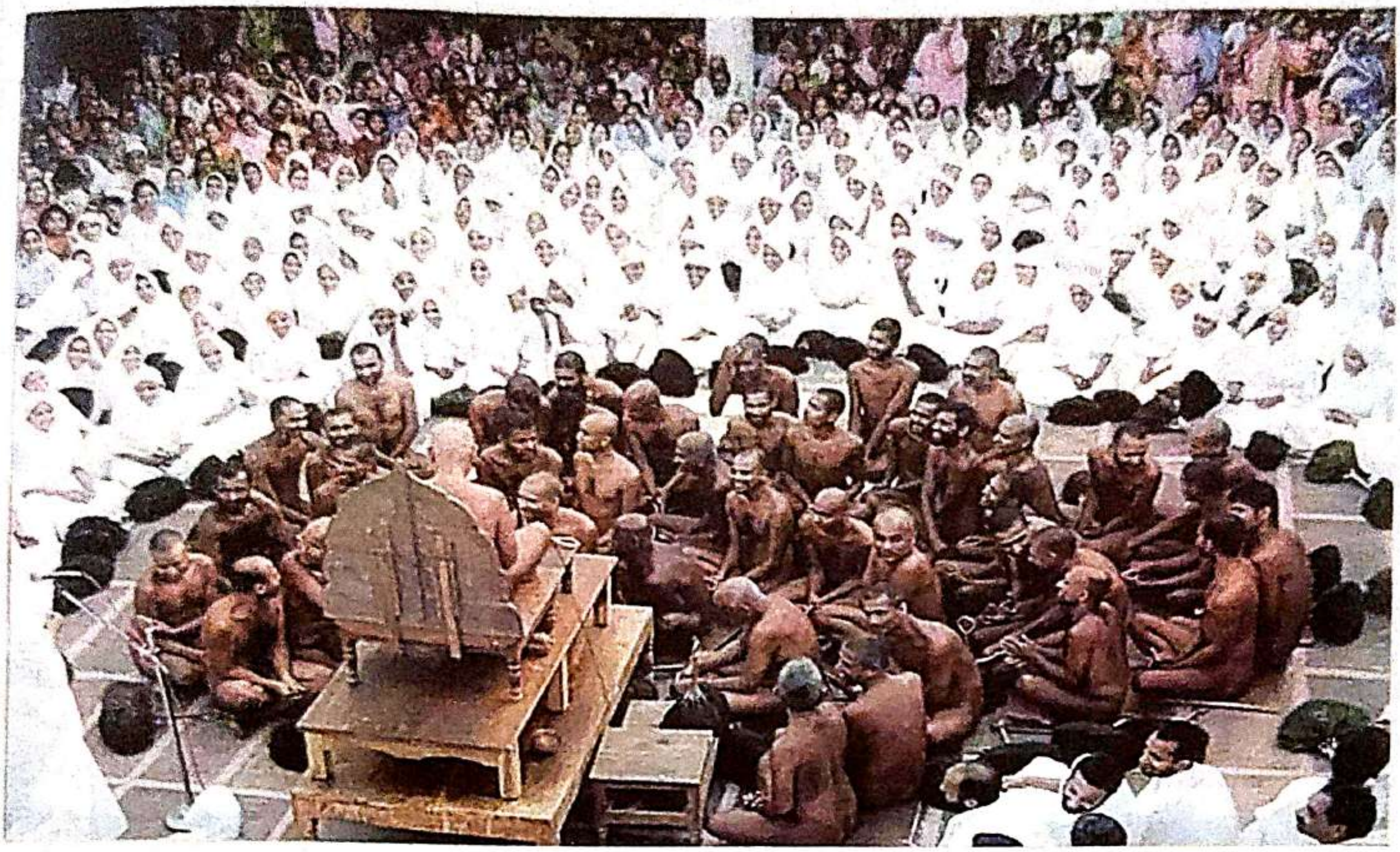

आचार्यश्री का विशाल चतुर्विध संघ

हेतु आशीर्वाद दिया। मानो किनारे पर आकर डूबने वालों को सहारा मिल गया, डूबती कस्ती को उबार दिया।

सन् १९७२ से लेकर २०२३ तक ऐतिहासिक आचार्यत्व को जीने वाले गुरुवर ने गणपोषण काल को एक लम्बा समय देते हुए भी अपने २८ मूलगुणरूप साधुपने को भी बड़ी ही सूक्ष्मता एवं अप्रमत्तता से जिया। साथ ही उपाध्यायत्व का कार्य भी बखूबी निभाया। यही कारण है कि आपके व्यक्तित्व में तीन परमेष्ठियों का आदर्शरूप पाकर जैन सिद्धान्त-दर्शन-न्याय के उद्भट विद्वान् पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री जी ने सन् १९७५ में कहा था कि मैं आज से जब णमोकार महामन्त्र का जाप ध्यान करूँगा तो उसमें आचार्य, उपाध्याय, साधु परमेष्ठी के रूप में आचार्य श्री विद्यासागरजी को स्मरण करूँगा। आचार्यश्री ने अपने इस आदर्श रूप को ही साधे रखा। यही कारण है कि गणपोषणकाल में महति धर्म प्रभावना हुई।

### ❑ चतुर्थकाल-आत्मसंस्कारकाल-

साधना के शिखरपुरुष आचार्य भगवन् दीक्षाकाल से गणपोषणकाल तक अपने आत्म स्वभाव की प्राप्ति रूप साधना करते रहने से संघ के प्रति सावधान एवं उससे निवृत्ति लेने का विचार सदा ध्यान में रखते थे और इन आगम विचारों से संघ को कई बार परिज्ञान करा चुके थे। इन विचारों को अमल में लाते हुए सन् २०१४ में संघ से निवृत्ति लेने का पुरुषार्थ प्रारम्भ किया, सन् २०१८ में प्रथम निर्यापक श्रमण की स्थापना कर धीरे-धीरे दूसरे, तीसरे, चौथे आदि निर्यापक श्रमणों की स्थापना की, इस तरह संघ का विकेन्द्रीकरण किया और निवृत्ति की ओर कदम बढ़ाते गए। सन्

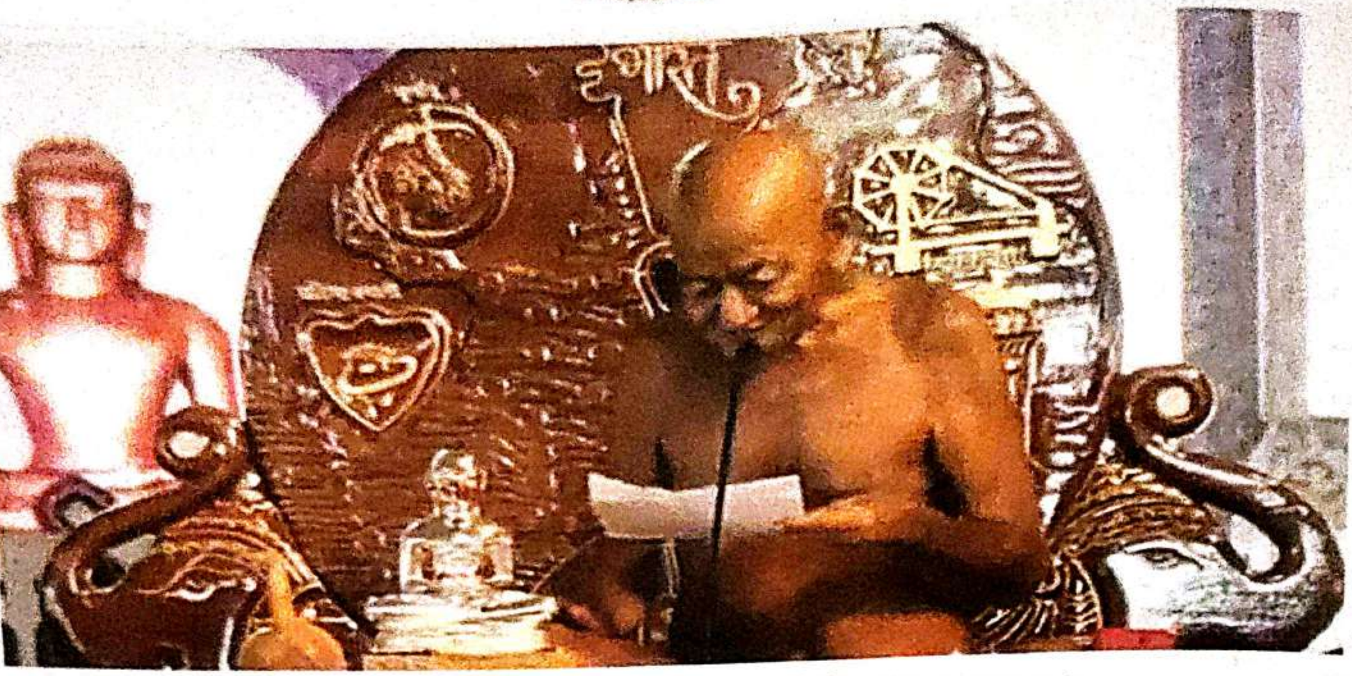

६ निर्यापक श्रमण की घोषणा करते हुए आचार्यश्री, कुण्डलपुर २०२२

२०२२ में गुरुदेव ने कुण्डलपुर पञ्चकल्याणक के अवसर पर संघस्थ ६ और मुनिराजों को, २० फरवरी के दिन मुनि श्री समतासागरजी, मुनि श्री प्रशान्तसागरजी, मुनि श्री प्रसादसागरजी, मुनि श्री अभयसागरजी, मुनि श्री संभवसागरजी, मुनि श्री वीरसागरजी को निर्यापक श्रमण घोषित किया। इन सभी निर्यापकगणों को मुनि, ऐलक, क्षुल्लक और ब्रह्मचारी भाइयों को देकर संघ यथायोग्य व्यवस्थित किया एवं अपने पास मात्र ३ साधु ही रखे–निर्यापक मुनि श्री प्रसादसागरजी, मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी, मुनि श्री निरामयसागरजी। तब निर्यापक श्रमण श्री योगसागरजी ने विनम्र निवेदन किया–आचार्य महाराज, आप ऐसा क्यों कर रहे हैं? तो आचार्यश्री बोले–"**अब मुझे एकान्त चाहिए, आत्म साधना को बढ़ाते हुए सल्लेखना की ओर जाना है।**"

तब मुनि श्री योगसागरजी ने निवेदन किया कि कम से कम ५–७ साधु तो रखिये तो आचार्यश्री बोले–"आवश्यक नहीं।" यह बोलकर रहली–पटनागंज की ओर विहार कर गए और यह मानकर आत्मसाधना की ओर उन्मुख हो गए कि–

जिन्दगी तो है कच्ची पेंसिल की तरह
रोज दर रोज कर्मों को लिख–लिख कर
कम होती जा रही है। इसलिए–
न किसी के अभाव में जियो, न किसी के प्रभाव में जियो।
यह जिन्दगी तो है क्षणिक, अपने आत्म स्वभाव में जियो॥

रहली–पटनागंज पहुँचकर स्वास्थ्य लाभ के साथ–साथ, स्वभाव साधना में सावधानी के साथ संलग्न हो गए। सभी आवश्यकों का पालन समय पर करते हुए दृष्टि आत्मकेन्द्रित हो गई। मुनि श्री निरामयसागरजी ने बताया कि रहली–पटनागंज में ८ दिन बाद आचार्यश्री के केशलोंच के २ माह पूरे हो गए, तो अत्यधिक कमजोरी होने के बावजूद आत्मबल इतना ऊँचा और मजबूत कि हम तीनों मुनिराजों ने एवं ऐलक सिद्धान्तसागरजी ने कहा तथा वैद्यों ने खूब

निवेदन किया कि कमजोरी हालत में परेशानी और बढ़ सकती है। अतः कुछ दिन रुक जाइये, तो बोले–"किस-किस को रोकोगे- समय को, कर्म को?" केशलोंच किया और प्रसन्नचित्त हो आवश्यकों में लगे रहे। आवश्यकता के अनुसार वैद्यों के परामर्शानुसार वैय्यावृत्य हम लोग, ब्रह्मचारीगण या वैद्य करते रहे।

रहली–पटनागंज में स्वास्थ्य लाभ अच्छा हुआ। वहाँ से विहार कर ६०० किलोमीटर चलकर शिरपुर, जिला वाशिम (महाराष्ट्र) पहुँचे। २०२२ के चातुर्मास की स्थापना की और गुरुदेव के दिव्य प्रभाव से अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर पर ४० वर्षों से पड़े ताले खुल गए।

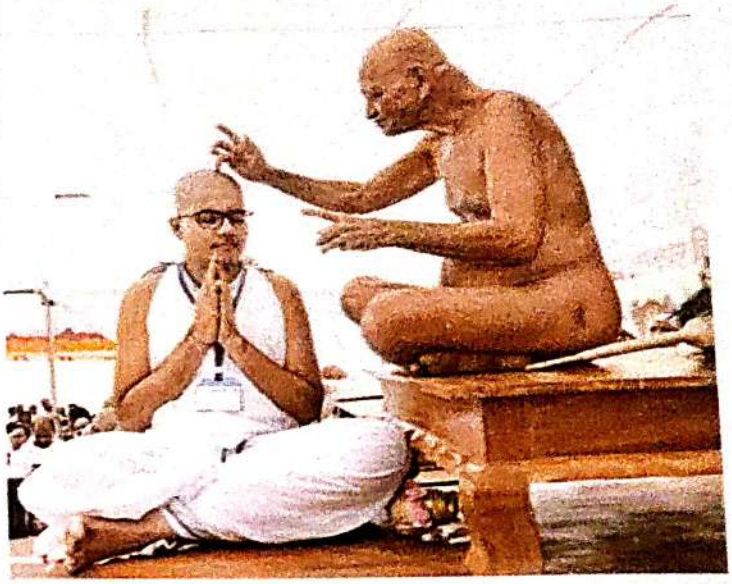

जैन बाल संस्कार आरोपण कार्यक्रम आचार्यश्री संस्कार देते हुए

वैसे तो गुरुदेव अपने आत्मसंस्कार काल को बड़ी ही विशुद्धि भाव से जीने लगे थे किन्तु थोड़ा समय उन ब्रह्मचारी भाइयों एवं ब्रह्मचारिणी बहनों को तथा कुछ विशेष लोगों को भी दे देते थे जो गुरु आज्ञा से धर्म संस्कृति, अहिंसा संस्कृति को आगे बढ़ाने में लगे हुए थे।

शिरपुर वर्षायोग में आचार्यश्री अपने आत्मध्यान आदि आवश्यकों में विशेष समय बिता रहे थे और कुछ समय आगम प्रणीत कहानी को संस्कृत भाषा में धीवरोदय चम्पूकाव्य का सम्पादन भी कर रहे थे, जो उन्होंने राजस्थान प्रवास में लिखा था। इस तरह शिरपुर वर्षायोग सानंद सम्पन्न कर आचार्य भगवन् विहार कर जिंतूर पहुँचे वहाँ पर महाराष्ट्र की समाज एवं ब्रह्मचारी भाइयों के निवेदन पर जैन बाल संस्कार आरोपण कार्यक्रम में एक हजार से अधिक बच्चों को संघ सहित संस्कार दिये। वापस शिरपुर होते हुए डोंगरगढ़, चन्द्रगिरि तीर्थ आए। फिर सर्वोदय तीर्थ क्षेत्र अमरकंटक गए, चूँकि इस क्षेत्र की स्थापना एवं जिनालय निर्माण गुरुदेव के ही आशीर्वाद-प्रेरणा से हुआ था अतः उस जिनालय की पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा करवाने का आशीर्वाद गुरुदेव ने दिया और उसमें सान्निध्य प्रदान करने हेतु वहाँ पहुँचे। महोत्सव के अवसर पर अस्वस्थता ने पुनः आ घेरा पञ्चकल्याणक के बाद जैसे ही विहार किया फिर स्वस्थ हो गए।

सर्वोदय तीर्थ क्षेत्र, अमरकंटक

# चतुर्थकाल-आत्मसंस्कारकाल

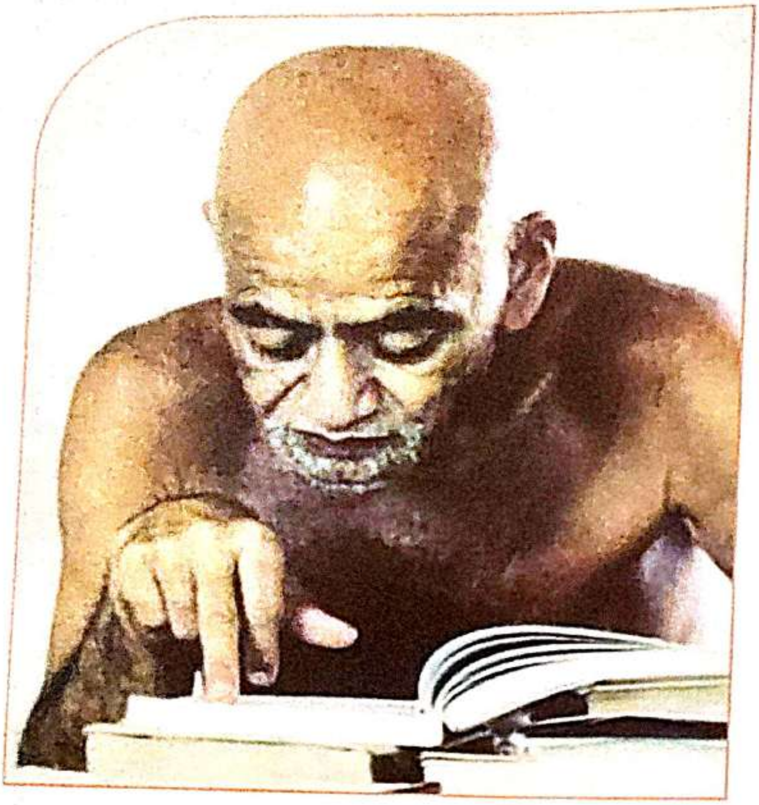

स्वाध्याय करते हुए आचार्यश्री

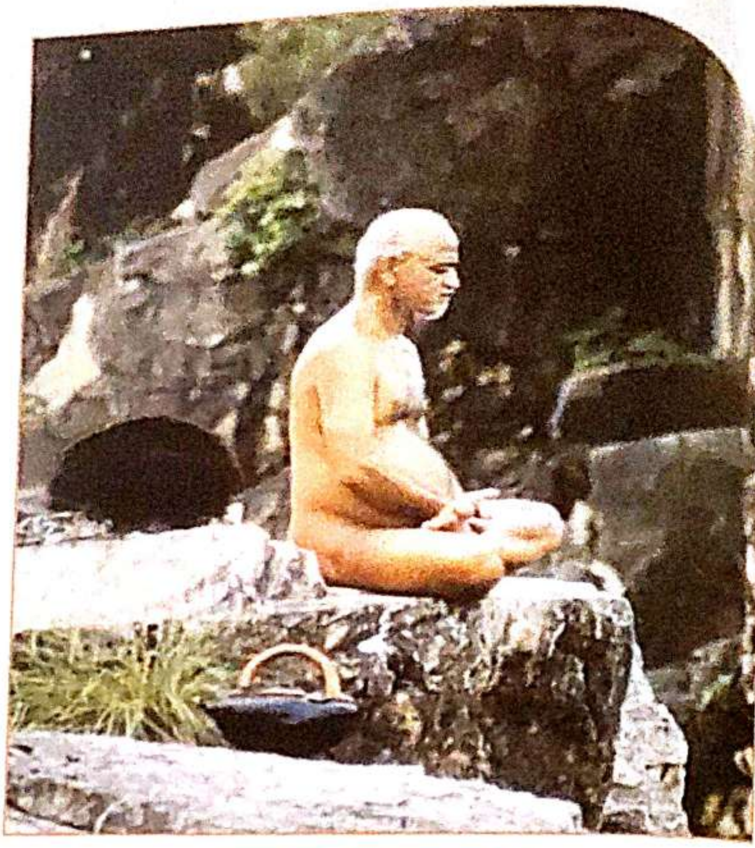

ध्यान करते हुए आचार्यश्री

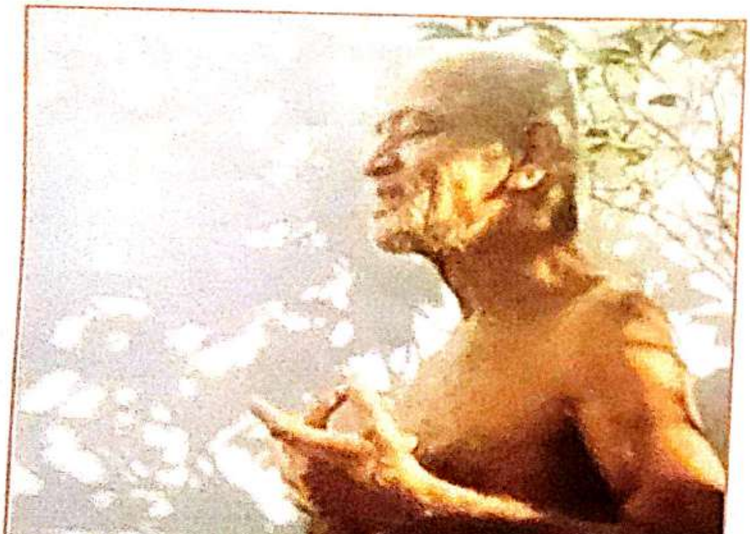

प्रतिक्रमण करते हुए आचार्यश्री

एकान्तस्थान में आत्मलीन आचार्यश्री

चन्द्रगिरि तीर्थ, डोंगरगढ़ (छ.ग.) में २०२३ के वर्षायोग में स्वास्थ्य कमोवेश ठीक रहा। आवश्यकों की परिपालना मैं पूर्णतः जागृत, विशुद्धि बढ़ाने कक्ष में एकान्ती साधना करते रहे। कभी-कभी ब्रह्मचारी भाई-बहन आदि को चिन्तन देते रहे। इसी वर्षायोग के अन्त में ५ नवम्बर, २०२४ को देश के प्रधानमन्त्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी गुरु दर्शनार्थ पधारे और गुरु जी की सर्वोदयी चर्चा से समाधान पाकर बड़े ही प्रसन्न हुए।

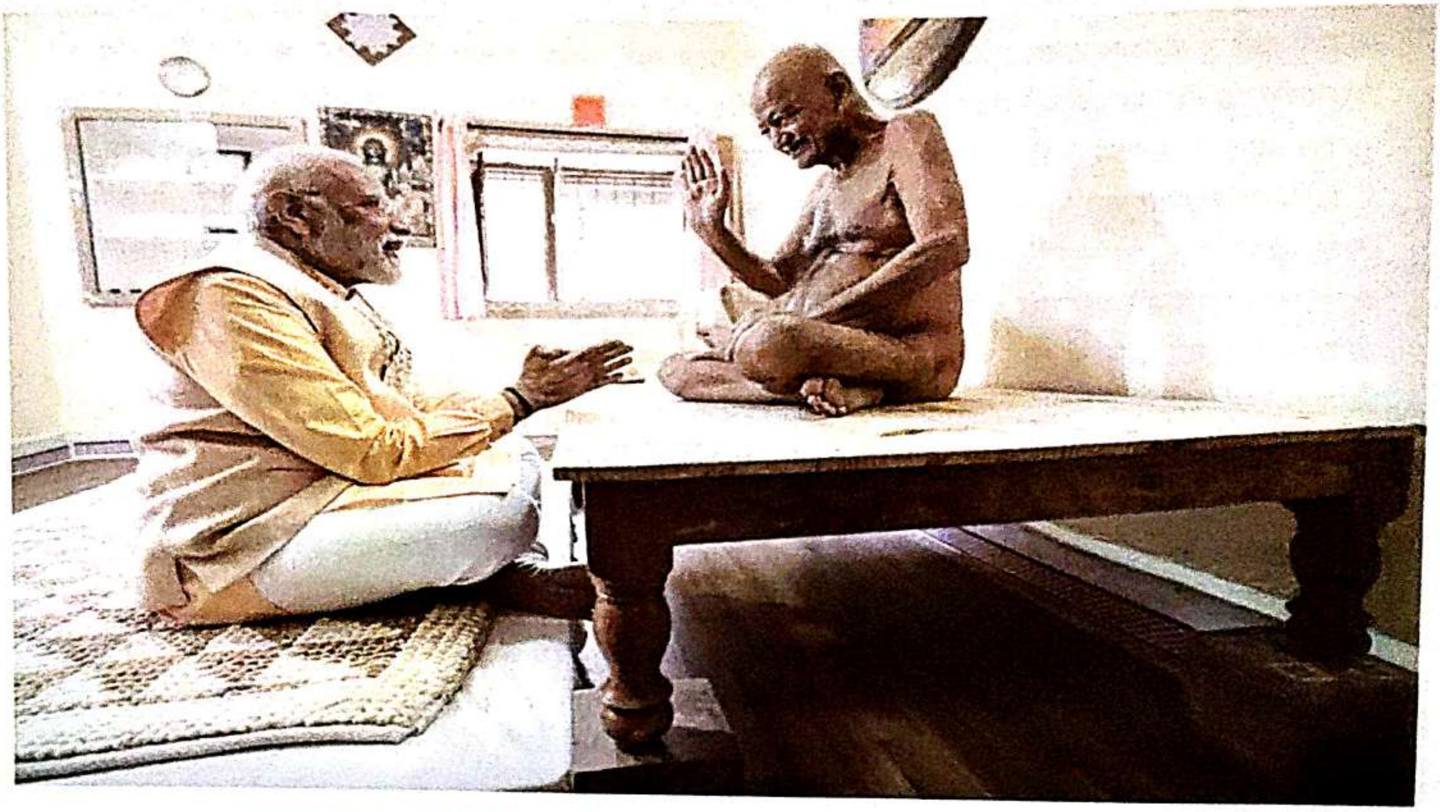

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी आचार्य भगवन् से सर्वोदयी चर्चा से समाधान प्राप्त करते हुए

वर्षायोग के बाद तिल्दा-नेवरा (रायपुर, छ.ग.) में पञ्चकल्याणक में सान्निध्य प्रदान किया। वहाँ पर स्वास्थ्य खराब हुआ, लौटकर चन्द्रगिरि तीर्थ, डोंगरगढ़ आए। स्वास्थ में गिरावट दिन-प्रतिदिन होती ही चली गई। इस सम्बन्ध में आँखों देखा वर्णन मुनि श्री निरामयसागरजी महाराज की कलम से लिखा गया। उसे पढ़ें और जानें महान् निस्पृहवृत्ति भेद-विज्ञानी साधक को तथा सीखें जीवन के द्वितीय पक्ष-''मरें तो ऐसे मरें कि मृत्यु एक महोत्सव बन जाए।''

अब आगे के लेखों में आप पढ़ेंगे कि आचार्य गुरुदेव ने पंचमकाल-सल्लेखना काल और षष्ठकाल-औत्तमार्थिक काल कैसे जिया।

# अनियत विहारी संत की अनियत अंतिम यात्रा

गुरुभक्ति का सबसे गहन और पवित्र स्वरूप वह है, जिसमें शिष्य अपने गुरु के जीवन, साधना और आदर्शों को न केवल देखता है, बल्कि उन्हें आत्मसात कर अपने जीवन का आधार बनाता है। मुनि श्री निरामयसागरजी महाराज की यह लेखनी उसी गुरुभक्ति और साधना का एक उज्ज्वल प्रतिबिम्ब है। १० अगस्त, २०१३ को जब मुनिश्री ने दीक्षा ग्रहण की, तब से लेकर आज तक वे आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के संघ में अनवरत साधना कर रहे हैं। इस दौरान उन्होंने अपने गुरुदेव की अन्तरंग और बहिरंग साधना को अत्यन्त निकटता से देखा, महसूस किया और उससे प्रेरणा प्राप्त की। उनकी इस निकटता ने उन्हें गुरुदेव की साधना के हर पहलू को समझने और उसे अपनी लेखनी में जीवन्त रूप देने की शक्ति दी। यह लेख विशेष रूप से गुरुदेव के अंतिम दिनों की साधना का भावपूर्ण वर्णन है। इसमें गुरुदेव की दिव्यता, असीम धैर्य और आध्यात्मिक ऊँचाइयों को शब्दों में पिरोया गया है। यह न केवल एक शिष्य के अनुभवों का संग्रह है, बल्कि उस गहराई का दस्तावेज भी है, जो गुरु-शिष्य सम्बन्ध की नींव में बसी होती है। मुनि श्री निरामयसागरजी महाराज ने अपने इस लेख में गुरुदेव के जीवन और साधना के महान् आदर्शों को ऐसी आत्मीयता और संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है, जो पाठक के हृदय को छू जाती है। इस लेख को पढ़ते हुए ऐसा प्रतीत होता है मानो हम स्वयं गुरुदेव के साथ चल रहे हों, उनकी साधना को देख रहे हों और उनकी दिव्य ऊर्जा को अनुभव कर रहे हों।

आइए इस गहन और प्रेरणादायी लेख के माध्यम से गुरुदेव के साधना पथ की उस अद्भुत यात्रा में प्रवेश करें, जो न केवल हमें आत्मा की गहराईयों में झाँकने का अवसर प्रदान करेगी, बल्कि हमारे भीतर नई ऊर्जा और साधना के प्रति श्रद्धा का संचार भी करेगी।

अपारगुण के गुरु रहे, अगुरु गन्ध अनगार।
पार पहुँचने नित नमूँ, प्रणाम बारम्बार॥

समाधि सम्राट संत शिरोमणि आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महामुनिराज के चरणों में कोटिशः नमोऽस्तु करते हुए अनियत विहारी गुरुदेव की अनियत अंतिम यात्रा का वर्णन तो मैं लेखनी से लिख रहा हूँ, किन्तु गुरुदेव ने अपनी यात्रा के बारे में एक हाइकू लिखा–

लिख रहा हूँ
यात्रा विवरण मैं
बिना लेखनी।

ऐसे महान् गुरुदेव को बिना लिखा ही पढ़ा जा सकता है। फिर भी मैंने जो लिखा वो सभी को बताना चाह रहा हूँ क्योंकि गुरुजी जन-जन की श्रद्धा के आचार्यश्री हैं, उनको हर कोई पूरा जानना चाहता है।

## ❑ दृढ़ निश्चयी आचार्यश्री जी–

वर्ष २०२३ का चातुर्मास आचार्यश्री जी के साथ निर्यापक मुनि श्री प्रसादसागरजी, मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी और मैं (मुनि निरामयसागर) का श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र चन्द्रगिरि डोंगरगढ़ (छ.ग.) में सानन्द सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल भव्य पिच्छिका परिवर्तन कर अनियत विहारी गुरुवर ने दोपहर में अनियत विहार कर दिया। रास्ते में बोले तिल्दा-नेवरा, रायपुर के मार्ग पर चलना है।

प्रतिदिन १०-११ किलोमीटर सुबह-मध्याह्न में विहार करके खैरागढ़ (छ.ग.) पहुँचे। वहाँ पर आचार्य गुरुदेव का स्वास्थ्य बिगड़ गया। आहार के बाद हम तीनों मुनियों के निवेदन पर उस दिन विहार नहीं किया। हम लोगों ने दूसरे दिन प्रातः आवश्यकों से निवृत्त होकर आचार्यश्री जी से पुनः निवेदन किया कि अभी मात्र ५० किलो मीटर ही आए हैं अतः वापस चन्द्रगिरि लौट चलें। आगे १०० किलोमीटर से भी ज्यादा है, स्वास्थ्य भी अनुकूल नहीं है किन्तु दृढ़ निश्चयी गुरुवर ने धीरे-धीरे विहार कर ८-१० दिनों में मंजिल पा-ली। तिल्दा-नेवरा (रायपुर-छ.ग.) में गुरुजी के आशीर्वाद से बने पाषाण निर्मित जिनालय के पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में सान्निध्य प्रदान किया। दिनांक ९ से १५ दिसम्बर, २०२३ तक महोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ।

## ❑ गुरुदेव की अस्वस्थता का कारण पकड़ में आया–

तिल्दा-नेवरा में तेज ठण्ड के कारण आचार्यश्री का स्वास्थ्य बिगड़ता ही चला गया। सागर (म.प्र.) से वैद्य अनिल सिंघई जी अपने साथ भाग्योदय तीर्थ अस्पताल की टीम लेकर आए। उन्होंने सोनोग्राफी, ई.सी.जी. मशीन से चैकअप करने की आचार्यश्री से अनुमति मांगी तो गुरुदेव ने इंकार कर दिया। वैद्य एवं डॉक्टरों ने स्पष्ट किया कि इससे आपको एवं किसी भी जीव को कोई हानि नहीं है। मात्र बाहर से चैकअप होगा। बमुश्किल सभी की बात मानी और चैकअप की अनुमति प्रदान की।

चैकअप होने के बाद डॉक्टर और वैद्यों ने बताया कि शरीर के सभी अवयव सही हैं, कहीं कोई खराबी नहीं है। बस आँखों में पीलापन दिख रहा है, अतः पीलिया रोग हो गया है। आचार्यश्री को बता दिया, वैद्य ने कहा दवा से ठीक हो जायेगा तो आचार्यश्री बोले–''दवा भी शुद्ध होना चाहिए।'' वैद्य अनिल सिंघई जी बोले मैं जानता हूँ। उनकी औषधि से कुछ ही दिनों में स्वास्थ ठीक हो गया। आहार चर्या भी व्यवस्थित हो गई।

पञ्चकल्याणक समापन के दूसरे दिन मुझे बुलाकर बोले–''रायपुर वाले रास्ते से चलना है'' और दोपहर में विहार कर दिया। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में पाषाण का जिनालय बनाने हेतु वहाँ की दिगम्बर जैन समाज ने आचार्यश्री के ससंघ सान्निध्य में शिलान्यास करवाया। आचार्यश्री जी की प्रेरणा-आशीर्वाद से छत्तीसगढ़ में अनेकों स्थानों पर हजारों वर्षों तक दिगम्बर जैन संस्कृति का परचम फहराया। वहाँ से आगे विहार कर राजनांदगाँव पहुँचे, वहाँ पर समाज के प्रतिनिधियों ने बताया कि यहाँ पर मंदिर जीर्ण-शीर्ण हो गया है और पानी के कारण छत के नीचे नमी आ रही है तब आचार्यश्री जी ने कहा–''आर.सी.सी. का नहीं पाषाण से निर्मित करना चाहिए जो हजार वर्षों तक चले।'' तब समाज-कमेटी के निवेदन पर आचार्यश्री ने आशीर्वाद दिया और गुरु सान्निध्य में ही शिलान्यास हुआ। फिर विहार कर गुरुदेव २६ दिसम्बर, २०२३ को चन्द्रगिरि तीर्थक्षेत्र डोंगरगढ़ (छ.ग.) पहुँच गए।

रायपुर (छ.ग.) में पाषाण मंदिर का शिलान्यास में सान्निध्य प्रदान करते हुए आचार्य श्री

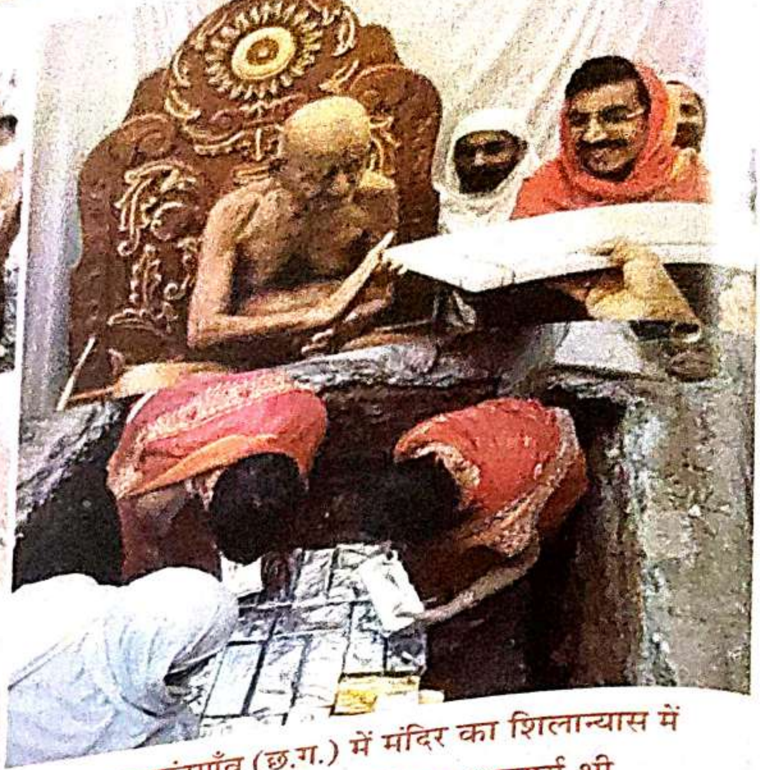

राजनांदगाँव (छ.ग.) में मंदिर का शिलान्यास में सान्निध्य प्रदान करते हुए आचार्य श्री

## ❑ हर पल गुरुमह को याद करते—

तिल्दा–नेवरा से विहार होते ही आचार्यश्री ने आहार में मात्र दलिया, दाल लेना प्रारम्भ कर दिया, तो हमने कहा—आचार्यश्री मात्र दलिया लेने से तो कमजोरी आ जाएगी, तो बोले—''गुरुजी (आचार्य ज्ञानसागरजी) ने अंतिम ७–८ वर्षों तक सिर्फ दलिया ही लिया था। यह उनका प्रिय आहार था। उनके अनुकरण से ही सब ठीक होने वाला है।'' चन्द्रगिरि पहुँचने के बाद वैद्यों के कहने पर रोटी शुरू की।

आचार्य ज्ञानसागरजी की समाधि को याद करते हुए आचार्यश्री

एक दिन ब्र. रौनक शहपुरा (भिटौनी) ने आचार्यश्री जी से पूछा कि ५५ वर्षों के मोक्षमार्ग में ऐसी कौन सी घटना है जो अभी तक आपके हृदय पटल पर अंकित है? जैसे कुण्डलपुर के बड़े बाबा का स्थानान्तरण होना या एक साथ ५८ आर्यिकाओं की दीक्षा या प्रतिभास्थली का खुलना या जेलों में हथकरघा खुलना आदि कई प्रसंग उपस्थित किए, सुनकर आचार्यश्री बोले—''गुरु की समाधि'' अंतिम समय तक गुरु की समाधि को याद करते रहे।

## ❑ आचार्यश्री जी ने सल्लेखना पर दिया विशेष चिन्तन—

चन्द्रगिरि पहुँचने के दूसरे दिन २७ दिसम्बर, २०२३ दिन बुधवार को सुबह आचार्य भक्ति के बाद आचार्यश्री जी ने सल्लेखना पर अपना चिन्तन हम सबको बताया—''आगम में सल्लेखना दो प्रकार की कही गयी है। काय सल्लेखना

और कषाय सल्लेखना। जिसमें कषाय सल्लेखना की प्रमुखता होती है। कषायों को दूर करने के लिए ही काय सल्लेखना का सहारा लिया जाता है। इस मार्ग में काय को पुष्ट नहीं करना है। हमारे मन में कषाय के प्रति जो भाव है वह मोह भाव है सर्वप्रथम उसको दूर करना है। काय के प्रति ममत्व न रहे। जिस प्रकार काय सल्लेखना में भोजन-पानी बाधक हैं उसी प्रकार कषाय सल्लेखना में संघ का मोह भी बाधक है। मैं भक्त प्रत्याख्यान का एक अर्थ—भक्तों का शिष्यों का त्याग से लेता हूँ। आगम में एक गाथा आती है उसमें बताया है कि भात को खाने से पहले उसे इस प्रकार तैयार किया जाता है, पहले धान को चक्की से दलना पड़ता है, जिससे उसके ऊपर का छिलका निकल जाता है, इसके बाद चावल की लालिमा को अलग करने के लिए लोहे के मूसल से कूटा जाता है, जिससे उसकी ललाई वाला महीन छिलका भी निकल जाता है। इसमें जो धान का पीला छिलका है यह तो हुआ काय और भीतर जो ललाई वाला छिलका होता है वह हुआ कषाय एवं चावल जो है उसको उबाल कर भात बनता है वह हुआ शुद्ध आत्म तत्त्व।

चन्द्रगिरि, २७ दिसम्बर २०२३ को सल्लेखना पर प्रवचन देते हुए

प्रथम हटे छिलका तभी लाली हटती भ्रात।
पाक कार्य फिर सफल हो लो तब मुख में भात॥

इस तरह आचार्यश्री का चिन्तन सुन, आचार्यश्री की साधना की ओर ध्यान गया तो लगा कि आचार्यश्री की काय सल्लेखना तो चल ही रही है। जब गुरुमह ज्ञानसागरजी के पास आए थे तब कुछ दिन बाद से ही आजीवन नमक, गुड़, शक्कर का त्याग कर दिया था। आचार्य गुरुमह ज्ञानसागरजी की समाधि के दिन सभी प्रकार के सूखे मेवे का त्याग कर दिया था, मात्र छुआरा रखा था। आचार्यश्रीजी ने अपने गुरु के समय से ही घी का भी त्याग किया था, किन्तु ८-९ वर्ष बाद नेत्रों के देखने की क्षमता में कमी आने से एवं अध्यापन कार्य में बाधा आने से घी शुरू किया और उसके बदले में सभी हरे फलों का त्याग कर दिया था। सब्जियों में मात्र लौकी, टमाटर, आँवला को रखा था। फिर १९९३ से पूर्णतः हरी का त्याग कर दिया, मात्र सूखा आँवला रखा था। सन् २०१६ से दूध का भी त्याग कर दिया था। आचार्यश्री हम लोगों को सदा कहते थे कि "साधु तप बढ़ावन के लिए आहार लेते हैं।" शरीर के प्रति उनका ममत्व तो दूर-दूर तक नहीं था।

## ❑ आचार्यश्री के रोग की पुष्टि किन्तु भयभीत नहीं—

१ जनवरी, २०२४ को आचार्यश्री ने केशलोंच किया। दूसरे दिन गुरुजी की पारणा प्रतिभास्थली की दीदियों ने कराई, उन्हें पड़गाहन मिला। ५ जनवरी की रात में अचानक आचार्यश्री जी का पेट गड़बड़ हो गया और अपानवायु निकल नहीं पा रही थी। दूसरे दिन सुबह कमरे के बाहर निकले तो हम महाराजों ने गुरुजी की आँखें पीली देखी तो गुरुदेव को अवगत कराया किन्तु निर्भयता से गुरुदेव बोले—"चन्द्रप्रभसागरजी की भी तो पीली दिख रही है।" तुरन्त

ही मुनि श्री प्रसादसागरजी ने वैद्यों से सम्पर्क किया और उन्हें आचार्यश्री की यथास्थिति बताई, पूर्णायु के वैद्य स्वप्निल सिंघई और वैद्य गौरव शाह ने आचार्यश्री जी की अँगुलियों के नाखून चेक करने को कहा, देखने पर पीलापन कहीं भी नहीं दिखा किन्तु दीर्घ शंका में मल सफेद रंग का होने से पीलिया की पुष्टि हुई।

वैद्य स्वप्निल सिंघई एवं वैद्य गौरव शाह पूर्णायु आयुर्वेदिक अस्पताल जबलपुर से आए तो आचार्यश्री उनसे बोले–''यह शरीर परेशान करने लगा है इसीलिए इसको सबक सिखाना चाहिए'' और उस दिन आचार्यश्री जी ने अनशन–उपवास कर लिया। आहार का समय आया हम लोगों ने शुद्धि के लिए निवेदन किया तो मना कर दिया, हम लोगों ने एवं वैद्यों ने काफी आग्रह किया कि जल मात्र ले लीजिए किन्तु गुरुदेव अटल रहे। आहार हेतु उठे नहीं।

❑ **आचार्यश्री जी की सूक्ष्म अहिंसा दृष्टि और निर्भय व्रत पालन–**

रायपुर के श्रीमान् विनोद बड़जात्या जी रायपुर से एवं भाग्योदय तीर्थ सागर से छोटी–बड़ी दो सोनोग्राफी मशीनें आ गईं दोनों मशीनों से चेकअप कराने की अनुमति बड़ी मुश्किल से प्रदान की। आहार के पहले फिर आहार के बाद जाँच हुई, जिसमें स्पष्ट हो गया कि पित्ताशय (गॉल ब्लेडर) में से पित्त आगे नहीं बढ़ पा रहा है। कहीं अवरोध आ रहा है। इस कारण पित्ताशय की थैली में सूजन आ रही है। अवरोध कहाँ पर क्या है? इसकी जाँच के लिए डॉक्टरों एवं वैद्यों ने सी. टी. स्केन जाँच की सलाह दी, किन्तु आचार्यश्री ने आगे किसी भी प्रकार की मशीनी जाँच के लिए अनुमति नहीं दी। तब डॉक्टरों–वैद्यों नें खून की जाँच के लिए अनुमति चाही तो आचार्यश्री जी ने बड़ी ही निर्भीकता से यह कहते हुए मनाकर दिया कि ''जब केशलोंच करते हैं उसमें बाल जड़ से उखड़ते हैं उसमें खूनादि के निकलने से एक उपवास का प्रायश्चित करना होता है, तो फिर खून की जाँच का हम क्या प्रायश्चित लेंगे?'' आचार्यश्री जी के साथ रहते हुए हमने हमेशा यह निरीक्षण किया कि आचार्यश्री कोई भी कार्य करने से पूर्व बहुत सूक्ष्म दृष्टि से विचार करते हैं।

❑ **आचार्यश्री की दृष्टि में आयुर्वेद और त्याग का दृढ़ संकल्प–**

आचार्यश्री का आयुर्वेद के प्रति जो शुद्ध विश्वास था कि नाड़ी परीक्षण से ही रोग का निदान निकाला जाना चाहिए, इसके लिए अच्छे नाड़ीविज्ञ वैद्यों को खोजा गया और दिखाया गया। जिनमें पूना से वैद्य समीर जमदग्नि जी एवं दिलीप गाडगिलजी, अहमदाबाद से वैद्य तपनकुमारजी, ग्वालियर से वैद्य अनुज जैन, सागर से वैद्य अनिल सिंघई जी, टीकमगढ़ से वैद्य सुरेन्द्रजी पठा, भोपाल से प्रशांत जी तिवारी, भीलवाड़ा रायला से वैद्य हंसराज चौधरी जी के द्वारा पीलिया (पाण्डु) रोग का निदान हो जाने के बाद उनके द्वारा तैयार की गई औषधि को आहार में देना प्रारम्भ किया गया। साथ ही वैद्यों ने पथ्य के रूप में मधुररस स्वरूपी गन्ने का रस एवं देशी गाय का दूध लेने को कहा किन्तु गुरुदेव का गन्ने के रस का त्याग सन् १९६७ से ही था और दूध का त्याग २०१६ कोनी जी (म.प्र.) में कर दिया था। इसलिए गुरुदेव ने वैद्यों एवं हम सभी को कहा–''देखो! जब तक मेरा शरीर साथ देगा मैं औषध और आहार लूँगा लेकिन! आहार में वो पथ्य नहीं लूँगा जिसका मेरा संकल्प पूर्वक त्याग है और जब लगेगा कि शरीर अब काम नहीं कर रहा है, उस समय औषध तथा आहार आदि सभी का त्याग कर दूँगा। वैद्यों की ओर देखकर बोले–आपके लिए जौ, ज्वार, बाजरा, सूखा नारियल आदि का विकल्प खुला हुआ है।'' तब वैद्यगण बोले–जो तत्त्व गाय के दूध में होता है वह अन्य दूधों में नहीं होता, गाय का दूध पित्तशामक एवं पित्त को बाहर निकालने में सहायक होता है। तब

## आचार्यश्री जी के स्वास्थ्य परीक्षण करने आये भारत के विभिन्न स्थानों से आयुर्वेद वैद्यराज

वैद्य समीर जमदग्नि जी, पुणे (महा.)

दिलीप गाडगिलजी, पुणे (महा.)

वैद्य तपनकुमारजी, अहमदाबाद (गुज.)

वैद्य सुरेन्द्रजी पठा, टीकमगढ़ (म.प्र.)

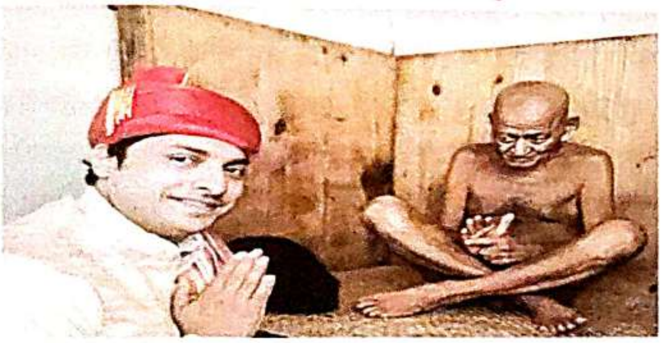

वैद्य प्रशांत तिवारी, भोपाल (म.प्र.)

वैद्य अनुज जैन, ग्वालियर (म.प्र.)

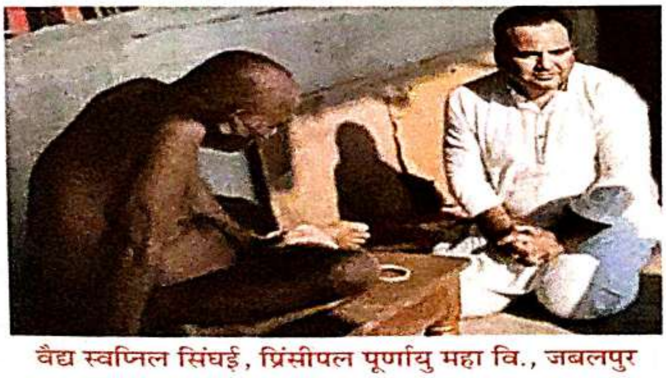

वैद्य स्वप्निल सिंघई, प्रिंसीपल पूर्णायु महा वि., जबलपुर

वैद्य गौरव शाह, पूर्णायु, जबलपुर (म.प्र.)

आचार्यश्री बोले–''५६ वर्षों से एवं ८ वर्षों से जिस त्याग की साधना चल रही है उस संकल्प को तोड़ना ठीक नहीं है और यह भी जरूरी नहीं है कि ये पथ्य लेने पर यह रोग ठीक हो ही जाए।'' गुरुदेव की दृढ़ इच्छा शक्ति की निर्भीक घोषणा सुनकर हम सभी अवाक् रह गए।

इस प्रकार गुरुदेव के साथ हम तीनों मुनि शिष्य साथ होकर भी, उनको हम लोगों से कोई राग-स्नेह नहीं था। यही कारण है कि हम लोगों के निवेदन को दर किनार करते हुए अपनी आत्मसाधना में किसी भी प्रकार की कमी नहीं की। यह उनकी आत्मसंस्कारकाल की परिणति थी, जो शरीर की उपेक्षा करते हुए सल्लेखना काल की ओर बढ़ते हुए मात्र आत्म स्वभाव में लीनता को प्रकट कर रही थी।

### पीलिया की तीव्रता और रातों में ली करवटें–

दिन-प्रतिदिन पीलिया बढ़ता ही गया तो वेदना भी बढ़ती गई। अशोक जी पाटनी (आर. के. मार्बल), राजा भाई सूरत, प्रभात जी मुम्बई, सुधीर जी कागजी दिल्ली आदि अच्छे-अच्छे वैद्य-डॉक्टर लेकर आए तब हमने स्पेशलिस्ट डॉक्टरों से पूछा कि आखिर ऐसा क्या हो गया है गुरुदेव को कि उनका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता ही जा रहा है, तो उन्होंने कहा कि बिना सी.टी.स्केन के हम कुछ भी नहीं कह सकते। हमने कहा–पेट में अवरोध किस चीज का हो सकता है तो बोले–अवरोध तो स्टोन, शिष्ट या गाँठ के रूप में हो सकता है। हमने पूछा कैंसर के क्या लक्षण होते हैं? तो डॉक्टर बोले–पेट में यदि गाँठ हो तो उस व्यक्ति को असीम वेदना होती है और गाँठ वाले स्थान पर तीव्र दर्द होता है। वह उछलता है। चैन से बैठ भी नहीं सकता। तब हमने कहा–आचार्यश्री को पेट में थोड़ा भी दर्द नहीं होता है। दूसरे डॉक्टर साहब से पूछा हमने पीलिया रोग के क्या लक्षण होते हैं? उन्होंने बताया ७५ वर्ष की आयु से ऊपर वालों को एग्रेसिव पीलिया प्रायः होता है यह तेजी से बढ़ता है। बोले यही आचार्यश्री जी को हो गया है। भीलवाड़ा के हंसराज जी चौधरी जी ने भी यही कहा था कि गुरु महाराज को पीलिया रोग हो गया है। और कोई दूसरा रोग नहीं है इसलिए पीलिया रोग के निवारण हेतु औषधि चला रहे थे किन्तु उनके परामर्श, इलाज, गहन प्रयोग से भी कोई विशेष फायदा न हुआ। कुछ लोग कहते हैं कि – झाड़ा लगाने से, उतारा करवाने से पीलिया ठीक हो जाता है, तो उनसे हम लोगों ने कहा करो, आपको बाहर से जो योग्य प्रतीत होता है उसे आप कर सकते हैं बस आचार्यश्री को पता नहीं चलना चाहिए, उन्होंने वैसा ही किया, किन्तु बाह्य उपचार से भी रोग शान्त न हुआ–कमी न आयी। सभी डॉक्टरों-वैद्यों को आचार्यश्री ने पर्याप्त समय दिया फिर भी निर्दयी कर्मों से सभी हार गए।

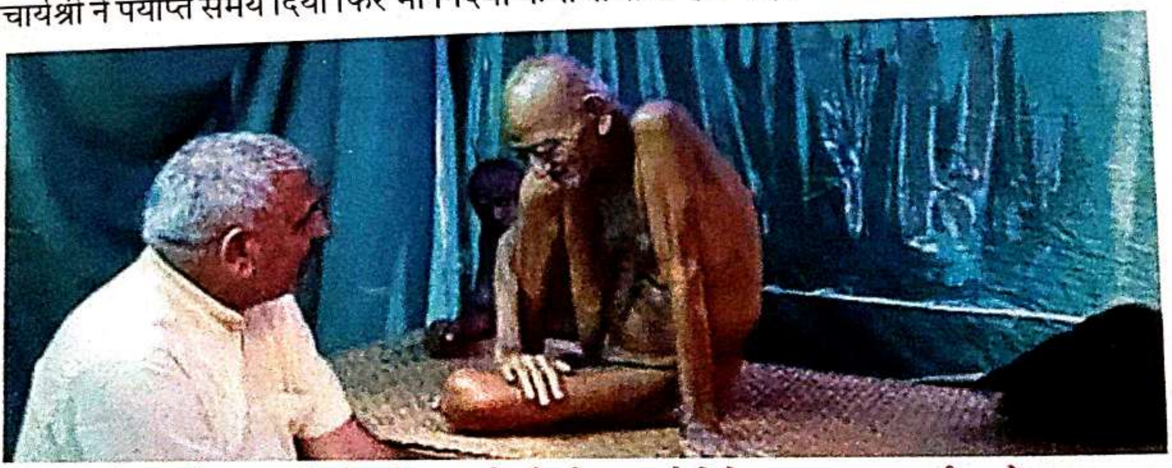

रायला (भीलवाड़ा) के वैद्य हंसराज जी चौधरी आचार्यश्री के स्वास्थ्य पर चर्चा करते हुए

प्रतिदिन शाम ४ बजे सूर्य अस्ताचल की ओर प्रयाण करता और आचार्यश्री की देह में दाह उत्पन्न होने लगती जो की रात्रि २:००–२:३० बजे तक निरंतर होती, उससे शरीर में खुजली चलती। तब तक करवटें लेते रहते किन्तु गुरुदेव भयंकर पीड़ा के बावजूद मुख से कुछ न कहते और प्रत्येक करवट से पूर्व मयूरपंखों की पिच्छिका से सूक्ष्म जीव रक्षार्थ परिमार्जन करते।

प्रातःकाल एवं दिन में वैद्यों के द्वारा आयुर्वेदिक शुद्ध लेप तैयार करके लगाया जाता। उससे कुछ राहत मिलती, किन्तु स्थाई नहीं। रोग की तीव्रता के कारण पित्त बढ़ता गया, पित्त बढ़ने से भूख में कमी आती गई, भूख में कमी से आहार कम होता चला गया...फलस्वरूप अत्यधिक कमजोरी ने जकड़ लिया।

- **निर्यापक श्रमण योगसागरजी आदि साधुओं का आगमन–**

आचार्य भगवन् के गिरते स्वास्थ को देखते हुए हम तीनों साधु तो चिन्तित थे ही किन्तु आचार्यश्री के समस्त शिष्य-शिष्यायें भी चिन्तित रहते थे और सभी अपने-अपने स्थान पर गुरु आज्ञा से बंधे हुए थे इसलिए दूर से ही मानसिक वैय्यावृत्त्य-भाव वैय्यावृत्त्य करते रहे। परमपूज्य निर्यापक श्रमण योगसागरजी महाराज हिंगोली, महाराष्ट्र में विराजमान थे। उन्होंने जैसे ही गुरुदेव की गंभीर बिमारी के बारे में सुना तो वो गुरु की वैय्यावृत्त्य करने हेतु लगभग ६००-७०० किलोमीटर दूर से चलकर बहुत ही जल्दी आ गए। उनके साथ में मुनि श्री पूज्यसागरजी, मुनि श्री निस्सीमसागरजी एवं ऐलक श्री धैर्यसागर ने भी ३ फरवरी, २०२४ को चन्द्रगिरि तीर्थक्षेत्र डोंगरगढ़ में दोपहर में प्रवेश किया। सभी ने आचार्यश्रीजी की त्रयभक्ति पूर्वक वन्दना की, आचार्यश्री ने सभी को देखा आशीर्वाद दिया कुछ वार्तालाप भी किया।

- **अस्वस्थता-अशक्तता के बावजूद साधना समयबद्ध–**

अस्वस्थता एवं दौर्बल्यता के साथ वेदना होने के बावजूद भी गुरुजी ने अपनी षट् आवश्यक साधना के पालन में किसी भी प्रकार की प्रमाद चर्या नहीं की, पूर्ववत् समयबद्ध चर्या ही करते रहे, हम तीनों ही मुनिराज उनके साथ ही आवश्यक करते और उनके कक्ष में ही शयन करते थे।

आचार्यश्री ३:०० बजे रात्रि में ब्रह्म प्रहर में उठ जाते थे, उनके साथ हम लोग भी उठकर प्रतिक्रमण करते, फिर सामायिक करते, उसके बाद सामायिक पाठ पढ़ते, फिर नंदीश्वर भक्ति करते और उसके बाद स्वयंभू स्तोत्र के माध्यम से चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति करते। इसके बाद आचार्य वन्दना करते। फिर कक्ष के बाहर आकर देव वन्दना करते। ये सब क्रियायें आचार्यश्री जी के साथ ही हम कुछ साधु करते। यह क्रम तीनों समय में निश्चित था जो कि आचार्यश्री जी का वर्षों से चल रहा था।

हमने बड़ी सूक्ष्मता से देखा कि जैसे-जैसे रोग की वेदना बढ़ती गई उनकी साधना भी बढ़ती गई, बोलना बिल्कुल कम कर दिया था। एकान्त में ही उनका समय बीतता था। कई बार आचार्यश्री जी ने कहा कि मुझे घेरकर खड़े हो जाते हो, मुझे अकेला छोड़ दो।

आचार्यश्री जी अपनी पीड़ा को बाँटना नहीं चाहते थे। एक दिन मैं सिर की वैय्यावृत्त्य कर रहा था, मैंने कहा आचार्यश्री जी आपको इतनी पीड़ा हो रही है, कुछ आपकी पीड़ा हम लोगों को मिल जाए। तब गुरुदेव बोले–''ये पूर्व भवों में लिखी गयी वसीयत है, जायदाद है, ये किसी को नहीं मिल सकती, पुराना लेखा-जोखा अब उदय में आ रहा है।'' मैंने कहा ५०-५५ वर्षों की साधना से ये कर्म दूर हो जाना चाहिए थे। आचार्यश्री जी बोले–''विपाकविचय

धर्मध्यान का चिंतन करो। उसका चिंतन करने सब स्थिति समझ में आ जाती है, इतने वर्षों की साधना का ही ये प्रभाव है कि इस तीव्र वेदना को मैं समता पूर्वक सहन कर पा रहा हूँ। श्रावक ऐसी तीव्र वेदना में या तो अच्छे से अच्छा इलाज करवाते या अन्य उपाय से वेदना को दूर करने की सोचते हैं।'' गुरुदेव का लिखा एक हाइकू स्मरण में आया—

''साधना क्या है?
पीड़ा पी के तो देखो
हल्ला न करो।''

हम आँखों में आँसू लिए गुरुदेव की पीड़ा को देख ही सकते थे किन्तु कुछ कर नहीं सकते थे। धन्य है उनकी संकल्प शक्ति, धन्य है उनका विपाक विचय धर्मध्यान।

## ❑ आचार्यश्री के दर्शन का समय निश्चित क्यों किया गया—

आचार्यश्री जी की शारीरिक स्थिति निरन्तर गिरती ही जा रही थी। अत्यधिक कमजोरी आ जाने के कारण चलने, बैठने, खड़े होने में बहुत अधिक परेशानी होने लगी, तो श्रावक-श्रविकाओं के लिए दर्शन लाभ का समय निश्चित कर दिया गया—सुबह देववन्दना के समय आचार्यश्री भगवान के दर्शन करते तब, आहार चर्या के पूर्व प्रभु दर्शन करते तब, शाम को आचार्य भक्ति के बाद देवदर्शन करते वक्त खिड़कियाँ एवं चैनलगेट खोल दिया जाता, जिससे सभी लोग बाहर से गुरु दर्शन पा सकें। शाम को ४ से ५ बजे के बीच में करुणामूर्ति आचार्यश्री शारीरिक वेदना के बावजूद स्वयं ही कक्ष से बाहर चलकर आते और चैनलद्वार पर खड़े होकर, बेसब्री से इंतजार करते सुबह १० बजे से बैठे हजारों नर-नारी, बाल-गोपाल, युवा, युवतियाँ, जैन-अजैन, दूर-दराजों से आए भक्तों को गुरुदेव सब ओर देखते हुए भरपूर आशीर्वाद देते।

पीलिया रोग चरम स्तर की ओर बढ़ता जा रहा था, जिससे कमजोरी भी बढ़ती जा रही थी। रात में नींद कहीं घूमने चली जाती। ऐसी स्थिति में आचार्यश्री को तेज आवाजें सुनना मुश्किल हो रहा था और आचार्यश्री जी के गिरते स्वास्थ्य के समाचार से देश-भर में खलबली मची हुई थी, इस कारण रोजाना दर्शनार्थियों की भीड़ का सुबह ५:०० बजे से गेट पर शोरगुल शुरू हो जाता था। जो शाम को अँधेरा होने तक रहता। बढ़ती भीड़ को संभालना बहुत मुश्किल हो रहा था, ऐसे में आम श्रद्धालुओं का सन्तशाला में प्रवेश बन्द करना पड़ा।

## ❑ एक श्रावक के निमित्त से संघस्थ साधुओं के आगमन पर लगी रोक—

६ फरवरी, २०२४ को दमोह से आये एक श्रावक को अन्दर प्रवेश मिला, उसके निमित्त से गुरुदेव को कुछ जानकारी लगी कि संघस्थ साधुओं का डोंगरगढ़ की ओर विहार हो रहा है, तब गुरुदेव ने शाम को मुझे कहा—''योगसागरजी कहाँ है?'' हमने कहा देवदर्शन करने गए हैं। उनको मैं बुलाकर लाया, आचार्यश्री जी ने योगसागरजी महाराज से कहा—''मुझे विकल्प न करायें यहाँ पर कोई भी नहीं आना चाहिए। मुझे शान्ति से आत्म साधना करने दीजिए। कुण्डलपुर में सभी को बुला चुका हूँ, सभी को व्यवस्थित कर दिया है, सभी आत्म स्वभाव की साधना करें, यहाँ कोई भी आर्यिका संघ या मुनि संघ नहीं आना चाहिए।''

तब योगसागरजी महाराज ने निवेदन किया कि आपके गिरते हुए स्वास्थ के समाचार सुन सभी चिन्तित हो गए है इसलिए सभी इस ओर विहार कर पास में आकर रुक जायेंगे और जब आपका संकेत मिल जाएगा तो सभी शीघ्र

उपस्थित हो जायेंगे। यह सुनकर आचार्यश्री जी ने कहा–''सबको पर्याप्त समय दे दिया है, अब मुझे अपना भी तो देखना है, यहाँ कोई भी नहीं आना चाहिए।'' निर्यापक मुनिराज योगसागरजी ने कहा, जी! आपकी आज्ञा का पालन होगा। महाराज चले गए, हमने गुरुदेव को स्वयम्भू स्तोत्र सुनाना शुरू कर दिया। निर्यापक श्रमण योगसागरजी ने ब्रह्मचारी जी के माध्यम से सर्वत्र समाचार करा दिया।

आत्मसाधक गुरुदेव पूर्णतः एकान्त, शान्त वातावरण में एकत्व-विभक्त का अनुभव करते हुए निर्विकल्प समाधि में लीन रहना चाहते थे।

### ❑ आचार्यश्री की आहार चर्या का स्थान निश्चित किया गया–

गुरुदेव की रुग्णता ज्यों-ज्यों बढ़ती जा रही थी त्यों-त्यों शारीरिक दुर्बलता भी बढ़ती जा रही थी। तिल्दा-नेवरा से जब लौटकर आए थे तो तब गुरुदेव आहार के लिए मंदिर से निकलते थे और धर्मशालाओं के कक्षों में श्रावकों के चौकों में आहार हेतु जाते थे किन्तु जब उन्हें चलने में परेशानी होने लगी तो हम मुनिराजों ने आहार के लिए २८ जनवरी से संतशाला के ४ नं. कक्ष को निश्चित कर दिया और वहाँ पर प्रतिभास्थली की बड़ी बहनों के द्वारा पथ्य एवं औषधि तैयार करने हेतु निश्चित कर दिया। प्रतिदिन पाँच परिवारों को संतशाला के अन्दर पड़गाहन करने हेतु चयन प्रक्रिया से सौभाग्य दिया जाता। जिनको पड़गाहन मिलता उनको कक्ष के अन्दर आहारदान में सहयोग करने का अवसर मिलता था। मंदिर जी से एक चल प्रतिमा जी को सन्तभवन के हॉल में विराजमान किया जाता था, जिनके दर्शन आचार्यश्री जी करते फिर आहार पर निकलते थे।

२८ जनवरी से संतशाला के कक्ष नं. ४ आहार प्रारम्भ हुए

### ❑ आचार्यश्री जी की सेवा करने वाले सौभाग्यशाली–

आचार्यश्री जी को हम लोग एक क्षण भी अकेला नहीं छोड़ते थे, हाँ वो एकान्त चाहते, तो थोड़ी दूरी पर रहते। हम तीनों मुनिराज में से कोई न कोई रहता। साथ ही ब्र. विनय, मधुर (देवरी), पूर्णायु आयुर्वेदिक चिकित्सालय के वैद्य स्वप्निल सिंघई (प्रिंसिपल) और वैद्य गौरव शाह २४ घण्टे उपस्थित रहकर सेवायें दे रहे थे। बाद में ३ फरवरी से निर्यापक श्रमण योगसागरजी, मुनि श्री पूज्यसागरजी, मुनि श्री निस्सीमसागरजी, ऐलक धैर्यसागरजी सभी आचार्यश्री जी की सेवा में मन-वचन-काय से संलग्न हो गए। आचार्यश्री ने धीरे-धीरे बोलना बिल्कुल कम कर दिया था। जब बहुत आवश्यक हो तो ही बोलते थे।

### ❑ औत्तमार्थिक काल-अंतिम बड़ा प्रतिक्रमण–

८ फरवरी को चतुर्दशी थी, सामायिक के बाद दोपहर में २:३० बजे आचार्यश्री बोले–''चतुर्दशी है आज बड़ा प्रतिक्रमण करना है, सुनाओ'' यह सुनकर मैं दंग रह गया, आचार्यश्री जी पहले कभी ऐसा नहीं बोले थे–''आज बड़ा प्रतिक्रमण करना है,'' इसका मायना तो बाद में समझ में आया जब निर्यापक श्रमण योगसागरजी को गुरुजी ने बताया था कि ''हमने कल बड़ा प्रतिक्रमण करके सब कुछ त्याग दिया है–संघ, आचार्य पद और मेरी संकल्प पूर्वक

सल्लेखना चल रही है।'' आचार्यश्री जी की २ घंटे तक बैठने की स्थिति नहीं थी, उन्होंने लेटे-लेटे प्रतिक्रमण किया, मैं और मुनि निस्सीमसागर जी सुनाते रहे, गुरुदेव बड़ी ही सावधानी से सुन रहे थे, जहाँ भी नमस्कार करना होता वहाँ नमस्कार करते, जहाँ कायोत्सर्ग आता तो कायोत्सर्ग करते, निंदा आलोचना के भाव आते तो सिर हिलाते हुए हाथ जोड़े हुए मस्तक पर लगाते, बार-बार खिन्नता का भाव प्रकट करते हुए हाथ के पंजे फैलाते, सिर हिलाते। पूरे मनोयोग से उन्होंने प्रतिक्रमण किया। मुख से धीरे-धीरे ''तस्स मिच्छामि दुक्कडं'' बोलते। बीच में दो-तीन बार हाथ जोड़े हुए ''हे प्रभु! हे गुरुदेव! तस्स मिच्छामि दुक्कडं'' ऐसा बोलकर भाव-विह्वल हो जाते थे। पूर्ण जागृति के साथ प्रतिक्रमण सुना और किया। मुझे नहीं मालूम था कि यह गुरुजी का अंतिम बड़ा प्रतिक्रमण औत्तमार्थिक प्रतिक्रमण है। यहाँ से शुरू किया गुरुजी ने षष्ठकाल-औत्तमार्थिक काल को जीना।

❑ **अंतिम समय तक गुरु आज्ञा पालने का सुख—**

मुझे गुरु जी ने अपने साथ रखा और मुझे समाधि काल में सहयोग योग्य समझा, यह मेरा परम सौभाग्य है। एक दिन गुरु जी ने मुझे कहा मेरी अशक्त स्थिति में प्रतिक्रमण-सामायिक से पूर्व स्वयंभू स्तोत्र, नंदीश्वर भक्ति, सामायिक के बाद सामायिक पाठ सुनाना न भूलना, तीनों समय ध्यान रखना। यह कर्तव्य हमने पूर्णतः निभाया, अंतिम समय तक गुरु आज्ञा पालने का सुख जीवन भर बना रहेगा। रात्रि में गुरुदेव के कक्ष में—मैं, मुनि श्री प्रसादसागरजी, मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी, मुनि श्री निस्सीमसागरजी रहते थे, दरवाजे के पास मधुर (देवरी) विश्राम करता था। जब भी—कैसी भी आवश्यकता पर हम लोग यथायोग्य वैय्यावृत्त्य करते थे।

❑ **श्रावकों को अंतिम दर्शन—**

१४ फरवरी, २०२४ को आचार्यश्री जी शाम को ५ बजे देवदर्शन के लिए दो-तीन बार निवेदन किया गया थोड़ी देर बाद उठे, तो बोले—''दर्शन'', धीरे-धीरे चलकर बाहर हाल में विराजमान प्रतिमा जी की दर्शन विधि पूर्ण की फिर चैनलगेट की ओर देखा और उठकर चलने लगे तो लड़खड़ाये, तत्काल हम लोगों ने संभाला और एक प्लास्टिक की कुर्सी पर बैठा दिया तथा दरवाजा खोल दिया। गुरुदेव ने दोनों हाथों में पिच्छिका लेकर सिर को लगाए रखा था। हजारों नर-नारियों, बच्चों, ब्रह्मचारणियों, प्रतिभास्थली की बहनों ने दर्शन किये। भीड़ बेकाबू होने लगी, बच्चे-बच्चियाँ दब गए, तो कहीं कोई हादसा न घट जाए इसलिए तत्काल दरवाजा बंद कर दिया गया।

❑ **अंतिम तीन दिन दर्शनार्थियों को दर्शन न मिलने का कारण—**

१५ फरवरी को आचार्यश्री जी का स्वास्थ्य अत्यधिक नाजुक हो गया था फिर गिरता ही गया। तीव्र दाह वेदना और खुजलाहट होने के कारण गुरुदेव ने पूर्व में ही बोल दिया था कि कोई भी बिना आज्ञा के अन्दर नहीं आये। दूसरा कारण आवाज के कारण उनका सिर दर्द होता था, हम लोग थोड़ी भी बातचीत करते तो आचार्यश्री को बाधा होती थी, एक दिन तो उन्होंने कहा ''आप लोग शांति बनाए रखें'' इस कारण गुरुदेव के दर्शन तीन दिन नहीं हो सके क्योंकि गुरुदेव अपनी साधना में बाधा नहीं चाहते थे और हम लोग गुरु आज्ञा से बँधे थे।

❑ **अंतिम आहार चर्या—**

१५ फरवरी, २०२४ का वह दिन जब आचार्यश्री जी ने इस जीवन का अंतिम आहार लिया। उस दिन आचार्यश्री जी का स्वास्थ्य अत्यधिक नाजुक हो चला था, इसलिए आहार के लिए जल्दी उठाया था। पड़गाहन ब्रह्मचारी एवं वैद्य

स्वप्निल सिंघई, वैद्य गौरव शाह ने किया। नवधा भक्ति से आहार दिए किन्तु आहार में मात्र तीन अंजुली पानी लिया और अंजुली छोड़ दी, बैठ गए।

❑ क्षेत्र परिवर्तन किया गया—

स्वास्थ्य में सुधार नहीं होते देख हम सभी ने निर्णय लिया कि पहले जब-जब अस्वस्थ हुए तब-तब विहार करते ही वो स्वस्थ हो गए अतः यहाँ से विहार कराके अन्यत्र ले चलें। जलाहार के बाद आचार्यश्री जी को लिटा दिया गया था तो धीरे-धीरे चटाई को उठाकर डोली पर रख दिया और १००-१५० मीटर पर स्थित अतिथि भवन के १ नं. कक्ष में ले गए। आचार्यश्री ने आँख खोली, देखते ही पूछा, ''कहाँ ले आए'', तो हम लोगों ने कहा कक्ष बदल दिया है। दोपहर में पुनः संघ में विचार-विमर्श किया गया, चारों तरफ से समाचार एवं दबाव था कि क्षेत्र छोड़ें तब हम सभी नें निर्णय लिया और डोंगरगाँव मार्ग में ४ किलोमीटर पर एक खाली पड़ा फार्म हाउस तक शाम को ले जाने की तैयारी हो गई और यह निश्चय किया गया कि कल यानी १६ फरवरी, २०२४ को आहार में वृद्धि हुई तो आगे डोंगरगाँव के लिए विहार करेंगे अन्यथा नहीं, वापस चन्द्रगिरि आ जाएँगे। दोपहर में गुरुदेव के पैरों के पंजों में हम लोगों ने घी लगाया, गुरुदेव को हल्की सी निद्रा आ गई, उसी क्षण हम लोगों ने जैसे ही चटाई सहित उठाया और डोली पर विराजमान करने लगे तब आचार्यश्री की निद्रा खुल गई, उन्होंने हाथों के इशारे से पूछा—''ये क्या कर रहे हो?'' तो निर्यापक श्रमण योगसागरजी मुनिराज ने विनयपूर्वक थोड़ा समझाया—स्थान परिवर्तन करना आवश्यक है आदि आदि, अतः मात्र ४ किलोमीटर दूर ही आपको ले जा रहे हैं और फिर जल्दी से डोली को उठाकर आगे बढ़ गए। ऐलक धैर्यसागर एवं ब्रह्मचारियों को सौभाग्य मिला डोली उठाने का। फार्म हाउस पहुँच गए, वहाँ थोड़ी वैय्यावृत्त्य हुई फिर ५ बजे आचार्यश्री के पास सामूहिक प्रतिक्रमण हुआ। फिर आचार्य भक्ति हुई। शाम को स्वयंभू स्तोत्र सुनाया फिर नंदीश्वर भक्ति सुनाई फिर सामायिक शुरू हुई, मैं एवं मुनि श्री निस्सीमसागर आचार्यश्री के पास ही सामायिक पर बैठ गए। सामायिक के बाद, सामायिक पाठ सुनाया। रात में दाह की वेदना के कारण करवटें बदलते रहे, खुजली उठती तो हम लोग सहलाते, किन्तु उन्होंने मुख से कुछ नहीं कहा।

❑ गुरुजी की पूर्णतः सावधानी-जागृति—

१६ फरवरी, २०२४ का प्रातः नई संभावनाओं को तलाशते—सूर्योदय हुआ, प्रतिदिन की तरह यथावत् आवश्यक हुए, रात्रि में ब्रह्म प्रहर में ३ बजे सामूहिक प्रतिक्रमण सुनाया, सामायिक के बाद सामायिक पाठ, नंदीश्वर भक्ति, स्वयंभू स्तोत्र सुनाया। इसके बाद सभी मुनि संघ उपस्थित हो गया, आचार्य भक्ति हुई। चन्द्रगिरि तीर्थक्षेत्र से एक चल प्रतिमा जी को लेकर ब्रह्मचारी जी आ गए। सभी ने देवदर्शन किये।

सुबह ८ बजे के करीब आचार्यश्री जी ने बैठने का प्रयास किया तो ऐलक धैर्यसागरजी ने संभाला, फिर गुरुदेव खड़े होने लगे तो धैर्यसागरजी ने मुझे आवाज दी, सभी महाराज शौच क्रिया के लिए गए हुए थे, मैं बाहर कक्ष में आहार की व्यवस्था बनवा रहा था। आवाज सुनते ही मैं अंदर गया, आचार्यश्री खड़े होकर चलने ही वाले थे हम दोनों ने सहारा दिया और उन्हें बाहर कक्ष में तखत पर बैठाया, वो शौच क्रिया के लिए बाहर जाना चाहते थे किन्तु शारीरिक स्थिति अत्यधिक नाजुक हो चुकी थी अतः हम लोगों ने निवेदन किया कि गुरुदेव अंदर ही ठीक रहेगा। अंदर ले गए वहाँ पर व्यवस्था कर दी थी, कुछ अपानवायु के साथ लघु मल—लघुशंका हुई हमने शुद्धि कर दी। सभी महाराज भी आ गए।

९ बजे के करीब हम लोगों ने गुरुदेव को निवेदन किया आहार के लिए उठने का, तो करवट ले ली कुछ नहीं बोले। फिर निर्यापक श्रमण योगसागरजी ने निवेदन किया तो पीछे देखकर बोले–''आप लोगों को शान्ति नहीं है शान्ति रखो।'' हम सभी समझ गए गुरुदेव आहार पर नहीं उठना चाहते हैं, वो शान्ति से अपना चिंतन-मनन-ध्यान करना चाहते हैं।

१०:०० बजे पुनः विनम्रता पूर्वक निवेदन किया तो आचार्यश्री ने दो अँगुली उठाकर कुछ संकेत दिया, हम लोगों ने समझा कि दूसरी बेला में उठने का संकेत दे रहे हैं, फिर सभी साधु आहार के लिए उठे, निर्यापक श्रमण श्री योगसागरजी, मुनि श्री निस्सीमसागरजी, ऐलक धैर्यसागर तथा हम रुक गए, आचार्यश्री की वैय्यावृत्य करते रहे। ३ साधु आहार करके आ गए तब हम चारों आहार पर गए। वहाँ से आकर हम सभी ने आचार्यश्री के पास ईर्यापथ भक्ति-प्रतिक्रमण किया। फिर हमने स्वयंभू स्तोत्र, नंदीश्वर भक्ति सुनाई। सामायिक प्रारम्भ कराई। फिर सामायिक पाठ सुनाया।

दोपहर १:२० पर निर्यापक श्रमण श्री समतासागरजी महाराज, मुनि श्री महासागरजी, मुनि श्री निष्कम्पसागरजी, ऐलक निश्चयसागरजी का आगमन हुआ, आचार्यश्री जी के दर्शन किये, कायोत्सर्ग पूर्वक आचार्य भक्ति की, नमोऽस्तु किया, तो आचार्यश्री ने उनकी आवाज पहचान कर आँख खोली और दाँए हाथ का पंजा आँखों के ऊपर लगाकर बड़ी गौर से देखा, आशीर्वाद दिया, फिर आँखें बंद कर ली, मुनि श्री महासागरजी बोले–हम लोग सेवा करने आए हैं, आचार्यश्री जी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। २:०० बजे निर्यापक मुनि श्री समतासागरजी, मुनि श्री महासागरजी, मुनि श्री निष्कम्पसागरजी ने बहुत विनय से आहार लेने के लिए निवेदन किया किन्तु आचार्यश्री नहीं उठे। तब हम लोग समझ गए आचार्यश्री ने उपवास कर लिया।

शाम ५ बजे से सभी मुनियों ने सामूहिक प्रतिक्रमण सुनाया, फिर आचार्य भक्ति हुई, उसके बाद स्वयंभू स्तोत्र सुनाया, नंदीश्वर भक्ति सुनाई, फिर इष्टोपदेश सुनाया। इसके बाद सामायिक का संकेत किया, सामायिक के बाद सामायिक पाठ सुनाया।

रात्रि में आचार्यश्री के पास हम, मुनि श्री निस्सीमसागरजी रहे, बीच-बीच में ऐलक निश्चयसागरजी वैय्यावृत्य के लिए आए, किन्तु आचार्यश्री एकान्त चाह रहे थे तो उन्होंने इशारे से मना किया। दाह की वेदना थी किन्तु प्रतिकार नहीं कर रहे थे। एक-दो बार बिना आवाज के करवट लेते हुए बोले–''हे वीतराग प्रभो!''

### ❑ अंतिम तारीख का अंत ऐतिहासिक बन गया–

माघ शुक्ल नवमी, वीर निर्वाण संवत् २५५०, विक्रम संवत् २०८०, दिन शनिवार को तारीख १७ फरवरी २०२४ को रात्रि में ब्रह्म प्रहर में हम दोनों मुनि उठ गए। आचार्यश्री को प्रतिक्रमण सुनाया, फिर आचार्यश्री को सामायिक का संकेत देकर, सामायिक प्रारम्भ की, पश्चात् सामायिक पाठ, स्वयंभू स्तोत्र, नंदीश्वर भक्ति सुनाई, फिर सभी संघ उपस्थित हो गया, आचार्य भक्ति हुई, देववंदना हुई। फिर दो तीन साधु आचार्यश्री के पास रुके शेष शौच क्रिया को गए।

९:०० बजे आचार्यश्री जी को आहार पर उठने का निवेदन किया गया, किन्तु गुरुजी ने कोई संकेत नहीं दिए। ११:०० बजे हमने आचार्यश्री जी को विनय पूर्वक निवेदन किया, आग्रह किया, तो उन्होंने संकेत देकर मनाकर दिया।

तब हम लोग जो शेष रह गए थे वो आहार चर्या पर गए। १२:०० बजे ईर्यापथ प्रतिक्रमण सामूहिक सुनाया गया, फिर सामायिक पाठ, स्वयंभूस्तोत्र, नंदीश्वर भक्ति सुनाई।

दोपहर में बड़े महाराजों द्वारा विनम्र निवेदन आहार पर उठने का किया गया किन्तु अस्वीकृत हुआ, कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। ब्रह्मचारी मनीष पूर्णायु वाला आया, उसके नमोऽस्तु बोलने पर आचार्यश्री ने आँखें खोलकर थोड़ा सा हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया।

सभी महाराजों ने विचार विमर्श किया कि जिस उद्देश्य को लेकर स्थान परिवर्तन किया गया था वो तो कुछ होता दिख नहीं रहा है अतः शीघ्र पुनः चन्द्रगिरि वापस जाना ठीक प्रतीत होता है। दोपहर ४:०० बजे पर फार्म हाउस से डोली में ऐलक धैर्यसागर, ऐलक निश्चयसागर, ब्रह्मचारीगण, कुछ विशेष श्रावकगण, चन्द्रगिरि तीर्थ के अतिथि भवन के कक्ष में लाए। ५:१५ पर पहुँचते ही तखत पर विराजमान किया और कहा आचार्यश्री हम सब वापस चन्द्रगिरि आ गए, आचार्यश्री ने आँखें खोलकर देखा और हल्के से मुस्कुरा दिए। तभी कुण्डलपुर के बड़े बाबा की जयकार लगाई तो आचार्यश्री जी ने बहुत धीमी आवाज में जय बोली और हाथों की अँजुलि माथे पर लगाकर नमोऽस्तु किया।

चन्द्रगिरि आने से आचार्यश्री का चेहरा प्रशस्त दिखने लगा। तत्काल हमने आचार्यश्री से पूछा प्रतिक्रमण सुनाएँ, तो उन्होंने सिर हिलाकर स्वीकृति दी। हम सभी मुनिराजों ने सामूहिक प्रतिक्रमण सुनाया फिर संघ ने आचार्य भक्ति की, आचार्यश्री पूर्ण जागृति के साथ लेटे-लेटे सभी क्रियायें कर रहे थे। शाम की सामायिक से पूर्व आचार्यश्री जी ने स्वयंभू का इशारा किया, हमने स्वयंभू स्तोत्र एवं नंदीश्वरभक्ति सुनाई फिर सामायिक होने के बाद सामायिक पाठ सुनाया।

सामायिक से पूर्व हम सभी साधुओं ने विचार कर निर्णय लिया कि आज रात्रि दो-दो साधु आचार्यश्री के पास जागृत रहेंगे, सभी का समय निश्चित कर दिया गया। ८:०० बजे से महासागरजी थे, ८:३० बजे उन्होंने आवाज दी निरामय-निरामय मैं तत्काल पहुँचा, आचार्यश्री के गले में कफ फँसने से खर-खराने की आवाज आई और वो नाक में अँगुली डाल रहे थे, तो हमने साफ कपड़ा से धीरे से नाक साफ की, तो सूखी मिट्टी जैसा रबेदार कुछ मल जैसा निकला, फिर ७-८ बार साफ की, अच्छे से साफ होने पर वो लेट गए, कुछ मिनट बाद उन्होंने पिच्छी से परिमार्जन करने की कोशिश की, तो हमने अपनी पिच्छी से परिमार्जन कर दिया, उन्होंने करवट ले ली, करवट लेते ही नाक के दूसरे नथुने से पित्त निकलने लगा। हमने साफ कपड़े से पौंछा, पुनः १० मिनट बाद आचार्यश्री जी ने करवट ले ली। तो फिर दूसरा नाथुना जो नीचे हो गया था उससे पित्त का स्राव होने लगा। देखते ही हमने पौंछा, फिर मुँह खुल गया तो मुँह से बहने लगा, तो पौंछा तब आचार्यश्री जी ने मुँह अच्छे से बंद कर लिया था क्योंकि आचार्यश्री का मुँह से थूकने का लंबे वर्षों से त्याग था। अंत समय में भी उन्हें अपने त्याग-नियम का ध्यान बना रहा, जो उनकी जागृति का परिचायक है।

जिन कपड़ों से पित्त पौंछा था उन कपड़ों को डॉक्टरों-वैद्यों ने लेबोरेट्री भेज दिया शीघ्र ही जाँच रिपोर्ट आ गई, जिसमें रक्त-पित्त की पुष्टि हो गई। वैद्य गौरव शाह ने वह रिपोर्ट पूना के आयुर्वेदाचार्य समीर जमदग्नि जी को भेज दी, उन्होंने रिपोर्ट देखकर बताया यदि रक्त-पित्त रुक-रुक कर निकलता है तो अच्छी खबर है। पित्त ने निकलने का अपना रास्ता बना लिया है और यदि लगातार निकलता है तो समझ लेना ४०-४२ घंटे का समय है या रात काटना भी मुश्किल है।

८.३० बजे से १.३० बजे तक पित्त लगातार बहता ही रहा, सभी साधु आचार्यश्री के कक्ष में उपस्थित हो गए।

हम सभी णमोकार महामन्त्र का पाठ धीमे स्वर में करते रहे। थोड़ी-थोड़ी देर में आचार्यश्री पित्त की दाह के कारण बिना सहारे करवटें बदलते रहे। यह देख हमने रात ११:३० बजे आचार्यश्री जी से धीरे से कहा–आज आप असीम वेदना शान्ति से सहन कर बहुत अधिक कर्म निर्जरा कर रहे हैं। तब आचार्यश्रीजी ने आँखें खोलकर थोड़ी गर्दन उठाकर–सिर हिलाकर हाँ में स्वीकृति दी। रात १:३० बजे निर्यापक मुनि प्रसादसागरजी ने सभी मुनि संघों की ओर एवं आर्यिका संघों की ओर से आचार्यश्री से क्षमा याचना की।

णमोकार का पाठ चलता रहा बीच-बीच में एक-एक मुनि आचार्यश्री को सम्बोधन देते रहे। तभी बाहर उपस्थित ब्रह्मचारियों को अंदर प्रवेश दिया, उन्होंने दर्शन किये और संकेतानुसार दूर–दराज विराजमान मुनि संघों, आर्यिका संघों को दर्शन करने हेतु वहाँ के सम्पर्क सूत्रों के माध्यम से वीडियो कॉलिंग से दर्शन कराए, सभी ने नमोऽस्तु एवं क्षमा माँगने हेतु कहा।

२:०० बजे के करीब मुनि श्री पूज्यसागरजी ने मुझसे कहा–"देखो ऐसा लग रहा है कि आचार्यश्री की उल्टी श्वास चल रही है।" तो हमने कहा अभी २ मिनट पहले तो गुरुदेव ने करवट ली है। तब हमने बड़े महाराज योगसागरजी से एवं मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी से देखने को कहा, तो उन्होंने देखा और कहा लग तो रहा है की उल्टी श्वास चल रही है। तो हमने कहा कि दक्षिण में कर दें तो ठीक रहेगा, सभी ने कहा हाँ और धीरे से तखत को घुमा दिया।

भाग्योदय सागर के एम.डी. डॉक्टर सौरभ जैन बाहर थे उनको रात्रि २:२० पर बुलवाया गया, उन्होंने देखा, तो बोले पैर और हाथ की नाड़ी छूट चुकी है। हमने पैरों का स्पर्श किया तो पंजे गरम थे, जबकि दो माह से हम देख रहे थे कि पैरों के पंजे हमेशा ठंडे रहते थे।

२:२५ पर हमारा ध्यान आचार्यश्री की अँगुलियों पर गया तो लगा कि णमोकार महामन्त्र का जाप चल रहा है। तब आचार्यश्री जी के गले की नाड़ी फड़क रही थी। उस समय मधुर वीडियो बना रहा था। हम सभी मन्त्र का धीरे-धीरे उच्चारण करते रहे, अचानक आचार्यश्री की आँख खुली और गले की नाड़ी फड़कना बंद हो गई।

दो जहाँ के बीच में फर्क सिर्फ एक श्वास का था।
चलती रही तो यहाँ, रुक गई तो वहाँ ॥

आचार्यश्री की अब मात्र पार्थिव देह ही शेष रह गई थी आत्म हंस उड़ गया था। उस समय घड़ी में २:३५ बज रहे थे। तत्काल पार्थिव शरीर को बैठा दिया गया। फिर वैद्यों के द्वारा पूर्ण जाँच की गई, उनकी पुष्टि के बाद पवित्र पार्थिव देह को बाहर बरामदा में सभी के दर्शनार्थ सिंहासन पर विराजमान कर दिया गया।

१५ फरवरी २०२४ को ३ अँजुलि जल लेकर जलोपवास, १६ एवं १७ फरवरी का निर्जल उपवास करके रोग परीषहजयी उत्कृष्ट सल्लेखनाधारक समाधिस्थ आचार्यश्री जी से सल्लेखना काल में जाने–अनजाने में हुई कोई भी त्रुटि, अविनय, अवज्ञा, कमी के लिए मन–वचन–काय से क्षमा माँगता हूँ और याचना करता हूँ कि गुरु के प्रति श्रद्धा भक्ति समर्पण में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती रहे एवं मैं भी आपके समान सल्लेखनापूर्वक समाधि प्राप्त कर नश्वर काया का विसर्जन करूँ।

–गुरु चरणों का सेवक

२७.१२.२०२३, ब्र. तात्या भैया, विपुल भैया शांति विद्या परिवार महाराष्ट्र।

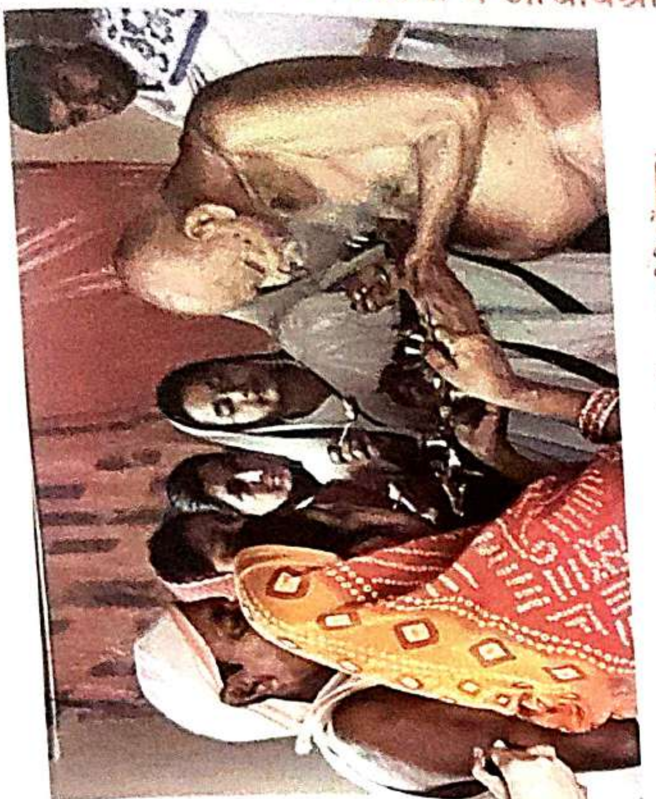

२८.१२.२०२३, राजकुमार-ममता जैन गौशाला चन्द्रगिरि, डोंगरगढ़।

२९.१२.२०२३, प्रकाश जी सुभाष जी जैन भाटापारा, धमतरी।

३०.१२.२०२३, सुनीता जैन, सागर जैन डोंगरगढ़ (शुक्लमति माता जी का परिवार)।

३१.१२.२०२३, मनोज-सीमा जैन, विद्याश्री परिवार, राजनांदगाँव ।

०२.०१.२०२४, पारणा, प्रतिभास्थली, चंद्रगिरि।

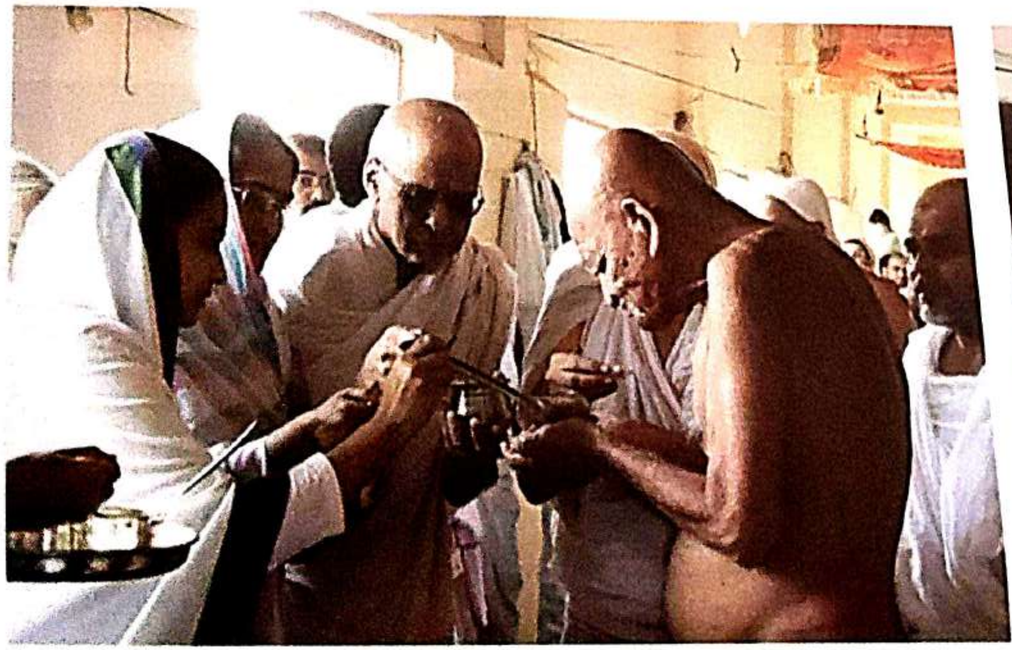

०३.०१.२०२४, ब्र. उन्नति दीदी, प्रतिभा मंडल, जबलपुर, जयसुखभाई नरेशभाई मुंबई परिवार

०४.०१.२०२४, सुकुमाल जैन, कोषाध्यक्ष चंद्रगिरि, बिलासपुर

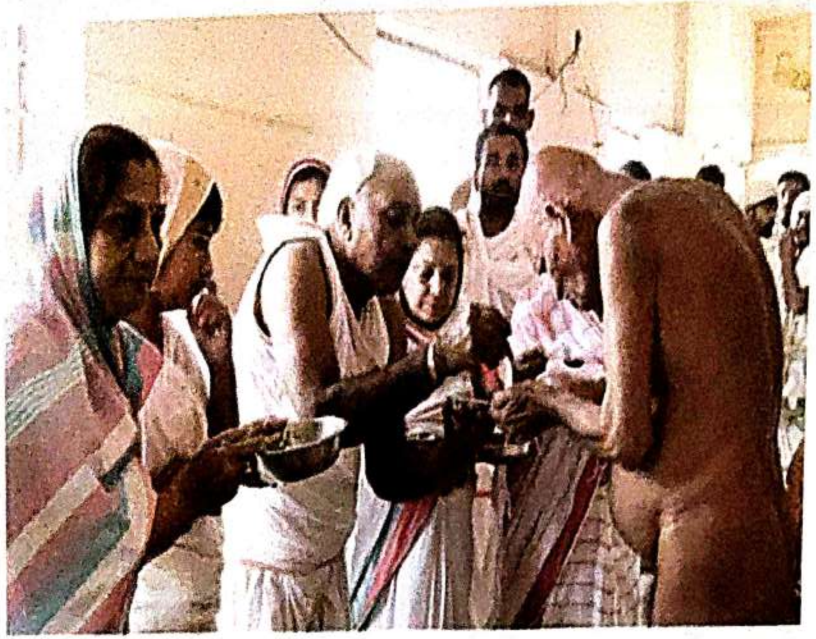

०५.०१.२०२४, राजकुमार-विमलेश जैन वैशाली नगर, भिलाई ।

०६.०१.२०२४, कुसुम जैन, अजीत-संध्या जैन, पारस हैंडलूम परिवार, रायपुर।

०८.०१.२०२४, कमलेश जैन, नमन जैन परिवार, राजनांदगाँव।

०९.०१.२०२४, ब्र. नेहा दीदी, शुभी दीदी, प्रतिभामंडल चंद्रगिरि, वीरेंद्र-आशा जैन डोंगरगढ़।

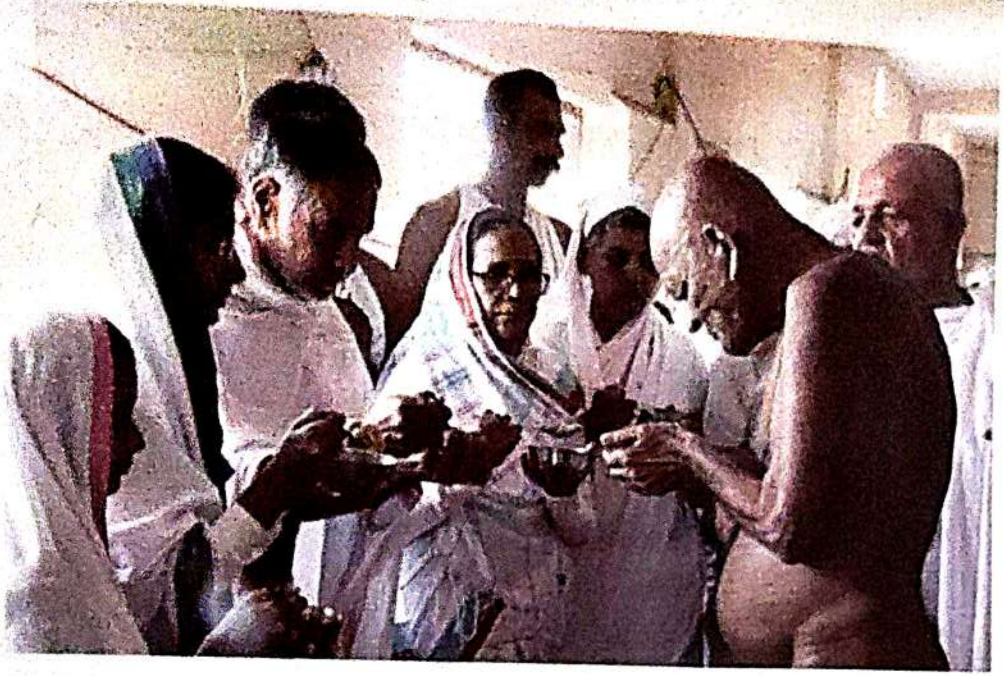

१०.०१.२०२४, ब्र. आभा दीदी-क्षमा दीदी, विनोद जी जैन (प्रशांतसागरजी महाराज परिवार) गोटेगाँव।

११.०१.२०२४, सतीश जैन अभिषेक जैन -मोनिका जैन डोंगरगढ़।

१२.०१.२०२४, सप्रेम जैन, सुमित जैन परिवार, डोंगरगढ़

१३.०१.२०२४, जिनेन्द्र जैन, सचिन जैन, सब्जी वाला परिवार, शाहपुर।

१४.०१.२०२४, ब्र. नीतू दीदी पथरिया, ब्र. मीना दीदी बांदकपुर परिवार प्रतिभामंडल चंद्रगिरि।

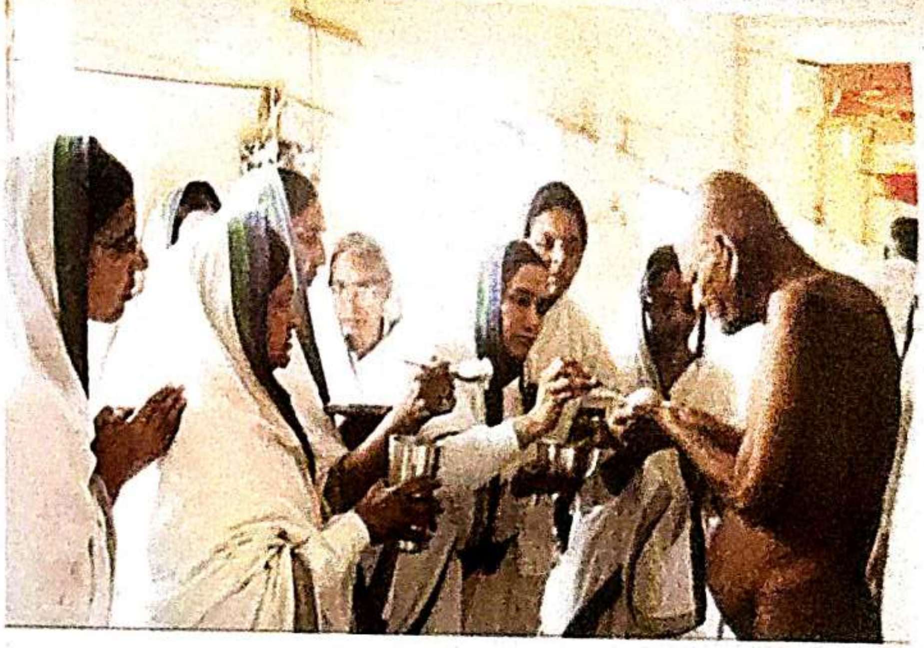

१५.०१.२०२४, प्रतिभास्थली चंद्रगिरि डोंगरगढ़।

१६.०१.२०२४, सिंघई अखिलेश, अनीश, मनीष जैन परिवार राजनांदगाँव।

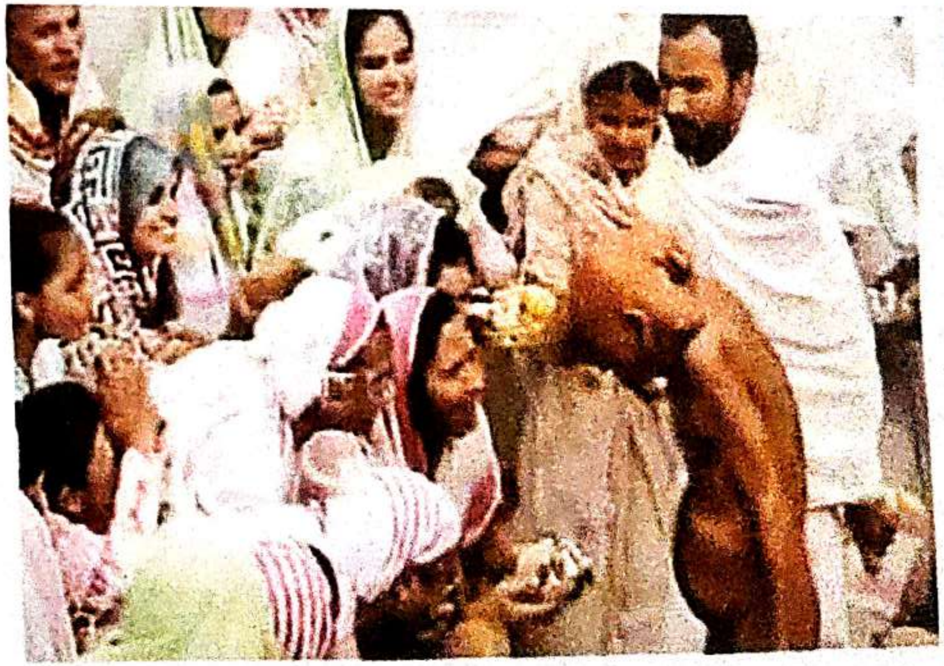

१७.०१.२०२४, अमित जैन, सुशील जैन, सुनील जैन परिवार डोंगरगढ़।

१८.०१.२०२४, रूपचंद जी, नरेश-अंजुला, परिवार राजनांदगाँव।

१९.०१.२०२४, ब्र. रौनक भैया, भीटा वाले, शहपुरा (भिटौनी)।

२०.०१.२०२४, चंद्रकांत-विनीता जैन, ऋषभ जैन, रैनी जैन परिवार, राजनांदगाँव।

२१.०१.२०२४, कृष्णा जैन, विकास, विवेक जैन परिवार, केवलारी।

२२.०१.२०२४, मुन्नालाल, शिरीष, शैलेश जैन परिवार, राजनांदगाँव।

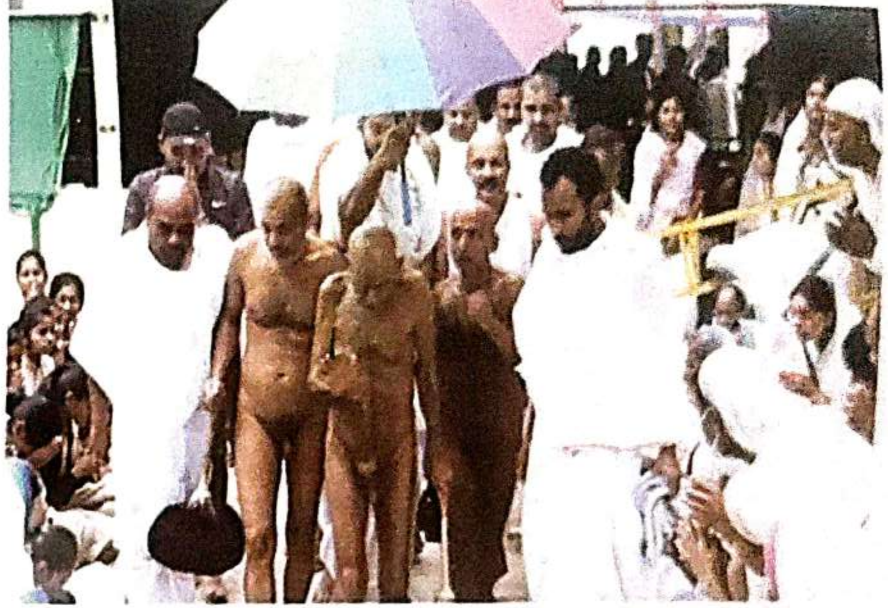

२३.०१.२०२४, कपिल जैन, सुकुमार, केदारजी परिवार, शिरड शाहपुर।

२४.०१.२०२४, किशोर जी जैन, अध्यक्ष चन्द्रगिरि परिवार डोंगरगढ़

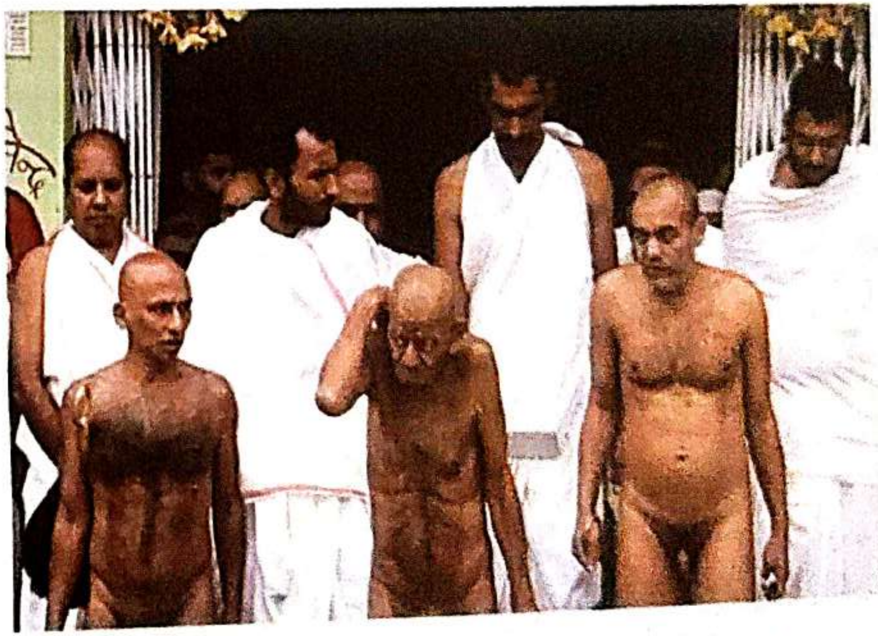

२५.०१.२०२४, ब्र. शिखा दीदी, प्रतिभामंडल, रमेश-सुनीता जैन परिवार, बीना

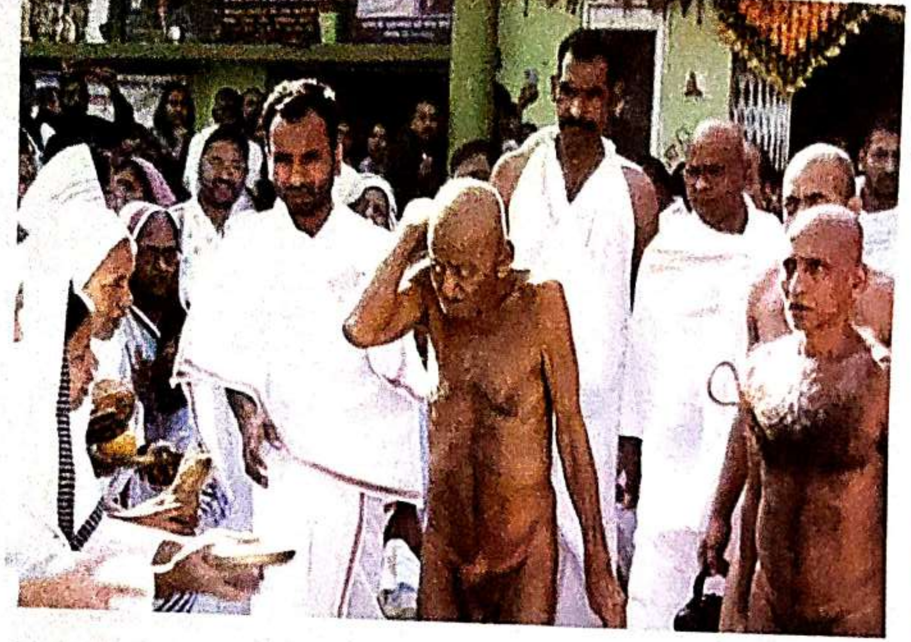

२६.०१.२०२४, हजारीलाल, अरविंद, मदन, मुन्नालाल परिवार, कोटा आगरा

२७.०१.२०२४, ब्र. प्रियंका दीदी प्रतिभामंडल, प्रकाश जैन परिवार, खुरई

२८.०१.२०२४, मीना जैन, कैलाशचन्द्र, सचिन, सुलभ जैन परिवार, नेहरुनगर, भिलाई

२९.०१.२०२४, डॉक्टर सुभाष शाह-मोनिका शाह परिवार, मुंबई।

## ३० जनवरी से आहार देने वालों की फोटो नहीं ली जा सकी

.०१.२०२४, ब्र. रानू दीदी अजित, प्रभा, दीपक, आगम (मूकमाटी टाइल्स परिवार) सागर।

१.०१.२०२४, ब्र.पिंकी दीदी, अंजना दीदी तपोमति माताजी की ससंघ बहनें।

१.०२.२०२४, ब्र. संपदा दीदी बंडा, विजय छतरपुर, तनिष्का-अनुष्का जैन, भाऊ परिवार, डोंगरगाँव।

०२.०२.२०२४, ब्र. प्रिंसी दीदी, मुस्कान दीदी, वृषभ जैन परिवार, गोटेगाँव।

०३.०२.२०२४, आनंद, बादल जैन, रितेश जैन पपालिया परिवार, इंदौर।

०४.०२.२०२४, प्रभा जैन, नवीन, नितिन बड़कुल परिवार, शाहपुर।

०५.०२.२०२४, ब्र. सुमन दीदी, सुनीता दीदी, सुषमा दीदी उज्जैन, सूरज बाई अशोक नगर।

०६.०२.२०२४, ब्र. शुचि दीदी, शुभी दीदी, व्रती संतोष (क्षुल्लक भारतसागर परिवार) सिलवानी एवं गौशाला परिवार मुंबई।

०७.०२.२०२४, अनिल जैन, शोभा जैन, नीरज-शालिनी जैन परिवार, डोंगरगढ़।

०८.०२.२०२४, डॉक्टर सौरभ जैन परिवार, भाग्योदय, सागर।

०९.०२.२०२४, ब्र. पुष्प दीदी, ब्र. मीना दीदी, इंदिरा दीदी, भूमिका रहली (मुनि निरामयसागरजी, मुनि श्री पद्मसागरजी परिवार।

१०.०२.२०२४, मनोरमा, रमेश, सरोज सामला परिवार नांद्रे, महाराष्ट्र।

११.०२.२०२४, ब्र. मधु दीदी बीना, नीलू दीदी जबलपुर, कलेक्टर राहुल जैन, जबलपुर

१२.०२.२०२४, ब्र. सोनल दीदी-मीनल दीदी प्रतिभामंडल, मनोज-अनीता जैन (मनोज कटपीस सेंटर) किरण-कमलेश जैन परिवार, गुना

१३.०२.२०२४, ब्र. मीना दीदी, ब्र. साधना दीदी इंदौर निवासी।

१४.०२.२०२४, ब्र. भैया जी एवं वैद्य स्वप्निल सिंघई, गौरव शाह, चंद्रगिरि तीर्थ, डोंगरगढ़।

१५.०२.२०२४, ब्र. भैया जी एवं वैद्य स्वप्निल सिंघई, गौरव शाह, चंद्रगिरि तीर्थ, डोंगरगढ़।

१६.०२.२०२४, उपवास

१७.०२.२०२४, उपवास

## एक सच्चे आत्म साधक की अघोषित सल्लेखना

जैसे गंगाजल में पवित्रता, हिमालय में अटलता और सूर्य में प्रकाश का बोध होता है, वैसे ही संत-समाज में तप और साधना का जीवंत स्वरूप होते हैं हमारे पूज्य मुनिराज। ऐसा ही एक उज्ज्वल अध्याय हैं परमपूज्य मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी महाराज। वे न केवल महान तपस्वी हैं, बल्कि गुरुभक्ति और आत्म-साधना के प्रतिमान भी हैं। यह लेख उनकी गहन साधना, अद्वितीय गुरुभक्ति और असाधारण तप के अनुभवों का एक अमूल्य दस्तावेज है। २५ वर्षों पहले आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ने जिन तीन मुनियों को अपने साथ रखकर सघन साधना का वातावरण बनाया, उनमें से एक मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी थे। उन्होंने गुरुदेव के सान्निध्य में रहकर उनकी सूक्ष्म दृष्टि, आत्मानुशासन और अटल साधना को न केवल देखा, बल्कि उसकी गहराई को आत्मसात भी किया। यह उनके जीवन का वह स्वर्णिम काल था जब उन्होंने गुरुदेव की मानसिक, वाचनिक और कायिक वैय्यावृत्त्य करने का सौभाग्य प्राप्त किया। गुरुदेव की गोपनीयता में लिपटी सल्लेखना-समाधि की साधना को उन्होंने न केवल निकट से देखा, बल्कि उसके हर पहलू को आत्मसात किया। मुनिश्री ने इसे केवल अपने मन में सीमित नहीं रखा, बल्कि इन अमूल्य अनुभवों को शब्दों के माध्यम से हमारे लिए सहेज कर प्रस्तुत किया है। यह लेख उनकी तपस्या, साधना और अनुभवों का एक अद्वितीय दस्तावेज है, जिसमें उनके जीवन के उन पलों की झलक मिलती है, जो साधना के सर्वोच्च आदर्शों से प्रेरित है। यह लेख पाठकों को एक संत के जीवन के भीतर झाँकने का अवसर देती है, बल्कि हमें भी इस बात का आभास कराती है कि कैसे साधना और तपस्या के मार्ग पर चलते हुए, गुरुभक्ति के माध्यम से आत्मा की गहराइयों तक पहुँचा जा सकता है। इस लेख को पढ़ते हुए पाठक स्वयं एक गहन आध्यात्मिक यात्रा का अनुभव करेंगे।

शास्त्रानुसार चलते सबको चलाते, पाते स्वकीय सुखको पर में न जाते।
ये रागद्वेष तजते सबकी उपेक्षा, मैं तो अभी कुछ रखूँ उनकी अपेक्षा ॥
आचार्य को विनय से उर में बिठालूँ, मैं पूज्यपाद रज को सिर पै चढ़ा लूँ।
हे मित्र ! मोक्ष मुझको फलतः मिलेगा, विश्वास है ये नियोग नहीं टलेगा ॥

एक महान् साधक संत की महान् साधना का वर्णन मैं करूँ यह मेरी धृष्टता है क्योंकि इसके पूर्व में ही ये सारी जनता को अपनी साधना का परिचय दे चुके हैं। बिना कहे अपनी साधना से ही क्या साधु, क्या आर्यिका, क्या ब्रह्मचारी, क्या ब्रह्मचारिणी, क्या व्रती और क्या जनता सब को ही उन्होंने सच्ची साधुता से अवगत कराया है। इसीलिए सबके हृदय में श्रद्धा के भगवान बनकर विराजमान हैं। फिर भी मैं ऐलक धैर्यसागरजी के कहने पर वो अनुभव लिख रहा हूँ, जो गुरुदेव के आत्मसंस्कार काल, सल्लेखना काल, समाधि काल के हैं। मैं वो बातें नहीं दोहरा रहा हूँ जो मुनि श्री निरामयसागरजी ने लिखा है उन्होंने सब कुछ लिख दिया है जो हम लोगों ने अनुभव किया। मैं वो

लिख रहा हूँ जो उन्होंने नहीं लिखा किन्तु हमारे सामने घटित हुआ है।

## ❑ आचार्यश्री को गिरते स्वास्थ्य की अनुभूति–

अमरकंटक पंचकल्याणक में आचार्य श्री अस्वस्थ अवस्था में भी भक्तों को आशीर्वाद देते हुए

२५ मार्च, २०२३ से १ अप्रैल, २०२३ तक श्री दिगम्बर जैन सर्वोदय तीर्थ क्षेत्र अमरकंटक में पञ्च-कल्याणक महा महोत्सव में गुरुदेव ने अपना सान्निध्य प्रदान किया, उस दौरान गुरुदेव अस्वस्थ हो गए। विहार करके १ मई २०२३ को देवकट्टा ग्राम के स्कूल में रात्रि विश्राम हुआ, सुबह विहार होना था, विहार के पूर्व चर्चा के दौरान आचार्यश्री जी ने अपनी नाजुक स्थिति को देखते हुए कहा–''अब हम कुछ समय के भीतर विदेह क्षेत्र में सीमंधर स्वामी के समवसरण में पहुँच जाएँगे।'' तब हमने कहा आचार्यश्री जी आप तो चले जाएँगे लेकिन हम कहाँ जाएँगे, आपके बिना हम कहाँ भटकेंगे ? आचार्यश्री बोले–''मोक्ष मार्ग पर चलते रहना, आप भी वहीं आ जाओगे।''

आचार्यश्री इतने अधिक अस्वस्थ थे कि कोई सोच भी नहीं सकता। इसके बावजूद वो धर्मध्यान करते, विपाक विचय धर्मध्यान की चर्चा करते।

## ❑ ग्रीष्मकाल में आचार्यश्री जी ने साधना की और कराई भी–

चन्द्रगिरि तीर्थ पर पहुँचकर मई-जून दो माह के ग्रीष्म प्रवास में हम तीनों मुनिराजों को कहा–''जनसम्पर्क से बचने के लिए दो माह मौन साधना करना'' और स्वयं ने भी अपना अमूल्य समय जनता के लिए देना बहुत कम कर दिया, बोलना भी कम कर दिया। इसी समय आचार्यश्री को बुखार आ गया। कुछ दिनों में बुखार ठीक हो गया, सर्दी-खाँसी बनी रही, धीरे-धीरे वो भी ठीक हो गई, इस तरह दो माह पूर्ण हो गए।

आचार्यश्री मूलाचार ग्रन्थ का स्वाध्याय करते हुए

चन्द्रगिरि तीर्थक्षेत्र कमेटी ने निवेदन किया कि गुरुदेव आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है और क्षेत्र को आपकी बड़ी आवश्यकता है अतः आपका चातुर्मास यहीं पर हो। आचार्यश्री ने २०२३ का वर्षायोग चन्द्रगिरि तीर्थ पर ही किया। चातुर्मास में हम लोगों के स्वाध्याय हेतु आचार्यश्री जी ने मूलाचार ग्रन्थ को शुरू कराया हम लोग मूल प्राकृत गाथा एवं संस्कृत टीका पढ़ते थे और आचार्यश्री उसका अर्थ बड़े विस्तार से बताते थे। एक दिन विनयशीलता का प्रकरण आया था, उस समय आचार्यश्री ने कहा–''देखो! कभी किसी को भी एक वचन में नहीं बोलना चाहिए, चाहे बच्चे (बालक-बालिका) ही क्यों ना हों,

उनको भी 'आप' शब्द कहकर बोलना चाहिए, 'तू-तुम' शब्द का प्रयोग करने से भाषा समिति में दोष लगते हैं। साधु को इन अपशब्दों का प्रयोग करना ही नहीं चाहिए, यदि बोलना ही पड़े तो आगम के अनुसार हित-मित-प्रिय वचन बोलकर तुरन्त भूल जाना चाहिए। परिचय बढ़ने से ही अविनय-अवज्ञा होती है। इसलिए जनसम्पर्क नहीं करना चाहिए।''

यह सब हमने गुरुजी के जीवन में देखा है, वो ब्रह्मचारी को भी 'जी' और 'आप' लगाकर सम्बोधन देते रहे। उनकी भाषा समिति आगमानुसार-आत्मानुशासित थी। इसलिए उनके प्रवचन, उपदेश, वाणी का ऐसा प्रभाव था कि युवा पीढ़ी खिंची चली आती और समर्पित हो जाती थी।

### ❑ रोग परीषह जय चातुर्मास–

२०२३ का चातुर्मास आचार्यश्री के लिए चुनौतीपूर्ण रहा। असाता कर्म की उदीरणा के फलस्वरूप एक के बाद एक रोग परीषह रूपी परीक्षा होती रही, किन्तु जीवन भर गुरुजी ने शास्त्रीय स्वाध्याय-साधना जो कर रखी थी इस कारण उनका हर पेपर बहुत ही अच्छा गया।

वर्षायोग प्रारम्भ हुआ और कुछ दिनों बाद आँख का रोग (आँख आना) फैलना प्रारम्भ हुआ, सबसे प्रथम निरामयसागरजी को हुआ, फिर आचार्यश्री जी को हुआ, फिर हमको (चन्द्रप्रभ सागर) हुआ और फिर प्रसाद सागरजी को हुआ। आचार्यश्री जी की आँखें ज्यादा लाल हो गईं थीं, उनमें सूजन भी आ गई थी। हमने आचार्यश्री जी से कहा निरामयसागरजी को गोल्ड मेडल, आपको सिल्वर मेडल, मुझे ब्रॉस मेडल और प्रसाद सागरजी को सांत्वना मेडल मिला है, यह सुनकर आचार्यश्री जी मुस्कुराते हुए बोले–''जिसकी जितनी क्षमता उसकी उतनी निर्जरा! यह है पुरस्कार।''

आँख ठीक हुई तो आचार्यश्री को पेट सम्बन्धी रोग हो गया, पेट की बीमारी ठीक हुई तो वृषण में सूजन आ गई। वह ठीक हुई तो फिर बवासीर का रोग हो गया, जिस कारण बैठने में बहुत अधिक परेशानी-पीड़ा सहन करते। मुनि श्री निरामयसागरजी की वैयावृत्ति से आचार्यश्री का असाता कर्म शांत होता चला जाता। हमने आचार्यश्री से कहा–कैसा यह असाता कर्म है तो बोले–''अलग-अलग विषयों के पेपर हैं, सभी पेपर अच्छे से देना पड़ता है तभी रिजल्ट अच्छा आता है। मोक्ष का राजा वही बनता है।'' आचार्यश्री की ये विशेषता रही है कि उनसे जब भी दुख, पीड़ा, परेशानी, संकट की बात करो तो तत्त्व चिंतन ही करते-बताते। कभी भी आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान की बात उनके मुख से सुनी ही नहीं।

### ❑ डोली में बैठना पसंद नहीं था मजबूरी में बैठे–

चन्द्रगिरि तीर्थ में गर्मी एवं चातुर्मास का लंबा काल होने से आचार्यश्री ने विहार कर दिया, बोले–''लंबा समय एक स्थान पर हो गया था इसलिए विहार तो करना ही था।'' खैरागढ़ में स्वास्थ्य खराब हुआ तो हम तीनों मुनिराजों ने लौटने के लिए निवेदन किया कि आगे तिल्दा नेवरा १०० किलोमीटर से भी ज्यादा है अतः लौट चलते हैं, किन्तु जीवन भर जिन्होंने जो दृढ़ निश्चय किया, उससे कभी भी वह पीछे नहीं हटे, तो अब कैसे हट सकते थे। बोले–''दूर है तो क्या हुआ? मैं चल सकता हूँ, बच्चों ने पाषाण का मंदिर बना दिया, धीरे-धीरे गाँव-गाँव पाँव-पाँव पहुँच जाऊँगा।'' पैरों से नहीं गुरुजी दृढ़ निश्चय से मंजिल पर पहुँच गए। वहाँ पर पञ्चकल्याणक में ६ दिन प्रवचन दिए, सानंद

कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस दौरान मौसम बहुत अधिक ठंडा होने से आचार्यश्री पुनः अस्वस्थ हो गए। वैद्यों के उपचार से स्वस्थ्य हुए किन्तु कमजोरी के कारण विहार में परेशानी होगी तब हम लोगों के निवेदन पर डोली को स्वीकार कर लिया लेकिन उसी दिन से उन्होंने आहार लेने में रोटी लेना बंद कर दिया। मात्र दलिया, चावल, दाल, औंरिया लिया। चन्द्रगिरि पहुँचने के बाद वैद्यों के निवेदन पर रोटी प्रारम्भ की। तब हम लोग समझे आचार्यश्री डोली पर बैठना पसंद नहीं करते, मजबूरी में बैठे और बैठने पर जो दोष लगा होगा उसके लिए उन्होंने रोटी का त्याग किया और कुछ क्या छोड़ते? क्योंकि आहार में लेते ही क्या हैं, पहले से ही सब त्याग है। रोटी मुख्य थी, उसका ही त्याग कर दिया।

आचार्यश्री तिल्दा नेवरा से डोली में आये

❑ **स्वगण के त्याग एवं परगण की गवेषणा का भाव–**

चन्द्रगिरि तीर्थ पहुँचने के दूसरे दिन आचार्यश्री जी ने हम लोगों को प्रातःकाल सल्लेखना विषय पर चिंतन तो दिया ही साथ ही अपनी भावनाओं से भी अवगत करा दिया। बोले–''सल्लेखना में शिष्यों का मोह बाधक है। संघ छोड़कर दूसरे संघ में जाना पड़ता है। हम परगण में चले जायेंगे, आप लोग भी मेरे साथ नहीं आना।'' तब मैंने कहा–आचार्यश्री जी आपनें हमें शिक्षा, उपदेश, संकेत दिया तो हम लोग नहीं आएँगे, रुक जाएँगे किन्तु आपके इतने सारे शिष्य शिष्याएँ हैं, ब्रह्मचारी ब्रह्मचारिणियाँ हैं, वो सभी आपने सल्लेखना धारण कर ली है, यह समाचार सुनकर आप जहाँ भी जाएँगे वहां पर आएँगे। मेरी बात को सुनकर आचार्यश्री बोले–''नहीं–नहीं कोई नहीं आएगा। वे सभी व्यवस्थित हो गए हैं। प्रतिभास्थली की बहनें भी व्यवस्थित हैं और आर्यिका संघ भी व्यवस्थित हैं। सभी निर्यापक मुनि अपने–अपने संघ का निर्वाह करेंगे। आचार्य पद का भी अब विकल्प नहीं है, शीघ्र किसी योग्य को देकर छोड़ दूँगा। मुझे अब कोई भी किसी भी प्रकार का विकल्प नहीं है, मैंने ''तव–मम, तव–मम सब छोड़ दिया है।'' तभी हमने कहा–आचार्यश्री जी यह सब ठीक है लेकिन परगण में जाने के लिए ऐसा साधु संघ कौन होगा जो अनुभवी हो, आपकी सल्लेखना व्यवस्थित करा सके। वर्तमान में मुझे कोई दिखता नहीं, तब आचार्यश्री बोले–''कोई ना कोई मिलेगा हम ढूँढ़ेंगे, निर्यापक की गवेषणा करने को शास्त्र में कहा है।''

उपरोक्त वार्तालाप से स्पष्ट होता है कि गुरुदेव संघ से निवृत्ति ले चुके थे और थे पूर्णतः निर्विकल्प। यही कारण है कि उन्होंने डोंगरगढ़ चन्द्रगिरि तीर्थ आने के बाद उन्होंने किसी भी प्रकार की चिंता या विकल्प की बात हम लोगों से नहीं कही और यह भी स्पष्ट होता है कि परगण में जाने के भाव तो थे किन्तु असाता कर्मों ने वह अवसर छीन लिया। तब आचार्यश्री जी ने अपने आप ही सल्लेखना का संकल्प कर यम सल्लेखना पूर्वक समाधि को धारण कर लिया। इस सम्बन्ध में निर्यापक श्रमण योगसागरजी के लेख से और अधिक स्पष्ट हो जाएगा।

❑ **आचार्यश्री द्वारा अघोषित सल्लेखना की घोषित ध्वनि–**

१ जनवरी, २०२४ को आचार्यश्री जी ने पिछले केशलोंच के दो माह पूरे होते ही संकल्प अनुसार केशलोंच

किया। वो सदा से ही स्वयं अपने हाथों से केशलोंच करते आ रहे हैं। हम लोगों ने जो बाल छूट गए उनको निकलना चाहा तो हाथ अलग कर दिया। केशलोंच के बाद बोले–''गुरु महाराज ने कहा था प्रतिक्रमण और केशलोंच स्वयं करना चाहिए। इन दोनों क्रियाओं में कभी भी परवश नहीं होना चाहिए।'' इस स्वाश्रित वृत्ति को आचार्यश्री ने कभी भी नहीं छोड़ा। ऐसा था आचार्यश्री जी का अपने गुरु के प्रति श्रद्धा समर्पण, कि जीवन की अंतिम श्वास तक उनकी शिक्षाओं का पालन किया और गुरु के समान ही सल्लेखना धारण की।

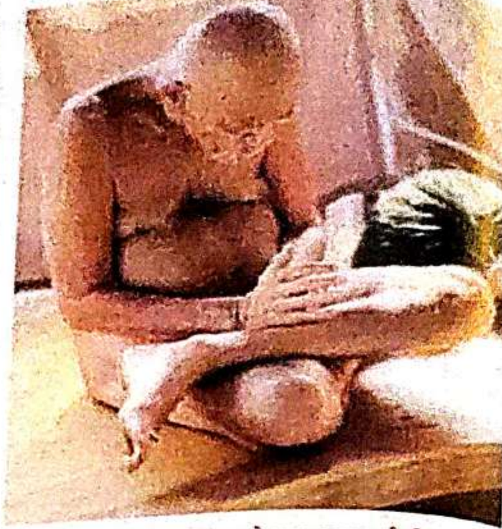

प्रतिक्रमण करते हुए आचार्यश्री

चन्द्रगिरि तीर्थ पर २०२३ के चातुर्मास में 'मूलाचार' ग्रन्थ के स्वाध्याय के पश्चात् 'प्रतिक्रमण ग्रन्थ त्रयी' का स्वाध्याय कराया था, थोड़ा-सा हुआ और फिर चातुर्मास के बाद विहार हो गया था। लौटकर चन्द्रगिरि आए तो पुनः 'प्रतिक्रमण ग्रन्थ त्रयी' प्रारम्भ किया, तब आचार्यश्री अर्थ समझाते समय स्वयं के ऊपर घटाते हुए, स्वयं अपने दोषों की आलोचना करते, उनकी आँखें भर आती थीं, हमें लगा उनका औत्तमार्थिक प्रतिक्रमण चल रहा है। इतना भाव-विह्वल होकर भाव प्रकट कर रहे थे।

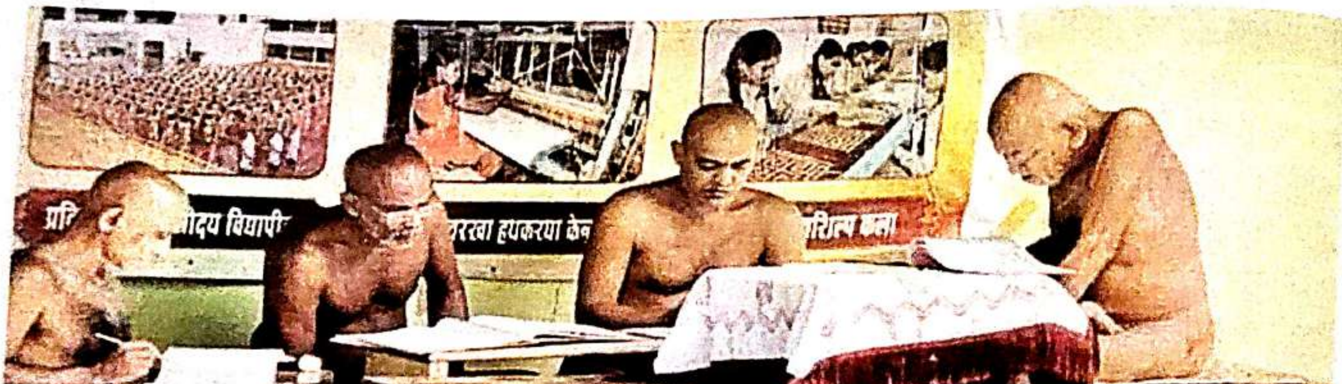

प्रतिक्रमण त्रयी का स्वाध्याय करते हुए आचार्यश्री, जो उनके जीवन का अंतिम स्वाध्याय था। ३० दिस. २०२३

प्रतिक्रमण ग्रन्थ त्रयी के स्वाध्याय के दौरान १४ बिन्दु बताकर संघस्थ आज्ञाकारी मुनि संघों एवं आर्यिका संघों को भेजने के लिए कहा–''यह शिक्षायें सभी मुनि संघों एवं आर्यिका संघों में भिजवा दो, जिससे प्रत्येक साधु अपने आपको संभाल सके, सँवार सकें और अपनी साधना में वृद्धि करें और स्वयं ही समर्थवान बन सकें।''

१. निंदा, गर्हा, आलोचना स्वयं की होती है दूसरे की नहीं।

२. प्रतिक्रमण ग्रन्थ त्रयी, समयसार ग्रन्थ से भी आगे का है।

३. प्रतिक्रमण करते समय अपनी आँखों में पानी आना चाहिए।

४. द्रव्य प्रतिक्रमण एवं भाव प्रतिक्रमण में बहुत अंतर है। अपने भावों को–परिणामों को संभालने का कार्य ही सल्लेखना है।

५. भविष्य में स्वयं की सल्लेखना कैसी होगी, इसका चिंतन करना। बारह भावनाओं का, वैराग्य भावना का, सोलह कारण भावना का, अनगार भावनाओं का चिंतन जितना करो उतना कम है।

६. बड़े-बड़े योगीजन भी पञ्चपरमेष्ठियों को नहीं भूलते और हम सभी शिष्य अपनी-अपनी बात कर रहे हैं।

७. मैं इसी दोहे को दोहराता हूँ–

यही प्रार्थना वीर से अनुनय से कर जोड़।
हरी भरी दिखती रहे धरती चारों ओर ॥

८. अब शरीर इस काबिल नहीं रहा अतः सभी को अपनी जिम्मेदारी समझना चाहिए, अब पुनरावृति नहीं कर पायेंगे। पूर्व में देने योग्य आप सभी को सब दे दिया गया है।

९. ओंकार ध्वनि (महामन्त्र) का सहारा ही सबसे बड़ा संबल है, इसको दृष्टि में रखना।

१०. आचार्य कुन्दकुन्द की गाथाएँ गोली (टेबलेट) हैं–

उवयरणं जिणमग्गे लिंगं जहजादरूवमिदि भणिदं।
गुरुवयणं पि य विणओ सुत्तज्झणं च णिद्दिट्ठं॥

११. अष्टपाहुड ग्रन्थ की गाथाओं में क्या कहा है–जो साधु विसंवाद/झगड़े में संलग्न है, उसे पशु की संज्ञा दी है। यह विशेष ध्यान देने योग्य है।

१२. हाइकु–

''अध्यात्म पद
अध्यात्म ग्रन्थों में भी
क्या बता रहे।''

१३. यह सूत्र साधु जीवन के लिए विशेष है–

समता सर्वभूतेषु, संयमे शुभभावना।
आर्तरौद्रपरित्यागः, तद्धि सामायिकं व्रतं॥

१४. ''विपाक विचय धर्मध्यान एकत्तीसाए कम्मविवाएसु'' यह स्वर्ण सूत्र है।

उपरोक्त सूत्रों के माध्यम से आचार्यश्री ने सल्लेखना का संकेत दे दिया था और कई बार प्रवचनों में भी संकेत कर चुके थे, ५ जनवरी, २०२४ को अंतिम प्रवचन में कहा था–''मोह को जीतना जरूरी है तभी सल्लेखना संभव है'' चूँकि परगण में नहीं जा पाये तो स्वगण का त्याग कर दिया और स्वयं ही अघोषित सल्लेखना का संकल्प कर धीरे-धीरे उसी ओर बढ़ते गए ...।

❑ आचार्यश्री जी सदा अप्रमत्त (आलस रहित)–

जब से हमने आचार्यश्री को देखा है तब से और निर्यापक श्रमण योगसागरजी से भी सुना कि आचार्यश्री शुरू से ही अप्रमत्त रहते हैं। हम लोगों ने अपने गुरु से यही सीखा है कि सदा अप्रमत्त साधना करो।

हम तीनों मुनिराज आचार्यश्री के पास ही रहते-सोते थे। रात्रि ३:०० बजे ब्रह्म प्रहर में उठ जाना, आचार्यश्री के साथ प्रतिक्रमण, सामायिक पाठ, स्वयंभूस्तोत्र, नंदीश्वरभक्ति इसके बाद आचार्यभक्ति फिर बाहर आकर देववन्दना करते। यह दिनचर्या तीनों कालों में होती थी और आचार्यश्री जब अस्वस्थ भी हुए, तब भी ठीक समय पर ये

आवश्यक कार्य होते थे। आचार्यश्री सदा ''आवश्यक अपरिहाणिः'' का ध्यान रखते थे।

एक दिन स्वयंभूस्तोत्र पढ़ते समय शीतलनाथ भगवान की स्तुति में हमने पढ़ा–'स्वजीवते काम सुखे च तृष्णया, दिवा श्रमार्ता निशि शेरते प्रजाः' तब आचार्यश्री की सावधान दृष्टि ने पकड़ लिया बोले–'स्वजीवते' नहीं इसका कोई अर्थ नहीं होता 'स्वजीविते' बोलो। हमने कहा गुरुदेव हमें व्याकरण एवं संस्कृत भाषा का ज्ञान नहीं है, तो हँसने लगे, बोले हाँ आगे पढ़ो। इतनी सूक्ष्म, पैनी, एकाग्र दृष्टि के धारक आचार्यश्री जी थे। वे मन से पूर्ण स्वस्थ जागृत थे।

❑ **स्थान परिवर्तन की मनाही में छुपा सल्लेखना का रहस्य–**

१५ जनवरी २०२४ को हम तीनों मुनिराजों ने आचार्यश्री से निवेदन किया था कि आपका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन यहाँ गिरता ही जा रहा है अतः यहाँ से विहार करते हैं, स्थान परिवर्तन करने से स्वास्थ्य में सुधार हो जाएगा। तब आचार्यश्री बोले–''देखो मूलाचार ग्रन्थ में क्या लिखा है पौष और माघ माह में विहार नहीं करना चाहिए।'' यह सुनकर हम लोग विस्मित रह गए, जबकि पूर्व में कई बार विहार हुआ है, किन्तु गुरुदेव विहार करना नहीं चाह रहे थे, तो हम लोगों ने प्रत्युत्तर नहीं किया। अपने स्वास्थ्य को लेकर उन्हें आभास हो गया था कि अब हमारा समय पूर्ण हो गया है। इसलिए उन्होंने चन्द्रगिरि तीर्थ के अध्यक्ष किशोर जी सिंघई को एक दिन कहा था कि चन्द्रगिरि को विशेष मिलेगा। इस कारण उन्होंने सल्लेखना प्रारम्भ कर दी थी और यहाँ से विहार करने के लिए मना कर दिया था।

❑ **आचार्यश्री की सल्लेखना का एक और रहस्य–**

२० जनवरी, २०२४ को मैं प्रतिदिन की भाँति दोपहर २:०० बजे अभ्यंतर तप वैय्यावृत्त्य करने के लिए आचार्यश्री के पास पहुँचा नमोऽस्तु करके शुद्ध देशी घी लेकर आचार्यश्री के सिर पर लगाने लगा, थोड़ी देर बाद आचार्यश्री बोले–''देखो! तपस्वी महाराजों को–उपवास करने वाले महाराजों को क्षपक के कक्ष में नहीं सोना चाहिए।'' हमने पूछा ऐसा क्यों? तो आचार्यश्री बोले–''देखो! उपवास करने से शरीर कमजोर होता है, क्षीण होता है, भले ही बाहर से व्यवस्थित दिखता है लेकिन अंदर से कमजोर होता है।'' मैंने पूछा इससे क्या होता है? तब आचार्यश्री ने कहा–''देखो! व्यन्तरों की बाधा हो सकती है, नहीं तो क्षपक के अंदर प्रवेश करके विकराल रूप दिखा सकता है। देखो–देखो! भगवती आराधना में लिखा है।'' तब हमने कहा वह तो समाधि होने के बाद का लिखा है, अभी से कहाँ, तो गुरुजी ने दोबारा वही बात कही, ''भगवती आराधना को देखो।'' आप जाओ और ब्रह्मचारी रौनक (शहपुरा) को भेज दो। ''वो आया और घी लगाने लगा। हमने पूछा आचार्यश्री जी हमें सेवा करने कब मिलेगी। तब आचार्यश्री बोले–''केवल हाथ–पैर दबाना ही वैय्यावृत्त्य नहीं है। १० प्रकार की वैय्यावृत्त्य शास्त्र में बताई गई है। तो उस पर विचार करो।'' उपरोक्त प्रसंग से आचार्यश्री के दो संकेत मिलते हैं –

१. आचार्यश्री अपने आपको क्षपक कह रहे हैं। इसका मतलब साफ है कि वो सल्लेखना ग्रहण कर चुके थे और उनके वचन अन्यथावादी कभी नहीं निकले क्योंकि गुरुदेव ने जीवन भर बड़ी सूक्ष्मता से महाव्रतों का पालन किया था।

२. दूसरा संकेत मेरे लिए है कि अब आप उपवास बंद करो, आचार्यश्री जी ने हमें कभी सीधा उपवास को बंद करने के लिए नहीं कहा, परोक्ष रूप से ही संकेत करते थे, तब हमने दूसरे दिन से उपवास करना बंद कर दिया। तभी हमसे वैय्यावृत्त्य कराई।

सन् २०११-१२ में भगवती आराधना का स्वाध्याय चन्द्रगिरि डोंगरगढ़ में प्रारम्भ किया था और १२ वर्ष बाद चन्द्रगिरि तीर्थ में ही अपनी सल्लेखना पूर्वक समाधि कर उस स्वाध्याय को पूर्ण किया। आचार्यश्री की विशेषता रही है कि उन्होंने जो भी त्याग-नियम लिए वो बिना किसी विज्ञापन करके लिए। बाद में उनकी चर्या क्रिया से पता चलता था उनका नियम कि, गुरुदेव ने इसका त्याग कर दिया। इसी प्रकार सल्लेखना का संकल्प भी उन्होंने सीधे घोषित नहीं किया, संकेतों के माध्यम से अवगत कराया। यदि इन संकेतों को कोई न समझे तो नासमझे यह उनकी अज्ञानता है। आचार्य महाराज ने कभी भी अपनी त्याग तपस्या का बखानकर वाह-वाही नहीं लूटी। क्योंकि किसी प्रकार का कोई पुरस्कार तो चाहिए नहीं था जो सल्लेखना की घोषणा करते। आचार्यश्री जी ने शान्ति के साथ अपनी साधना को अंत में साध लिया।

- **णमोकार महामन्त्र तो दूर ओम् भी बोलें तो महाभाग्य समझो—**

प्रतिदिन पीलिया रोग बढ़ता जा रहा था तो वेदना भी वृद्धिंगत थी किन्तु इस अवस्था में आचार्यश्री धर्म चर्चा में संलग्न रहते थे। २२ जनवरी, २०२४ को सुबह स्वयंभूस्तोत्र, नंदीश्वर भक्ति के बाद धर्म चर्चा करते समय बोले—''महाराज! अंतिम समय शास्त्र ज्ञान कुछ काम नहीं आता, कुछ याद नहीं रहता, अंत में णमोकार मन्त्र याद रह गया तो बहुत हो गया, मुख से ओम् भी बोलते हैं तो भी सौभाग्य समझो।''

- **आचार्यश्री हमेशा बोलते रहते थे—**

आचार्यश्री सुबह, दोपहर, शाम जब कभी भी यह वाक्य बोला करते थे— ''त्वन्नाम प्रतिबद्ध वर्ण पठने कण्ठोस्त्व कुंठो मम'', हे प्रभु अंतिमक्षण आपका नाम लेते समय मेरा कंठ अवरुद्ध न हो, हे प्रभु! आपका नाम स्मरण में बना रहे।

**अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।**
**तस्मात् कारुण्य भावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर॥**

हे प्रभु ! आप ही शरण भूत हैं आपकी शरण बनी रहे।

- **बारह भावना का चिंतन हमेशा करते रहना चाहिए—**

२५ जनवरी, २०२४ की शाम को वैय्यावृत्य करते समय कुछ चर्चा हो रही थी। उस समय आचार्यश्री ने कहा—

**कालसिंह ने मृगचेतन को घेरा भव वन में।**
**नहीं बचावन हारा कोई यों समझो मन में॥**

देखो! कालरूपी शेर ने चेतन रूपी मृग को भववन में घेरा है। अब कोई बचाने वाला नहीं है। एक धर्म ही शरण है। बारह भावनाओं का चिंतन हमेशा करना चाहिए।

- **औषधोपचार सफल न होने पर झुँझलाहट , दीनता , घबड़ाहट नहीं—**

वैद्यों के द्वारा उपचार किये जाने पर भी रोग में-वेदना में कमी न आने पर, हम लोग तो कुछ व्याकुल होते थे किन्तु आचार्यश्री इन क्षणों में भी बारह भावना गुनगुनाते रहते थे। २७ जनवरी, २०२४ की सुबह आचार्यश्री जी कहने लगे—''मणि मन्त्र तंत्र बहु होई, मरते न बचावे कोई। कितना भी करलो इस पर्याय को नष्ट होने से कोई नहीं बचा सकता।'' इस प्रकार बारह भावनाओं का चिंतन निरंतर चलता रहता। आचार्यश्री हमेशा सजग थे, जागृत थे, कोई

झुँझलाहट नहीं, कोई दीनता नहीं, कोई घबड़ाहट नहीं थी। स्वाश्रित क्रिया करते थे। इतनी अधिक वेदना में भी कहते थे—"शरीर अपना काम कर रहा है और मैं अपना काम कर रहा हूँ।"

### ❑ वेदना के बावजूद ज्ञान-ध्यान में स्थिरता-एक सच्चे क्षपक-साधु की पहचान—

६ फरवरी, २०२४ को सुबह ६:३० बजे हमने पूछा आचार्यश्री जी रत्नकरण्डक श्रावकाचार में आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने एक श्लोक लिखा है—

उपसर्गे दुर्भिक्षे जरसि रूजायां च निःप्रतीकारे।
धर्माय तनु विमोचनमाहुः सल्लेखना मार्याः ॥

इस श्लोक में भक्त प्रत्यख्यान, इंगिनीमरण, प्रायोपगमन मरण और च्युत, च्यावित और त्यक्त कैसे घटित करना। तब आचार्यश्री बोले—"वर्तमान में इंगिनीमरण और प्रायोपगमन मरण यह दो समाधि मरण नहीं होते निषेध है। एकमात्र भक्तप्रत्याख्यान सल्लेखना समाधि मरण ही है। भक्त प्रत्यख्यान के तीन भेद होते हैं—१. च्युत यानि आयु पूर्ण होने पर तत्काल सब कुछ छोड़ देना। २. च्यावित यानी किसी के द्वारा मारा जाना तब तत्काल सब कुछ छोड़ देना। ३. त्यक्त यानी कि बुद्धि पूर्वक शरीर को छोड़ना, मतलब धीरे-धीरे त्याग करते हुए जिसको सल्लेखना कहते हैं वह धारणकर समाधिमरण करना। यह श्रावक और साधु दोनों को होता है।"

इस चर्चा से अंदाजा लगता है की आचार्यश्री जी शरीर की वेदना से अपने आपको कितना अलहदा रखते हुए ज्ञानोपयोग में सदा स्थिर बने हुए थे। अन्य बातें धीरे-धीरे उन्होंने बंद कर दी थीं। वह पूर्णतः चिंतन, मनन, आत्मध्यान में लीन रहते। थोड़ी सी आवाज भी उन्हें बाधा देती थी। इसलिए हम लोग पूर्णतः शान्ति बनाए रखते थे। यहाँ तक करना पड़ा कि संतभवन में श्रावकों का प्रवेश निषेध कर दिया गया और दर्शन का समय निश्चित कर दिया गया। क्योंकि आचार्यश्री जी एकान्त चाहते थे।

### ❑ सल्लेखना के अंतिम स्वर्णिम दिन—

१३ फरवरी २०२४ को आचार्यश्री जी का पीलिया रोग चरम पर था। एक माह से अधिकतर तरल आहार ही ले रहे थे इस कारण उनका जंघाबल भी कमजोर हो गया था और ज्यादा देर खड़े नहीं हो पा रहे थे। उस दिन आचार्यश्री जी ने आहार-पानी सब मिलाकर १७ अँजुलि ही लिया था।

१४ फरवरी २०२४ को आचार्यश्री ने १२ अंजुली आहार-जल लिया। १५ फरवरी, २०२४ को मात्र ३ अँजुलि जल लेकर बैठ गए। तब वैद्यों ने कहा बीपी लो हो गया है, नापने का प्रयास किया तो आचार्यश्री ने मना कर दिया। फिर हम सभी की हिम्मत भी नहीं हुई।

१६-१७ फरवरी को उन्होंने संकल्प पूर्वक उपवास किये। हम सभी ने काफी प्रयास किये कि आचार्यश्री खाली जल ही ले लेवें किन्तु उन्होंने नहीं लिया। अंत तक पूर्ण जागृति के साथ पञ्च परमेष्ठी मन्त्र का जाप स्मरण करते हुए अंतर्धान हो गए। ऐसे समाधि साधक के चरणों में बारम्बार नमोऽस्तु करते हुए भावना करते हैं कि भविष्य में गुरु की तरह जागृति पूर्वक णमोकार का स्मरण करते हुए मेरा भी सल्लेखना समाधि महोत्सव हो।

—ओम् गुरुदेवाय नमः

# दृढ़ संकल्पी आचार्यश्री जी ने सभी संकल्प पूर्ण किये

जिनकी साधना की आभा से न केवल संघ, बल्कि सम्पूर्ण समाज आलोकित हो, ऐसे महान् तपस्वी, सत्य के पुजारी और निर्दोष चारित्रवान व्यक्तित्व द्वितीय निर्यापक श्रमण श्री योगसागरजी महाराज का यह लेख उनके अद्वितीय अनुभवों की विनयांजलि है। ४४ वर्षों की गहन साधना, आगम शास्त्रों का सतत् स्वाध्याय और संघ में अनेकों जिम्मेदारियों का निष्ठापूर्वक निर्वाह, यह सब उनकी तपस्या की गरिमा को दर्शाता है। आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के अनुज भ्राता के रूप में पहचाने जाने वाले श्री योगसागरजी महाराज न केवल एक साधक हैं, बल्कि संघ के संचालन में एक कुशल मार्गदर्शक भी रहे हैं। आचार्यश्री के आदेशों का पालन करते हुए उन्होंने संघ को स्थायित्व प्रदान किया और स्वयं को निःस्वार्थ सेवा में समर्पित किया। उनकी साधना और सेवा का यह स्वरूप किसी के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन सकता है। ३ फरवरी, २०२४ का वह शुभ दिन जब श्री योगसागरजी महाराज श्री दिगम्बर जैन चन्द्रगिरि तीर्थ क्षेत्र, डोंगरगढ़ पहुँचे। १७ फरवरी, २०२४ तक, पूरे १४ दिन, उन्होंने गुरुदेव की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया। यह सेवा केवल बाह्य कर्तव्यों तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें उनकी निःस्वार्थ भावना और समर्पण की गहराई स्पष्ट झलकती है।

यह लेख उनकी अंतःवेदना और साधना के अनुभवों का संग्रह है। उनके द्वारा लिखा गया प्रत्येक शब्द केवल एक अनुभूति नहीं बल्कि साधना का एक अमूल्य प्रसाद है। इसे पढ़ते हुए पाठक न केवल उनके जीवन के विविध पहलुओं से परिचित होंगे, बल्कि उनकी अद्वितीय साधना के भावों को महसूस कर सकेंगे। तो आइए इस निर्दोष चारित्री और सत्य महाव्रती साधु की लेखनी से सजी विनयांजलि के इन दिव्य अनुभवों में डूबकर आत्मिक शान्ति और प्रेरणा का अनुभव करें। यह लेख आपके अंतर्मन को झकझोरने और साधना के उच्चतम आदर्शों को समझने का एक दुर्लभ अवसर प्रदान करता है।

हमने बचपन से आज तक आचार्य महाराज की विशेषता देखी है कि वो जो संकल्प कर लेते थे वो पूरा करके ही रहते थे। प्रसंगानुसार चाहे कुण्डलपुर के बड़े बाबा के मंदिर का निर्माण हो या अमरकंटक आदि में मंदिर निर्माण की बात हो, भाग्योदय हो, पूर्णायु हो या प्रतिभास्थली हो सभी पूर्ण किये। इसके साथ ही व्यक्तिगत जीवन की साधना में भी जो भी संकल्प किये उनको अंतिम श्वास तक निभाया।

आचार्य महाराज का स्वास्थ्य ५-६ वर्षों से किसी ना किसी रूप में बार-बार अस्वस्थ होने के कारण बहुत अधिक कमजोर हो चला था। उन्हें चलने में परेशानी होती, बहुत ही जल्दी थक जाते थे, कभी-कभी तो रास्ते में एक-दो किलोमीटर पर रुक जाते, ५-७ मिनट बैठते फिर चलते ... । लेकिन निश्चित गन्तव्य तक पहुँच जाते थे। रेवती रेंज इंदौर से विहारकर नेमावर आये। वहाँ पर स्वास्थ्य लाभ लिया। आचार्य महाराज की आज्ञा से हम भी संघ सहित नेमावर १२ या १३ मार्च २०२१ को पहुँच गए। लगभग ३ माह गुरु के चरणों की सेवा मिली। गुरुदेव की आज्ञानुसार

## दृढ़ संकल्पी आचार्यश्री जी ने सभी संकल्प पूर्ण किये

जिनकी साधना की आभा से न केवल संघ, बल्कि सम्पूर्ण समाज आलोकित हो, ऐसे महान् तपस्वी, सत्य के पुजारी और निर्दोष चारित्रवान व्यक्तित्व द्वितीय निर्यापक श्रमण श्री योगसागरजी महाराज का यह लेख उनके अद्वितीय अनुभवों की विनयांजलि है। ४४ वर्षों की गहन साधना, आगम शास्त्रों का सतत् स्वाध्याय और संघ में अनेकों जिम्मेदारियों का निष्ठापूर्वक निर्वाह, यह सब उनकी तपस्या की गरिमा को दर्शाता है। आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के अनुज भ्राता के रूप में पहचाने जाने वाले श्री योगसागरजी महाराज न केवल एक साधक हैं, बल्कि संघ के संचालन में एक कुशल मार्गदर्शक भी रहे हैं। आचार्यश्री के आदेशों का पालन करते हुए उन्होंने संघ को स्थायित्व प्रदान किया और स्वयं को निःस्वार्थ सेवा में समर्पित किया। उनकी साधना और सेवा का यह स्वरूप किसी के लिए भी प्रेरणा का स्त्रोत बन सकता है। ३ फरवरी, २०२४ का वह शुभ दिन जब श्री योगसागरजी महाराज श्री दिगम्बर जैन चन्द्रगिरि तीर्थ क्षेत्र, डोंगरगढ़ पहुँचे। १७ फरवरी, २०२४ तक, पूरे १४ दिन, उन्होंने गुरुदेव की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया। यह सेवा केवल बाह्य कर्तव्यों तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें उनकी निःस्वार्थ भावना और समर्पण की गहराई स्पष्ट झलकती है।

यह लेख उनकी अंतःवेदना और साधना के अनुभवों का संग्रह है। उनके द्वारा लिखा गया प्रत्येक शब्द केवल एक अनुभूति नहीं बल्कि साधना का एक अमूल्य प्रसाद है। इसे पढ़ते हुए पाठक न केवल उनके जीवन के विविध पहलुओं से परिचित होंगे, बल्कि उनकी अद्वितीय साधना के भावों को महसूस कर सकेंगे। तो आइए इस निर्दोष चारित्री और सत्य महाव्रती साधु की लेखनी से सजी विनयांजलि के इन दिव्य अनुभवों में डूबकर आत्मिक शान्ति और प्रेरणा का अनुभव करें। यह लेख आपके अंतर्मन को झकझोरने और साधना के उच्चतम आदर्शों को समझने का एक दुर्लभ अवसर प्रदान करता है।

हमने बचपन से आज तक आचार्य महाराज की विशेषता देखी है कि वो जो संकल्प कर लेते थे वो पूरा करके ही रहते थे। प्रसंगानुसार चाहे कुण्डलपुर के बड़े बाबा के मंदिर का निर्माण हो या अमरकंटक आदि में मंदिर निर्माण की बात हो, भाग्योदय हो, पूर्णायु हो या प्रतिभास्थली हो सभी पूर्ण किये। इसके साथ ही व्यक्तिगत जीवन की साधना में भी जो भी संकल्प किये उनको अंतिम श्वास तक निभाया।

आचार्य महाराज का स्वास्थ्य ५-६ वर्षों से किसी ना किसी रूप में बार-बार अस्वस्थ होने के कारण बहुत अधिक कमजोर हो चला था। उन्हें चलने में परेशानी होती, बहुत ही जल्दी थक जाते थे, कभी-कभी तो रास्ते में एक-दो किलोमीटर पर रुक जाते, ५-७ मिनट बैठते फिर चलते ... । लेकिन निश्चित गन्तव्य तक पहुँच जाते थे। रेवती रेंज इंदौर से विहारकर नेमावर आये। वहाँ पर स्वास्थ्य लाभ लिया। आचार्य महाराज की आज्ञा से हम भी संघ सहित नेमावर १२ या १३ मार्च २०२१ को पहुँच गए। लगभग ३ माह गुरु के चरणों की सेवा मिली। गुरुदेव की आज्ञानुसार

ग्रीष्मकाल में 'वरांग चरित्र' का स्वाध्याय संघ में हुआ। एक-एक दिन एक-एक मुनि वाचन करते, आचार्यश्री सुनकर जी विशेष बातों का विश्लेषण करते थे। इसी प्रवास के बीच सिद्धोदय तीर्थ क्षेत्र नेमावर का पञ्चकल्याणक महामहोत्सव भी सानंद सम्पन्न हो गया।

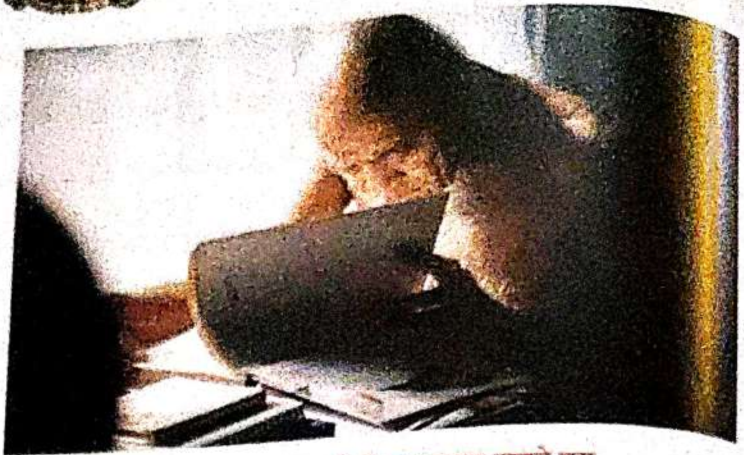
नेमावर में आचार्यश्री स्वाध्याय करते हुए

चातुर्मास काल निकट आ गया तो एक दिन आचार्य महाराज ने हमसे पूछा ''दयोदय तिलवारा यहाँ से कितना होगा?'' तो हमने कहा ४०० किलोमीटर के लगभग होगा किन्तु आपका स्वास्थ्य इस योग्य नहीं है की आप इतना चल पायें, अतः आप यहीं पर चातुर्मास कर स्वास्थ्य लाभ करें और मुझे भी सेवा का सौभाग्य प्रदान करें। आचार्य महाराज बोले-''धीरे-धीरे चलेंगे,'' हमने कहा चलेंगे कैसे? कमजोरी तो है। तो बोले-''चल लूँगा, अभी तो समय है पहुँच जाऊँगा। उनका भी काम हो जाएगा।''

संघस्थ कुछ साधुओं के छोटे-छोटे संघ बनाकर आचार्यश्री ने अलग विहार कराकर कुछ साधुओं को साथ रखकर स्वयं ने विहार कर दिया। मैं भी आचार्य महाराज के साथ विहार में हो गया। विहार में २ किलोमीटर के बाद ५ मिनट बैठते फिर चलते। सुबह शाम में १२-१४ किलोमीटर चलकर रुकते। शरीर थक जाता था किन्तु आचार्य महाराज मन से नहीं थकते थे। दूसरे दिन पुनः हँसते हुए विहार शुरू करते थे।

जब विहार करते हुए जबलपुर १०० किलोमीटर के लगभग रह गया, तब आचार्य महाराज ने हमसे कहा-''आप लोग कुण्डलपुर के लिए विहार करें'', तब हमने कहा की गुरुदेव इस चातुर्मास में सेवा का सौभाग्य प्रदान करें। तो बोले-''नहीं, आप लोग कुण्डलपुर में चातुर्मास करें और २०२२ में बड़े बाबा के मंदिर में विराजमान होने वाली त्रिकाल चौबीसी जिनबिम्बों की पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव सम्पन्न कराना है, उसकी भूमिका बनाना।'' तब हमने कहा यह महोत्सव तो आपको ही कराना है, तब बोले-''वो तो ठीक है हमारा स्वास्थ्य का पता नहीं रहता है ना।'' तब आचार्य महाराज की आज्ञा से हमने, मुनि श्री पूज्यसागरजी, मुनि श्री अतुलसागरजी, मुनि श्री श्रमणसागरजी ने विहार कर दिया।

## ❑ आचार्य महाराज का जीवन अंत समय तक ऐतिहासिक रहा-

आचार्य महाराज अपने लक्ष्य-दयोदय तीर्थ जबलपुर पहुँच गए, २०२१ का चातुर्मास किया। चातुर्मास के अंत में स्वास्थ्य खराब हुआ, पता चला यूरिक एसिड बढ़ गया है। एक माह तक इलाज चला, उससे ठीक हो गया किन्तु चलने में परेशानी होती थी। ठीक हुए तो शहपुरा-भिटौनी के पञ्चकल्याणक में सान्निध्य प्रदान किया। वहाँ हम लोगों को बुलाया, पञ्चकल्याणक के बाद हम लोगों को चरगवाँ पञ्चकल्याणक कराकर कुण्डलपुर पहुँचने की आज्ञा दी। फिर बीच में आज्ञा आई कि पनागर में नए मंदिर का शिलान्यास वहाँ की समाज कराना चाहती है अतः वह भी कराकर आना। यह सौभाग्य प्राप्त कर कुण्डलपुर पहुँच गए। वहाँ पर आचार्य महाराज पहले पहुँच चुके थे। उनका स्वास्थ्य

कमजोर बना हुआ था। इस तरह आचार्य महाराज अपना आचार्यत्व का कार्य तो निभा ही रहे थे साथ ही जैन संस्कृति के प्रति कर्तव्य भी करते जा रहे थे।

कुण्डलपुर में कमजोर स्वास्थ्य के बावजूद आचार्य महाराज सुबह मुनि संघ को एवं आर्यिका संघ को दोपहर में अपने चिंतनामृत पिलाते। उनकी प्रसन्नता में दिनोंदिन वृद्धि होती चली गई। दो माह आनन्द के साथ बीते।

शहपुरा (भिटौनी) में पंचकल्याणक में मूलनायक जिनबिम्ब पर संस्कार करते हुए

एक दिन कुण्डलपुर की कमेटी कह रही थी कि मार्च-अप्रैल में पञ्चकल्याणक का आशीर्वाद प्रदान करें, तब आचार्यश्री जी ने कहा कि "नहीं! कुण्डलपुर की गर्मी बहुत अधिक होती है, व्यवस्था हो नहीं पाएगी, फरवरी में कर लो।" केवल ८ दिन पूर्व में कहा था तब १२ फरवरी से २२ फरवरी २०२२ तक करने का आशीर्वाद दिया। जैसा दिया वैसा ही सानन्द सम्पन्न महामहोत्सव हुआ।

अस्वस्थ अवस्था में भी कुण्डलपुर पंचकल्याणक के मंच पर आचार्यश्री

- **मजबूरी में डोली पर बैठे—**

कुण्डलपुर पञ्चकल्याणक में आचार्य महाराज ने संघस्थ ६ मुनिराजों को और निर्यापक बनाया, उन्हें संघस्थ साधुओं की जवाबदारी सौंपी। संपूर्ण संघ को व्यवस्थित किया, आर्यिका संघ को व्यवस्थित किया और अपने साथ मात्र तीन साधुओं को रखा। अत्यधिक अस्वस्थता के बावजूद विहार करने का मन बनाया तो हमने कहा कि आप विहार कैसे कर पायेंगे, तो बोले—"करूँगा"। तब हमने एक लकड़ी की कुर्सी के नीचे दो बाँस लगवाए और डोली तैयार करवा ली। जैसे ही उन्होंने विहार किया तो हमने हाथ पकड़ लिया। तभी हमने ऐलक धैर्यसागर को इशारा किया कि डोली को पीछे-पीछे लेकर चलो। तालाब के किनारे मंदिर में भगवान के दर्शन किये और फिर आचार्य महाराज ने विहार कर दिया। कुण्डलपुर गाँव के अंदर से होते हुए बाहर निकले, थक गए तो वहाँ रुक गए... आँख बंद कर दो मिनट खड़े रहे। तब हमने निवेदन किया गुरुदेव इस पर बैठ जाएँ, उन्होंने आँख खोली देखा—'डोली', फिर कुछ सोचते हुए बैठ गए। ब्रह्मचारियों ने तत्काल उठाई और आगे विहार हो गया। बीच-बीच में ऐलकगण, ब्रह्मचारीगण बदलते हुए ६-७ किलोमीटर पर बिलगुवाँ ग्राम पहुँच गए। प्राथमिक शाला प्रांगण में रुके। तब आचार्य महाराज बोले—"आचार्य शान्तिसागरजी को भी मजबूरी में डोली पर बैठना पड़ा था।"

कुण्डलपुर में योगसागरजी महाराज आचार्यश्री को सहारा देते हुए

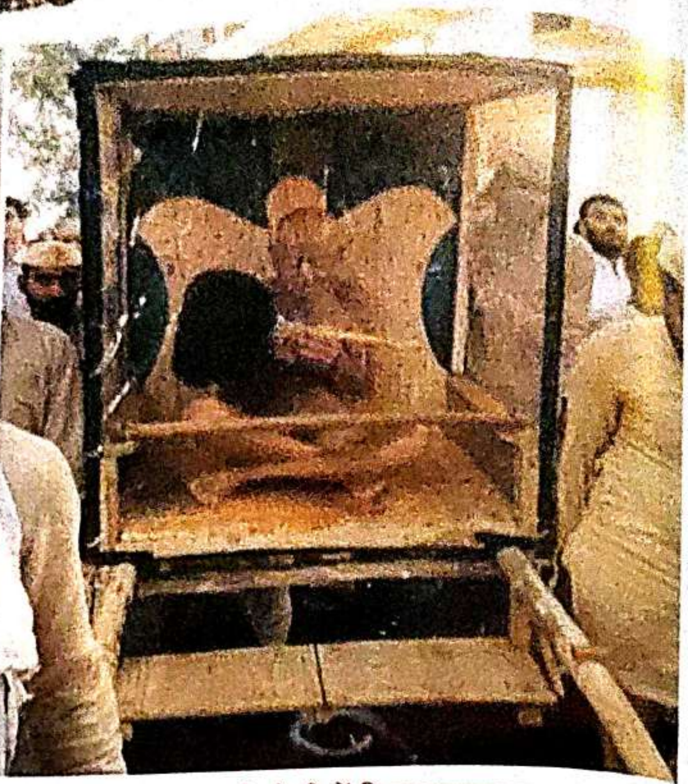

कुण्डलपुर से डोली में विहार करना पड़ा

## ❑ आचार्य महाराज को अपनी सेवा की भूख नहीं—

वहाँ पर आचार्य महाराज की आहार चर्या कराकर मुझे लौटना था, तो आचार्य महाराज ने रुकने का संकेत दिया और साथ चलने को कहा। तीन दिन बाद बोले—"अब आप अपने गन्तव्य की ओर विहार करें।" मैंने कहा मैं आपकी सेवा करना चाहता हूँ तो बोले—"नहीं, अभी आप आज्ञापालन करें।" उन्हें अपनी सेवा कराने की कोई भूख शुरू से ही नहीं थी।

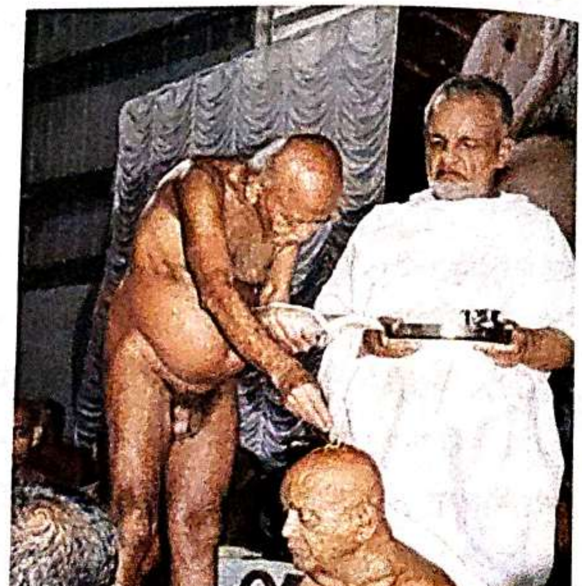

गृहस्थ अवस्था के भाई महावीर को मुनि दीक्षा देते हुए

हमने और मुनि विनीतसागर ने विहार कर दिया। साथ ही प्रतिदिन आचार्यश्री के समाचार पता करते रहे। रहली-पटनागंज में शुरू में मात्र दो-तीन मिनट आहार हो रहे थे, फिर वैद्यों की औषध-उपचारों से स्वास्थ्य में धीरे-धीरे सुधार आता गया और वहाँ से ६०० किलोमीटर पैदल चलकर शिरपुर, वाशिम (महाराष्ट्र) गए, वहाँ चातुर्मास किया। महाराष्ट्र में भी दिगम्बर जैन समाज बहुत हैं गाँव-गाँव, शहर-शहर में भरी पड़ी है। सभी चाह रहे थे कि हमारे गाँव-नगर में भी आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज पधारें। पास के दो गाँव के पञ्चकल्याणक कराने गए-डोणगाँव और परभणी। वहाँ से

जिन्तूर (अतिशय क्षेत्र) होते हुए ३५० किलोमीटर का विहार कर वापस शिरपुर आ गए। आचार्य महाराज का संकेत एवं आशीर्वाद पाकर हम लोग भी नागपुर से शिरपुर पहुँच गए। गुरु जी ने वहाँ पर पाषाण के मंदिर हेतु उपदेश-प्रेरणा दी और समाज-कमेटी ने गुरु जी के सान्निध्य में शिलान्यास कराया। फिर आचार्यश्री जी ने गृहस्थ अवस्था के बड़े भाई महावीर जी को मुनि दीक्षा देकर नाम दिया मुनि श्री उत्कृष्टसागर और इक्कीस क्षुल्लक दीक्षाएँ दीं। मेरे पास दस क्षुल्लकों को रखा और कहा आस-पास विहार करो और २५ दिसम्बर, २०२२ को विहार कर दिया।

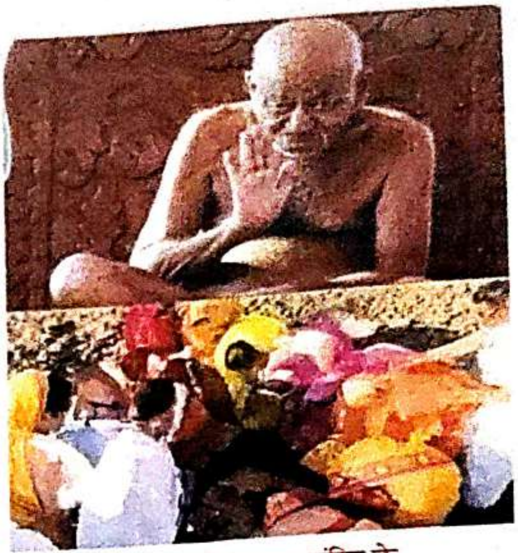

शिरपुर में पाषाण मंदिर के शिलान्यास में आचार्यश्री का सान्निध्य

### ❑ असाध्य रोग कैसे क्यों–

इस तरह आचार्य महाराज अपनी आत्म साधना के साथ श्रमण संस्कृति का संरक्षण-संवर्धन करते हुए, परहित करते हुए, डोंगरगढ़ पहुँचे वहाँ २०२३ का चातुर्मास चन्द्रगिरि डोंगरगढ़ में करके तिल्दा-नेवरा गए। वहाँ पञ्चकल्याणक में सान्निध्य दिया। इसी दौरान अस्वस्थता ने घेरा, ठंड भी बहुत हो गई थी, वहाँ से संघस्थ साधु डोली पर लाए। डोंगरगढ़ चन्द्रगिरि तीर्थ पर पुनः आ गए। तिल्दा-नेवरा में ही पीलिया रोग की शिकायत हो गई थी। वही पीलिया नासूर बन गया एवं आचार्यश्री की त्याग तपस्या के कारण त्यागी हुई वस्तु पथ्य में न लेने के कारण मात्र औषधि लेने से रोग असाध्य ही रह गया। जो समाधि में कारण बन गया।

### ❑ सभी की सलाह ने मुझे सौभाग्य प्रदान किया–

यह समाचार पाकर हम सभी गुरुदेव को लेकर चिंतित हो गए। कई लोगों ने कहा, त्यागियों-साधुओं ने कहा, श्रेष्ठियों ने कहा आपको जाना चाहिए, परन्तु मैं हिंगोली महाराष्ट्र में था लगभग ६०० किलोमीटर दूर एवं संघ भी बड़ा था। बिना गुरु आज्ञा के कैसे जाऊँ? साहस नहीं कर पा रहा था। कहीं आचार्यश्री नाराज ना हो जाएँ। मेरी वजह से उन्हें कोई विकल्प न हो जाए, यह सब विचार करता रहा। फिर दिन-प्रतिदिन स्वास्थ्य गिरने के समाचारों ने और वहाँ संघस्थ साधुओं और ब्रह्मचारियों से पुछवाया तो सभी ने कहा आपको शीघ्र आना चाहिए। तब हमने साथ में मात्र निस्सीमसागरजी को लिया और विहार कर दिया वर्धा पहुँचा वहाँ मुनि पूज्यसागरजी व ऐलक धैर्यसागर साथ हो गए और तेज चलकर हम लोग ३ फरवरी, २०२४ को आचार्य महाराज के पास पहुँच गए। आचार्य वंदना कर नमोऽस्तु किया तो हम सभी को मंदमंद मुस्कान के साथ आशीर्वाद दिया। फिर हम लोगों ने वैय्यावृत्य की।

### ❑ आचार्य महाराज का आदेश–

दूसरे दिन आचार्य महाराज ने भक्ति के उपरान्त हमें कहा–''देखो! मुझे किसी प्रकार का विकल्प न करायें, यहाँ पर कोई भी नहीं आना चाहिए, मुझे शान्ति से आत्म साधना करना है, कुण्डलपुर में सभी को बुला चुका हूँ, सभी को व्यवस्थित कर दिया है, सभी आत्मस्वभाव की साधना करें, यहाँ पर कोई भी साधु संघ या आर्यिका संघ नहीं आना चाहिए।'' तब हमने विनम्र निवेदन किया कि आपके गिरते स्वास्थ्य के समाचार से सभी चिंतित हो गए हैं इसलिए सभी इस ओर विहार कर पास में आकर रुक जाएँगे और जब आपका संकेत मिल जाएगा तो सभी शीघ्र उपस्थित हो

जाएँगे। यह बात सुनकर बोले–''सबको पर्याप्त समय दे दिया है, अब मुझे अपना भी तो देखना है, यहाँ कोई भी नहीं आना चाहिए।'' तब हमने उनको आश्वस्त किया की आपकी आज्ञा का पालन होगा और आकर ब्रह्मचारी जी के माध्यम से उन सभी संघों को आचार्यश्री का संकेत भिजवा दिया। जो जहाँ पहुँच गए थे वहीं रुक गए।

### ❑ आचार्यश्री बोले कर्मों का तीव्रोदय चल रहा है–

४ फरवरी से प्रतिदिन मैं भी आचार्यश्री की आहारचर्या कराने लगा। आहार में ठोस कुछ नहीं मात्र तरल पदार्थ ले रहे थे। उस दिन ८ मिनट से बढ़कर ११ मिनट आहार हुआ, दो दिन इतना रहा फिर कम हो गया। पीलिया के कारण खुजली बहुत चलती थी, हम लोग सहलाते थे। दोपहर के बाद दाह बढ़ना प्रारम्भ हो जाती थी किन्तु सहनशक्ति अच्छी थी। एक भी दिन हम लोगों से पीड़ा के बावत कुछ नहीं कहा। शरीर दिनोंदिन क्षीण होता जा रहा था किन्तु आर्त्तध्यान नहीं करते। कुछ न कुछ धीरे-धीरे पढ़ते रहते थे। जब भी बोलते तो उनके मुख से तात्विक बात ही निकलती। कई वैद्यगण आए उपचार करते, तब आचार्यश्री कहते थे–''कितना कुछ भी कर लो मेरे कर्मों का तीव्रोदय चल रहा है।''

### ❑ अरिहन्त भक्ति से ओतप्रोत–

प्रतिदिन आचार्यश्री सुबह, शाम और आहार के समय अरिहंत प्रभु के दर्शन करते, कायोत्सर्ग पूर्वक भक्ति करते। सुबह, शाम, मध्याह्न में सामायिक से पूर्व नंदीश्वर भक्ति एवं स्वयंभू स्तोत्र के माध्यम से अरिहंतों की भक्ति करते। वैसे तो यह उपक्रम कई वर्षों से चल रहा था। आचार्य महाराज अरिहंत भक्ति के प्रतीक स्वरूप जिनमंदिरों के निर्माण की प्रेरणा एवं जिनबिम्बों की स्थापना का उपदेश देते आ रहे हैं। साथ ही अनेकों मंदिरों के जिनबिम्बों की प्राणप्रतिष्ठा-पञ्चकल्याणक महामहोत्सव में सूरिमन्त्र प्रदाता रहे हैं। अंत समय में भी यह प्रसंग आया, तब अपनी साधना काल में से ५ मिनट अरिहंत भक्ति स्वरूप पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा के विचारों के लिए प्रदान किये। यह ६ फरवरी की बात है, दमोह के नवीन निराला को आशीर्वाद दिया और संघस्थ साधुओं से सूरिमन्त्र दिलाने की अनुमोदना की तथा मुझसे बोले–''देख लो इनकी व्यवस्था बन जाए और यहाँ पर कोई ना आएँ।''

एक दिन हम जो साधु आए थे, वो सभी ऊपर पहाड़ पर बन रहा नवीन मंदिर देखने के लिए गए। वापस आकर आचार्य महाराज को बताया कि बहुत सुंदर मंदिर बन रहा है, अति मनोज्ञ मूर्ति स्थापित की गई है। यह सुनकर रागान्वित हुए बिना हल्की प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मात्र 'हूँ' किया।

### ❑ एकान्त साधक आचार्यश्री जी ने किया आचार्य पद त्याग-लिया सल्लेखना संकल्प–

८ फरवरी को चतुर्दशी का दिन था, हम सभी ने बड़ा प्रतिक्रमण किया। ९ फरवरी को दोपहर में करीब २:०० बजे आचार्य महाराज दीर्घशंका के लिए गए, मैं उनके पीछे कमण्डलु लेकर गया। मुनि निस्सीमसागरजी ने हाथों की शुद्धि के लिए बेसन की कटोरी ले ली। तभी ऐलक धैर्यसागरजी भी आ गए। मुनि पूज्यसागरजी भी बाद में आ गए थे और दूर ही खड़े रहे। आचार्य महाराज वापस आये मुनि निस्सीमसागरजी ने बेसन दिया, हमने कमण्डलु से जलधारा दी, धैर्यसागर ने मुँह-हाथ पोंछे फिर आचार्य महाराज ने कायोत्सर्ग (९ बार णमोकार) किया। उसके बाद उन्होंने मेरी ओर देखा, मैं बगल में खड़ा था, तो मैं इशारा समझ कर उनके सामने-पास में बैठ गया, मेरे पीछे निस्सीमसागरजी एवं धैर्यसागर थोड़ी-सी दूरी पर खड़े हो गए। तब आचार्यश्री बोले–''**कल हमने आचार्य पद के त्याग का संकल्प कर कायोत्सर्ग कर लिया है और फिर बाद में बड़ा प्रतिक्रमण किया है। संघ के दायित्व एवं जिम्मेदारियों से अब मैं**

मुक्त हूँ। मैं पूर्णतः निवृत्त हूँ, मुझे अब किसी भी प्रकार का कोई भी संकल्प-विकल्प नहीं है। मेरी संकल्प पूर्वक सल्लेखना चल रही है। आप लोग मेरी समाधि के बाद ये बातें उचित समय पर सभी के सामने रख देना और उचित समय पर सभी निर्यापकगण एवं समस्त संघ मिलकर ज्येष्ठ निर्यापक मुनिराज समयसागरजी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर देना और सभी निर्यापक अपने संघ को विकसित, विस्तारित, पल्लवित करना (अर्थात् शिक्षा-दीक्षा देना) और धर्म की प्रभावना करना। मेरा आशीर्वाद है। जब तक समाधि नहीं होती तब तक ये बातें किसी को भी नहीं बताना, अव्यवस्था और अशान्ति फैल जाएगी, कायोत्सर्ग कर लो।'' तब हमने कायोत्सर्ग किया। शाम को हमने इन बातों को नोट करके रख लिया।

❑ **गुरु महाराज का बार-बार दर्शन ना मिलने का कारण—**

गुरु महाराज का दिनोंदिन स्वास्थ्य गिरता जा रहा था, कमजोरी बढ़ती जा रही थी, इसके बाद भी वो अपने आवश्यक समय पर करते। शाम को भक्तों को दर्शन देने जाते तो खड़े-खड़े आशीर्वाद देते, सभी की प्यास बुझाते तो थे किन्तु सभी अतृप्त रह जाते थे, क्योंकि प्राणों से प्रिय गुरुवर के गिरते स्वास्थ्य को लेकर सभी को चिंता सता रही थी और इसलिए सभी लोग चाहते थे कि गुरुदेव का अधिक समय तक दर्शन-आशीर्वाद मिले और बार-बार मिले लेकिन यह संभव न हो सका, बढ़ती भीड़ और गुरु महाराज के बढ़ते रोग के कारण सिर भारी रहता, थोड़ी सी भी आवाज उन्हें बाधा पहुँचाती थी। इसलिए भक्तों को बार-बार दर्शन नहीं मिल पाये।

१-२ फरवरी को दोपहर में बाहर भक्तों को दर्शन देने जाते हुए

❑ **अंतिम समय तक पूर्ण प्रचेतस गुरुदेव—**

बसंत पञ्चमी के दूसरे दिन आहार में मात्र ३ अँजुलि जल लेकर अँजुलि छोड़ने लगे, तो हम सभी ने बहुत निवेदन किया गुरुदेव थोड़ा और ले लो किन्तु उनको जो करना था उन्होंने वही किया और बैठ गए। उस दिन हम लोगों ने विचार किया कि थोड़ा क्षेत्र परिवर्तन करते हैं जिससे स्वास्थ्य लाभ हो सके तो ४ किलोमीटर दूर एक प्रशस्त वातावरण वाले फार्म हाउस पर लेकर गए, वहाँ एकान्त था। दूसरे दिन गुरुदेव ने उपवास का संकल्प कर लिया होगा किन्तु हम लोगों को ज्ञात नहीं इसलिए दूसरे दिन हम लोगों ने आहार पर जल्दी उठाने के लिए ब्रह्मचारी जी को कहा। तैयारी हो गई और गुरुदेव को ८:३० पर निवेदन किया किन्तु उन्होंने नहीं सुना और करवट ले ली। ११:०० बजे पुनः आहार लेने के लिए निवेदन किया तो पीछे पलट कर एक हाथ से इशारा करते हुए बोले—''आप लोगों को शान्ति नहीं है क्या !!! शान्ति रखो,'' और पुनः वो अपने आप में लीन हो गए। इस तरह १६ तारीख का उपवास कर लिया। तीसरे दिन पुनः हम सभी ने निवेदन किया तो कोई प्रतिक्रिया नहीं की और उन्होंने १७ तारीख का भी उपवास कर लिया।

शाम ४:०० बजे वहाँ से वापस चन्द्रगिरि के लिए रवाना हुए चन्द्रगिरि पहुँचकर जैसे ही पाटे पर लिटाया और

हमने कहा कि–गुरु महाराज अपन वापस चन्द्रगिरि आ गए हैं तब सुनकर थोड़े प्रसन्न हुए और आशीर्वाद दिया। गुरुदेव पूर्णतः जागृत थे।

प्रतिदिन की भाँति हम सभी साधुओं ने गुरुदेव के साथ प्रतिक्रमण किया, आचार्य भक्ति की। मुनि निरामयसागरजी आदि ने स्वयंभू स्तोत्र, नंदीश्वरभक्ति का पाठ सुनाया। फिर सामायिक में लीन हो गए। वैद्यों के परामर्शानुसार हम सभी ने एक-एक घण्टा रात्रि जागरण करके गुरु सेवा करने का निश्चय किया था किन्तु किसी का भी मन वहाँ से हटने का नहीं हुआ। रात्रि ८:३० बजे नाक से काला सा पित्त निकला, फिर बार–बार निकलने लगा। आँखें खुली किन्तु टिमकार धीरे–धीरे कम होती गई। श्वास तेज चलने लगी। उसी समय गुरुदेव ने करवट ली। मुँह बंद था श्वास तेज थी, हम लोग समझ पा रहे थे कि ये उल्टी श्वास है। मुनि समतासागरजी ने उस समय कुछ सम्बोधन दिया, जागृति के संकेत माँगे तो गुरुदेव ने अँगुलियाँ हिलाईं। धीरे–धीरे श्वास कम होती गई, आँखों की टिमकार भी बंद हो गई। रात्रि २ बजकर, ३५ मिनट पर गुरुदेव नश्वर शरीर को छोड़कर आत्मस्थ हो गए।

आचार्य गुरुदेव ने जिस अध्यात्म की ऊँचाइयों को छुआ था उसी ऊँचाइयों पर पहुँचकर आत्म समाधि में लीन हुए। यह हमने बड़ी ही सूक्ष्मता से अनुभव किया। इतना बड़ा चलता–फिरता गुरुकुल बनाकर निर्लिप्त भाव से त्याग कर निराकुल हो गए। शरीर के प्रति इतने निर्मोही कि स्वयं उन्होंने इलाज के लिए कभी भी नहीं कहा, न ही किसी डॉक्टर या वैद्य को बुलाने को कहा, न ही कोई चेकअप कराने को कहा। यदि कोई डॉक्टर या वैद्य लेकर आता और बहुत विनम्रता के साथ निवेदन करता तो उसे शरीर दिखाते किन्तु उनकी सलाह या पथ्य, उनके नियम–त्याग के अनुरूप होता तो ही स्वीकारते अन्यथा नहीं। शरीर के प्रति या भोजन के प्रति उनकी कोई मूर्छा नहीं थी। इसलिए आहार के वक्त किसी से पकड़वाते नहीं थे, पूना के वैद्य के निवेदन पर अंत में सहारा लिया एवं हम लोगों के तथा वैद्यों के द्वारा कहा जाता कि आहार लें आप तो भी नहीं मानते थे, जो दिखाते थे, उसमें से स्वयं अपने हिसाब से पथ्याहार ले रहे थे। पीलिया का दिन–प्रतिदिन दुष्प्रभाव बढ़ने से शरीर में दाह एवं खुजली भी बढ़ी किन्तु हम लोगों से उस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा। ना ही कराहे, ना ही दुःखी होकर रोये गाये। वो तो सहन करते रहते थे, बीच–बीच में शास्त्रों की गाथाएँ–श्लोक बोलते रहते थे। दो–तीन बार हमने उनकी खुजलाहट को देखते हुए कहा आज आपको तकलीफ ज्यादा हो रही है क्या? तो कोई जवाब नहीं देते थे। वो तो अपने आत्म स्वभाव को अनुभूत करते रहे। ऐसे आगम साधक–आत्म साधक गुरुवर के चरणों में कोटिशः नमोऽस्तु करते हैं और भावना भाते हैं कि इसी प्रकार आत्मनिष्ठ होकर मेरी भी समाधि हो ।

ओम् शान्ति

## जीवन के अद्वितीय एवं अविस्मरणीय पल

यह लेख परमपूज्य मुनि श्री पूज्यसागरजी महाराज की आध्यात्मिक साधना और अनुभवों का अनमोल दस्तावेज है। मुनिश्री ने सन् १९९९ में अपने गुरु आचार्यश्री से मुनि दीक्षा ग्रहण की और इसके उपरांत ९ वर्षों तक मौन साधना में लीन रहे। इस अवधि में उन्होंने आत्मा के गहरे रहस्यों का चिंतन और मनन किया। ३ फरवरी को मुनि श्री निर्यापक श्रमण श्री योगसागरजी के साथ आचार्यश्री के पावन चरण-सान्निध्य में पहुँचे। वहाँ गुरुसेवा में संलग्न होकर उन्होंने अपने जीवन को और अधिक पवित्र और अर्थपूर्ण बनाया। मुनिश्री ने अपने लेख में जो कुछ भी अनुभव किया, वह सत्य, सरलता और भावनाओं की गहराई के साथ प्रस्तुत किया है। उनके इस लेख में जीवन के शाश्वत सत्य और आत्मा की अनुभूतियों का सार है। आइए, इस दिव्य लेख के माध्यम से उनके पूज्य भावों को पढ़ें और उनसे प्रेरणा लें।

१० जनवरी, २०२४ को कारंजा में मुझे ब्रह्मचारी जी के द्वारा समाचार मिला कि गुरु जी का स्वास्थ्य बहुत अधिक खराब है। यह सुनकर मन चिन्तित हो उठा, जब संघ के बड़े महाराजों से सम्पर्क किया तो सभी ने गुरु जी की स्थिति चिंताजनक बताई। १४ जनवरी को एक श्रावक के माध्यम से संघस्थ द्वितीय निर्यापक श्रमण श्री योगसागरजी के पास जो ब्रह्मचारी जी थे उनके माध्यम से चर्चा हुई, उन्होंने कहा गुरु जी के स्वास्थ्य की चिंता जनक स्थिति को देखते हुए उनके पास जाने का मन बना रहे हैं। यह सुनकर हमने कहा–महाराजश्री जी, हम भी आपके साथ चलेंगे। तो बोले हम हिंगोली से एक साधु को लेकर निकल रहे हैं, तुम बीच में वर्धा के आस-पास मिल जाना।

हमने अपने साथी ऐलक धैर्यसागरजी से चर्चा कर विहार कर दिया और वर्धा में एक ही दिन दोनों संघों का प्रवेश एवं मिलन हुआ। निर्यापक श्रमण जी ने हम दोनों को बहुत वात्सल्य दिया। वात्सल्यपूर्ण वातावरण में हम लोगों को आचार्य महाराज के पास ले गए।

३ फरवरी, २०२४ को लगभग दोपहर ३:०० बजे चन्द्रगिरि तीर्थक्षेत्र डोंगरगढ़ पहुँचे। मूलनायक चन्द्रप्रभ स्वामी आदि भगवानों के दर्शन कर, संतशाला में पीछे की ओर एक पाटे पर गुरुदेव लेटे हुए थे, मुनि श्री निरामयसागरजी वैय्यावृत्त्य कर रहे थे। ब्रह्मचारी विनय जी भी बैठे हुए थे। हम चारों महाराजों ने आचार्य वंदना हेतु कायोत्सर्ग पूर्वक त्रिभक्ति करके नमोऽस्तु किया। इसी दौरान गुरुदेव ने आँखें खोली और हम चारों को देखा। हम लोग सहमे हुए थे क्योंकि बिना आज्ञा के आए थे। भक्ति के बाद हम लोगों ने परिक्रमा लगाई फिर वैय्यावृत्त्य करने लगे। शाम ४:३० बजे गुरुजी उठकर बैठ गए। हाथ जोड़कर सिर पर लगाकर पञ्चपरमेष्ठी को नमस्कार किया और बोले–'प्रतिक्रमण'। तभी हम सभी मुनिराज वहीं बैठ गए और गुरुदेव के साथ प्रतिक्रमण किया। ऐलक धैर्यसागरजी ने भी दूर जाकर प्रतिक्रमण किया।

प्रतिक्रमण के तुरन्त बाद आचार्यश्री जी से चर्चा हुई, उन्होंने बड़े महाराज की ओर देखा तो बड़े महाराज

योगसागरजी ने कहा संघ को हिंगोली छोड़कर आया हूँ। फिर आचार्यश्री ने हमारी तरफ देखा तो मैं भावुक हो गया और कहा गुरुदेव आपकी स्थिति देखी नहीं जा रही है। ऐसा कैसे हो गया? तो बोले–"क्या करें शरीर है अच्छा–बुरा होता रहता है, अभी कुछ दिनों से बहुत कमजोरी आ गई है, पुनः बोले–आप लोगों को १ साल पहले बुलाया था, लेकिन क्या करें ऐसी स्थिति बनी कि आप दोनों नहीं आ पाए, कर्मों की बड़ी विचित्रता है।" ऐसा कहते हुए थोड़े भावुक हुए, तब हमने कहा गुरुदेव आप बिल्कुल भी विकल्प न करें, हम लोग भले ही उस समय नहीं आ पाए लेकिन आपका जैसा–जैसा संकेत और आशीर्वाद आता रहा वैसा-वैसा हम दोनों करते गए, कहीं भी कोई परेशानी नहीं आई। वर्धा में चातुर्मास भी खूब प्रभावना पूर्ण रहा, सब आपके आशीर्वाद की कृपा रही। तभी आचार्यश्री बोले–"धैर्यसागर कहाँ हैं?" चूँकि ऐलक धैर्यसागर पीछे थोड़ी दूर बैठे थे, उन्हें तुरन्त बुलाया, आचार्यश्री को उन्होंने नमोऽस्तु किया, आचार्यश्री ने बहुत आशीर्वाद दिया, पुनः हम सभी को खूब आशीर्वाद दिया। तब हम लोगों को जो आने से पूर्व डर था वह आचार्यश्री द्वारा खुशी–खुशी दिये गए आशीर्वाद से दूर हो गया और रास्ते की पूरी थकान मिट गई।

रात्रि विश्राम के समय हम सभी आचार्यश्री जी की वैय्यावृत्य कर रहे थे तभी पूना के वैद्य जी आए, उन्होंने आचार्यश्री जी को देखा, सुबह फिर से देखा, उपचार बताए। गुरु जी से बहुत देर तक चर्चा की, गुरु जी ने बड़ी प्रसन्नता से अच्छी–अच्छी चर्चायें की, पथ्य की चर्चा की।

प्रातः ९:३० बजे आचार्यश्री को आहार पर उठने का निवेदन किया गया, तब गुरुदेव आहार चर्या के लिए उठे, उस दिन ११ मिनट आहार हुआ जबकि पिछले दिन ७-८ मिनट का ही आहार हुआ था। आहार में वृद्धि देख हम सभी को प्रसन्नता हुई। बड़े महाराज (पूज्य योगसागरजी) ने बाहर जाकर सभी को अवगत कराया उपस्थित हजारों लोग प्रसन्न हो गए।

आचार्यश्री जी ने दूसरे दिन बड़े महाराज (पूज्य योगसागरजी) जी को कहा–"कोई भी मुनि संघ या आर्यिका संघ यहाँ पर नहीं आना चाहिए।" हम ७ साधु मिलकर २४ घंटे गुरुदेव के पास रहते थे। सबने अपना–अपना समय निश्चित कर लिया था। पहले से आचार्यश्री की सेवा में लीन निर्यापक मुनि श्री प्रसादसागरजी, मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी और मुनि श्री निरामयसागरजी को अनुभव अधिक था। निरामयसागरजी तो दिन हो या रात सभी क्रियाओं में लगे ही रहते थे, पाठ आदि सुनाना और वैय्यावृत्य में वो पूरी तरह से सावधान रहते थे और समय पर हर क्रिया करते थे। तीनों मुनिराज हम लोगों के आने से प्रसन्न हो गए थे क्योंकि अब कोई भी बड़ा निर्णय बड़े महाराज निर्यापक श्रमण योगसागरजी से पूछकर तुरन्त हो जाता था। सभी लोग आचार्यश्री की शारीरिक एवं मानसिक वैय्यावृत्य करते रहते थे।

एक दिन की बात है आचार्यश्री कक्ष में थे प्रातः ९ बज रहे थे। मैं पहुँचा तो अन्य महाराज शौच हेतु चले गए। उस दिन आचार्यश्री को शारीरिक परेशानी कुछ ज्यादा हो रही थी, तो उनको प्रसन्न करने के लिए हमने कहा–गुरु जी सभी साधुओं की ओर से दो पंक्तियों में भावना आपके चरणों में आई है, वो आपके चरणों में रख रहा हूँ, आचार्यश्री कुछ नहीं बोले, तो हमने पंक्तियाँ सुनाईं–

हम सब तो खुशी नहीं, गम चाहते हैं।
खुशी तो उन्हें मिले, जिसे हम चाहते हैं ॥

पंक्तियाँ सुनकर आचार्यश्री के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान छा गई, फिर आचार्यश्री आहार पर उठ गए।

## निस्पृह, सतर्क आचार्य श्रीजी–

आचार्यश्रीजी अपनी साधना में पूर्णतः सावधान थे। हम लोगों के पहुँचने के बाद गुरु जी की आहार चर्या दो दिन तो अच्छी रही फिर धीरे-धीरे कम होती चली गई, लेकिन आचार्यश्री जी अपनी चर्या में बहुत सतर्क थे। वैद्यों के उपचार से भी जब शरीर साथ नहीं दे रहा था तो वो अंदर ही अंदर उत्कृष्ट तरीके से सल्लेखना पूर्वक समाधि को साध रहे थे। यह हमने वहाँ रहकर बड़ी सूक्ष्मता से देखा, अनुभव किया।

गुरुदेव को किसी से भी कोई विशेष राग नहीं था। यहाँ तक की अपने शरीर से भी नहीं, वो उसकी व्यर्थ सेवा नहीं कराते। इस सम्बन्ध में एक दिन की बात है, हम उन्हें वैय्यावृत्त्य हेतु तेल लगाने लगे, तो आचार्यश्री जी ने ब्रह्मचारी विनय जी की ओर इशारा करते हुए कहा–"पहले उनसे पूछ लो आवश्यक है क्या?" यह देख हम उनकी दृष्टि को समझ गए की आचार्यश्री जी व्यर्थ सेवा नहीं कराना चाहते और ब्रह्मचारी जी को सब मालूम था कि क्या-कब-कैसा करना है, क्योंकि वैद्य जो भी आते थे वह उपचार आदि कैसा-क्या करना है सब कुछ ब्रह्मचारी जी को या मुनि निरामयसागर जी को ही बताकर जाते थे।

## आचार्यश्री जी ने रचा नया इतिहास–

पूरा संघ एवं समाज सोच रही थी कि आचार्यश्री जी अपने गुरु आचार्यश्री ज्ञानसागरजी की तरह अपना आचार्य पद का त्याग करेंगे और सबको बता कर समाधि लेंगे। लेकिन गुरुजी ने इतिहास दोहराया नहीं बल्कि नया इतिहास रच दिया। उन्होंने प्रारम्भ से ही अपनी साधना किसी को बताकर नहीं की एवं अंत में भी उन्होंने समाधि साधना सल्लेखना को अपने आप में एकान्त में साधी इसलिए उन्होंने संघस्थ मुनि आर्यिकाओं को अपने पास आने से मना कर दिया था।

आचार्यश्रीजी ने स्वास्थ्य की गिरती स्थिति को देखते हुए स्वयं ही सल्लेखना धारण कर ली थी। यह बात तब स्पष्ट हो गई थी जब चन्द्रप्रभसागरजी को उन्होंने यह कहा था कि–"क्षपक के कक्ष में उपवास वाला नहीं रहता" और समाधि से लगभग एक-डेढ़ माह पूर्व आचार्यश्री ने समस्त संघ को आवश्यक सूत्र प्रेषित कराए थे, उसमें एक सूत्र में भी उन्होंने संकेत दे दिया था कि–"अब शरीर इस काबिल नहीं रहा अतः सभी को अपनी जिम्मेदारी समझना चाहिए, अब पुनरावृति नहीं कर पायेंगे। पूर्व में देने योग्य आप सभी को सब दे दिया गया है।" इससे स्पष्ट होता है कि उन्होंने सल्लेखना पूर्वक समाधि धारण का मन ही नहीं बनाया था बल्कि धारण कर चुके थे और फिर ९ फरवरी को हमने दूर से देखा कि निर्यापक श्रमण योगसागरजी को आचार्यश्री कुछ बता रहे हैं एवं मुनि निस्सीमसागरजी एवं ऐलक धैर्यसागर उनके पीछे कुछ दूरी पर खड़े हैं। उस चर्चा को बड़े महाराज ने बाद में जगजाहिर किया था, जिससे सारे भ्रम दूर हो गए थे।

सल्लेखना की दृष्टि से वो आहार कम करते जा रहे थे, इससे कमजोरी बढ़ती जा रही थी, फिर भी उनकी जागृति-सावधानी में कोई कमी नहीं थी। एक दिन शाम को देवदर्शन के लिए जैसे ही कक्ष के बाहर आये तो प्रतिमा जी तक पहुँचने के लिए फर्श पर बिना परिमार्जन के, पहले से ही मधुर (एक श्रावक) ने ५-६ पाटे लगा दिये थे, जिससे गुरुदेव को फर्श की ठंडक बाधक ना हो, तब आचार्यश्री जी उस पर न चलकर नीचे ही चले और हम लोगों से बोले–"असंयमियों से कार्य करा रहे हो, पिच्छी कौन लगाएगा?" तत्काल हम लोगों ने पिच्छी से परिमार्जन किया

तभी आचार्यश्री जी ने उन पर चरण रखे।

इसी प्रकार १३-१४ फरवरी की बात है, आचार्यश्री दोपहर में लघुशंका के बाद बैठे और दिशाओं की ओर इशारा करके पूछा ये कौन सी है, ये कौन सी है और दक्षिण दिशा की ओर पैर करके लेट गए, तो हम लोगों ने कहा—आचार्यश्री यह तो दक्षिण दिशा है, उत्तर दिशा इस तरफ है तो सुनकर भी अनसुना कर देते। दो-तीन बार ऐसा हुआ।

गुरुदेव की जागृति एवं अप्रमत्तता के अनेक संस्मरण हैं। १४ फरवरी की शाम को जब भक्तों को दर्शन देने के लिए गए तो खड़े नहीं हो पा रहे थे तो उनको एक कुर्सी पर बैठा दिया था और दरवाजे खोल दिये गए, तब गुरुदेव ने पिच्छी से सिर को लगाकर संसार के सभी जीवों से क्षमा माँगी और क्षमा कर रहे हों, ऐसा अनुभव सभी को हुआ, वह अंतिम दर्शन सभी को मिला था।

१६ फरवरी की बात है, हम कुछ महाराज आचार्यश्री की वैय्यावृत्त्य कर रहे थे, तब एक महाराज ने बोला कुण्डलपुर के बड़े बाबा की जय, तो आचार्यश्री ने दोनों हाथों को जोड़कर ऊपर उठाकर जय बोली। आहार पर ९:३० बजे निवेदन किया गया तो नहीं सुना, तब निर्यापक श्रमण योगसागरजी ने समझाते हुए निवेदन किया, तो आचार्यश्री जी ने आँखें खोली और बड़े महाराज को शान्ति रखने को कहा। १६ तारीख का उपवास हो गया।

१७ फरवरी को भी उपवास हो गया, आहार पर नहीं उठे। दोपहर में ३ बजे के बाद ब्रह्मचारी मनीष पूर्णायु वाला आया, उसने हमको बताया कि आचार्यश्री ने हमसे कहा था की मेरी आँखों से ओझल मत होना, तो हम उसको अंदर ले गए और आचार्यश्री जी को कहा आचार्यश्री जी आपने ब्रह्मचारी मनीष पूर्णायु को कहा था ना की मेरी आँखों से ओझल मत होना, तो मनीष आया है। मनीष ने जैसे ही नमोऽस्तु कहा तत्काल आचार्यश्री ने आँखें खोलकर देखा और आशीर्वाद दिया। वो पूर्णतः जागृत-होशोहवास में थे। उसी दिन रात्रि १२ बजे करीब आचार्यश्री जी को करवट लेना था तो उन्होंने हम लोगों को इशारा किया पिच्छी लगाने का, पिच्छी लगा दी तो स्वयं ही करवट बदली। उसी समय हम लोगों ने अपनी ओर से, समस्त मुनि संघ, आर्यिका संघ की ओर से, ब्रह्मचारी भाई-बहनों की ओर से तथा समाज की ओर से नमोऽस्तु कहा, क्षमा माँगी। जिस प्रकार आचार्यश्री अंतिम क्षण तक जागृत सतर्क रहे और बुद्धिपूर्वक सर्व त्याग कर यम सल्लेखना धारणकर आत्मलीनता पूर्वक समाधिस्थ हुए। मेरा मन कहता है कि गुरु जी ने २०२४ में समाधि धारण की है तो आने वाले भवों में विदेहक्षेत्र स्थित विद्यमान बीस तीर्थंकरों की श्रेणी में या भरत-ऐरावत की २४ तीर्थंकरों की श्रेणी में उनका जन्म होगा एवं जब पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार हुआ तब पूरे १४ मुनिराज उपस्थित थे, इसका मतलब हमारे गुरुदेव शीघ्र ही १४ गुणस्थान को पार कर मोक्ष प्राप्त करेंगे।

गुरुदेव की समाधि काल में की गई सेवा का फल यही चाहता हूँ कि जिस प्रकार गुरुदेव ने जागृत, सावधानी पूर्वक अपनी समाधि की है, ऐसी ही मेरी भी समाधि हो, ऐसी मंगल भावना के साथ गुरुदेव के पावन चरणों में कोटिशः नमोऽस्तु।

❑❑❑

# संत शिरोमणि की अभूतपूर्व सम्यक् सल्लेखना-समाधि

यह लेख सन् २०१३ में आचार्यश्री जी से मुनि दीक्षा प्राप्त पूज्य मुनि श्री निस्सीमसागरजी महाराज द्वारा लिखा गया एक अमूल्य आध्यात्मिक लेख है। मुनिश्री ३ फरवरी, २०२४ को निर्यापक श्रमण श्री योगसागरजी के साथ आचार्यश्री जी के पावन चरण-सान्निध्य में पहुँचे। वहाँ उन्होंने २४ घंटे गुरुदेव के निकट रहकर सेवा में लीन रहते हुए अपनी वैय्यावृत्त्य (सेवा) का उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत किया। मुनिश्री ने गुरु संघ में रहकर साधु सेवा की प्रेरणादायक मिसाल कायम की, जिसकी प्रशंसा न केवल संघ के सभी साधु करते हैं, बल्कि स्वयं गुरुदेव ने भी उनकी सेवा भावना को सराहा। उनके द्वारा प्रस्तुत सेवा और समर्पण न केवल अनुकरणीय है, बल्कि यह गुरु-शिष्य परम्परा का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस लेख में मुनिश्री ने आगम शास्त्रों के संदर्भों के माध्यम से आचार्यश्री की सल्लेखना समाधि का सजीव वर्णन किया है। उन्होंने जो अनुभव किया वह अपने शब्दों में जीवन्त और भावपूर्ण रूप में प्रस्तुत किया है। यह लेख न केवल आध्यात्मिक प्रेरणा का स्रोत है, बल्कि साधना, सेवा और गुरु-भक्ति की गहराई को समझने का एक सशक्त माध्यम भी है। आइए इस लेख के माध्यम से उनके पावन अनुभवों और विचारों का अध्ययन करें और उनसे प्रेरणा प्राप्त करें।

इस लोक में असाता कर्म के तीव्र उदय से प्राणियों को शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों के अपार कष्ट भोगने पड़ते हैं। मोही-रागी-अज्ञानी जन संकट के समय शोक, रुदन, विषाद करके पुनः अशुभ कर्म का ही बंध करते हैं, किन्तु निर्मोही वैरागी सम्यग्ज्ञानी जागृत जीव समता धारण कर अपने ही किये कर्म का फल जानकर शांत भाव से बिना प्रतिकार किये उन व्याधियों को सहन करके कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं। आत्म-हित साधक मुनिराज जी उन तीव्र शारीरिक वेदनाओं के समय आत्मचिंतन एवं जिनेन्द्र प्रभु का स्मरण-ध्यान कर अपने चित्त में व्रतों के प्रति दृढ़ता एवं सहनशीलता का पवित्र भाव समाहित कर मुस्कुराते हुए विपुल मात्रा में कर्म निर्जरा कर लेते हैं और यदि वह शारीरिक व्याधि-असाता वेदनीय कर्म शांत नहीं होता है तो वह साधु-व्रती-महाव्रती अपने संयम की रक्षार्थ इस नश्वर देह का विधिपूर्वक परित्याग कर विदेह बनने की अविराम यात्रा पर खुशी-खुशी गमन करते हैं, जिसको जैनाचार्यों ने सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण की संज्ञा दी है।

ईसा की चतुर्थ शताब्दी के दिगम्बर जैनाचार्य समन्तभद्र स्वामी ने अपने ग्रन्थ श्री रत्नकरण्डक श्रावकाचार जी में सल्लेखना धारण करने के बारे में लिखा है–

**उपसर्गे दुर्भिक्षे जरसि रुजायां च निःप्रतिकारे।**
**धर्माय तनु विमोचन माहुः सल्लेखनामार्याः ॥१२२॥**

अर्थात् प्रतिकार रहित उपसर्ग, दुर्भिक्ष (दुष्काल), बुढ़ापा और रोग होने पर धर्म की रक्षार्थ शरीर के प्रति मोह

छोड़ने को, प्राणियों के आश्रयभूत गणधर स्वामी ने सल्लेखना कहा है।

इस सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण को जैनागम में तप का फल कहा है। यथा–'रत्नकरण्डक श्रावकाचार'

अंतः क्रियाधिकरणं तपः फलं सकल दर्शिनः स्तुवते।
तस्माद्यावद्विभवं समाधिमरणे प्रयतितव्यम् ॥२३॥

अर्थात् सकलदर्शी सर्वज्ञ भगवान अंत समय में समाधिमरण/सल्लेखना के आश्रय को तप का फल कहते हैं, इसलिए जब तक शक्ति है तब तक समाधिमरण के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

जगत् विख्यात कुशल समाधिसम्राट, बाल ब्रह्मचारी, विशाल संघ के नायक, शुद्धात्मतत्त्व अनुभवक, संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महामुनिराज ने अपने जीवन काल में अनेक सल्लेखना पूर्वक समाधियाँ कराईं और स्वयं के आयुकर्म की उदीरणा का अनुभव कर अंतिम दिनों में स्वयं पूरी तरह सजग रहकर आगमानुसार उत्कृष्ट समाधिमरण कर एक अभूतपूर्व आदर्श सभी के समक्ष सहज ही प्रस्तुत कर दिया।

आचार्यश्री ने परीषहजय शतक लिखा है उसके ११ वें एवं १०वें छन्द की पंक्तियों को स्वयं उन्होंने जीकर सार्थक कर दिया–

**कषाय रिपु का शमन किया है, सने स्वरस में गुणी बने,**
**नग्न नीत भवभीत रीत हो, अघ से तप के धनी बने।**
**पाप ताप का कारण तन की, ममता का बस वमन किया,**
**शमी दमी मतिमान मुनि ने, समता के प्रति नमन किया॥**

तन की वेदना से बेखबर, सकल कामनाओं से विरत, विशाल संघ की ममता के त्यागी, आत्मचिंतन अनुरागी, ऐसे महाश्रमण गुरुदेव की जीवन यात्रा के अंतिम दिनों में मुझे भी उनकी चरण-सन्निधि में रहकर, उनकी वैय्यावृत्त्य करने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ।

परम तपस्वी निर्यापक श्रमण श्री योगसागरजी मुनिराज ने मेरे ऊपर परम कृपा करके मुझे अपने साथ लेकर गुरुदेव के पास गए। रास्ता लम्बा होने के कारण हिंगोली में मुनि विनीतसागरजी एवं अतुलसागरजी के साथ संघस्थ दसों क्षुल्लक महाराजों को छोड़कर तेजगति से चन्द्रगिरि तीर्थ डोंगरगढ़ की ओर बढ़े। रास्ते में आचार्य संघ के कई निर्यापकों एवं मुनियों के समाचार बड़े महाराज के पास आते रहे कि हम भी आचार्यश्री की सेवा करने पहुँचना चाहते हैं, तब बड़े महाराज सभी के पवित्र भावों की सहृदयता से अनुमोदना करते हुए उचित सलाह प्रदान करते रहे।

रास्ते में कई तरह की बाधाएँ आईं, फिर भी उनको गौण करते हुए हम दोनों महाराज ३०-३५ किलोमीटर प्रतिदिन विहार करते रहे। उत्साह दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। गुरु के दर्शन एवं उनकी सेवा की चाहत ने शरीर को थकने नहीं दिया। वर्धा में मुनि श्री पूज्यसागरजी महाराज एवं ऐलक धैर्यसागरजी भी साथ हो लिए। ३ फरवरी, २०२४ को दोपहर को लगभग ३:०० बजे हम चारों ही साधु गुरु के पावन चरणों के निकट पहुँच गए। पूज्य निर्यापक श्रमण प्रसादसागरजी एवं मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी ने आगवानी की थी। आचार्यश्री जी संतभवन के पीछे धूप की आँच में पेड़ के नीचे पाटे पर लेटे हुए थे। हम चारों ने आचार्य वंदना, भक्ति एवं परिक्रमा की और उसके बाद आचार्यश्री ने मुनि श्री योगसागरजी व हमें देखा, पूछा–''ये लोग कहाँ से आ गए?'' तब मुनि श्री योगसागरजी महाराज ने संक्षिप्त में सब

बता दिया। गुरुजी संतुष्ट हुए फिर प्रतिक्रमण के बाद मुनि श्री पूज्यसागरजी एवं ऐलक धैर्यसागरजी से वार्तालाप हुई। हम सबको उनकी समीपता एवं वैय्यावृत्य पाकर अद्‌भुत संतोष की अनुभूति हुई।

प्रतिक्रमण के बाद संतभवन के हॉल में विराजित अस्थाई वेदिका पर विराजित जिनबिम्ब की देव-वंदना कर गुरुदेव कक्ष क्रमांक २ में विश्राम हेतु चले गए। वहीं पर सायंकालीन आचार्यभक्ति हुई, वहीं पर माइक लगा दिया गया था, जिससे आचार्यश्री जी की आवाज संतभवन के बाहर बैठे हजारों लोग सुन सकें, हम सभी को प्रायश्चित और अंत में आशीर्वाद मिला।

उसी दिन से मुनि श्री निरामयसागरजी के साथ हम भी रात्रिविश्राम के लिए आचार्यश्री जी के कक्ष में रहने लगे। रात्रि में आचार्यश्री अधिक परीषह सहते थे। शरीर में खुजली, दाह, कमरदर्द आदि के बावजूद भी उन्होंने कभी कुछ नहीं कहा। असाता कर्म की उदीरणा मानकर सहजता से सहन करते रहे। कभी-कभी रात्रि में उनके मुख से वेदना के अतिरेक में बिना इच्छा के होने वाली स्वाभाविक कूलने की किंचित् आवाज आती थी किन्तु जब भी हम देखते या पूछते तो वह किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते थे। वेदना का प्रतिकार अथवा किसी प्रकार की याचना और दीनता का भाव उनके अंदर कभी नहीं आया। रात्रि में कभी लघुशंका की इच्छा हुई तो हर समय सेवा में उपस्थित पास वाले कक्ष में ब्रह्मचारी आनंद ललितपुर, मधुर देवरी हर समय तत्पर रहते थे और पूर्णायु आयुर्वेद महाविद्यालय जबलपुर के वैद्य स्वप्निल सिंघई तथा वैद्य गौरव शाह सदा उपस्थित रहते थे। आचार्यश्री ने जीवन भर प्रत्येक कार्य में पूर्णतः प्रमत्त रहकर साधना की है, ऐसे गुरुदेव उम्र के अंतिम पड़ाव में भी पूरी तरह से जागरुक थे।

दिनांक ४.२.२०२४, प्रातः ६:३० बजे आचार्यश्रीजी के सान्निध्य में सभी ने आचार्य वंदना की, तत्पश्चात् गुरुदेव ने रात्रि प्रायश्चित दिया और फिर आशीर्वाद दिया, उसके बाद गुरुदेव ने निर्यापक श्रमण योगसागरजी महाराज से कहा अब कोई भी उपसंघ यहाँ नहीं आना चाहिए। प्रातः ७:३० बजे पुणे के प्रसिद्ध वैद्यराज श्री गाडगिल जी आए उन्होंने आचार्यश्री जी की नाड़ी देखी और वर्तमान स्थिति देखकर संतुष्ट हुए। अभी तक आचार्यश्रीजी आहार के समय किसी का भी सहारा नहीं लेते थे और कमजोरी के कारण प्रतिदिन आहार का समय और मात्रा घटती जा रही थी, जिससे कमजोरी बढ़ती जा रही थी एवं सभी को लग रहा था कि गुरुदेव बुद्धिपूर्वक आहार की मात्रा कम कर रहे हैं। पिछले दिनों में मात्र ८ मिनट ही आहार हो रहा था, अतः सभी ने वैद्य जी से कहलवाया आप आहार के लिए समय व सहारा लें। यह सुनकर आचार्यश्री मुस्कुराए और कहा-'' जब तक शक्ति है प्रभु का नाम लेता रहूँ और कोई कामना नहीं।''

लगभग प्रातः ९:१५ बजे आचार्यश्री जी की शुद्धि कराई गई, संतभवन के हाल में विराजित भगवान के दर्शन किये, हम सभी मुनिराजों को आशीर्वाद दिया, श्रावकों को आशीर्वाद दिया और आज से संतभवन के अंदर ही पड़गाहन हुआ। कक्ष के बाहर बड़े महाराज आदि और वैद्य गाडगिल आदि खड़े होकर आहार देख रहे थे आचार्यश्री जी के दायीं ओर से हम और बायीं ओर से पूज्यसागर जी जंघा को पकड़कर सहारा दे रहे थे, निरामयसागरजी खड़े होकर हाथों को सहारा दे रहे थे आज कुछ दिनों के बाद ११ मिनट आहार हुआ यह देखकर सर्वत्र सुखद अनुभूति हुई। तत्पश्चात् संघ आचार्यश्री से आशीर्वाद लेकर आहारचर्या को उठा। लगभग ११:३० बजे गुरुदेव के साथ संघ ने ईर्यापथ भक्ति-प्रतिक्रमण करके आशीर्वाद लिया, तत्पश्चात् सामायिक आदि आवश्यक हुए और उसके बाद वैद्य परामर्शानुसार बाह्य उपचार किया गया। सायंकाल ४:०० बजे गुरुदेव के साथ प्रतिक्रमण आवश्यक किया, तत्पश्चात् भगवान जिनेन्द्र की देववंदना आवश्यक करके आचार्यश्री जी ने चेनल गेट पर खड़े होकर जन सामान्य को आशीर्वाद

दिया और उसके बाद कक्ष में आचार्य वंदना हुई और उसके बाद प्रायश्चित और आशीर्वाद दिया, फिर आचार्यश्री से सामान्य वार्तालाप हुई।

दिनांक ५.२.२०२४, आचार्यश्री के स्वास्थ्य में कुछ सुधार प्रतीत हो रहा था परन्तु उनके अंतरंग के भाव, शरीर के अंदर रोग की स्थिति एवं आचार्यश्री जी का निर्णय हम सभी के लिए अज्ञात था। मुनि श्री प्रसादसागरजी, मुनि श्री निरामयसागरजी से हुई चर्चाओं से मन व्याकुलित हो रहा था। उपचार होने के बावजूद आचार्यश्री स्वस्थ क्यों नहीं हो पा रहे थे? शारीरिक बल दिन-प्रतिदिन क्षीण हो रहा था किन्तु उनके आत्मविश्वास, मानसिक दृढ़ता में कहीं भी कमी दिखाई नहीं दे रही थी। आज मुनिवर श्री योगसागरजी ने अपना केशलोंच किया। आचार्यश्री की क्रियाएँ पूर्ववत् चल रहीं थीं। आज शाम को गुरुदेव के हाथ में बहुत ज्यादा दर्द था। हम लोग वैय्यावृत्य करके दर्द को भगाने की कोशिश करते रहे।

दिनांक ६.२.२०२४, जन्म-मृत्यु के अविरल क्रम को पूर्णतः नष्ट करने के भाव जिनके मन में सदैव विचरण करते रहते हैं, ऐसे गुरुदेव आत्म-चिंतन एवं पञ्च-परमेष्ठियों के ध्यान-स्मरण में ही अपना समय व्यतीत कर रहे थे। श्रावकों से चर्चा तो दूर ही रही, संघस्थ मुनिराजों से भी बहुत कम वार्तालाप करते थे। आत्मविशुद्धि से प्रदीप्त मुखमण्डल पर सदैव व्याप्त निश्छल मुस्कुराहट एवं प्रसन्नता हम सबको दिखाई दे रही थी। वह निज आत्मतत्त्व को देह से पृथक् देखकर ज्ञानानंद के अभूतपूर्व आनंद का रसास्वादन करते रहते थे। दोपहर में सामायिक के पश्चात् हमने उनके मुख से आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी के इष्टोपदेश ग्रन्थ की यह कारिका सुनी—

**एकोहं निर्ममः शुद्धो, ज्ञानी योगीन्द्र गोचरः।**
**बाह्या संयोगजा भावः मत्तः सर्वेपि सर्वथा ॥२७॥**

आंतरिक शारीरिक वेदना की तीव्रता में भी परिणामों को शांत रख पाना और आत्म तत्त्व के चिंतन में लगाए रखना उन जैसे भेद-विज्ञानी के वश की ही बात है। गुरुदेव ने जीवनपर्यंत सबके दुख, कष्ट, संकट, परेशानियों को सुनकर यथायोग्य सबका समाधान करते हुए उन बाधाओं को स्वयं अपने ऊपर लेकर सभी के सुख का मार्ग प्रशस्त किया किन्तु आज जब स्वयं उनके शरीर को असाता कर्म ने अपने अधीन कर लिया है, तब वह किसी से कुछ न कहकर असहनीय पीड़ा को कर्म-निर्जरा का साधन मानकर कष्टों की उपेक्षा करते हुए ज्ञाता-दृष्टा आत्म स्वभाव का सुखद अनुभव कर रहे थे। पूर्व के दिनों की भाँति आज का दिन भी हमारा गुरुदेव की आगमानुसार चर्या को निहारते हुए एवं वैय्यावृत्य करने का सौभाग्य पाकर कब व्यतीत हो गया, ज्ञात ही नहीं हुआ।

दिनांक ७.२.२०२४, आज प्रातः भक्ति के उपरान्त हमने और ऐलक धैर्यसागरजी ने गुरु आशीर्वाद से केशलोंच किया, तदुपरांत गुरुदेव ने मुस्कुराकर अच्छे से आशीर्वाद दिया। गुरुदेव की आहारचर्या में समय बढ़ने से कमजोरी कुछ कम सी लग रही थी और उनकी प्रसन्नता में कुछ वृद्धि दिख रही थी किन्तु दोपहर के समय तो पीड़ा में वृद्धि हो ही जाती थी। वैद्य स्वप्निल सिंघई एवं गौरव शाह के अनुसार आचार्यश्रीजी आहार बढ़ाते जाएँ तो स्वास्थ्य ठीक हो सकता है। वैय्यावृत्य के दौरान ब्रह्मचारी विनय जी थोड़ा मन बहलाने का प्रयास करते थे। बाह्य उपचारों में दोनों वैद्यों के साथ ब्रह्मचारी विनय जी एवं मधुर उपस्थित रहते थे। सायंकाल गुरुदेव के चरण सान्निध्य में मुनि श्री निरामयसागरजी के साथ प्रतिदिन दैवसिक प्रतिक्रमण करते फिर संतभवन के प्रांगण में देववन्दना करते। पश्चात्

गुरुदेव संतभवन के मुख्य द्वार पर जाकर सामान्यजन श्रावक-श्रविकाओं को दर्शन देते और आशीर्वाद प्रदान करते।

अपने आराध्य एवं जीवित भगवान स्वरूप गुरुदेव के दर्शन पाकर हजारों की जनता प्रफुल्लित हो उठती, जय-जयकारों से दशों-दिशाएँ गुंजायमान कर देती। प्राणी मात्र के उद्धारक आचार्य भगवान की महती कृपा सभी जीवों पर समान रूप से अनवरत बरसती थी। इसी कारण प्रतिदिन जैनियों के साथ-साथ अनेक जैनेतर दर्शनार्थी भी घंटों-घंटों प्रतीक्षा कर धक्का-मुक्की एवं अन्य बाधाएँ सहते हुए संध्याकाल में जैसे ही गुरुदेव के पाप-ताप-संतापहारी दुर्लभ दर्शन प्राप्त होते तब सभी के चेहरे अश्रुपूरित प्रफुल्लता से खिल उठते और उल्लसित भावों से गुरुभक्ति की लहरों के अपार प्रवाह रूपी भावना व्यक्त करते थे। हे परमोपकारी गुरुदेव आप दीर्घजीवी हों तथा सदैव इस वसुंधरा पर विचरण कर सकल जीवन का कल्याण करते रहें। आज का दिन भी कब व्यतीत हो गया ज्ञात ही नहीं हुआ। गुरुदेव ने पूर्व में कहा था-''अच्छा समय कब निकल जाता है पता ही नहीं चलता।''

दिनांक ८.२.२०२४, शरीर रूपी कुटिया, मृत्युरूपी तूफान से कब तहस-नहस हो जाएगी यह कोई नहीं जानता, किन्तु वैराग्ययुक्त ज्ञानानंद का आनन्द लेने वाले महापुरुष बिना भयभीत हुए, तटस्थ भाव से आत्मस्थ रहते हुए कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं। वर्धमान स्वामी के पथानुगामी गुरुदेव आत्मचिंतन, ध्यान, मौन में ही अपना सारा समय व्यतीत कर रहे थे।

आज दोपहर लगभग १:२० बजे गुरुदेव को शौच का विकल्प हुआ, उन्होंने बाहर पहाड़ी पर जाने का इशारा किया, तब हमने उनकी शारीरिक बल क्षीणता को देखते हुए पीछे ही प्रासुक स्थान पर जाने का निवेदन किया। गुरुदेव ने बात मान ली। तब वहाँ बड़े महाराज मुनि श्री योगसागरजी आ गए। शुद्धि करने के बाद गुरुदेव ने हमें जाने का संकेत दिया और मुनि श्री योगसागरजी से कुछ चर्चा की।

आज चतुर्दशी का दिन होने से पाक्षिक प्रतिक्रमण के लिए मुनि श्री निरामयसागरजी एवं हम गुरुजी के निकट जाकर बैठ गए। लगभग २:३० बजे आचार्यश्री बोले बड़ा प्रतिक्रमण सुनाओ, प्रतिक्रमण प्रारम्भ हुआ हम दोनों को ये आशंका तक नहीं थी कि आचार्यश्री जी का आज का यह पाक्षिक प्रतिक्रमण, अंतिम पाक्षिक प्रतिक्रमण होगा और वह अंतिम बड़ा प्रतिक्रमण मुनि श्री निरामयसागरजी और हमारे लिए अविस्मरणीय, अनमोल, स्वर्णिम धरोहर बनकर हमेशा के लिए स्मृति पटल पर अंकित हो गया। उत्कृष्ट मुनिचर्या का प्रमाद रहित जीवन भर परिपालन करने वाले अनुपम साधक पूज्य आचार्यश्री जी अनेक प्रतिकूलताओं एवं विपरीत परिस्थितियों में भी अपने आवश्यकों का समय पर निरतिचार पालन करते आ रहे हैं, उनकी क्रियाओं से लोग अपनी घड़ियों का समय मिलाया करते थे। आज शारीरिक व्याधि की विवशता के कारण प्रतिक्रमण में व्यवधान उत्पन्न हुआ तो उनके मुख से निकला-''आखिर प्रतिक्रमण के बीच में विकल्प हो ही गया।'' उनके मुख से निकले यह शब्द प्रतिक्रमण में लगे दोषों से अंतरंग की वेदना को स्पष्ट कर रहे थे।

सायंकालीन देववंदना, आचार्यभक्ति के पश्चात् हम अकेले आचार्य गुरुदेव के समीप बैठे थे। तब उनके श्रीमुख से पीयूष सम पावन वचन निकले-''प्रतिक्रमण में आया है सम्यक् प्रकार से सल्लेखना समाधिमरण करने वाले भव्य जीव दो या तीन भवों में जिनगुण सम्पत्ति प्राप्त करते हैं।'' यह सुनकर हमने हाथ जोड़कर कहा भगवान आपने तो इस विषम काल में हीन संहनन के साथ उत्कृष्ट साधना कर ली है और हम जैसे अनेक जीवों को कल्याण एवं अहिंसा धर्म की अद्भुत प्रभावना भी की है। यह सुनकर आचार्यश्री ने हाथ जोड़कर अपने कपाल पर रखकर पंच

परमेष्ठियों को नमस्कार किया, थोड़ी देर बाद वह लेट गए। उस दिन हमने उनकी बातों पर विशेष ध्यान नहीं दिया लेकिन अब समझ में आ रहा है, गुरुदेव ने जो वचन कहे थे, वे अति महत्त्वपूर्ण एवं रहस्यमय संकेत कर रहे थे, वह यह कि वे स्वयं उस समय सम्यक् प्रकार से सल्लेखना समाधिमरण को विधिवत् आगमानुसार आत्मिक विशुद्धि के साथ क्रियान्वित कर रहे थे।

दिनांक ९.२.२०२४, को प्रातःकाल परमपूज्य गुरुदेव के चरण सान्निध्य में सभी मुनिराजों एवं ऐलक जी ने आचार्यभक्ति कर आशीर्वाद लिया। उसके बाद प्रसन्नता के साथ, सामान्य वार्तालाप के साथ, वैय्यावृत्त्य का सौभाग्य हम सभी को मिला। स्वास्थ्य में सुधार के लक्षण देखने से हम सभी प्रसन्नता का अनुभव कर रहे थे। दोपहर में आचार्यश्री ने शौच के बाद बड़े महाराज योगसागरजी से कुछ विशेष चर्चा की, जो मेरे एवं ऐलक जी के लिए चिन्ता का विषय बन गया। उसके बारे में मुनि श्री योगसागर महाराज जी के लेख में पढ़ने मिलेगा। उसके बाद मुनि श्री योगसागरजी आदि महाराज चन्द्रगिरि तीर्थक्षेत्र पर आचार्यश्री द्वारा प्रेरित एवं आशीर्वाद से पहाड़ पर निर्माणाधीन जिनालय का निरीक्षण करने गए। वहाँ से आकर आचार्यश्री को कहा इतना विशाल, अद्वितीय दिगम्बर जैन मंदिर निर्माण की परिकल्पना आपने कैसे बनाई। गुरुदेव ने दोनों हाथ जोड़कर सिर पर लगाते हुए मात्र इतना कहा–''सब कुछ गुरु जी की कृपा है।'' प्रतिदिन की भाँति क्रियाएँ यथावत् चलती रहीं।

दिनांक १०.२.२०२४, आज दिनकर थोड़ी देर से दृष्टिगोचर हुआ सो वातावरण में ठंडक थी। प्रतिदिन की भाँति यथावत् सब कुछ चलता रहा। गुरुदेव ने आवश्यक बाह्य उपचार ही कराया और अनुप्रेक्षाओं के चिंतन में वो लीन हो गए। अपने आप में रहने का उन्हें बहुत ही अधिक अभ्यास था। आज आहार चर्या में समय एवं मात्रा में न्यूनता रही। दोपहर में सामायिक के उपरान्त शौच का विकल्प हुआ तो पीछे प्रासुक स्थान पर जाने की सलाह को इंकार करते हुए उन्होंने पहाड़ी पर चलने का इशारा किया। आत्मिक बल के धनी गुरुदेव चलकर पहाड़ी पर ही गए। लौटते समय अशक्तता के कारण कोई अनहोनी न हो इसलिए हमने सहारा दिया। संध्या के समय कमर दर्द एवं पैरों में अधिक फड़कन होने से मुनि श्री योगसागरजी, मुनि श्री पूज्यसागरजी व ऐलक धैर्यसागरजी के साथ यथायोग्य सेवा का सौभाग्य मिला।

दिनांक ११.२.२०२४, महाव्रतों के प्रति सजग पूज्य गुरुदेव आत्मविशुद्धि वर्धन भावनाओं से ओतप्रोत रहते और शुद्धात्म तत्त्व की अनुभूति उनकी चेतना में उत्कृष्ट रूप से समाहित हो चुकी थी। तभी तो रोग की शुरूआत से अंत समय तक उन्होंने अपना रक्त परीक्षण नहीं कराया। डॉक्टर, वैद्यों और ब्रह्मचारियों के आग्रह को ठुकरा दिया। परीषहविजय एवं सहनशीलता की पराकाष्ठा को स्पर्श करते हुए गुरुदेव ने पूर्व में भी अनेक वैद्यों, उपचारकों के उन औषधि प्रयोग एवं उपचार तथा पथ्य को अस्वीकार कर चुके थे, जो उनके व्रत, त्याग, नियमों में बाधक थे। उन्होंने साफ–साफ कह दिया था, हमारे द्वारा त्यागी हुई वस्तुओं को पुनः ग्रहण करने की बात कभी न करें। पथ्य, औषधि प्रयोग एवं बाह्य उपचारों में भी इस बात का ध्यान रखा जाये।

ठंड लगने के कारण एक वैद्य जी ने सुरक्षा की दृष्टि से चटाई ओढ़ने का आग्रह किया क्योंकि मौसम प्रतिकूल हो गया था किन्तु सजग गुरुदेव ने मुस्कुराते हुए चटाई ओढ़ने की बात को अस्वीकार कर दिया। प्रसंगानुसार एक महत्त्वपूर्ण बात यहाँ पर उल्लेखित कर रहा हूँ–लगभग १ वर्ष पूर्व परमपूज्य आचार्य भगवन् अतिशय क्षेत्र दिगम्बर जैन अंतरिक्ष पारसनाथ शिरपुर जैन मंदिर में विराजमान थे और अस्वस्थ हो गए, तो कफ अधिक निकल रहा था। वैद्य की

सलाह के अनुसार बाह्य प्रयोग रूप वाष्प देने के लिए जल में अजवाइन एवं नीम की सूखी पत्तियाँ डालकर पानी को गर्म करके ब्रह्मचारी आनंद भैया जी को कहा गया। आनंद को नीम की सूखी पत्तियाँ नहीं मिली तो नीम की ताजी पत्तियाँ डालकर उबालकर ले आए। जैसे ही हमने पात्र गुरु जी के सामने रखा ढक्कन को हटाया तो गुरु जी ने देखा और बोले–''यह वाष्प हम नहीं ले सकते।'' हमने हाथ जोड़कर गुरु जी को देखा, गुरु जी ने पात्र की ओर इशारा किया और मुस्कुरा कर बोले–'' इसमें हरी पत्तियाँ डाली हुई हैं हम यह वाष्प कैसे ले सकते हैं?'' व्याधिग्रस्त देह एवं उम्र के अंतिम पड़ाव में भी अपने मूलगुणों का निर्दोष परिपालन करना बहुत दुर्लभ है जिसे गुरुजी बखूबी कर रहे थे।

आज भीलवाड़ा (राजस्थान) के वैद्य गुरुदेव के दर्शनार्थ आये। उन्होंने बताया मैं अपने आश्रम को छोड़कर कहीं नहीं जाता हूँ। एक बार राष्ट्रपति जी के लिए गया था और दूसरी बार गुरुजी के दर्शन करने आया हूँ। जैसे ही गुरुजी के दर्शन किये, अपने जीवन की सार्थकता की बात कही और रोग परीक्षण करने की भावना व्यक्त की। आचार्यश्रीजी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया और नाड़ी परीक्षण के लिए हाथ आगे बढ़ा दिया। वैद्य जी ने जैसे ही नाड़ी पकड़ी उनकी आँखों में चमक तथा मुख की प्रसन्नता बढ़ गई। आश्चर्यचकित होकर बोले भगवन्! मुझ बालक की परीक्षा ले रहे हैं आप, ऐसी अद्‌भुत नाड़ी जीवन में प्रथम बार दिखी। आप तो साक्षात् ईश्वर रूप हैं। आप बिल्कुल चिंता न करें। अभी तो आपके द्वारा बहुत लोगों का कल्याण होना है। वैद्य जी की बातें सुनकर जीवन–मृत्यु को समान मानने वाले परम भेद–विज्ञानी गुरुवर बोले–''भगवान का नाम लेता रहूँ और क्या करना है।'' आचार्यश्री जी प्रातः और संध्याकालीन देव–वंदना के अंत में समाधिभक्ति की इन पंक्तियों का उच्चारण करते हैं–

आबाल्याज्जिनदेव देव ! भवतः, श्री पादयोः सेवया।<br>
सेवासक्त विनेयकल्प लतया, कालोद्यावद्‌गतः॥<br>
त्वां तस्याः फलमर्थये तदधुना, प्राणप्रयाणक्षणे।<br>
त्वन्नाम-प्रतिबद्ध-वर्णपठने, कण्ठोऽस्त्व-कुण्ठो मम ॥

इस तरह गुरुदेव की भावना प्रतिसमय यही बनी रहती है, जो वीतराग प्रभु के प्रति समर्पण की परिचायक है।

दिनांक १२.०२.२०२४, आचार्यश्री जी को संघ सम्बन्धी या किसी भी प्रकल्प सम्बन्धी किसी भी प्रकार की कोई आकुलता–व्याकुलता नहीं थी। वे स्वयं अपने आपके निर्यापक बनकर अपनी सम्यक् सल्लेखना की साधना कर रहे थे। जिसके बारे में उन्होंने सबके सामने नहीं कहा किन्तु समय–समय पर उन्होंने संकेत अवश्य दिये थे –

१. मुनिवर चन्द्रप्रभसागरजी को कहा था–''देखो! उपवास करने वालों को क्षपक के कक्ष में नहीं सोना चाहिए।''
२. ब्र. विनोद जी (भिण्ड) आदि से चर्चा हुई तब कहा था–''मैं संघ के सभी दायित्वों से मुक्त हूँ। मैं पूर्णतः निर्विकल्प हूँ।''
३. वैद्यों के द्वारा आहार में परिवर्तन करने एवं ठोस आहार लेने की बात कही गयी तो बोले–''अब मेरा जंघाबल कम हो रहा है, मैं अपना देखूँगा।''
४. मुनि श्री प्रसादसागरजी के माध्यम से सभी उपसंघों में सारगर्भित पत्र प्रेषित कराया था जिससे भी संकेत मिलता है।
५. अंत में ९ तारीख को निर्यापक श्रमण श्री योगसागरजी महाराज को स्पष्ट कहा था–''मेरी संकल्पपूर्वक सल्लेखना चल रही है।''
६. क्रमशः उनका आहार–पानी कम लेना भी संकेत दे रहा था कि वो यम सल्लेखना की ओर बढ़ रहे हैं।

आज आहार चर्या के समय वैद्य जी बाहर से देख रहे थे। आहार की मात्रा में पानी को बढ़ाया, छाछ को बढ़ाया किन्तु हम सभी को बिल्कुल भी संतुष्टि नहीं मिल रही थी क्योंकि गुरुदेव ठोस आहार नहीं ले रहे थे। गुरुदेव के आहार के उपरान्त हम सभी आहारचर्या पर निकलने के पूर्व आचार्यश्री जी के दर्शन, आशीर्वाद के लिए गए। गुरुदेव ने मुस्कुराकर आशीर्वाद दिया।

गुरुदेव की सजगता हमें तो हमेशा अनिर्वचनीय ही लगी। यद्यपि उनकी मूलाचार आदि चरणानुयोग के शास्त्रोक्त चर्या का उल्लेख करने में किसी को भी भरपूर शब्द उपलब्ध नहीं हो पायेंगे फिर भी एक घटना का वर्णन करता हूँ–आज दोपहर में सामायिक के पश्चात् गुरुदेव ने शौच जाने के लिए पहाड़ी की ओर इशारा किया तब मैंने पुनः उनकी कमजोर हालत देखकर सविनय निवेदन किया–यहीं पीछे ही प्रासुक स्थान है। तब गुरुदेव ने मुझ अल्पज्ञ लघु शिष्य का मन रखते हुए स्वीकार कर लिया। निरतिचार व्रतपालन करने वाले महाश्रमण, वृद्धावस्था और व्याधिग्रस्तता के कारण शारीरिक कमजोरी के बावजूद इतने अधिक जागृत थे कि शुद्धि करते समय जल बहकर नीचे की ओर जा रहा था, तब गुरुदेव ने हमें इशारा किया। हमने आगे तक देखा और कहा–गुरुदेव आप विकल्प न करें, आगे पूरा सूखा स्थान है किन्तु जीवनपर्यंत उत्कृष्ट अहिंसा की रक्षा करने वाले दयामयी श्रमण मेरे कहने से सन्तुष्ट नहीं हुए, स्वयं उठकर न जा सके किन्तु बहते जल की ओर देखते रहे। पुनः हमारी ओर इशारा किया तत्काल हमने आगे बढ़कर जल के आगे पिच्छी से परिमार्जन किया और प्रवाहित हो रहे पानी को दोनों ओर बिखरा दिया ताकि वह नीचे नाली में न जा पाये। यह देखते ही गुरुदेव के मुख पर मुस्कुराहट आ गयी। उनको निर्विकल्प देख मुझ अबोध को व्रतों को निरतिचार कैसे पाला जाता है, बोध प्राप्त हुआ।

दिनांक १३.२.२०२४, कर्म का उदय, उदीरणा का फल संसारी प्राणी को भोगना ही पड़ता है। तीर्थंकरों को, बड़े–बड़े महापुरुषों को, तपस्वियों को भी कर्मों ने नहीं छोड़ा। उन्हें भी उपसर्ग परीषहों को सहन करना पड़ा है। तभी वो कर्मों को नष्ट कर मोक्ष प्राप्त कर पाये और जीवन को सार्थक कर दूसरों के लिए आदर्श बन पाये। ऐसे धर्मधुरन्धर परम वीतरागियों का पुण्य स्मरण भी हमारे आत्मिक बलवृद्धि का हेतु बनकर मोक्षमार्ग में सेतु का कार्य कर संसार–सागर से पार उतरने में सहायक होता है। सिद्धालय की उन्नत सीढ़ियों पर शीघ्र ही आरोहण करने की परमोत्कृष्ट सुखद भावना रखने वाले जगत्पूज्य आचार्यश्रीजी भी अटूट आस्था एवं निष्कम्प निष्ठा के साथ उन सभी उपसर्ग–परीषह कर्मविजयी महापुरुषों एवं मुनिराजों का स्मरण कर अपनी आत्मिक विशुद्धि में वृद्धि करते हुए अतिकष्टों को, शारीरिक व्याधियों को गौण करते हुए अधिकांश समय मौन पूर्वक व्यतीत कर रहे थे।

दिनोंदिन कम होती जा रही आहार की मात्रा एवं प्रतिदिन बढ़ती जा रही शारीरिक क्षीणता को देखकर प्रतीत हो रखा था कि गुरुदेव अपने सल्लेखना के दृढ़ संकल्प को किसी से कुछ पूछे बिना और बिना बताए ही क्रियान्वित कर रहे हैं।

अन्य दिनों की अपेक्षा आज के आहार की मात्रा और भी अल्प रही। हम लोगों के सहारा देने (पकड़ने) के बावजूद भी वह शीघ्र ही बैठ गए थे।

आहारोपरान्त गुरुदेव सन्तभवन के पीछे खुले स्थान में विराजमान हुए, हम लोग शुद्धि करके गुरुदेव का आशीर्वाद लेने पहुँचे। सभी के मन में आचार्यश्री जी के कम होते आहार के बारे में पूछने का विचार था। वैद्य स्वप्निल सिंघई से हम लोगों ने पुछवाया, तो मुस्कुराहट का प्रसाद लुटाने में अतिकुशल परम उपकारी गुरुदेव ने मुस्कुराते हुए

कहा–''जितना ले पाए उतना लिया।'' तब बड़े महाराज ने कहा कि हम लोग चाह रहे थे थोड़ा और लें, निवेदन किया था, फिर भी आप शीघ्र बैठ गए। तब आचार्यश्री प्रसन्नता से आशीर्वाद देते हुए बोले–''विकल्प नहीं करो, शरीर की स्थिति देखते हुए ले रहा हूँ, समय हो रहा है, आहार पर निकलो'' अब किसी के पास कोई प्रश्न नहीं था। नमोऽस्तु कर सभी आहार चर्या हेतु प्रस्थान कर गए।

आहार के बाद में आचार्यश्री के समीप प्रतिदिन की भाँति पहुँचा, वे शांत-भाव से लेटे हुए थे, कुछ चिन्तन कर रहे थे, मैं कुछ समय तक उनके पवित्र चरणों को सहलाता रहा, तब तक ईर्यापथ भक्ति का समय हो जाने से सभी मुनिराज जी एवं ऐलक जी भी आकर क्रम से बैठ गए। ज्यों ही ईर्यापथ भक्ति का पाठ प्रारम्भ किया, आवाज सुनते ही गुरुदेव ने आँखें खोलीं, हाथ उठाकर रुकने का संकेत किया और स्वयं ही उठकर बैठ गए, हम लोगों ने क्रमशः आहार निरन्तराय बताकर प्रत्याख्यान निवेदित किया, आचार्यश्री ने सभी को आशीर्वाद दिया। फिर ईर्यापथ भक्ति प्रतिक्रमण हुआ। इस प्रकार कम वेतन (अल्प आहार) देकर भी तन से अधिक काम लेने में निपुण पूज्य गुरुदेव अभी भी तप अग्नि में अपने तन को तपाकर आत्मा को विशुद्ध करने की प्रक्रिया में निमग्न थे।

आज कुछ अनुकूलताएँ न होने के कारण पूज्य योगसागरजी के साथ विमर्श कर गुरुदेव को कक्ष क्रमांक २ से कक्ष क्रमांक ५ में विश्राम करवाने का निर्णय लिया गया। प्रथम निर्यापक श्रमण पूज्य श्री समयसागरजी आदि बड़े महाराजों के बार-बार समाचार आ रहे थे कि गुरुदेव का चन्द्रगिरि से अन्यत्र विहार करायें, जिससे स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है। पूर्व में भी ऐसा कई बार देखा गया है।

उपरोक्त सुझावों को सुनकर समझकर पूज्य बड़े महाराज योगसागरजी ने उचित समय देखकर आचार्यश्री जी से यहाँ से अन्यत्र विहार का निवेदन किया, आचार्य भगवंत सहमत नहीं हुए।

आज दोपहर २ बजे के बाद उन्हें कुछ प्रतिकूलता सी लग रही थी। बार-बार उठकर बैठ जाते फिर लेट जाते, पूछने पर कुछ उत्तर नहीं देते। कुछ-कुछ बोलते रहते थे, सम्भवतः कोई गाथा या श्लोक। हम सभी यथा योग्य सेवा में तत्पर थे। उनका पाटा उत्तर दक्षिण-दिशा में लगा रखा था। तो गुरुदेव जब भी लघु शंका या दीर्घशंका के लिए उठते थे तो उसके बाद हम लोग इशारा करते तो वो उत्तर की ओर पैर करके लेट जाते किन्तु थोड़ी देर बाद उठ जाते और दिशाओं के बारे में पूछते और फिर दक्षिण में पैर करके लेट जाते। हम लोग समझाते ये दक्षिण दिशा है, तो मुझे देख कर कहा–''आप लोगों को समझ में नहीं आ रहा है। मुझे पता है किस ओर पैर करना है।''

यह सुनकर हम सभी समझ गए गुरुदेव अपनी तैयारी कर रहे हैं। उनके इस महत्त्वपूर्ण संकेत ने हम सभी को इंगित कर दिया था कि वो पूर्णतया स्वाश्रित अपनी सल्लेखना कर रहे हैं, तभी तो चलते हुए या उठते-बैठते वो किसी से सहारा नहीं लेते थे और अगले दिन से उन्होंने आहार एकदम अल्प ही कर लिया था ताकि शौच आदि की बाधाएँ उत्पन्न न हों। आज से उन्होंने हम लोगों को देखना और बोलना भी बंद जैसा कर दिया था।

महापुरुषों की विशेषता होती है कि वो अपने विनयशील शिष्यों को देखकर उन्हें प्रोत्साहित करते रहते हैं। परमहितैषी, वात्सल्य प्रदाता गुरुदेव के अंतरंग में यह अतिविशेषता हमने देखी है।

आज पूज्य गुरुदेव समय से पहले संतभवन के कक्ष में आ गए। दैवसिक प्रतिक्रमण सभी मुनिराजों ने गुरुदेव के समक्ष किया। सायंकालीन आचार्य वंदना सम्पन्न हुई, तत्पश्चात् गुरुदेव अशक्तता के कारण लेटे रहे। प्रतिदिन की भाँति देववंदना के पश्चात् संतभवन के मुख्य द्वार पर एकत्रित श्रद्धालु गुरुदर्शन के लिए आकुल-व्याकुल हो रहे थे क्योंकि

पञ्चमकाल में चतुर्थकालीन मुनिचर्या के साधक निःस्वार्थ, निर्दोष, निर्लोभ, निर्मोह यतिराज, सर्वमान्य सर्वोच्च आचार्य भगवन् के दुर्लभ दर्शन से सभी के संकट दूर होते हैं, बिगड़े काम बन जाते हैं और आनंद की प्राप्ति होती है। घड़ी की सुइयाँ दर्शन मिलने के निर्धारित समय को पार कर गईं थीं। यह देखते हुए श्रद्धालुओं की भक्ति दबी न रह सकी और उन्होंने आकाश सहित दशों दिशाओं को आचार्य भगवन् के जयकारों से गुंजायमान कर दिया। तब कक्ष के भीतर मुनिराजों ने नवनीत के समान कोमल हृदय वाले युगश्रेष्ठ आचार्य भगवन् के चरणों में सविनय निवेदन किया, आपके दर्शनों की प्रतीक्षा में हजारों की जनता सुबह से बाहर बैठी हुयी है, आपकी अनुकूलता हो तो दर्शन देकर कृतार्थ करें।

आचार्यश्रीजी ने निवेदन सुनकर जवाब तो नहीं दिया किन्तु हजारों श्रमणोपासकों की शुभ भावनाओं को देखते हुए उनको प्रसन्नता एवं तसल्ली मिले इस हेतु उठे और सर्वप्रथम देववंदना की और फिर मुख्य द्वार की ओर बढ़ गए। द्वार को विभाजित कर दिया गया। विपुल जनमेदिनी आस्था के ईश्वर को निहारते ही जय-जयकार कर उठी और उस समय भावुक हो रहे हृदय को शब्द दे पाना बहुत कठिन है। आचार्यश्रीजी तखत पर खड़े होकर सभी को भरपूर आशीर्वाद प्रदान कर रहे थे, मानों कल का उन्हें भरोसा न हो और फिर द्वार बंद कर दिया गया। आचार्यश्री जी अशक्तता के कारण वहीं तखत पर बैठ गए फिर थोड़े समय उपरान्त बिना किसी का सहारा लिए उठकर खड़े हुए और धीरे-धीरे कक्ष में पहुँच गए। आगे की दिनचर्या पूरी हुयी। सभी आवश्यक समय पर पूर्ण किये। हर क्रिया के लिए वो स्वयं संकेत करते थे। हम लोगों से प्रमादवश किसी उच्चारण में कोई पद, वाक्य, मात्रा आदि आगे पीछे हो जाती तो तुरन्त संकेत करते।

रात्रिविश्राम के समय आज कक्ष में निर्यापक श्रमण प्रसादसागर महाराज भी थे। अचानक गुरुदेव को लघुशंका का विकल्प हुआ। संकेत मिला तो पूज्य प्रसादसागरजी ने ईंटों के समान बड़ी-बड़ी चुम्बकें पैर ऊँचे करने की दृष्टि से रख दीं। वैसे हम लोग लकड़ी के टुकड़े रखते थे किन्तु प्रसादसागरजी ने चुम्बक रखीं। जिनवाणी की अनिर्वचनीय विनय करने वाले गुरुदेव उसे लगभग २ मिनट तक देखते रहे, तो पूज्य प्रसादसागर महाराज जी ने पूछा, स्वामिन्! कुछ विकल्प है क्या ? तब गुरुदेव के श्रीमुख से निकले वचनों को सुनते ही हम तीनों मुनिजन आश्चर्यचकित हो देखते रह गए! जिनवचनों के सम्यक् दृढ़ आराधक आचार्य भगवन् कहते हैं– ''इन पर जैन लिखा है, मैं पैर कैसे रखूँ? कहाँ रखूँ?'' हम तीनों श्रमणों के कदमों तले से जमीन खिसकती सी लग रही थी। तुरन्त ही उन चुम्बकों को हटाकर लकड़ी के टुकड़े रखकर भी हम अपने आप में शर्मिन्दगी महसूस कर रहे थे क्योंकि हम लोगों की अज्ञानता के कारण गुरुदेव को दो-तीन मिनट विलम्ब हो गया था, किन्तु क्षमामूर्ति गुरुदेव निर्विकल्प ही रहे।

दिनांक १४.२.२०२४ (बसंत पञ्चमी)–संयम सम्राट आचार्य भगवन् परहित के साथ-साथ निजहित की साधना अहर्निश करते रहे। आत्म तत्त्व को उन्होंने कभी भी विस्मृत नहीं किया। आचार्य भगवन् कुन्दकुन्द स्वामी, आचार्य भगवन् शिवार्य स्वामी, आचार्य पूज्यपाद स्वामी आदि अनेकानेक पूर्वाचार्यों के महान् ग्रन्थों के अध्यात्म सूत्र, श्लोक, गाथाओं को जीवनपर्यंत अपने चिंतन-मनन का विषय बनाते हुए गुरुदेव हजारों-लाखों की भीड़ में भी पल-पल आत्मोन्मुखी होते हुए निजात्म स्वभाव में लीन हो जाया करते थे। ऐसे अध्यात्म के पुरोधा गुरुदेव के शरीर में शक्ति का ह्रास हो रहा था। फिर भी उन्हें किसी भी कार्य में किसी का सहारा लेना अच्छा नहीं लगता था और वो अधिकतम समय अकेले रहकर आत्म चिंतन करना ही सर्वश्रेष्ठ समझकर एकान्त चाहते थे।

संभवतः आज उनका आहार लेने का भाव नहीं था इसी कारण समय होने पर भी वो शुद्धि करने के लिए उठे नहीं थे। पूज्य योगसागरजी आदि सभी मुनिराजों के निवेदन पर शुद्धि कर गुरुदेव आहार पर उठे, निर्बलता के कारण लड़खड़ाये, तो पूज्य प्रसादसागरजी ने सहारा देने का प्रयास किया किन्तु गुरुदेव बिना सहारा लिए ही चौके तक पहुँचे।

पिछले दिन की अपेक्षा आज का आहार और भी अल्प रहा, केवल १०-१२ अँजुलि (कर-पात्र) में तरल पदार्थ लेकर ही बैठ गए। उसमें भी अँजुलि ठीक से नहीं बन पा रही थी कारण कि कमजोरी बहुत अधिक थी, सो काफी मात्रा में पात्र में ही गिर जाता था। आज आहारोपरांत पीछे नहीं गए कक्ष में ही रहे। विश्राम किया, फिर ईर्यापथ का प्रतिक्रमण किया, सामायिक के बाद, सामायिक पाठ, स्वयंभू स्तोत्र, नंदीश्वर भक्ति, सुनाई गई।

ज्ञानवृद्ध, तपोवृद्ध, अनुभववृद्ध, वयोवृद्ध पूज्य गुरुदेव को देखकर प्रतीत हो रहा था कि वे आगमोक्त भक्त प्रत्याख्यान सल्लेखना-समाधिमरण को बिना किसी को बताए विधिवत् क्रियान्वित कर रहे हैं।

हम सभी यही भावना कर रहे थे कि गुरुदेव जैसे पूर्व में स्वस्थ हो जाते थे, ऐसे ही इस बार भी हो जायेंगे। ऐसी आशा के बीच में एक दिन पूना के वैद्य आये। उन्होंनें कहा– इस व्याधि का उपचार आचार्यश्री जी के त्याग के समक्ष संभव नहीं है। हम लोग यह सुनकर गुरुदेव की योग्य वैय्यावृत्त्य करते रहे और औषध उपचार, तत्त्व चर्चा में संलग्न रहकर अपनी पर्याय को धन्य कर रहे थे।

आज बाह्य उपचार के लिए गुरुदेव ने सहमति नहीं दी और एकान्त में समता भाव से आत्मचिंतन करते रहे। शाम ४:३० बजे प्रतिक्रमण का संकेत किया। हम मुनिराजों ने प्रतिक्रमण गुरुदेव के साथ किया और सभी साधुओं ने वहीं पर आचार्य वंदना की, फिर देववंदना के लिए २-३ बार निवेदन किया गया तो धीरे से उठे और बाहर निकलते ही लड़खड़ाये नीचे बैठकर गुरुदेव ने देववंदना की। आज आचार्यश्री जी के आहार अत्यल्प मात्रा में होने की खबर बाहर देश भर में फैल गयी थी, इसलिए बाहर श्रद्धालुओं की भीड़ और उनकी आकुलता दर्शनों के लिए बढ़ रही थी। हम लोगों ने गुरुदेव की अशक्तता को देखते हुए दर्शन देने के लिए निवेदन नहीं किया किन्तु गुरुदेव विशाल जनसमूह की आकुलतापूर्ण जयघोष सुनकर स्वयं उठकर खड़े हो गए किन्तु चल न सके, लड़खड़ाने लगे तो प्लास्टिक की कुर्सी पर बैठा दिया और उन्हें कुर्सी सहित उठाकर संतभवन के मुख्य द्वार के पास बैठा दिया। ज्यों ही दरवाजे खुले, समर्पित भक्तों-श्रद्धालुओं के मुख से नमोऽस्तु की आवाज से आकाश गूँज उठा। गुरुदेव अपने पवित्र कर कमलों में पिच्छिका को उठाकर, मस्तक को उस पर रखकर, मानो गुरुणांगुरु महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महामुनिराज का स्मरण कर भावुक हो रहे थे और सभी से क्षमा मांग रहे हों, ऐसी अवस्था में दर्शनार्थियों ने गुरु को भावुक होते देख जयघोष कर दिया और सभी भावुक हो गए। समय का घातक प्रहार हम सभी को व्यथित कर रहा था। कर्मोदय के आगे कौन क्या कर सकता है। तत्काल द्वार बंद कर दिया गया। अंधकार होने से पूर्व स्वयंभूस्तोत्र एवं नंदीश्वर भक्ति का पाठ सुनाया गया और समय पर सामायिक प्रारम्भ हो गयी।

समस्त श्रमण संघों एवं श्रमण उपासकों के मध्य सर्वश्रेष्ठ जैनाचार्य के रूप में प्रतिष्ठित गुरुदेव जिनसे स्वयं आचार्य पद सुशोभित हो रहा था, वे आज रोग परीषह का पूरी दृढ़ता के साथ सामना कर आत्मतल्लीनता से कर्म निर्जरा में तत्पर थे। ''परिसहाण उरं देत्तो'' पाक्षिक प्रतिक्रमण पाठ के ये शब्द आचार्य गुरुदेव को स्मरण कर जीवंत प्रतीत हो रहे थे। आचार्यश्री के अदम्य, अपार साहस को देखकर हम सभी के हृदय में उत्साह का संचार हो रहा था। अंतर्मन से ध्वनि उठ रही थी, हम धन्य हुए, हमारा जीवन सार्थक हुआ।

दिनांक १५.२.२०२४, आज आचार्य गुरुदेव का समग्र चिंतन अपने चैतन्य तत्त्व तथा पञ्चपरमेष्ठी की आराधना को अपना विषय बनाता प्रतीत हो रहा था। सुबह से ही पूर्णतः मौन पूर्वक जिनाराधना में ही आत्म संतुष्टि का अनुभव कर रहे थे। देह के प्रति अत्यन्त उदासीन एवं निर्ममत्व गुरुदेव ने आज आहार में मात्र तीन अंजुली जल लिया और देहबल की अत्यन्त क्षीणता महसूस करते हुए बैठ गए और बाद में उन्हें वहीं लिटा दिया गया। कई दिनों से वैद्यों एवं संघस्थ निर्यापक मुनियों तथा आर्यिकाओं के समाचार आ ही रहे थे। सबकी सलाह को देखते हुए उन्हें डोली में लिटाकर चन्द्रगिरि तीर्थ पर बने हथकरघा केन्द्र के नजदीक बने भवन में ले गए। सभी आवश्यक कार्य वहीं पर किये गए। दोपहर में वैद्य गौरव शाह जी ने बाह्य उपचार हेतु निवेदन किया, तब आचार्यश्री जी ने हाथ से इशारा करते हुए कहा—''नहीं वहीं बैठो'' उनका यह संकेत समाधि के पश्चात् समझ में आया, आज के दिन से ही उन्होंने बाह्य औषधि-उपचार का त्याग कर दिया था, तभी लगभग २:३० बजे मुनि श्री प्रसादसागरजी ने आकर गुरुदेव से विहार करने का निवेदन किया। गुरुदेव ने अपनी शक्ति को देखते हुए पूर्णतः मना कर दिया, थोड़ी देर बाद पूज्य श्री योगसागर जी बड़े महाराज ने समझाया, हम सभी पहले की घटनाओं को याद करते हुए, आचार्यश्री के द्वारा मना करने के बावजूद भी डोली पर बैठाकर ४ किलोमीटर आगे खेत में बने एक घर में ले गए। हजारों श्रद्धालु पीछे चल रहे थे। शाम को वहाँ पहुँचकर प्रतिक्रमण आदि सभी क्रियाएँ यथावत् हुईं। गुरुदेव की अस्वस्थता अधिक होने के कारण संध्याकाल में श्रद्धालुओं को दर्शन नहीं मिले, तब मुनि श्री योगसागरजी ने बाहर जाकर सबको आशीर्वाद प्रदान किया।

दिनांक १६.२.२०२४, प्रातःकाल लगभग ६:३० बजे भक्ति हुई और थोड़ी देर बाद गुरुदेव ने अपने गले की ओर इशारा किया। देखते ही पूज्य योगसागरजी ने पूछा, गला सूख रहा है क्या? तब गुरुदेव ने स्वीकृति में सिर हिला दिया और नयनों ने भी स्पंदित होकर सहमति प्रदान की। सुनते ही हमने पतले कपड़े की पट्टी तैयार कर गीली करके पूज्य योगसागरजी को पकड़ाई, जिसे उन्होंने सावधानी पूर्वक गुरुदेव के गले पर रखा। १५ मिनट बाद गुरुदेव के चरणों में एवं सिर पर गाय के घृत की फूल-मालिश की गई। फिर मुनि श्री निरामयसागरजी एवं धैर्यसागरजी गुरुजी के पास रुके हम सभी शौच के लिए गए। लगभग ९ बजे संघ ने आहार चर्या हेतु शुद्धि के लिए निवेदन किया। पूज्य गुरुदेव ने कुछ प्रतिक्रिया नहीं दी। वैद्यों ने परीक्षण कर शरीर में कमजोरी होने के कारण आहार में न उठने की बात कही। ९:३० बजे पुनः आग्रह किया गया तब आत्मनिष्ठ साधक पूज्य आचार्यश्री जी ने दो अँगुलियाँ दिखाकर संकेत दिया, किन्तु मुनि संघ उसके कई मायने लगाने लगा। संकेतानुसार २ घंटे बाद और दोपहर २ बजे भी आहार का आग्रह किया गया, किन्तु गुरुदेव अपने आत्मचिंतन में इतने लीन थे कि नश्वर देह के प्रति तनिक भी चिंता नजर नहीं आई और उनका निर्जल उपवास हो गया। समाधिमरण के पश्चात् हम लोगों को समझ में आया दो अँगुलियों का रहस्य।

आज गुरुदेव ने पूर्णतया एकत्व का अनुभव करते हुए ईर्यापथ भक्ति का कोई संकेत नहीं दिया और शारीरिक प्रतिकूलता अत्यधिक होते हुए भी मध्याह्न में सामायिक के पूर्व स्वयंभू स्तोत्र और नंदीश्वर भक्ति का पाठ सुनाया गया, फिर सामायिक में लीन हो गए। अत्यधिक कमजोरी होने के बावजूद भी वो स्वयं ही पिच्छिका से परिमार्जन करते और करवट बदल लेते थे।

सामायिक के उपरान्त निर्यापक मुनि श्री समतासागरजी, मुनि श्री महासागरजी, मुनि श्री निष्कम्पसागरजी, ऐलक निश्चयसागरजी ने कक्ष में प्रवेश किया।

लगभग ४:३० बजे सभी मुनिराजों ने आचार्यश्री जी के समक्ष बैठकर गुरुदेव को प्रतिक्रमण सुनाया, फिर आचार्य वंदना की गयी एवं सायंकालीन देववंदना की। गुरुदेव शांत, सहज, सजग रहकर ज्ञाता-दृष्टा बने रहे और उन्होंने न किसी को देखा, न किसी से कोई वार्तालाप किया, न आशीर्वाद दिया, न प्रायश्चित दिया, न ही कोई याचना या प्रतिकार किया। उनके अकथनीय तेज एवं अपार समता का दर्शन हम सभी कर रहे थे। आज की दैनंदिनी पूर्ण हुयी और रात्रि में यदा-कदा कूल्हने की आवाज आयी, सुनकर अंदर से मन व्यथित होता। गुरुदेव को शरीरगत व्याधि कष्ट दे रही थी। इसके बावजूद धैर्य-विज्ञानी, समत्व-परिणामी गुरुदेव ने आत्मविशुद्धि पूर्वक अपने संकल्प की ओर बढ़ते हुए, किसी भी प्रकार की पीड़ा व्यक्त नहीं की।

दिनांक १७.२.२०२४, माघ शुक्ल अष्टमी (उत्तम शौच धर्म)—आज प्रातः ६:१५ बजे हम सभी ने आचार्यश्री के समक्ष आचार्य-वंदना सम्पन्न की। सुबह से हम देख रहे थे, गुरुदेव जब भी करवट बदलते थे तब स्वयं पिच्छी से परिमार्जन करके करवट बदलते थे। हमने देखा बार-बार वे अपने हाथों की कोमल अँगुलियों से मन्त्र जाप कर रहे थे। बीच-बीच में वे आत्म अनुभव में इतने लीन हो जाते कि शारीरिक हलन-चलन पूर्णतः शून्य हो जाती। सुबह ७:३० बजे वैद्यों ने बाह्य निरीक्षण, नाड़ी परीक्षण करके कमजोरी होना बताया। हम सभी लोग आश्वस्त थे कि आज आचार्यश्री औषध, पानी आदि लेंगे जिससे स्वास्थ्य में सुधार होगा, किन्तु शरीर को ही दुःख का मूल कारण मानने वाले गुरुदेव अपनी अवस्था का अनुभव करते हुए भेदविज्ञान के अभ्यास में लीन रहे। आचार्य पूज्यपाद स्वामी की समाधितंत्र की ये दो पंक्तियाँ चरितार्थ हो रही थीं—

**मूलं संसार दुःखस्य देहएवात्मधीस्ततः।**
**त्यक्तवैनां प्रविशेदन्त-र्बहिरव्याप्रतेन्द्रियः॥**

गुरुदेव समझ रहे थे कि जीवन का प्रारम्भ अध्ययन का काल है तो जीवन के अंत समय मृत्यु, परीक्षा की घड़ी है। ऐसी परीक्षा देने वाले महापुरुष आचार्यश्री मरण को समाधिमरण महोत्सव का रूप प्रदान करने में लगे हुए थे। तभी तो प्रातः ८:४५ बजे निर्यापक मुनि योगसागरजी, निर्यापक मुनि समतासागरजी, मुनि श्री महासागरजी, मुनि श्री निष्कम्पसागरजी आदि सभी साधुओं ने पूज्य गुरुदेव से आहार चर्या हेतु उठने का निवेदन किया किन्तु शुद्धोऽहं आदि अध्यात्म सूत्रों का अनवरत शुभ चिंतन करने वाले क्षपकराज गुरुदेव ने विगत दिवस की भाँति आज भी आहार-जल ग्रहण न करने का संकल्प अंतरंग में कर लेने से निवेदन पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। फिर कुछ समय बाद वही निवेदन किया गया किन्तु आंतरिक साधना की गहराईयों में उतरे गुरुदेव ने कोई उत्तर न दिया। तप के तेज से दमकता गुरुदेव का मुखमण्डल हम सभी के अंतरंग को प्रकाशित कर रहा था। जिस दिन से हम लोग आये हैं, उस दिन से हमने देखा कि गुरुदेव बहुत ही कम वार्तालाप कर रहे थे और विगत दो-तीन दिनों से तो प्रायः मौन ही था ऐसा अहसास हो रहा था कि "**अहमनाकुल स्वरूपाः**" सूत्र का मनन करते हुए अशेष आकुलताओं से रहित प्रशांत स्वरूप का दिव्य-दर्शन हम सभी को करा रहे हों। उनकी देह की निस्पंदता एवं बलक्षीणता को देखकर हम सबकी आकुलता बढ़ती जा रही थी। जीवन भर वर्षा की बूँदों के समान अनगिन उपकारों की अजस्त्र वर्षा करने वाले जीवन-प्रदाता गुरुदेव की रुग्णता हमारे आत्मबल को भी कमजोर कर रही थी।

लगभग १०:३० बजे वैद्यों ने पुनः निरीक्षण किया, बोले ऑक्सीजन—शुद्ध प्राण वायु की कुछ कमी सी लग रही है, तब खिड़कियों को खोला गया, अमृतधारा सुँघाई, तब भी गुरुदेव ने अमृतधारा सूँघने में कोई रुचि नहीं दिखाई और

करवट ले ली। ११:०० बजे अन्य मुनिराजों के आने पर मुनि श्री योगसागरजी आदि हम लोग मन को समझाकर आहार लेने को उठ गए। किसी भी साधु का मन आहार लेने का नहीं हो रहा था। आज भी गुरुदेव का उपवास हो गया। ११:४५ बजे आचार्यश्रीजी के पास ईर्यापथ प्रतिक्रमण किया गया। गुरुदेव की यह अवस्था सल्लेखना समाधिमरण का समग्र सम्यक् विवेचन करने वाले आचार्य भगवन् श्री शिवार्य स्वामी जी विरचित श्री भगवती आराधना ग्रन्थ में वर्णित सल्लेखना के प्रथम भेद भक्त प्रत्याख्यान के तीन भेदों में से निरुद्ध सल्लेखना मरण का स्मरण करा रही थी।

परम शांत परिणामों से सहित क्षपक श्रेष्ठ गुरुदेव बिना कोई याचना, बिना कुछ प्रतिकार के सहज भाव से लेटे हुए थे, जब कभी उन्हें हाथ-पैर सिकोड़ना अथवा फैलाना होता या फिर करवट बदलनी होती थी, तब वे अप्रमत्त श्रमण अपने हाथ से संयमोपकरण मयूर-पिच्छिका उठाकर परिमार्जन करने के उपरान्त ही प्रवृत्ति कर रहे थे। कभी-कभी संघस्थ साधु संकेत समझकर परिमार्जन कर देते थे। तब वे पापभीरु, प्राणी मात्र के अभय प्रदाता गुरुदेव हलन-चलन की क्रिया करते थे।

दोपहर में पूर्णायु जबलपुर के ब्रह्मचारी मनीष भैया दर्शनार्थ आये नमोऽस्तु बोला, गुरुदेव ने देखकर आशीर्वाद दिया। चन्द्रगिरि से विहार किये आज तृतीय दिवस था। क्षेत्र परिवर्तन के बावजूद स्वास्थ्य में सुधार नहीं होने से परिस्थितियों को देखते हुए सभी साधुओं ने विचार किया और शाम ४ बजे आचार्यश्री जी को डोली में लिटाकर चन्द्रगिरि की ओर विहार कराया। चन्द्रगिरि पहुँचकर आचार्यश्री जी प्रसन्नता का अनुभव कर रहे थे। उनके मुखमण्डल पर सहज मुस्कान देखकर हम सभी का हृदय भी प्रफुल्लित हुआ। वहाँ पहुँचकर गुरुदेव को प्रतिक्रमण सुनाया गया, आचार्य वंदना हुई और स्वयंभूस्तोत्र एवं नंदीश्वर भक्ति सुनाई गई, तत्पश्चात् गुरुदेव के साथ-साथ हम लोग भी सामायिक में बैठ गए। संघस्थ सभी साधुओं ने निर्णय कर लिया था, दो-दो साधु एक-एक घण्टे गुरुदेव की सेवा में रहेंगे किन्तु पूज्य मुनि श्री निरामयसागरजी और यह अल्पज्ञ-अनुचर गुरुचरणों में ही बने रहे।

लगभग ८:३० बजे रात्रि में क्षपक श्रेष्ठ गुरुदेव के मुख से एवं नासिका से काला, पीला, हरा सा पित्त निकलना प्रारम्भ हुआ। दिन में भी एक बार निकला था। जिसका परीक्षण कराने पर ज्ञात हुआ कि यह रक्त पित्त निकल रहा है। आचार्यश्री जी ने लगभग चालीस साल पहले ही थूकने का त्याग कर दिया था। कफ आदि भी नहीं थूकते थे। ऐसे तपस्वी गुरुदेव ने रात्रि में मुख बन्द रखा तो पित्त नाक से निकलता रहा। प्रारम्भ में हम लोगों ने पोंछने का प्रयास किया तो उन्होंने मना कर दिया। बाद में बार-बार निकलने लगा तो उन्होंने प्रतिकार बन्द कर दिया था। जब निर्यापक मुनि योगसागरजी ने देखा तो उन्होंने परीक्षण करवाया वैद्यों ने परीक्षण करके बताया कि अधिक मात्रा में निकलने से चिंता का विषय है। शायद पित्ताशय की थैली फट गई है तभी अधिक मात्रा में निकल रहा है। यह सुनकर हम सभी लोग चिंतित हो गए। वैद्यों का कहना था कि ऐसी स्थिति में तो कोई भी व्यक्ति इससे होने वाली पीड़ा को सहन ही नहीं कर पाता, किन्तु गुरुदेव शांत रहकर अपार कष्ट को सहन कर रहे थे और हम सभी गुरुदेव के कष्टों का निवारण न कर पाने से अन्दर ही अन्दर आकुलित हो रहे थे।

रात्रि ११:०० बजे पूरा संघ आचार्यश्री के कक्ष में आया और स्थिति को देख करके वैद्यों के साथ बाहर सलाह करने लगा। मैं और निरामयसागरजी गुरुदेव की सेवा में रहे। हम गुरुदेव को धीरे-धीरे णमोकार सुनाते रहे। ११:०० बजे के बाद खुजली की कोई पीड़ा नहीं दिखी और हाथ-पैरों का मोड़ना-सिकोड़ना अथवा करवट लेना भी एकदम से बंद हो गया था, कूल्हने की भी आवाज एकदम से बंद हो गई थी, पित्ताशय की थैली पहले फूली हुई दिखती थी

परन्तु वह अब दिखना बंद हो गई थी, पूज्य गुरुदेव का चेहरा देखने से लग रहा था कि जैसे वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गए हैं, विगत कई दिनों से उनके पवित्र युगलचरण का स्पर्श ठंडा महसूस होता था, अब वह भी गरम महसूस हो रहा था, सभी महाराज गुरुदेव के आसपास बैठकर मन्त्र उच्चारण कर रहे थे।

रात्रि लगभग १२:३० बजे गुरुदेव ने दो-तीन बार लेटे-लेटे ही सिर उठाकर देखा फिर शांत भाव से चिंतन करते रहे। उस वक्त नियमसार ग्रन्थ की गाथा ९९ का भाव आया-''मैं ममत्व को त्यागता हूँ, निर्ममत्व भाव में उपस्थित होता हूँ, मेरे लिए मात्र आत्मा ही अवलम्बन है, शेष सभी को मैं छोड़ता हूँ।'' इस तरह गुरुदेव पूरी जागरूकता के साथ अप्रमत्त रहते हुए समत्व की परिभाषा में अपने आपको बाँधे हुए थे। सुचिर काल से समस्त परिग्रह के त्यागी पूज्य गुरुदेव वैसे भी शरीर से नेह नहीं रखते थे और इस अंतिम समय में वे पूर्णतः निर्लिप्त भाव से परिपूर्ण दृष्टिगोचर हो रहे थे। रात्रि १:०० बजे पूज्य गुरुदेव के स्वास्थ्य में तीव्रता से गिरावट का एहसास हुआ तब सभी ने धीरे-धीरे णमोकर महामन्त्र पुनः सुनाना शुरू किया एवं प्रासंगिक संक्षिप्त उद्बोधन भी किया गया।

उसी समय चन्द्रगिरि से दूर स्थित संघस्थ निर्यापक, मुनि एवं आर्यिकाओं को ब्रह्मचारी जी के माध्यम से समाचार दिये गए। सभी को आचार्यश्री के दर्शन कराये गए और सभी की भावनाएँ आचार्यश्री के चरणों में निवेदित की गईं। रात्रि लगभग १:४५ बजे के बाद श्वास की गति थोड़ी बढ़ गई थी।

गुरुदेव ने अपने जीवनकाल में अपने दीक्षा गुरु पूज्य आचार्यप्रवर श्री १०८ ज्ञानसागर महाराज सहित अनेक भव्य आत्माओं की सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण कुशलता पूर्वक सम्पन्न कराये और इस सम्बन्ध में स्वयं भी सदैव जागरुक रहे। कई बार संकेत भी दिये। २०२२ कुण्डलपुर में पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के समय निर्यापक श्रमण श्री संभवसागरजी से कहा था कि-''मैं भक्त प्रत्याख्यान (सल्लेखना समाधिमरण) की तैयारी पहले से कर रहा हूँ, आप लोग भी अच्छे से करना।'' इस प्रकार आचार्यश्री का देही से विदेही बनने का चिंतन चलता रहता था। नाटक समयसार कलश का यह श्लोक पूरी तरह से आत्मसात हो रहा था-

**भेद विज्ञानतः सिद्धाः, सिद्धा ये किल केचन।**
**तस्यैवाभावतो बद्धा, बद्धा ये किल केचन॥**

भेद-विज्ञान के बल से आचार्यश्री परम शान्ति का अनुभव कर रहे थे। रात्रि लगभग २ बजे हम सभी को महसूस हुआ उल्टी श्वास चलने लगी है, तब दिशा परिवर्तन करने हेतु तखत को घुमा दिया और गुरुदेव के पैर दक्षिण की ओर कर दिये।

नवमी की वह रात्रि आगत विरह-वेदना की ओर ले जा रही थी। हम सभी अकल्पनीय वह दृश्य प्रत्यक्ष देख रहे थे, जो दुर्निवार काल के द्वारा हम सभी का सर्वस्व लूटा जा रहा था। हम सभी के सामूहिक अशुभ असाता कर्म के उदय से कोई कुछ नहीं कर पा रहा था।

रात्रि २:३५ मिनट पर अनियत विहारी महाश्रमण बिना कुछ संकेत दिये, एकत्व का अनुभव करते हुए अकेले ही परभव के लिए विहार कर गए। समय थम सा गया, हम सभी अवाक् रह गए। गुरुदेव नश्वर शरीर का परित्याग कर महायात्रा पर निकल गए। देह निष्पंद हो गयी, श्वासों का आवागमन थम गया। वैद्यों ने परीक्षण किया-नाड़ी फड़कन, हृदय स्पंदन शांत हो गए थे। देह रूपी पिंजड़े को खाली छोड़ अध्यात्म स्वरूपी राजहंस चैतन्य पक्षी, देखते ही देखते

हम सबके सामने से उड़ गया।

रात्रि लगभग २:४५ बजे कक्ष के बाहर दहलान में सिंहासन पर गुरु की पवित्र देह को स्थापित किया गया। समाचार पाते ही चन्द्रगिरि में उपस्थित हजारों श्रद्धालु उमड़ पड़े, सभी के नयनों से नीर सारी मर्यादायें तोड़कर स्वतः सरिता बन प्रवाहित हो रहा था, किन्तु हृदय में सुलगती विरह अग्नि के संताप से संतापित मन हाहाकार कर रहा था। हम सभी के सौभाग्य का सूर्य अस्त हो गया।

दिनांक १८.२.२०२४, गुरुदेव के पार्थिव देह के समीप से उठकर जाने का मन ही नहीं हो रहा था, फिर भी प्रातः लगभग ६:०० बजे हम सभी ने अंदर जाकर निर्यापक मुनि श्री योगसागरजी के साथ आचार्य भक्ति सम्पन्न की। तभी मुनि श्री निरामयसागरजी ने बताया कि गुरुदेव ने एक बार सभी मुनिराजों-शिष्यों को छोड़कर पूर्णतः अकेले रहकर सल्लेखना समाधि की बात कही थी और वह आज उन्होंने करके दिखा दिया। अंतिम तीन दिन तो यथार्थ में वे पूर्णतः एकत्व का अनुभव करते नजर आये।

प्रातः लगभग ७:३० बजे, निर्यापक मुनि श्री अभयसागरजी, निर्यापक मुनि श्री संभवसागरजी, मुनि श्री निरोगसागरजी, मुनि श्री निरीहसागरजी, मुनि श्री नीरजसागरजी और उनके साथ १४ क्षुल्लक जी अत्यधिक परिश्रम पूर्वक तेजी से विहार करते हुए चन्द्रगिरि पहुँचे। सभी के अश्रुपूरित नयन उनकी अंतरंग वेदना को स्पष्ट प्रकट कर रहे थे।

दोपहर लगभग १२:३० बजे गुरुदेव की पार्थिव देह को डोली (पालकी) में विराजमान किया गया और तेजी से बढ़ती हुयी जनमेदनी के समक्ष पुलिस प्रशासन की सारी व्यवस्थाएँ ध्वस्थ हो गईं। अनगिन श्रद्धालुओं की भीड़ ने अपनी आँखों की साक्षी में देखा, सकल संघ ने अग्नि कुण्ड में स्थापित देह को अग्नि संस्कार देने से पूर्व भक्ति पाठ कर परिक्रमा की और सभी के देखते-देखते क्षपक श्रेष्ठ की पवित्र देह को शुद्ध घृत, कपूर, चंदन, श्रीफल, गोला आदि मांगलिक द्रव्यों से शोभायमान कर अग्नि के हवाले कर दिया।

आज के दिन छत्तीसगढ़ शासन एवं मध्यप्रदेश शासन द्वारा राजकीय शोक घोषित कर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी और अंतिम महायात्रा में शासन-प्रशासन के अनेक मन्त्री, अधिकारीगण सम्मिलित हुए। अग्नि को सौंपने से पूर्व हम सभी साधु अंतिम विदाई देकर संतभवन में आ गए।

भले ही गुरुदेव के साथ अंतिम महायात्रा में कोई नहीं गया, गुरुदेव हम सभी को छोड़कर अकेले ही प्रस्थान कर गए किन्तु मोक्षमार्ग की यात्रा में, गुरुदेव हम सभी के साथ सदा रहेंगे।

-जय गुरुदेव

## लोकोत्तर महापुरुष की [illegible] यात्रा के अंतिम कुछ पन्ने

३ फरवरी, २०२४, परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महामुनिराज की प्रेरणा-आशीर्वाद से सन् २०१८ में स्थापित छत्तीसगढ़ के जिला राजनांदगाँव की तहसील डोंगरगढ़ में राजकट्टा ग्राम स्थित श्री दिगम्बर जैन चन्द्रगिरि तीर्थक्षेत्र पर गुरुदेव की परम कृपा से विशाल पाषाण का तीन मंजिला, जो ७० प्रतिशत बन चुका है ऐसा त्रिकाल चौबीसी मंदिर एवं ९० खण्डीय सहस्रकूट स्तम्भ बन रहा है। बालिकाओं की शिक्षा हेतु प्रतिभास्थली विद्यालय स्थापित-संचालित है, गरीबों की आजीविका हेतु हथकरघा केन्द्र संचालित है। छत्तीसगढ़ के एक मात्र नवनिर्मित तीर्थक्षेत्र चन्द्रगिरि पर आचार्यश्रीजी सन् २०११-२०१२-२०२३ में वर्षायोग चातुर्मास हुआ। ऐसे पावन क्षेत्र का आध्यात्मिक, शान्त वातावरण में मूलनायक चन्द्रप्रभ भगवान की शरण में पीलिया रोग से ग्रसित शरीर में रहते हुए अपने आत्मस्वभाव का संवेदन करते हुए विशुद्ध तप-साधना में तल्लीन थे। मुनि श्री पूज्यसागरजी के साथ लगभग ६०० किलोमीटर चलकर हम गुरुचरण वन्दना के लिए पहुँचे। मार्ग में वर्धा नगर के बाहर निर्यापक श्रमण मुनि श्री योगसागरजी महाराज एवं मुनि श्री निस्सीमसागरजी महाराज के दर्शन एवं सान्निध्य मिला और उनके साथ विहार कर गुरु के निकट पहुँचे। हम चारों ही साधु आज दोपहर में गुरुदेव के समक्ष कायोत्सर्ग पूर्वक आचार्य वंदना कर रहे थे। तभी निर्यापक मुनि श्री प्रसादसागरजी ने गुरुदेव से कहा आचार्यश्रीजी ! निर्यापक श्रमण पूज्य योगसागरजी, मुनि श्री पूज्यसागरजी, मुनि श्री निस्सीमसागरजी, ऐलक धैर्यसागर दर्शनार्थ पधारे हैं। गुरुजी ने लेटे-लेटे आँख खोलकर देखा,

चन्द्रगिरि तीर्थ पर बना रहा भव्य विशाल सुन्दर जिनालय

चन्द्रगिरि तीर्थ में स्थित प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ

चन्द्रगिरि तीर्थ में स्थित चल चरखा हथकरघा

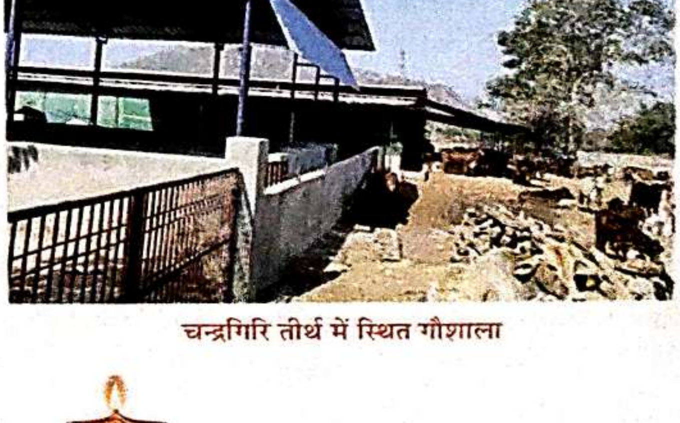

चन्द्रगिरि तीर्थ में स्थित गौशाला

मैं तीनों मुनिराजों के पीछे बैठा था तो आचार्यश्री जी ने थोड़ा नजरों को उठाकर मुझे भी देखा, तब हमने भक्ति पढ़ते हुए सर झुकाया तो आचार्यश्री जी ने धीरे से स्वीकृति में सिर हिलाया। हम चारों महाराजों को प्रसन्नता की अनुभूति हुई क्योंकि हम लोग डरे हुए थे, बिना आज्ञा के आये थे। शिष्यों के हृदय सम्राट गुरुदेव हम लोगों के हृदय को पढ़ते रहे भक्ति पूर्ण करके जैसे ही हम लोगों ने नमोऽस्तु किया, वैसे ही मंद-मंद मुस्कान के साथ आशीर्वाद दिया। परिक्रमा के बाद गुरुदेव से पूज्य योगसागरजी का वार्तालाप हुआ। फिर हम लोगों ने वैय्यावृत्त्य की। ४:०० बजे के करीब उठकर बैठे, बोले–''प्रतिक्रमण'' और तब मुनिराजों ने आचार्यश्री के साथ प्रतिक्रमण किया। हमने बाहर दूर बैठकर अपना प्रतिक्रमण किया। तत्पश्चात् आचार्यश्रीजी ने मुनि श्री पूज्यसागरजी से वार्तालाप किया, तभी उन्होंने मुझे याद किया। तब मुनि श्री प्रसादसागरजी ने मुझे इशारा किया आचार्यश्री आपको याद कर रहे हैं, मैं तत्काल परमोपकारी गुरुवर के चरणों में पहुँचा, गुरुदेव ने देखते ही भाव विह्वल होते हुए मेरे सिर पर तीन-चार बार हाथ रखते हुए–''बोले पीड़ा होते हुए भी इतनी दूर से चलकर आ गए।'' हमने निवेदन में कहा–गुरुदेव आपके आशीर्वाद से ही चल रहा हूँ, आपने मुझे संसाररूपी नरक से निकाला है, आपके महाउपकार हैं गुरुदेव। आचार्यश्रीजी ने सभी को बड़ा ही आत्मीय आशीर्वाद प्रदान किया और फिर बोले– ''देव वन्दना'', हम सभी आचार्यश्री के पीछे-पीछे हो लिए।

सन्तभवन में ही प्रतिदिन चल प्रतिमा विराजमान की जाती थी उसी प्रतिमा के माध्यम से गुरुदेव सुबह, शाम एवं आहार के समय भगवान जिनेन्द्र की वन्दना करके विशुद्धि बढ़ाते, कर्म निर्जरा करते, पुण्यार्जन कर आत्मा को निर्मल बनाते।

तत्पश्चात् परोपकारी गुरुवर उनका भी ध्यान रखते जो देश भर के दूर-दराज क्षेत्रों से आये हजारों भक्त श्रद्धालु सुबह-शाम इन्तजार करते गुरुदेव के दर्शनों का, उनकी प्यास बुझाने गुरुदेव सन्तभवन के मुख्य द्वार पर लगे पाटे पर खड़े होकर जब पवित्र हाथों से आशीर्वाद रूपी अमृत की वर्षा करते, तब अमृतपान कर वो सब उल्लसित भावों से जयघोष कर उठते। किसी का भी मन अमृतदाता गुरुवर को नजरों से ओझल करने का नहीं होता किन्तु गुरुदेव अपनी शक्ति प्रमाण अमृत लुटाकर वापस निज वसतिका में लौट जाते।

३ फरवरी को दोपहर में भक्तों को दर्शन देते हुए

सन्तभवन के २ न. कक्ष में गुरुदेव एक लकड़ी के पाटे पर बैठे, हम सभी साधु यथाक्रम गुरुदेव के समक्ष नीचे बैठे। आचार्य वंदना की, भक्तियाँ पढ़ीं। हम लोगों ने आचार्य परमेष्ठी गुरुवर से दैवसिक प्रायश्चित माँगा, गुरुदेव ने ४ अँगुलियाँ दिखाकर चार कायोत्सर्ग रूप प्रायश्चित दिया और स्वयं ने भी किया। तत्पश्चात् हम लोगों ने नमोऽस्तु किया उन्होंने प्रत्येक को देखकर आशीर्वाद दिया। फिर हम लोगों ने गुरुदेव से निवेदन किया आप आराम करें, हम लोग वैय्यावृत्त्य करना

चाहते हैं। गुरुदेव ने पिच्छी से परिमार्जन किया और लेट गए।

थोड़ी देर बाद जागरुक गुरुदेव ने समय होते ही मुनि श्री निरामयसागरजी को याद किया और कहा स्वयंभू...। तब मुनि श्री निरामयसागरजी ने स्वयंभू स्तोत्र सुनाना प्रारम्भ कर दिया, उसके बाद नंदीश्वर भक्ति का पाठ किया। पश्चात् गुरुदेव ने सामायिक प्रारम्भ कर दी। कुछ मुनिराज वहीं गुरुजी के पास सामायिक करने लगे, हम कुछ साधु बाहर आकर अन्य कक्षों में करने लगे।

रात्रि सामायिक के बाद आचार्यश्री जी के पास आज विश्राम हेतु पूज्य श्री योगसागरजी, मुनि श्री पूज्यसागरजी, मुनि श्री निरामयसागरजी एवं मुनि श्री निस्सीमसागरजी यथायोग्य स्थान पर स्थित हो गए, बाकी हम तीन महाराज अन्य कक्षों में विश्राम हेतु चले गए। रात्रि सम्बन्धी जानकारी मुनि श्री निस्सीमसागरजी एवं मुनि श्री निरामयसागरजी ने अपने लेखों में विस्तार से दी है।

## ❑ अन्तिम द्वितीय पृष्ठ : निज पीड़ा भुलाकर पर पीड़ा को दूर करने का विचार—

४ फरवरी, २०२४ को प्रातः ६:३० बजे हम तीन मुनिराज भी आचार्य कक्ष में पहुँच गए और गुरु सान्निध्य में आचार्य वंदना करने का हम सभी को सौभाग्य मिला, गुरुदेव के साथ भक्तियाँ पढ़ीं, रात्रिकालीन प्रायश्चित मिला फिर आशीर्वाद मिला। तदुपरान्त गुरुदेव ने मुझको देखा और बोले—''कोकम को जानते हो ? उसको लिया कभी,'' तो हमने कहा नहीं, तो बोले—''वह बहुत अच्छा होता है आयुर्वेद में उसको इम्युनिटी पावर बढ़ाने वाला माना गया है, उससे पेट ठीक रहता है, सभी आर्यिकाएँ ले रही हैं, कई मुनिराज भी लेते हैं, आप भी ले सकते हैं। वह लाल और काला दो प्रकार का होता है लेकिन ज्यादा गाढ़ा नहीं लेना चाहिए, पतला ही लेना और ज्यादा भी नहीं लेना, मात्र दो अंजुली ही पर्याप्त है।'' करुणा के सागर गुरुदेव ने अपनी चर्चा न करके हम शिष्यों के स्वास्थ्य की चिंता की, कैसे यह शिष्य स्वस्थ्य हो और धर्म मार्ग में आगे बढ़े।

फिर हम लोगों ने वैय्यावृत्त्य करना प्रारम्भ की तभी वैद्य स्वप्निल सिंघई एवं वैद्य गौरव (पूर्णायु जबलपुर आयुर्वेदिक महाविद्यालय), पूना के वैद्य दिलीप जी गाडगिल को लेकर आये, वे नाड़ीविज्ञ वैद्य थे, उन्होंने आचार्यश्री जी की नाड़ी देखने की इच्छा प्रकट की तो आचार्यश्री जी ने सहजता से हाथ आगे कर दिया। देखने के बाद वैद्य जी ने मराठी भाषा में आचार्यश्री जी से चर्चा की, अन्त में आचार्यश्री हिन्दी में बोले—''अब ठोस आहार नहीं ले सकूँगा क्योंकि जंघाबल कम हो रहा है,'' तो वैद्य जी ने कहा आचार्य महाराज आहार के समय यदि कोई पकड़कर सहारा दे तो ठीक रहेगा, तब आचार्यश्री ने कुछ कहा वैद्य जी ने कहा आहार में गेंहू के दूध की लापसी, आचार्यश्री ने स्वीकृति में सिर हिलाया, ज्वार का दलिया, काले चावल की खिचड़ी लेने की बात कही तब आचार्यश्री ने कहा—'देखेंगे'। आचार्यश्री जी ने वैद्य जी से कहा—''गेंहू के बारे में अनुसंधान हुआ है कि वह नुकसानदायी है, ऐसा एक शोध विदेश में कहीं हुआ है, हमने पढ़ा है, सही अन्न तो ज्वार, बाजरा, मक्का, जौ, रागी ये हैं, आप उस लेख को पढ़िए।'' तभी ब्रह्मचारी जी ने प्रतिभास्थाली से वह लेख मंगाया और वैद्य जी को पढ़कर सुनाया गया। उनके जाने के बाद वैद्य परामर्शानुसार मुनि श्री निरामयसागरजी ने पेट पर ठण्डी-गरम पट्टी रखी, फिर हम लोगों ने औषधि वाला तेल पैरों में लगाया।

तत्पश्चात् स्वप्निल सिंघई जी और गौरव जी ने दूध में औषधि मिलाकर शरीर में लगाया, फूल-मालिश की।

उसके बाद आचार्यश्री जंगल गए। आने के बाद हम लोगों ने १० मिनट सूखी फूल मालिश की। ९:१५ पर आचार्यश्री आहार पर निकले। गुरुदेव ने पहले देववंदना की फिर संतभवन के हॉल में ही पाँच चौके वालों को पड़गाहन के लिए अवसर मिला। ५०-६० चौके वालों की पर्चियाँ रखी जाती उसमें से ५ भाग्यशालियों को यह अवसर मिलता था। हम लोगों को आशीर्वाद देकर आचार्यश्री प्रतिदिन आहार पर उठते थे। पड़गाहन के लिए प्रत्येक चौके वालों को मात्र ५ सदस्यों की अनुमति दी गयी थी। जिन चौके वालों को पड़गाहन का सौभाग्य मिलता वे आहार देते, शेष बाहर चले जाते। आज हम सभी को अत्यधिक खुशी हुई कि आज विगत दिनों से आहार का समय बढ़कर ११ मिनट हुआ। आहार के समय दो मुनिराज पैरों को पकड़कर सहारा दे रहे थे। गुरुदेव के आहार देखने के लिए हजारों भक्तगण चैनलगेट एवं खिडकियों में धक्का-मुक्की कर रहे थे। गुरुदेव की एक झलक पाने की भावना हम सभी महसूस कर रहे थे, किन्तु अत्यधिक भीड़ होने के कारण व्यवस्था नहीं हो पाने से मन-मसोस कर रह गए। शेष सभी साधु कक्ष के बाहर खड़े होकर देख रहे थे। आहार के पश्चात् गुरु जी संतभवन के पीछे चले गए और निर्यापक श्रमण योगसागरजी ने बाहर जाकर भक्तों को ज्यों ही सानंद आहार एवं आहार में सुधार के समाचार दिए, त्यों ही भक्तों की खुशियों से, जयकारों और तालियों से आकाश गूँज उठा।

आचार्यश्री से आशीर्वाद लेकर हम लोग आहार पर निकले। ११:३० बजे हम सभी लोगों ने आचार्यश्री के पास जाकर प्रत्याख्यान पूर्वक आशीर्वाद लिया। फिर गुरु के साथ ईर्यापथ प्रतिक्रमण किया। ईर्यापथ के बाद आचार्यश्री जी लेट गए और मुनि श्री निरामयसागरजी को देखा तो उन्होंने स्वयंभू स्तोत्र सुनाया एवं नंदीश्वर भक्ति सुनायी। आचार्यश्री जी धीरे-धीरे बिना आवाज के साथ में बोलते रहते थे, लेटे-लेटे ही एक करवट से सामायिक की, उनके पास में नीचे बैठकर प्रतिदिन मुनि श्री निस्सीमसागरजी सामायिक करते थे और बाहर पीछे की ओर मुनि श्री योगसागरजी सामायिक करते थे। १:४० बजे मैं गुरुजी के पास पहुँचा और वैय्यावृत्त्य का लाभ लिया। शाम को कक्ष के अन्दर जाने से पूर्व देववंदना करके श्रद्धालु भक्तों को दर्शन-आशीर्वाद देकर कक्ष में गए, वहाँ पर मुनि-संघ के साथ प्रतिक्रमण किया और फिर आचार्यभक्ति हुई, हम सभी ने दैवसिक प्रायश्चित माँगा, गुरुदेव ने ४ अँगुलियाँ दिखाई, तत्पश्चात् हम लोगों ने नमोऽस्तु किया, गुरुदेव ने आशीर्वाद दिया। आज गुरुदेव को हड-फूटन (शरीर का टूटना) हो रहा था। तो हम लोगों ने थोड़ा बल प्रयोग करके वैय्यावृत्त्य की, थोड़ी देर बाद गुरुजी बोले "निरामय! स्वयंभू।" निरामयसागरजी ने सुनाया स्वयूंस्तोत्र, नंदीश्वर भक्ति सुनायी। तत्पश्चात् सामायिक में लीन हो गए। सामायिक के बाद हम लोगों ने पुनः कुछ हल्की वैय्यावृत्त्य की और गुरुदेव ९:३० बजे के बाद विश्राम करने लगे। मुनि श्री निरामयसागरजी के अनुसार गुरुदेव को कुछ दिनों से रात्रि में निद्रा नहीं आयी है क्योंकि पीलिया की तीव्रता के कारण खुजली एवं दाह अत्यधिक होती है।

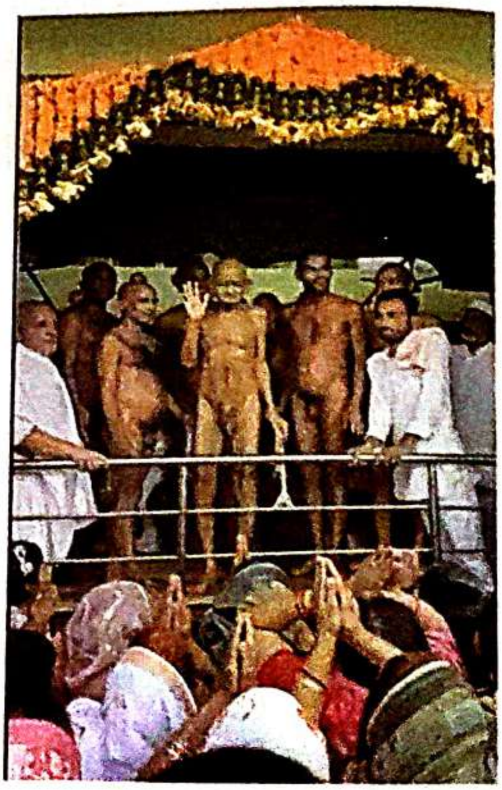
४ फरवरी को शाम में भक्तों को दर्शन देते हुए

## ❑ अंतिम तृतीय पृष्ठ : शारीरिक पीड़ा के बीच चिंतनामृत की वर्षा—

५ फरवरी, २०२४ प्रात ६:४५ बजे आचार्यश्री जी के साथ हम सभी ने आचार्य वंदना की। उसके बाद गुरुदेव सीधे लेटकर पैर ऊपर मोड़ के हाथों से सिर को पकड़े हुए हल्की एक्सरसाइज करते हुए हँसकर बोले—''पारसनाथ हो या महावीर भगवान हों किसी भी तीर्थंकर के उपदेशों में कोई अन्तर नहीं था, जो मान रहे हैं वो मिथ्या है, अनादिकालीन एक-सा ही उपदेश होता आया है क्योंकि सर्वज्ञता में अन्तर नहीं तो उपदेश में भी अन्तर नहीं हो सकता। महाव्रत एवं २८ मूलगुण त्रैकालिक हैं।'' इतनी अधिक दाह और कमजोरी के कारण शरीर में हड-फूटन होने के बावजूद भी परीषह विजयी गुरुदेव सतत् आत्म-चिंतन करते ही रहते हैं। यह देख हम सभी गुरुदेव की मानसिक दृढ़ता एवं स्थिरता देख अचम्भित रह गए।

आज परमपूज्य निर्यापक श्रमण श्री योगसागरजी महाराज ने केशलोंच लिया। आचार्यश्री ने आशीर्वाद दिया और वो केशलोंच करने चले गए। हम दो-तीन महाराज गुरुदेव की कोमल वैय्यावृत्त्य करने लगे। थोड़ी देर बाद दो वैद्य नागपुर से आये उन्होंने हाथों की कोहनी तक गीला चूना लगाने का निवेदन किया। गुरुदेव ने पूछा—''ऐसा क्यों?'' तो वो बोले इससे पीलिया बाहर निकलता है। उन्होंने लगाया और थोड़ी देर बाद उन्होंने गरम पानी में हाथ डुबो दिए और दोनों हाथों में छोटी-छोटी लकड़ी पकड़ा दी, ५ मिनट बाद बाहर निकालकर चूना साफ कर दिया गया, फिर हमने वैद्य स्वप्निल सिंघई के अनुसार गुरु जी के हाथों में नारियल तेल लगाया। फिर आचार्यश्री जी को लिटा दिया गया। मुनि श्री निरामयसागरजी ने गुरु जी के पेट पर ठंडी-गरम पट्टी लगाई। वैद्यों ने आकर बताया आज पानी में पीलापन पहले से कम आया। गुरुदेव किसी भी चीज में रस नहीं ले रहे थे, जो कुछ भी उपचार होता उसको वे सहज भाव से देखते रहते थे, घड़ी ने बताया ०८:३० बज गए तो आचार्यश्री जी जंगल के लिए उठ गए। आने-जाने में आचार्यश्री जी अत्यधिक कमजोर होने के बावजूद भी किसी का भी सहारा नहीं लेते थे। स्वाश्रित हर क्रिया करते थे। आज मल बँधा हुआ था, पका हुआ पीला था। इस परीक्षण से वैद्यगण प्रसन्न थे। उसके बाद हल्की वैय्यावृत्त्य की गयी तत्पश्चात् आहार का निवेदन किया गया। आज भी ११ मिनट आहार हुए। निरामयसागरजी, प्रसादसागरजी आहार व्यवस्था के साथ-साथ बाहर की व्यवस्था भी देख रहे थे। मुनि श्री निरामयसागरजी, मुनि श्री निस्सीमसागरजी और मुनि श्री पूज्यसागरजी सहारा दे रहे थे। दरवाजे पर खड़े पूज्य मुनि श्री योगसागरजी, मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी और मैं, घड़ी पर नजर रखे हुए थे। ११ मिनट आहार में गेहूँ के दूध की लाप्सी और छाछ एवं दो चम्मच ज्वार का दलिया लिया। सभी को प्रसन्नता हुयी। बाहर हजारों श्रद्धालु जय-जयकार कर रहे थे। प्रतिदिन की भाँति सभी क्रियाएँ सम्पन्न हुईं। दोपहर में वैद्य स्वप्निल सिंघई और गौरव ने पूरे शरीर में औषधि दूध लगाया। तत्पश्चात् हम लोगों ने हल्की वैय्यावृत्त्य की।

५ फरवरी को शाम भक्तों को दर्शन देते हुए

जैसे-जैसे सूरज चढ़ता तैसे-तैसे दाह की बेचैनी एवं खुजली बढ़ती जाती। ४ बजे मुनि श्री निरामयसागरजी बोले प्रतिक्रमण का समय हो गया है तो 'हूँ' बोले और घड़ी की ओर देखा। ४:१५ बजे लघुशंका गए, मुँह धोया, फिर अपने हाथ से ही पैर धोये, फिर कायोत्सर्ग किया और अन्दर हॉल के लिए प्रस्थान किया। हॉल में धातु की चल प्रतिमा श्री शान्तिनाथ जी भगवान की विराजमान की गयी थी। गुरुदेव ने विधिवत् दर्शन किये, भक्ति की और फिर दर्शनार्थियों को दर्शन दिये। तीन-चार हजार जनता के जयकारों से और नमोऽस्तु की आवाज से परिसर गूँज उठा। गुरुदेव की होती जर-जर काया देख अधिकतर श्रावक-श्राविकाओं की आँखें छलक आयीं। इसके बावजूद भी वीतरागी गुरुदेव बिना प्रभावित हुए चारों तरफ देखकर आशीर्वाद देते हुए अन्दर कक्ष में चले गए। वहाँ जाकर सभी मुनियों ने प्रतिक्रमण सुनाया। गुरुदेव बड़े मनोयोग से प्रतिक्रमण कर रहे थे। उसके बाद की सभी क्रियाएँ की गयी फिर गुरुदेव से निवेदन किया तो वो लेट गए। पाँच मुनिराज बाहर चले गए मुनि श्री निस्सीमसागरजी अन्दर आ गए थे। तब मैं गुरुजी के निकट पहुँचा धीरे से पूछा गुरुदेव बेचैनी हो रही है क्या? तो धीरे से बोले-''हड-फूटन हो रही है।'' तब हमने गुरुदेव के पैरों को मोड़ कर वैय्यावृत्त्य की। उन्हें थोड़ी राहत मिली। हमने धीरे से गुरु जी से निवेदन किया, गुरुदेव आपके ये असाता कर्म दो-पाँच जन्मों के नहीं उससे पहले के होंगे तो बोले-''हाँ असंख्यातों वर्षों का ऋण चुका रहा हूँ।'' और फिर उन्होंने सामायिक पाठ की ये दो पंक्तियाँ बोलीं-

**स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा, फलं तदीयं लभते शुभाशुभम्।**
**परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं, स्वयं कृतं कर्म निरर्थकं तदा ॥३०॥**

उसी समय मुनि श्री पूज्यसागरजी आ गए उन्होंने भी आचार्यश्री के पैरों को मोड़ कर वैय्यावृत्त्य की और मुनि श्री निस्सीमसागरजी आ गए और वैय्यावृत्त्य करने लगे। फिर मुनि श्री निरामयसागरजी ने स्वयंभू एवं नन्दीश्वरभक्ति सुनायी तत्पश्चात् आचार्यश्री सामायिक में लीन हो गए।

❑ **अन्तिम चतुर्थ पृष्ठ : अनुभवी वैद्यों का उपचार चल रहा-**

६ फरवरी, २०२४, समस्त आवश्यक पूर्ण हुए उसके बाद गुरुदेव के साथ आचार्यभक्ति की। हम सभी बैठे रहे। आधा घण्टे बाद आचार्यश्री जी ने करवट ली फिर घड़ी की तरफ देखा, बोले-''यह बड़ा काँटा तीन पर दिखा, छोटा दिखा ही नहीं, तो उठ गया किन्तु आँखों ने बता दिया कि गड़बड़ है, आँख की अपनी घड़ी है।'' फिर सीधे लेटे-लेटे पेट की एक्सरसाइज करने लगे। हँसते हुए बोले-''वैद्यों का अपना-अपना अनुभव होता है। तरह-तरह के उपचार करते हैं। किसी भी प्रकार से रोग ठीक करना चाहते हैं।'' तभी मुनि श्री पूज्यसागरजी ने कहा आचार्यश्री जी पहले से सुधार हुआ है, दिख रहा है। आपकी आँखों में पीलापन कम हुआ है, तो आचार्यश्री जी बोले-''वो जो पित्त है उसके नहीं निकलने से सब गड़बड़ हो गयी। अब निकल रहा है तो ठीक होना ही था। दीर्घशंका और लघुशंका के साथ निकलने से ठीक हो रहा है।'' तो मुनि श्री पूज्यसागरजी बोले आचार्यश्रीजी वैद्यों का कहना है कि आहार बढ़े, तो ठीक होगा, कमजोरी तभी जायेगी। दो दिन से तो ठीक हो रहा है। मुनि श्री योगसागरजी ने कहा कि दो दिन से ११-११ मिनट हुआ, थोड़ा और बढ़े १५ मिनट हो तो थोड़ी और शक्ति बढ़ेगी। आहार कम होने से कमजोरी बढ़ती जा रही है। तो आचार्यश्री बोले-''वैद्यों के परामर्शानुसार शक्ति प्रमाण ही उपचार हो रहा है।'' फिर वैय्यावृत्त्य शुरू हो गयी। वैद्य स्वप्निल सिंघई एवं गौरव शाह के अनुसार गरम पट्टी से कमर की सिकाई की गयी तत्पश्चात् पेट की ठंडी-गरम पट्टी की गयी एवं पैर के तलवों में चन्दन वाला लाक्षादि तेल की मालिश की गयी तत्पश्चात् खुजली का प्रतिकार करने हेतु

पूर्णायु आयुर्वेदिक चिकित्सालय का औषधि–घृत पूरे शरीर में लगाया गया, ५ मिनट के बाद औषधि युक्त कपड़े से गरम पानी की स्पंजिंग की गयी। ८:३० बजे आचार्यश्री जंगल गए। शुचिता करके आए और थोड़ी देर बाद ९:२० पर आहार के लिए शुद्धि कराई गई। विगत दिनों की भाँति नवधाभक्ति पूर्वक चार नंबर कक्ष में जबलपुर प्रतिभास्थली की बड़ी बहनों के द्वारा तैयार औषधि एवं पथ्य को ब्रह्मचारी विनय भैया जी क्रमशः श्रावकों से चलवाते, मुनि श्री पूज्यसागरजी बायें तरफ और वैद्य गौरव शाह दायें तरफ से आचार्यश्री जी की जंघा को पकड़े हुए थे, मुनि श्री निरामयसागरजी कोमल कपड़े से सहला रहे थे, मुनि श्री निस्सीमसागरजी अमृतधारा सुँघाते एवं मुँह पोंछ रहे थे, बाहर भक्तों की भीड़ आहारदान की क्रिया की एक झलक पाने के लिए खिड़की एवं चैनलद्वार पर धक्का–मुक्की कसमकस कर रही थी। इस प्रकार का शोर शराबा प्रतिदिन सामान्य सी बात हो गई थी, किन्तु गुरुदेव इन सब बातों से अलिप्त भावपूर्वक अपने आप में रहते थे। आज फिर ८ मिनट के आहार ने सभी को चिंतित कर दिया। आचार्यश्री कक्ष के बाहर आए तो अनेक ब्रह्मचारी भाई–बहनों ने बोला नमोऽस्तु गुरुदेव! नमोऽस्तु गुरुदेव! किन्तु गुरुदेव नीचे देखते हुए, बढ़ते हुए, आशीर्वाद देते हुए, आगे बढ़ रहे थे, तभी बेसब्री से प्रतीक्षारत बाहर चैनल गेट एवं खिड़कियों से झाँकती असंख्य आँखों की भक्ति ने मुँह खोला और जोरदार नमोऽस्तु की ध्वनि ने करुणाशील आचार्यश्री के पैर कक्ष के बाहर रोक लिए। गुरुदेव की नजर उठी, आशीर्वाद में हाथ उठा और बाहर तालियाँ की गड़गड़ाहट होने लगी। मानों आशीर्वाद के रूप में भक्तों को सब कुछ मिल गया। हम सभी ने आहार पर उठने से पूर्व आशीर्वाद लिया। ११:३० बजे ईर्यापथ प्रतिक्रमण से पूर्व प्रत्याख्यान लिया। मुनि श्री निस्सीमसागरजी एवं हमने कल केशलोंच करेंगे कहा, तो आचार्यश्री जी ने आशीर्वाद दिया। प्रतिक्रमण के बाद मुनि श्री निरामयसागरजी महाराज ने स्वयंभू एवं नंदीश्वर भक्ति का पाठ सुनाया और उसके बाद आचार्यश्री जी सामायिक में लीन हो गए।

दोपहर में ३:०० बजे हम लोगों ने फूल मालिश करना शुरू की स्वप्निल सिंघई ने औषधि धृत दिया वह हम लोगों ने लगाया। शाम ४:०० बजे आचार्यश्री जी लघुशंका के लिए उठे, फिर उसके बाद अंदर गए, देव वंदना की, तत्पश्चात् हजारों भक्तों को आशीर्वाद का दान देने गए। मुनिराज गुरुदेव के पास बैठ गए, प्रतिक्रमण सुनाया, गुरुदेव ने लेटे–लेटे हाथ जोड़कर प्रतिक्रमण किया। हमने बाहर जाकर अपना प्रतिक्रमण किया, तत्पश्चात् आचार्यश्रीजी के पास ही हम सभी ने आचार्य वंदना की, गुरुदेव ने भी की, हम सभी ने प्रायश्चित मांगा तो गुरुदेव ने दैवसिक प्रायश्चित में चार अँगुलियाँ दिखाईं और फिर आशीर्वाद दिया। उसके बाद प्रतिदिन की तरह आवश्यक पालन में लीन हो गए।

६ फरवरी शाम को भक्तों को दर्शन देते हुए

- **अंतिम पञ्चम पृष्ठ : सतर्क, सावधान, जागृत गुरुदेव–**

७ फरवरी, २०२४, गुरुदेव ने सभी आवश्यक पूर्ण करने के बाद आचार्य भक्ति संघ के साथ की और प्रायश्चित

एवं आशीर्वाद भी दिया किन्तु हम एवं मुनि श्री निस्सीमसागरजी केशलोंच करने के कारण पहुँच नहीं पाए, केशलोंच करके पहुँचे और आचार्य भक्ति की, गुरुदेव को नमोऽस्तु किया तो अपनी पीड़ा को भूल कर हम लोगों को प्रसन्नता के साथ आशीर्वाद दिया, गुरु वात्सल्य पाकर हम लोग धन्य हो गए। कुछ मुनिराज वैय्यावृत्त्य कर रहे थे। उसके बाद वैद्य स्वप्निल सिंघई और वैद्य गौरव शाह ने कुछ बाह्य उपचार किये जिसमें ब्रह्मचारी विनय भैया और मधुर भी सहयोग कर रहे थे। ९:२० बजे आचार्यश्री को आहार के लिए उठने का निवेदन किया गया। गुरुदेव ने शुद्धि की, आहार पर निकले, पड़गाहन, फिर पाद प्रक्षालन, पूजन, शुद्धि बोली गई इस तरह नवधाभक्ति से आहार हुआ। मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी एवं हमारी दृष्टि घड़ी पर लगी हुई थी। ठीक ९ मिनट आहार हुआ। पिछले दिन से १ मिनट ज्यादा हुआ किन्तु जल बढ़ाया, निरंतराय से सभी प्रसन्न थे। बाहर आए तो सभी ब्रह्मचारी भाइयों को आशीर्वाद मिला, खिड़की एवं चैनल गेट से नमोऽस्तु की आवाज ने आचार्यश्री का ध्यान आकर्षित किया, गुरुदेव ने हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया तो खुशी में जयकारों की आवाज गूँज उठी। गुरुदेव कक्ष के अंदर चले गए, पाटे पर वज्रासन से बैठ गए, सभी मुनिराजों ने नमोऽस्तु किया, गुरुदेव ने आशीर्वाद दिया, सभी साधु आहार चर्या पर निकल गए किन्तु मुनि श्री निस्सीमसागरजी महाराज एवं हमारा उपवास होने से गुरु सेवा में तत्पर रहे। १० मिनट बाद गुरुदेव ने बड़ी सावधानी के साथ पिच्छी से परिमार्जन करके शरीर को लिटा दिया। तब हम दोनों ने वैय्यावृत्त्य करना चाही तो मना कर दिया। आधा-पौन घंटे बाद वैय्यावृत्त्य के लिए हमने स्पर्श किया तो मना नहीं किया, धीरे-धीरे वैय्यावृत्त्य करते रहे। ११:०० बजे गुरुदेव बोले लघुशंका जाना है और उठकर बैठ गए, फिर धीरे से उठकर पीछे की ओर गए, हम दोनों पीछे-पीछे हो लिए गुरुदेव लघुशंका गए तो दीर्घशंका समाधान भी हो गया, हस्त शुद्धि करके आए और पीछे ही नेट के अंदर पाटे पर पिच्छी से परिमार्जन करके बैठ गए। बैठते ही थोड़े हँसने लगे और बोले-''एक के साथ एक फ्री हो गया, मल बंधा हुआ था।'' हम लोग कोमल वैय्यावृत्त्य करने लगे। ११:३० बजे उन्होंने पूछा-''सभी लोग आ गए, तत्काल सभी बैठ गए और गुरुदेव से प्रत्याख्यान लिया। तत्पश्चात् ईर्यापथ प्रतिक्रमण हुआ, सामायिक प्रारम्भ हुई, फिर सामायिक पाठ, स्वयंभू, नंदीश्वरभक्ति सुनी, सुनाने का सौभाग्य मुनि श्री निरामयसागरजी को ही प्राप्त था। दोपहर में वैद्य स्वप्निल एवं गौरवजी ने औषधि घृत लगाया, हमको भी अवसर मिला, मुनि श्री निस्सीमसागरजी जिस दिन से आए २४ घंटे गुरुदेव के पास ही रहते, सभी क्रियाओं में उनका सहयोग रहता था। हम सब लोग कभी भी आचार्यश्री को अकेले नहीं छोड़ते थे। प्रतिदिन की वैय्यावृत्त्य का क्रम वही रहता किन्तु आज से दोनों वैद्यों ने एक नया प्रयोग शुरू किया, दोपहर में पेट में जहाँ तकलीफ है उस स्थान पर औषधीय तेल में रुई को भिगोकर रख देते थे। ५ मिनट बाद निकाल देते थे। मैं प्रतिदिन गुरुदेव को देखा करता, वह अलिप्त भाव से अपना चिंतन-मनन करते रहते। बीच-बीच में उनके मुख से गाथा सूत्र सुनने में आते थे।

७ फरवरी शाम को भक्तों को दर्शन देते हुए

अहमिक्को खलु सुद्धो दंसणणाणमइओ सदारूवी।
णवि अत्थि मज्झ किंचिवि अण्णं परमाणुमित्तंपि ॥

शाम ४:४५ बजे गुरुदेव उठे और लघुशंका गए फिर आकर पाद प्रक्षालन कर कायोत्सर्ग किया, आकर जिनेन्द्र प्रभु के दर्शन किये, फिर चैनल गेट पर प्रतीक्षारत असंख्य भक्तों को आशीर्वाद दिया, सैकड़ों ब्रह्मचारी भाई-बहनों की आँखों में गुरु समर्पण का गंगाजल गुरु पाद-प्रक्षालन में बह निकला। गुरु जी को असंख्य आँखों ने चमकते मोतियों का अर्घ्य समर्पण कर विदाई दी। जयकारों से आकाश गूँज उठा।

गुरुदेव धीरे-धीरे स्वाश्रित चाल से कक्ष में जाकर पिच्छिका जो हाथ में लिए थे, उससे पाटे का परिमार्जन कर उसे सार्थक किया और शरीर को लिटा दिया। फिर हाथ जोड़ पञ्च परमेष्ठियों को नमस्कार कर बोले—'प्रतिक्रमण'। सभी मुनिराज गुरुदेव के साथ प्रतिक्रमण करने लगे। बाहर बैठकर हमने भी किया। तत्पश्चात् हम सभी ने गुरु के समक्ष आचार्य वंदना की, गुरुदेव ने लेटे-लेटे ही की किन्तु शरीर लेटा था वह तो पूर्ण जागृत, विनय पूर्वक भावों से बैठे हुए ही कर रहे थे। दैवसिक प्रायश्चित माँगा तो चार अँगुलियाँ दिखाकर प्रायश्चित दिया और स्वयं भी किया। फिर नमोऽस्तु बोला तो हम सभी को आशीर्वाद दिया।

गुरुदेव को आज ठंड भी लग रही थी और खुजली भी हो रही थी, हम लोग वैय्यावृत्त्य करने लगे, थोड़ी देर बाद जागरुक गुरुदेव ने पूछा— "कितना समय हो गया" तो बताया शाम के ६:३० बज रहे हैं, तो बोले—"निरामय! स्वयंभू, नंदीश्वर।" प्रतिदिन की भाँति मुनि श्री निरामयसागरजी ने अपना कर्तव्य किया। ठंड लगने के बावजूद भी चटाई ओढ़ना स्वीकार नहीं किया, मात्र लकड़ी की प्लाई का केबिन बना था उसमें विश्राम करते थे।

### ❑ अंतिम षष्ठ पृष्ठ : आगम रक्षक गुरुदेव ने बताई आगम की बात—

८ फरवरी, २०२४ को प्रातः हम सभी ने गुरुदेव के समक्ष उनके साथ आचार्य वंदना की, आचार्यश्री ने बैठकर भक्तियाँ कीं, गुरुदेव ने आचार्यत्व का निर्वहन करते हुए रात्रिकालीन प्रायश्चित दिया—दो अँगुली दिखाकर, हम लोगों ने अंत में नमोऽस्तु किया तो आशीर्वाद दिया।

फिर हम लोगों ने वैय्यावृत्त्य का लाभ लिया, ९:१५ पर शुद्धि की, बाहर ठंडी हवा चल रही थी, जिनेन्द्र प्रतिमा के दर्शन कर उठे, हम लोगों ने नमोऽस्तु किया तो परमोपकारी, सहजोत्पन्न करुणा से गुरुदेव ने आशीर्वाद दिया। ५ चौकों वालों ने पड़गाहन किया, संतभवन गूँज उठा, नवधाभक्ति से आहार दिया गया, आज १० मिनट पर आहार की सुई अटक गई। सानंद सम्पन्नता की खुशी में बाहर खुशी की लहर दौड़ उठी। कक्ष में जाते वक्त सभी को आशीर्वाद दिया। गुरुदेव! अपने कर्तव्यों को कभी भी विस्मरण नहीं करते, सबका ध्यान रखते।

८ फरवरी शाम को भक्तों को दर्शन देते हुए

मध्याह्न की सामायिक के बाद आचार्यश्री जी शुचिता हेतु जंगल गए थे, वहाँ से आए तो मुनि श्री योगसागरजी

ने कुछ चर्चा की, फिर लेट गए। हम और मुनि श्री पूज्यसागरजी पहुँच गए, वैय्यावृत्य करने लगे तो आचार्यश्री जी हम लोगों को देखकर बोले–"अब आर्यिका ज्ञानमतिजी ने भी स्वीकार कर ली है चार दिन पिच्छी नहीं रखने की बात। आर्यिका सुपार्श्वमतिजी, आर्यिका जिनमतिजी, आर्यिका आदिमतिजी ने भी स्वीकार कर लिया था समाधि से पहले। आर्यिका विशुद्धमतिजी सतना वाली तो पूर्व से ही मानती आ रही थी। (थोड़ा रुककर फिर बोले) दक्षिण में प्रायः सभी आचार्य मानते थे कि अशुद्धि के समय आर्यिका को पिच्छी नहीं रखना चाहिए, आचार्य देशभूषणजी, आचार्य जयसागरजी, आचार्य सुबलसागरजी, आचार्य सन्मतिसागरजी आदि सभी मानते थे। अभी आर्यिका ज्ञानमतिजी ने भी मान ली है यही बात।"

तभी मुनि श्री पूज्यसागरजी बोले आचार्यश्री जी आजकल दिगम्बर परम्परा में भी व्हीलचेयर को स्वीकार किया जाने लगा है। तो आचार्यश्री जी बोले–"हाँ–हाँ पञ्चमकाल है, क्या–क्या होगा पता नहीं, वैसे यह सबसे पहले गणेशप्रसाद वर्णी जी ने शुरू की थी।"

मुनि श्री पूज्यसागरजी बोले पालकी तो शास्त्र सम्मत है। आचार्यश्री जी बोले–"हाँ ! आचार्य शान्तिसागरजी, आचार्य देशभूषणजी आदि ने प्रयोग किया है।" तब हमने कहा–आपने आगम की रक्षा की है और जो क्षुल्लकों को पिच्छी नहीं देने की परम्परा शुरू की है, आगे सभी स्वीकार करेंगे तो आचार्यश्री बोले–"श्रावकाचारों में कहीं नहीं मिला, तो फिर क्यों?" हमने कहा कि ब्रह्मचारी सुरेंद्र (बंडा) भट्टारक बन गया है किन्तु पिच्छिका नहीं ली। तो बोले–"धीरे–धीरे आना सभी को पड़ेगा क्योंकि आगम में व्यवस्था नहीं है।"

### ❑ अंतिम सप्तम पृष्ठ : आचार्य गुरुवर ने की दिव्य गुप्त घोषणा–

९ फरवरी, २०२४ को प्रातः ४:०० बजे से ठण्डी हवा चल रही थी, स्वयंभू देर से हुआ। ७:०० बजे तक तो बहुत ही तेज शीत लहर चलने लगी। हम सभी ने आचार्यभक्ति की, गुरुदेव ने भी लेटे–लेटे ही की किन्तु प्रायश्चित नहीं दिया, मात्र आशीर्वाद दिया। फिर मुनि श्री निरामयसागरजी ने कहा–आचार्यश्री जी पेट पर ठण्डी–गरम पट्टी करना है, तो सीधे लेट गए और दोनों पैर मोड़ लिए। उसके बाद बायें करवट से लेटे, तो कमर में तेल लगाया गया, फिर कमर पर गरम पट्टी लगाई गयी। फिर हम लोगों ने कोमल वैय्यावृत्त्य की। उसके बाद हम लोग जंगल चले गए, दो साधु गुरु समीप रहे। वैद्य स्वप्निल जी एवं गौरव शाह ने अपना बाह्य उपचार प्रारम्भ किया।

सन्त भवन के पीछे केनोपी (पारदर्शी सफेद प्लास्टिक चारों तरफ से लगी) में ले गए क्योंकि धूप आ गई थी, आचार्य महाराज ने शीत परिषह जय रातभर किया था, चटाई ओढ़ने का त्याग जो था। सो बाहर धूप में उनकी हल्की निद्रा लग गई क्योंकि रात में निद्रा ही नहीं लगती थी, कई दिनों से रात में सोये नहीं थे।

९ फरवरी शाम को भक्तों को दर्शन देते हुए

प्रतिदिन प्रवचन होते थे, पहले निर्यापक मुनि प्रसादसागरजी या मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी करते थे, अब ६ फरवरी से निर्यापक मुनि योगसागरजी करने लगे एवं प्रवचन से पूर्व आचार्यश्रीजी की पूजन माइक से

भक्तिभाव से निखिल जैन डोंगरगढ़ कराते थे। इस निमित्त से गुरु भक्तों के द्वारा कुछ दान पुण्य भी होता था।

गुरुदेव की निद्रा स्वतः भंग न हुई तो मुनि श्री निरामयसागरजी ने आहार पर उठने का निवेदन किया, सुनकर स्वीकृति में सिर हिलाया किन्तु उठे नहीं, तब हमने कोमल वस्त्र से सहलाते हुए मधुर आवाज में कहा–गुरुदेव! पौने दस बजे गए हैं, आप आहार के लिए उठिएगा, तो उन्होंने आँख खोलकर देखा, तब पुनः बताया गुरुदेव पौने दस से ऊपर बज गये हैं, आहार के लिए उठिए। आचार्यश्री उठ गये, शुद्धि कराई गई। फिर खड़े हुए, १० सेकण्ड खड़े रहे फिर बढ़ गए, अत्यधिक कमजोरी आ गई थी कारण कि कल रात से अभी तक ८ बार शौच (मल त्याग) हो गया। लड़खड़ाते हुए चले, हम लोग भयभीत थे कहीं गिर न जाए, किन्तु निरावलम्बी गुरुवर ने सहारा लेने के लिए मना कर दिया। सन्त भवन में देवदर्शन, फिर हम लोगों ने नमोऽस्तु किया तो आशीर्वाद दिया, जैसे ही आहार की आकड़ी ली, तैसे ही पाँच परिवार के पच्चीस लोगों ने बड़े ही उत्साह के साथ अपनी ओर आमन्त्रण करने हेतु–हे स्वामी! अत्र अत्र अत्र बोलना प्रारम्भ कर दिया, गुरु जी ने क्रमशः सबको निहारा फिर एक महाभाग्यवान की ओर बढ़कर उसके समक्ष खड़े हो गए। नवधाभक्ति से आहार दान दिया गया, औषधि दान ब्र. विनय भैया दे रहे थे। मुनि श्री पूज्यसागरजी बाएँ तरफ, वैद्य गौरव शाह दाएँ तरफ जंघा पकड़कर सहारा दे रहे थे। मुनि श्री निस्सीमसागरजी मुँह पोंछते तो मुनि श्री निरामयसागरजी अमृतधारा सुँघाते थे एवं पीठ पर कोमल कपड़े से सहलाते थे। शेष महाराज बाहर दरवाजे पर खड़े हो णमोकार महामंत्र पढ़ते रहते थे। यह क्रम रोज ही चला करता था। आज १५ अँजुली आहार-पानी लिया, औषधि अलग से ली। सानंद सम्पन्न आहार देख, खिड़की एवं चैनल गेट से देख रहे भक्तों ने तालियाँ बजा दीं, जयकारे लगाये। उन सबकी खुशी का अंदाजा लगाना किसी के बस की बात नहीं। गुरु जी कक्ष में न जाकर पीछे की ओर चले गए वहाँ केनोपी के अंदर वज्रासन से बैठ गए, हम लोगों ने नमोऽस्तु किया, आशीर्वाद मिला। मुनि श्री निरामयसागरजी रुक गए, निर्यापक मुनि योगसागरजी के आने के बाद वो आहार पर निकले।

११:३० बजे हम सभी गुरुवर के सामने बैठ गए, गुरुदेव लेटे हुए थे, निर्यापक मुनि प्रसादसागरजी ने नमोऽस्तु बोलकर प्रत्याख्यान बोला, आचार्यश्री जी ने आँख खोल के देखा, क्रमशः सभी ने नमोऽस्तु बोलकर आहार ठीक हुआ–प्रत्याख्यान ऐसा बोला, आचार्यश्री जी ने आशीर्वाद दिया। हम सभी ने ईर्यापथ प्रतिक्रमण किया। आचार्यश्री लेटे-लेटे करते रहे। सामायिक से पहले मुनि श्री निरामयसागरजी ने स्वयंभू सुनाया। फिर गुरुदेव ने सामायिक प्रारम्भ कर दी।

दोपहर में १:३० बजे हम प्रतिदिन की भाँति गुरुदेव के समीप गये। देखा कि गुरुदेव शौच क्रिया हेतु पीछे गये हुए हैं, निर्यापक मुनि योगसागरजी महाराज पास में खड़े हैं आचार्यश्री का कमण्डलु लेकर एवं मुनि श्री निस्सीमसागरजी महाराज बेसन चूर्ण की कटोरी लिए खड़े हैं, तब मैं भी गुरुसेवा के भाव से एक कपड़ा जो वहाँ सूख रहा था, उठाकर वहीं जाकर खड़ा हो गया, गुरुजी आए, चौकी पर पिच्छी से परिमार्जन कर बैठ गए, मुनि श्री निस्सीमसागरजी ने बेसन दिया, निर्यापक मुनि योगसागरजी ने जल दिया, गुरुजी ने अच्छे से हाथ धोए, फिर कमण्डलु लेकर मुँह व पैर धोए, फिर कमण्डलु निर्यापक मुनि योगसागरजी ने ले लिया, फिर हमने आचार्यश्री जी के हाथ, मुँह, पैर पोंछे, फिर आचार्यश्री जी ने कायोत्सर्ग किया, फिर निर्यापक मुनि योगसागरजी की ओर देखा तो वो आचार्यश्री के पास में बैठ गए, मैं और मुनि श्री निस्सीमसागरजी, योगसागरजी के पीछे थोड़ी दूर पर खड़े हो गये। तब आचार्य महाराज ने जो कहा वह सुनकर हम दोनों महाराज स्तब्ध रह गये, आचार्यश्री जी ने आचार्य पद त्याग कर सल्लेखना का संकल्प कर

लिया। यह दिव्य घोषणा सुन हम दोनों एक-दूसरे को देखते रह गए। वह पूरी बात निर्यापक मुनि योगसागरजी महाराज ने अपने वक्तव्य में स्पष्ट की है और अपने लेख में भी लिख दी है।

तदुपरान्त गुरुदेव केनोपी में लेट गए, मुनि श्री निरामयसागरजी एवं मुनि श्री निस्सीमसागरजी गुरुजी के समीप रुके और हम निर्यापक मुनि श्री योगसागरजी, मुनि श्री पूज्यसागरजी के साथ गुरुप्रेरणा से पहाड़ पर निर्माणाधीन जिन मंदिर के अवलोकनार्थ गए। साथ में ब्र. अशोक (महाराष्ट्र) ब्र. सनत, ब्र.सोनू (म.प्र.) भी थे। लाल-पीले पाषाण से कलात्मक सुन्दरता देख मंदिर की भव्यता का अनुमान सहजता से अनुभव में आ गया।

लौटकर आए तो पता चला आचार्यश्री को पित्त के दस्त लग गये हैं। फिर ४:०० बजे के करीब शौच जाने की इच्छा हुई, गये तो पके हुए थोड़े मल के साथ आँव भी निष्कासित हुई। फिर अन्दर चले गए, ब्रह्मचारी जी ने कक्ष बदल दिया था। अब दक्षिण दिशा के कक्ष नं. ५ में विनियोजित कर दिया गया। ठण्डे मौसम के कारण ठण्ड लग रही थी। निर्यापक मुनि श्री योगसागरजी एवं मुनि श्री पूज्यसागरजी वैय्यावृत्त्य करने लगे निर्यापक मुनिश्री की आज्ञा पाकर मुझे भी महासौभाग्य प्राप्त हुआ। ४:३० बजे गुरुदेव बोले-''प्रतिक्रमण'', तब मुनि श्री निरामयसागर आदि मुनिराजों ने प्रतिक्रमण सुनाया। फिर आचार्य भक्ति भी लेटे-लेटे ही पूर्ण सावधानी के साथ की। प्रायश्चित नहीं दिया, कायोत्सर्ग करने लगे, हम लोगों ने पूर्व में दिए अनुसार कर लिया। आशीर्वाद के लिए मात्र थोड़ा ही हाथ उठाया।

९ फरवरी शाम को भक्तों को दर्शन देते हुए

फिर स्वयं उठकर बैठ गए और फिर खड़े हुए, देवदर्शन के लिए बाहर सन्तभवन के हॉल में विराजमान जिनबिम्ब के दर्शन कर कल्मष धोये। फिर भक्ति से ओतप्रोत भक्तों को दर्शन देने गये, उन्हें ५-६ घंटे की प्रतीक्षा का फल आनंद मिला, आशीर्वाद मिला किन्तु आचार्यश्री की मुरझाती काया, सलवटें-झुर्रियों से युक्त शरीर देख और कमजोर लड़खड़ाते पगों को देख सभी श्रद्धालु भक्त हैरान-दुःखी नजर आ रहे थे। सबके भाव ऐसे भीगे हुए थे मानों प्रभु से प्रार्थना कर रहे हों-हे प्रभु! गुरु जी ठीक हो जायें, उनकी बीमारी हमें लग जाए। सभी को भरपूर आशीर्वाद देकर सभी के कष्टों को हरने वाले गुरुवर अपने कष्टों को स्वयं सहर्ष सहन कर रहे थे, उनके कष्टों को कौन हरण करे?

अंदर जाकर लेट गये, मुनि श्री योगसागरजी, मुनि श्री पूज्यसागरजी और हम, सभी वैय्यावृत्त्य के लिए पहुँच गये, तब मुनि श्री योगसागरजी ने गुरुजी से कहा-आज हम लोग पहाड़ पर बन रहे विशाल मंदिर को देखने गये थे, मुनि श्री पूज्यसागरजी ने कहा-ऐसे अद्वितीय मंदिर की परिकल्पना आपके मन में कैसे आई आचार्यश्री जी? हमने कहा- गुरुदेव आपने वीतराग जिनशासन और दिगम्बरत्व को हजारों सालों के लिए जीवन्त कर दिया, तब निस्पृही गुरुदेव ने हाथ जोड़कर मस्तक पर लगाते हुए मात्र इतना ही कहा-''यह सब कुछ गुरु कृपा है।''

तत्पश्चात् आचार्यभक्ति हुई हम सभी ने गुरुजी से दैवसिक प्रायश्चित माँगा तो गुरुजी स्वयं करने लगे, हम लोगों ने भी किया, फिर नमोऽस्तु किया तो आशीर्वाद दिया। फिर पिच्छी से परिमार्जन किया और लेट गए। मुनि श्री

पूज्यसागरजी केबिन के अन्दर चले गये और वैय्यावृत्य करने लगे। आचार्यश्रीजी को ठण्ड के कारण हड़फूटन हो रही थी तो वो स्वयं ही हाथों से पैर दबा रहे थे तो मुनि श्री पूज्यसागरजी ने पूछा आचार्यश्री जी शरीर टूट रहा है क्या? तो गुरुजी बोले 'हूँ', तब पूज्यसागरजी ने बलाधान वैय्यावृत्त्य करना प्रारम्भ कर दी, बीच में आचार्यश्रीजी ने कुछ बात भी कही। तब हम बाहर आये बड़े मुनिराज श्री योगसागरजी को पूछा आचार्यश्री ने तो सल्लेखना ले ली, फिर अब कैसे विहार होगा ? तब मेरी भाव विह्वलता को देख पूज्यश्री योगसागर जी महाराज बोले– विकल्प मत करो आचार्यश्री जब-जब अस्वस्थ सीरियस हो जाते हैं तब तब वो सावधान होकर नियम सल्लेखना ले लेते हैं, ऐसा पूर्व में १९७६, १९७८ में कर चुके हैं। २०१७ रामटेक में, २०२० रेवती रेंज इन्दौर में, २०२३ अमरकंटक में बीमार अवस्था में ऐसा किया और जैसे ही विहार किया तो ठीक हो गये थे। इसलिए तुम चिन्ता मत करो आचार्यश्री ठीक हो जायेंगे। मैं कुछ समय बाद अंदर गया तो गुरुदेव आगे की क्रियाओं को पालने में रत हो गए थे।

❑ **अंतिम अष्टम पृष्ठ : प्रशंसा में रसहीन निर्लिप्त भाव–**

१० फरवरी, २०२४ को प्रातःकाल वही क्रम क्रियाकलाप का रहा। आचार्यभक्ति को बैठने लगे तो निवेदन किया गया लेटे रहिये गुरुदेव! किन्तु शक्ति प्रमाण अपने आवश्यकों को उत्साह से पालन करते देख हम लोगों को अपने गुरु पर गौरव हुआ, वो स्वयं प्रमाद नहीं करते, शरीर की असक्त दशा में वो मजबूर हों तो तब की बात अलग है। रात्रिक प्रायश्चित नहीं दिया मात्र नमोऽस्तु बोलने पर हम लोगों को आशीर्वाद दिया। उन्होंने आचार्यत्व के कार्य का त्याग कर दिया था।

इसके साथ ही मैं यह भी बड़ी सूक्ष्मता से देख रहा था कि आचार्यश्री जी ने कल जो योगसागरजी से कहा है **''मैंने आचार्य पद का त्याग कर बड़ा प्रतिक्रमण कर लिया है, मेरी संकल्प पूर्वक सल्लेखना चल रही है, मैं सबका त्याग कर चुका हूँ, मैं पूर्णतः निवृत्त हूँ किसी भी प्रकार का मुझे कोई विकल्प नहीं है।''** इस संकल्प को मैं चरितार्थ होते देख रहा था। आचार्य महाराज सीधे लेटकर दोनों हाथों से सिर को उठाये हुए दोनों पैरों को मोड़कर पेट की हल्की एक्सरसाइज करते हुए आँख से ऊपर देख रहे थे, तब निर्यापक श्री योगसागरजी महाराज, मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी एवं मुनि श्री पूज्यसागरजी महाराज वहाँ प्लाई के केबिन में बैठे हुए थे, मुनि श्री प्रसादसागरजी एवं मुनि निरामयसागरजी बाहर चले गये थे, हम और निस्सीमसागरजी केबिन के बाहर से गुरुदेव को निहार रहे थे, तभी बड़े निर्यापक श्रमणजी ने कहा–आचार्य महाराज! आपने हथकरघा की प्रेरणा देकर बहुत बड़ा कार्य कर दिया। चन्द्रप्रभसागरजी बोले–इससे अहिंसा संस्कृति को बल मिल गया, कितने गरीबों को रोजगार मिल गया, यह सुन आचार्य गुरुदेव ने कोई रस नहीं लिया और आँख बंद कर ली, तब मुनि श्री पूज्यसागरजी ने कहा ये तो एक प्रकार से धर्म का कार्य हो गया, उन गरीबों की भावनाएँ भी बदल गईं, उनके पाप के कार्य छूट गये, आचार्यश्री ने करवट ले ली, तब योगसागरजी सिर दबाने लगे, पूज्यसागरजी पीठ की कोमल वैय्यावृत्त्य करने लगे, चन्द्रप्रभ सागरजी पैरों के तलबे दबाने लगे। उस समय चन्द्रप्रभसागरजी ने पुनः उसी बात को आगे बढ़ाया।

जेलों में भी हथकरघा शुरू होने से कैदियों की दिनचर्या ही बदल गई, उनमें धर्म के प्रति, आपके प्रति श्रद्धा प्रकट हो गई, वो शाकाहार का नियम ले रहे हैं, हथकरघा ने उनके जीवन को बदल दिया है और वो जितना कार्य कर रहे हैं, उनकी सारी कमाई से उनके परिवारों का भरण पोषण अच्छे से होने लगा है। इसको सरकार भी सराह रही है, तब हमने बाहर से ही कहा–गुरुदेव! आपके लोकोदयी कार्यों की सर्वत्र प्रशंसा हो रही है, यह सब सुनने के बाद आचार्यश्रीजी ने

ऊबते हुए हूँ, यह संकेत देकर हाथ से इशारा कर हम सबको रोक दिया।

समय पूछा तो बताया ७:३० बज रहे हैं, तभी निरामयसागरजी आ गये, उन्होंने कहा—आचार्यश्रीजी गरम पट्टी कम की करना है तो आचार्यश्री ने 'हूँ' कहकर स्वीकृति दी। फिर पेट की ठण्डी-गर्म पट्टी की। हम लोग शौच क्रिया से लौट कर आए तो आचार्यश्री पीछे केनोपी के अन्दर लेटे थे आधी धूप-आधी छाँव में और वैद्य स्वप्निल एवं गौरव शाह पूना वाले वैद्य का बाह्य उपचार कर रहे थे।

फिर प्रतिदिन की तरह आहार चर्या पर निकले, ९:४० पर आहार शुरू हुआ ९:४६ पर पूर्ण हो गया, मात्र ६ मिनट में जो बन सका वह लिया और बैठ गए। मात्र १३ अँजुलि जल-औषध, छाछ-लापसी (चापर की), ज्वांर की महेरी सब, हम सभी स्तब्ध रह गये। निर्यापक श्री प्रसादसागरजी ने बाहर जाकर निरन्तराय आहार की जानकारी दी तो खुशी में हजारों भक्तों ने तालियाँ बजाई जयघोष किया।

आहार के बाद पीछे की ओर चले गये ठण्ड के कारण केनोपी में जाकर वज्रासन से बैठ गए, फिर हम लोगों ने नमोऽस्तु किया, आशीर्वाद दिया। चन्द्रप्रभसागरजी का उपवास था तो वो गुरु के पास रुके। हम लोगों के जाने के बाद गुरुजी शौच क्रिया को गये। दिन में थोड़ा थोड़ा ३-४ बार होता है। पका हुआ एक-दो बार सफेद भी हो जाता है। जो बीमारी का लक्षण बताता है।

११:३० बजे सभी साधुओं ने प्रत्याख्यान किया। आचार्यश्री लेटे रहे, प्रतिक्रमण शुरू हुआ, गुरुदेव हाथ जोड़कर मस्तक पर बार-बार रख रहे थे। अन्त में हम लोगों ने नमोऽस्तु किया तो आशीर्वाद स्वरूप हाथ उठा दिया। सामायिक से पूर्व स्वयंभू सुना फिर सामायिक प्रारम्भ, केनोपी के बाहर सिर के पीछे योगसागरजी महाराज और अन्दर पैरों के पास निस्सीमसागरजी, बगल में निरामयसागरजी सामायिक में बैठे। हम लोग अपने स्थानों पर चले गये।

सामायिक के बाद २ बजे के करीब आचार्यश्री पुनः शौच गए, मुझे और निस्सीमसागरजी को गुरुजी के मुँह-हाथ-पैर प्रक्षाल करने का सौभाग्य मिला। तभी मधुर ने कहा कि गुरुजी यहीं बाहर ही विश्राम कर लें अन्दर ठण्डक है, गुरुजी बोले—''सभी के सामने कैसे?'' तब हम और निस्सीमसागरजी वहाँ से अन्दर चले गए, गुरुजी निर्यापक श्रमण योगसागरजी से चर्चा करने लगे, फिर केनोपी में लेट गये।

३:३० बजे गुरु समीप में गया तो देखा गुरुदेव लेटे हुए हैं और ब्रह्मचारीजी ने आध्यात्मिक पुराने भजन ना दूर संवेदी गंज से शुरू कर रखे हैं। निर्यापक श्री योगसागरजी अकेले वैय्यावृत्ति कर रहे हैं, उन्होंने हमें देखा और इशारे से बुलाया, मैं भी जाकर वैय्यावृत्ति करने लगा। ४ बजे उठकर बैठ गये, फिर बोले—देवदर्शन, उठकर १० सेकण्ड खड़े रहे फिर आगे बढ़ गये। कोई सहारा नहीं लिया, कुछ-कुछ लड़खड़ाये जैसे ही प्रसादसागरजी ने सहारा देना चाहा तो मना कर दिया।

१० फरवरी शाम को भक्तों को दर्शन देते हुए

प्रभु दर्शन के बाद, भक्तों को दर्शन दिए और उनकी संतुष्टि के लिए सभी ओर देखते हुए आशीर्वाद रूपी हाथ

हिलाते ही रहे और दृष्टि से करुणा रूपी अमृत बरसाते देख प्रकृति को भी आनंद आ रहा था, चारों ओर बादल छाए हुए थे, शीत लहर नृत्य कर रही थी। ऐसे में भक्तों ने दी विदाई। गुरुजी कक्ष में जाकर लेट गए थोड़ी देर बाद टिककर बैठ गए। बोले– ''प्रतिक्रमण'' निरामयसागरजी आदि ने सुनाना प्रारम्भ कर दिया, प्रतिदिन हर क्रिया समय पर करते थे। यह गुरुदेव की जीवन भर की साधना है, आज भी घड़ी मिलाई जा सकती है क्योंकि गुरुदेव की घड़ी कभी भी लेट नहीं चलती है।

तत्पश्चात् आचार्य भक्ति की, हम सभी ने गुरुजी से दैवसिक प्रायश्चित माँगा तो गुरुजी स्वयं करने लगे, हम लोगों ने भी किया, फिर नमोऽस्तु किया तो आशीर्वाद दिया। फिर पिच्छी से परिमार्जन किया और लेट गए। मुनि श्री पूज्यसागरजी केबिन के अन्दर चले गये और वैय्यावृत्ति करने लगे। आचार्यश्रीजी को ठण्ड के कारण हड़फूटन हो रही थी तो वो स्वयं ही हाथों से पैर दबा रहे थे तो पूज्यसागरजी ने पूछा आचार्यश्रीजी शरीर टूट रहा है क्या? तो गुरुजी बोले 'हूँ' तब पूज्यसागरजी ने बलाधान वैय्यावृत्ति करना प्रारम्भ कर दी। बीच में आचार्यश्रीजी ने कुछ बात भी कही। समय पर आगे की क्रियाओं को पालने में रत हो गए।

❑ **अंतिम नवम पृष्ठ : हम सबकी श्वासें रुक गईं–**

११ फरवरी, २०२४ को प्रातः से शाम तक दैनंदिनी समयबद्ध ही रही। खुजलाहट दिन प्रतिदिन बढ़ते चरण में रही, प्रातः भक्ति के बाद लेट गए और ठण्ड के कारण दोनों मुट्ठियों को बंद कर दोनों पैरों के बीच में करके घिसने लगे। ब्र. विनय ने कहा कमर की गरम पट्टी से सिकाई करना है, तो आचार्यश्री जी ने करवट ले ली। मधुर ने कहा मुनि श्री निरामयसागरजी केशलौंच कर रहे हैं, तो ब्र. विनय बोले मुनि श्री पूज्यसागरजी से वैय्यावृत्त्य करायेंगे। मुनि श्री पूज्यसागरजी को मधुर गरम पानी की पट्टी पकड़ाता रहा, वो गुरु जी की कमर पर सिकाई करते रहे। निर्यापक मुनि योगसागरजी पैरों की वैय्यावृत्त्य करते रहे। थोड़ी देर बाद आचार्यश्री जी दो अँगुली दिखाकर स्वयं ही उठकर बैठ गए। कमजोरी के कारण सभी ने कहा गुरुजी बाहर नहीं, यहीं पर व्यवस्था कर देते हैं और एक प्लास्टिक की ट्रे कमरे में ही रख दी गई, दो लकड़ी की ईंट भी रख दी गई, कमजोरी के कारण गुरु जी का सन्तुलन बिगड़ा और वो लुढ़क गए। कुछ पल के लिए हम सभी की श्वासें रुक गईं, देखा ट्रे के किनारे की नोंक चुभ गई छिलने के कारण खून आ गया, शौच क्रिया के बाद ब्र. विनय एवं मधुर ने पेट पर ठण्डी–गरम पट्टी लगाकर बाह्य उपचार किया। फिर वैद्य स्वप्निल जी एवं गौरव जी ने औषधीय बाह्य उपचार किया।

आहार–चर्या से पूर्व मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी से कुछ चर्चा करने का मुझे अवसर मिला हमने कहा–महाराजश्री आप कहें आचार्यश्री को कि यहाँ से विहार करने से स्वास्थ्य ठीक हो सकता है, तो बोले–आज से लगभग १५ दिन पहले आचार्यश्री को हमने निवेदन किया था कि आप यहाँ से विहार करें तो अच्छा रहेगा, यह क्षेत्र अनुकूल नहीं है, तब आचार्यश्री बोले–''वो तो है, लेकिन अभी माघ का महीना शुरू हो गया है, मूलाचार में पौष और माघ माह में विहार करने के लिए मना किया गया है।'' अभी तो माघ चल ही रहा है और आगे कैसे क्या होगा? स्थिति तो बहुत ही गड़बड़ है।

आज सपत्नीक राहुल कलेक्टर ने पड़गाहन किया, ८ मिनट आहार हुआ, वैद्यानुसार पैरों में, हाथों में सहारा दिया गया, इसके बावजूद उनके हाथ उठ ही नहीं पा रहे थे। ३० सेकण्ड के करीब रुके, किन्तु हाथ उठ ही नहीं रहे थे तो गुरुदेव ने सिर हिलाकर मना कर दिया। आज पानी ज्यादा लिया, अन्न आहार कम। हम सभी गुरुजी की स्थिति को देख

चिन्तित खड़े रहे, लाचार मूक बन मंत्र जाप करते रहे, किन्तु हुआ वही जो कर्मों ने चाहा। गुरुदेव पीछे जाकर केनोपी में पाटे पर वज्रासन से बैठ गए। हम लोगों को आशीर्वाद दिया।

ईर्यापथ प्रतिक्रमण के लिए हम सभी साधु पहुँच गए, गुरुदेव को रात्रि में निद्रा नहीं आने के कारण थोड़ी निद्रा लग गई, थोड़ी देर बाद मुनि श्री प्रसादसागरजी ने निवेदन किया, फिर मुनि श्री निरामयसागरजी ने निवेदन किया ईर्यापथ करना है गुरु जी सभी साधु आ गए हैं, तो आँख खोले बिना हाथ के इशारे से रुकने का संकेत किया। आवश्यक पालने के प्रति जागरुक थे इसलिए रुकने का संकेत दिया। १५ मिनट तक हम सभी गुरु को निहारते रहे, फिर निर्यापक श्री योगसागरजी व प्रसादसागरजी ने प्रतिक्रमण बोलना प्रारम्भ कर दिया, हम सभी बोलने लगे तो आवाज सुनकर आचार्यश्री दाएँ करवट से लेटे हुए सुनते रहे। कायोत्सर्ग के लिए हाथ जोड़े फिर कायोत्सर्ग किया। बाद में हम लोगों के नमोऽस्तु करने पर आशीर्वाद दिया। फिर उठकर लघुशंका गये, आकर लेट गए, मुनि श्री निरामयसागरजी ने स्वयंभू सुनाएँ ऐसा पूछा तो स्वीकृति में सिर हिलाया, स्वयंभू के बाद सामायिक पूर्ववत्, हम सभी भी व्यवस्थित हो गये।

२:०० बजे हम गुरु जी के समीप पहुँचे, वैय्यावृत्त्य चल रही थी, निर्यापक श्री योगसागरजी गुरुजी के पावन शरीर पर पूर्णायु आयुर्वेदिक अनुसंधान केन्द्र जबलपुर का निर्मित 'महातिक्तकम् घृत' लगा रहे थे। मुनि श्री निस्सीमसागरजी पैरों की वैय्यावृत्त्य कर रहे थे।

उसी समय भीलवाड़ा के दो श्रावक सुभाष जी हूमड़ और नरेश जी अपने साथ भीलवाड़ा के पास रायला है वहाँ के वैद्य हंसराज जी को लेकर आए, उन्होंने आचार्यश्री को वैद्य जी के बारे में बताया कि शनिवार और रविवार को इनके आश्रम में पैर रखने जगह नहीं बचती देश भर से इतनी भीड़ आती है। तब वैद्य जी बोले—अन्नदाता मैं कहीं नहीं जाता हूँ मात्र एक बार राष्ट्रपति जी को देखने के लिए गया था और आज दूसरी बार यहाँ आया है, मेरा यहाँ आना बड़ा सौभाग्य है, वैसे मैं आपके बारे में आपके कई भक्तों से सुनता रहा हूँ, परन्तु सौभाग्य आज जागा और जागा तो ऐसा की आप श्री स्वयं बीमार हैं तो आपकी सेवा सूँ आयो हूँ, यह मेरा दुर्भाग्य है कि महान् तपस्वी को आज बीमार देख रहा हूँ। आचार्यश्री की नाड़ी देखी, २-३ मिनट बाद बोले बहुत ही अच्छी नाड़ी है, ऐसी अद्‌भुत नाड़ी पहली बार देखने में आई है। बाहर आने के बाद हमने उनसे पूछा तो बोले—सौम्य नाड़ी है, बालक के समान।

दोपहर में हम लोगों ने वैय्यावृत्त्य की, आज बाहर धूप की आँच में केनोपी के अन्दर लेटे रहे। घड़ी पर नजर थी ४:१५ बजे बोले—'प्रतिक्रमण' और तत्काल मुनि श्री निरामयसागरजी, मुनि श्री निस्सीमसागरजी आदि मुनियों ने प्रतिक्रमण सुनाना प्रारम्भ कर दिया। गुरुदेव ने लेटे-लेटे पूर्ण सावधानी के साथ प्रतिक्रमण किया।

प्रतिक्रमण के बाद वहीं पर आचार्य भक्ति हुई, गुरुदेव ने लेटे-लेटे किया। हम लोगों ने प्रायश्चित किया, फिर नमोऽस्तु किया तो आशीर्वाद दिया। थोड़ी देर बाद उठकर बैठ गए, मुनि श्री निरामयसागरजी ने निवेदन किया गुरुदेव देवदर्शन को चलें, तो 'हूँ' कहकर धीरे-धीरे खड़े हो गए, फिर आगे बढ़े लड़खड़ाये, आजू-बाजू मुनि चले किन्तु किसी से पकड़वाया नहीं, मना कर दिया। सभी सावधान थे, लगा कि चल नहीं पायेंगे, तो बीच में बाजोटा रखा, किन्तु नहीं बैठे, आगे बढ़े तो लड़खड़ाये तो एक तरफ से निर्यापक श्री प्रसादसागरजी ने पकड़ लिया और दूसरी तरफ से मुनि श्री निरामयसागरजी ने पकड़ लिया और सीधे कक्ष में ले गये। तखत पर बैठा दिया, देवदर्शन का विकल्प करने लगे,

ऐसी विकट स्थिति के बावजूद प्रभुभक्ति की लगन एवं उन्हें अपना आवश्यक छोड़ना मंजूर नहीं, तत्काल ब्रह्मचारी जी, प्रतिमा जी को अंदर कक्ष में लाये, तब गुरुजी ने पिच्छी उठाकर गवासन से हाथों को मुकुलीकृत करके भक्ति पढ़ने लगे तथा सिर हिलाते रहे। मेरी डबडबाती आँखों ने देखा कि देवदर्शन के बाद सीधे बैठ गए, फिर बोले–''बाहर चलना है लोग इंतजार कर रहे होंगे,'' धीरे-धीरे चेनल गेट तक पहुँच गए, गेट खुलते ही हजारों भक्त-श्रद्धालुओं की नमोऽस्तु की आवाज ने आकाश गुंजायमान कर दिया। गुरुदेव ने चारों तरफ, दूर-पास देखकर आशीर्वाद दिया, भक्तों की दर्शनों की प्यास बढ़ती चली गई किन्तु गुरुदेव अन्दर चले गए।

११ फरवरी शाम को भक्तों को दर्शन देते हुए

अन्दर जाकर लेट गए, रायला भीलवाड़ा के वैद्य हंसराज चौधरी जी अन्दर आए और मजबूत आवाज में बोले –ढोक करूँ अन्नदाता (बैठकर हाथ जोड़कर) म्हारी इच्छा भई आपकी सुखसाता पूँछ आंवा सो आयो, कोई जन्मों जन्मों में पुण्य कियो जो आज फल पायो, आपका दर्शन मिल गयो, म्हाने तो जन्म सफल हो गयो। राजस्थान के मायने आपको बहुत नाम सुन्यो हतो। अजमेर, किशनगढ़, नसीराबाद, भीलवाड़ा अनेक स्थानों सूं घणा जणा म्हारा आश्रम आवे, सब जणा आपकी चर्चा करता। अन्नदाता प्रसन्न होओ, म्हारे हुकुम फरमाओ... तो आचार्यश्री जी कुछ नहीं बोले, कुछ तो बोलो अन्नदाता... तब आचार्यश्री 'हूँ' बोलकर हाथ के इशारा से मना करते हुए–''कोई हुकुम नहीं''...अन्नदाता चिन्ता की कोई बात नहीं है, नाड़ी दुर्बल चल रही है आप पथ्याहार अच्छे से ग्रहण करें सब ठीक हो जाएगा।

❑ **अंतिम दशम पृष्ठ : गुरुजी के निर्लिप्त भाव–**

१२ फरवरी, २०२४ को प्रातः निस्सीमसागरजी ने बताया कल रात्रि में आचार्यश्री ने तीन बार शौच समाधान किया, ३ बजे रात्रि में प्रतिक्रमण सुनाया, फिर सामायिक की, फिर प्रातः ५ बजे सामायिक पाठ सुनाया, स्वयंभू सुनाया गया। जैसे ही दरवाजा खोला गया तो देखा आचार्य गुरुवर बैठे हुए थे। हम सभी ने नमोऽस्तु किया तो निरीहता से आशीर्वाद दिया आचार्यभक्ति हुई, प्रायश्चित किया पुनः आशीर्वाद मिला। फिर पिच्छी से परिमार्जन कर बाएँ करवट से लेट गए, निर्यापक श्री योगसागरजी एवं मुनि पूज्यसागरजी वैय्यावृत्त्य करने लगे कुछ मुनिराज शौच क्रिया को चले गए।

थोड़ी देर बाद ब्र. विनय जी, राजाभाई सूरत एवं उनके साथ दो व्यक्ति आए। दोनों मुनिराज चले गये, विनय जी ने गुरुजी से निवेदन किया राजा भाई सूरत आए हैं, राजा भाई ने नमोऽस्तु किया, आचार्यश्री ने हूँ बोलकर आशीर्वाद दिया। राजा बोले आचार्यश्री जी, केन्द्रीय मंत्री अमित शाहजी ने आपके स्वास्थ्य के समाचार जानकर चिन्ता व्यक्ति की है और प्राकृतिक उपचार के लिए इन्हें भेजा है, ये दीपक भाई हैं, ये हीलिंग से उपचार करते हैं। तभी उपचारक

महोदय ने नमस्कार किया तो आचार्यश्री जी ने आशीर्वाद दिया। उन्होंने हीलिंग चिकित्सा की। बाद में उन्होंने बैग में से एक डिब्बी निकाली और आचार्यश्री जी से बोले गुरुदेव हमने एक चावल पर आपका चित्र बनाया है देखें दिखाया तो आचार्यश्री ने लेटे-लेटे ही देखा डिब्बी में ऊपर लेंस लगा था उसमें चावल दिख रहा था, आचार्यश्री जी ने उनकी खुशी के लिए व्यवहार का ध्यान रखते हुए वीतराग प्रसन्नता प्रकट कर दी।

ब्र. विनय जी ने ठण्डी-गरम पट्टी करना चाही तो मना कर दिया, तभी वैद्य हंसराज जी (रायला वाले) आ गये बोले—अन्नदाता! मैं आपके चरणों में ढोक करूँ, म्हाने आशीर्वाद फरमाओ अन्नदाता। आचार्यश्री ने बाँया हाथ उठा कर आशीर्वाद दिया। वैद्य जी बोले धन्य हो गया मैं तो धन्य हो गया। तभी आचार्यश्री को खुजली चली, तो वैद्य जी बोले—अन्नदाता खुजली चल रही है, तो आचार्यश्री जी ने उदासीनता के साथ 'हूँ' बोला। गौरव शाह की ओर देखकर बोले एक छटाक सरसों का तेल, एक छटाक नारियल का तेल मिलाकर थोड़ी सी हल्दी डालकर फेंट दें फिर छानकर लगा दें तो आराम हो जाएगा। व्यवस्था करके वैद्य जी को सौंप दिया, उन्होंने आचार्यश्री जी को लगाया। एक साइड लगाने के बाद बोले अन्नदाता करवट ले लें तो बड़ी कृपा होगी, आचार्यश्री जी ने पिच्छी से परिमार्जन किया और करवट बदल ली, उस तरफ भी वैद्य जी ने लगा दिया। फिर बोले—अन्नदाता अब बतायें कहाँ खुजली हो रही है, आराम लगा ना, अन्नदाता थोड़ा तो मुस्कराओ, आप तो तटस्थ भाव सूँ देख रहे हैं, आप प्रसन्न होंगे तो हम सभी का खून बढ़ जावेगो, अन्नदाता! ये तो आप भी जानते हैं कि प्रसन्नता से सौ रोग दूर होते हैं, तब आचार्यश्री जी ने मन्द मुस्कान के साथ आँखें बंद रखकर 'हूँ' कहा।

उसके बाद हीलिंग देने वालों ने हीलिंग दी, पूरे देशभर में जैन समाज में समाचार फैल जाने से सर्वत्र णमोकार मंत्र का पाठ, भक्तामर पाठ, जाप, पूजा विधान, शांतिधारा आदि अनुष्ठान होने के समाचार मिल रहे थे। गुरुदेव के शिष्य-शिष्यायें मंत्र जाप में दत्तचित्त थे किन्तु गुरुदेव का असाता कर्म नहीं पसीजा।

बड़े निर्यापक श्री का प्रवचन रोज २० मिनट होता था सो हुआ। ९.३६ पर आहार प्रारम्भ हुआ और ९.४४ पर बंद हो गया। गुरुजी बैठ गए। बीच में दो बार कमजोरी के कारण बैठने जैसी स्थिति बनी किन्तु पैरों को पूज्य सागरजी एवं वैद्य गौरव शाह पकड़े हुए थे, निरामयसागरजी एवं निस्सीमसागरजी महाराज गुरुदेव के हाथ पकड़े हुए थे तो अँजुलि खुल नहीं पाई। थोड़ा-थोड़ा जल लिया, फिर उनसे खड़े होते नहीं बन रहा था तो सिर हिला मना कर दिया तब वैद्य जी बोले—अन्नदाता थोड़ा और लीजिए, अन्नदाता प्रसन्न होवें किन्तु

१२ फरवरी चिन्तन में लीन गुरुदेव

आचार्यश्री सिर हिला मना करते रहे, खड़े होने की शक्ति नहीं होने के कारण, आगम ज्ञाता गुरुवर आगम की आज्ञा मानकर बैठ गए। बाहर प्रतिदिन की भाँति अश्रु मिश्रित खुशी ने तालियाँ बजा दीं।

आज सुबह अच्छा पानी गिर गया था सो ठण्डक थी, इसलिए गुरुदेव कक्ष के अन्दर ही गये। वज्रासन से बैठ गए, हम सभी ने नमोऽस्तु किया, गुरुदेव ने आशीर्वाद दिया। हम सभी आहार पर निकल गये, मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी रुक गए गुरु के पास।

हम लोग आहार करके आए तो आचार्यश्री पीछे बाहर केनोपी में चले गये, धूप आ गई थी, सूरज सेवा करना कैसे भूल सकता है वो तो सतत् जागता रहता है, दुनिया की थकान मिटाने सबको सुलाने पश्चिम में चला जाता है किन्तु पुनः पूर्व से आकर जगा देता है। रातभर जागे गुरुदेव को गुनगुनी धूप देकर तन्द्रा के आगोश में विश्राम दिया।

११:३० बजे हम सभी साधु गुरु के पास पहुँचे, हमने सभी के लिए पाटे लगाये, सभी बैठे, फिर जैसे ही हम लोगों ने नमोऽस्तु बोला–आचार्यश्रीजी की तन्द्रा टूट गई, आँखें खोलीं आशीर्वाद दिया। हम सभी ने आहार ठीक बोलकर प्रत्याख्यान लेता हूँ बोला, कायोत्सर्ग किया, फिर ईर्यापथ प्रतिक्रमण प्रारम्भ कर दिया। पीठ की सिकाई धूप से हो गई तो आचार्यश्री धीरे से उठे और पूर्व की ओर पैरकर लेट गये, धूप पैरों की सिकाई करने लगी। प्रतिक्रमण में आचार्यश्री जी बार-बार नमोऽस्तु करते रहे, कायोत्सर्ग में अँगुली चल रहीं थीं। अन्त में उठकर बैठे आशीर्वाद दिया, फिर शौच का इशारा देकर उठ खड़े हुए, किन्तु निवेदन पर वहीं पीछे पास में चले गये। थोड़ा सा मल हुआ। हाथ-पैर, मुँह अपने हाथ से धोए। कायोत्सर्ग किया। हमने और निस्सीमसागरजी ने हाथ-पैर, मुँह पौंछे। फिर आचार्यश्रीजी ने दिशा के बारे में पूछा, तो बताया ये उत्तर, ये दक्षिण, ये पूर्व, पश्चिम है तो गुरुदेव दक्षिण में पैर करके लेट गये, हम सभी ने कहा ये दक्षिण है, आचार्यश्री इस तरफ सिर, यहाँ पैर करना है, तो कुछ बोले हम समझ नहीं पाये, क्योंकि बहुत धीरे बोले थे और सामायिक प्रारम्भ कर दी। तब वैद्य हंसराज चौधरी (रायला) की बात मेरे कानों में गूँजी उन्होंने कल शाम को आचार्यश्री की नाड़ी देखी थी और कहा था नाड़ी बहुत दुर्बल चल रही है। मन्द पड़ गई है। सम्भव है आचार्यश्री जी उनकी बात को मानकर अपने संकल्प को पूर्ण करने के लिए सावधानी बरत रहे हैं इसलिए दक्षिण में पैर कर लिए हों। हम लोग भी सामायिक में बैठ गए। निरामयसागरजी ने बाद में पाठ, स्तोत्र सुनाया।

सामायिक के बाद २ बजे हम पुनः गुरु सेवा में पहुँच गये, देखा बड़े निर्यापक जी और ब्र. विनय जी आचार्यश्री जी को निवेदन कर रहे थे–आचार्यश्री जी जैसे पहले रामटेक, इन्दौर, खुरई, कुण्डलपुर, अमरकण्टक में स्वास्थ्य गड़बड़ हुआ था तो क्षेत्र परिवर्तन से ठीक हो गया था तो यहाँ से क्षेत्र परिवर्तन करते हैं, स्वास्थ्य ठीक हो जाएगा। तब आचार्यश्री जी ने मनाकर दिया। उसके बाद मुनिश्री जी एवं ब्र. विनय जी ने औषधीय घृत गुरुजी के शरीर में लगाना प्रारम्भ कर दिया। मुझे योगसागरजी महाराज ने देखा तो वात्सल्य देते हुए अन्दर केनोपी में आने का इशारा किया और सेवा करने का इशारा दिया, हम भी गुरु के सामने बैठ गए और घृत लगाने लगे तब गुरुदेव ने आँखें खोलकर देखा और दाएँ हाथ को लम्बा कर दिया मेरे तरफ, गुरुजी का वात्सल्य पा हम धन्य हुए गुरु जी कराते रहे, मैं करता रहा, लगभग १ घण्टे बाद आचार्यश्री जी ने पौंछने का इशारा किया, सूखे कपड़े से हमने पूरा शरीर पौंछा। तब गुरुदेव के मुख से निकला "स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा फलं त्वदीयं लभते शुभाशुभम्।" फिर उठकर बैठ गए, शौच का इशारा किया, तत्काल वहीं पीछे गये, पके हुए दो पीस, लघु शंका भी डार्क हुई।

आज बैचेनी में कमी नजर आई, खुजली में कमी नजर आई। संभवतः गुरुदेव सहन कर रहे हों। शाम ४ बजे गुरुदेव ने प्रतिक्रमण के लिए बोला तो कुछ मुनिराजों ने प्रतिक्रमण सुनाना प्रारम्भ कर दिया। हमने दूर बैठकर अपना किया। तत्पश्चात् आचार्यभक्ति के लिए हम सभी गुरु के सामने बैठ गये तो आचार्यश्रीजी भी उठ करके बैठ गए। भक्ति की, बाद में सभी को आशीर्वाद दिया। फिर देवदर्शन के लिए उठे, चले, लड़खड़ाये, तो प्रसादसागरजी ने सहारा देना चाहा तो मना कर दिया, आगे बढ़े, तीन सीढ़ी चढ़े और गैलरी में उकरु बैठ गए, प्रसादसागरजी पीछे से पकड़े रहे। १ मिनट बाद उठे और चलने लगे, लड़खड़ाये तो पीछे से प्रसादसागर ने पकड़कर भगवान के सामने तखत पर बैठा दिया पैरों में चलने की शक्ति बहुत कम हो गई थी। देवदर्शन की क्रिया पूर्ण की, फिर प्रतीक्षारत भक्तों की चिंता कर गेट की तरफ बढ़े, प्रसादसागर ने पकड़ा, तखत पर पकड़ कर चढ़े, गेट खोल दिये गये। सभी को दर्शन मिलते ही तालियाँ एवं नमोऽस्तु आचार्यश्री जी इस आवाज से वातावरण गूँज उठा, गुरुदेव ने चारों तरफ देखकर आशीर्वाद दिया। एक मिनट में लौट गये, निज कक्ष की ओर, अन्दर जाकर लेट गए। लेटते ही शौच की इच्छा, वहीं व्यवस्था की गई।

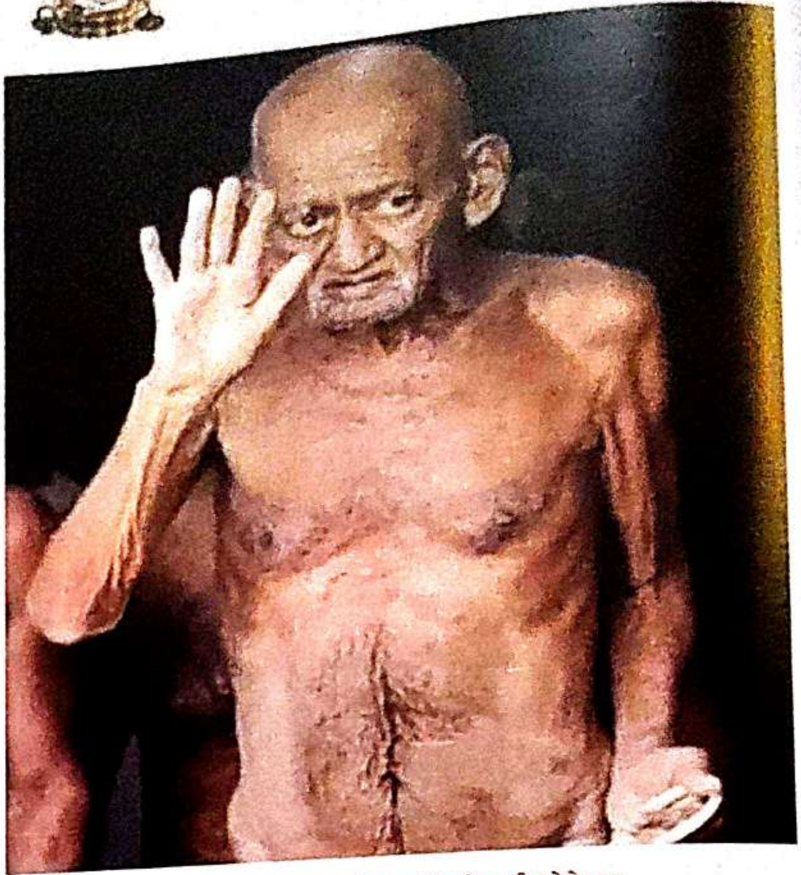

१२ फरवरी शाम को भक्तों को दर्शन देते हुए

मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी एवं मुनि श्री पूज्यसागरजी ने वैय्यावृत्त्य करना प्रारम्भ कर दी और ताकत लगाकर की, एक घण्टे बाद सामायिक पर बैठ गए। उसके बाद पुनः शौच क्रिया, लघुशंका हुई। हम उसे बाहर प्रासुक स्थान पर पिच्छी लगाकर क्षेपण कराकर आते। पुनः ९.१५ पर एक इंची पीस हुआ। रात्रि में ९.३० बजे एवं ११ बजे भी थोड़ा हुआ था, निरामयसागरजी ने बताया कि रात्रि ३:१५ बजे एवं ४ बजे तो पीली-पीली सी लिस-लिसीसी हुई। फिर ६ बजे ज्यादा पतली, काली पीली सी हुई। मुनि श्री निरामयसागरजी ने सुबह बताया कि रात्रि में २० बार उठे, कूल्हने की आवाज आती थी, तो हम उठकर पूछते आचार्यश्री क्या हो रहा है? गुरुदेव नींद नहीं आ रही है क्या? तो हाथ के इशारे से बताते वेदना हो रही है, मैं वैय्यावृत्त्य करने लग जाता, तो उनको हमारी चिन्ता लग जाती, तत्काल हाथ के इशारे से जाने का संकेत करते, हम फिर लेट जाते और नजर रखता, बार-बार यह करता रहा। रातभर आचार्यश्री की थोड़ी भी आँख नहीं लगी। रातभर बेचैनी के बावजूद मुँह से वैय्यावृत्त्य करने के लिए नहीं कहा और कोई भी विपरीत भाव मुँह से नहीं निकला। बड़ी ही निरीहता से असाता कर्मों को सहन करते रहे।

अंतिम एकादशम पृष्ठ : मात्र ३ मिनट आहार पानी लिया —

आज १३ फरवरी, २०२४ की दिनचर्या पूर्ववत् रही, निरामयसागरजी ने बताया कि रात्रि ३.३० बजे प्रतिक्रमण का इशारा किया। हम और निस्सीमसागर ने सुनाया। फिर सामायिक, उसके बाद सामायिक पाठ, नंदीश्वर भक्ति सुनाई, फिर स्वयंभू सुनाया। आचार्यभक्ति का समय बदल गया, रोज से पहले, सभी को बुलाया गया। सभी क्रियाएँ भले ही लेटे-लेटे कीं किन्तु मन से बैठे हुए थे क्योंकि सभी क्रियाओं में जागृत थे। हाथ जोड़ नमस्कार करते थे। आशीर्वाद भी दिया। तत्पश्चात् मुनि श्री योगसागरजी वैय्यावृत्त्य करने लगे, थोड़ी देर बाद मुनि श्री निरामयसागरजी ने कमर में गरम पट्टी से सिकाई की, पेट की ठण्डी गरम पट्टी के लिए मना कर दिया। औषधीय घृत लगाया गया। ८.३० बजे दीर्घ शंका का इशारा, व्यवस्था अन्दर ही की गई। पका हुआ एक छोटा सा पीस हुआ। फिर हम लोगों ने कोमल वैय्यावृत्त्य की। ९.२० पर आहार के लिए निवेदन किया, शुद्धि कराई, ९.२८ पर बाहर हॉल में प्रतिदिन की तरह पड़गाहन हुआ। आज से चार-चार लोगों को पड़गाहन की व्यवस्था बनाई गई। ९.३३ बजे आहार शुरू हुआ और ९.३६ पर समाप्त हो गया।

शुरू में दो अँजुली पानी फिर दवाई दी गई, दवाई लेते ही उनको चक्कर से आने लगे, पित्त ऊपर की ओर आया होगा तो सिर भन्ना गया, पानी दिया गया, २-३ अँजुली पानी लिया और अँजुली ढीली पड़ने लगी तो चन्द्रप्रभसागरजी अन्दर गए हाथ पकड़ लिया, चक्कर बढ़ा तो सिर दाएँ तरफ लुड़कने लगा तो निस्सीमसागरजी ने सम्भाला। तभी अँजुली में पानी डाला तो गुरुजी सावधान हो गये, तीन अँजुली चापड़ की लापसी दी, किन्तु वो नीचे गिरने लगी, तो लेने से मना कर दिया, फिर छाछ पानी लिया, कुल १२-१३ अँजुली द्रव्य लिया। अँजुली छोड़ दी, धीरे से बैठा दिया। हम सब अवाक् से रह गये, कल भी ऐसा ही हुआ था, आज भी ऐसा ही हो गया। गुरुदेव को देखकर लग रहा था वो लेना नहीं चाह रहे हैं। स्वयं ही कम कर रहे हैं। जैसा आगम में लिखा है पूज्य आचार्य समन्तभद्र स्वामी जी ने रत्नकरण्डक श्रावकाचार में सल्लेखना के प्रकरण में बताया है क्षपक कैसे-कैसे आहार पानी का त्याग करते हैं, उसके अनुसार ही गुरुदेव स्वयं ही त्याग करते हुए, कम करते हुए यम सल्लेखना की ओर बढ़ रहे थे। यथा—

आहारं परिहाप्य क्रमशः स्निग्धं विवर्द्धयेत्पानम्।<br>
स्निग्धं च हापयित्वा खरपानं पूरयेत्क्रमशः ॥१२७॥<br>
खरपानहापनामपि कृत्वा कृत्वोपवासमपि शक्त्या।<br>
पञ्चनमस्कारमनास्तनुं त्यजेत्सर्वयत्नेन ॥१२८॥

आहार के बाद कायोत्सर्ग करके पिच्छी लेने के लिए हाथ बढ़ाया तो पड़गाहन करने वालों ने पिच्छिका भेंट की। आचार्यश्री को नमोऽस्तु किया तो आचार्यश्री जी ने आशीर्वाद दिया। फिर धीरे से स्वयं उठे और धीरे-धीरे चलकर बाहर आये और पीछे की ओर चले गये स्वयं ही बिना कुछ पकड़े, सीढ़ी उतरे और पीछे जाकर केनोपी के अन्दर पाटे पर वज्रासन से बैठ गये, तब वैद्य स्वप्निल सिंघई (प्रिंसिपल पूर्णायु) एवं गौरव शाह वैद्यराज ने एवं बड़े निर्यापक जी ने कहा—आज भी आपने आहार नहीं लिया, ऐसे कैसे चलेगा? आचार्यश्री आपको आहार लेना चाहिए, तभी स्वास्थ्य ठीक होगा। ''लिया तो है'' आचार्यश्री बोले, तब गौरव ने कहा—थोड़ा और लेना था, तो बोले—''जितना ले पाए उतना लिया।'' तभी योगसागरजी महाराज ने कहा हम लोग चाह रहे थे थोड़ा और लें आप, आपसे निवेदन भी किया था, किन्तु आप शीघ्र बैठ गए। तब आचार्यश्री मन्द-मन्द मुस्कराते हुए आशीर्वाद देते हुए

बोले–''विकल्प नहीं करो, शरीर की स्थिति को देखते हुए ले रहा हूँ, समय हो रहा है, आहार पर निकलो।''

हम सभी ने नमोऽस्तु किया, तो सभी को आशीर्वाद दिया। लौटकर आए तो निर्यापक मुनि योगसागरजी औषधि घृत लगा रहे थे। हम सभी अपने-अपने पाटे बिछाकर बैठ गये गुरु के समक्ष, नमोऽस्तु किया तो आचार्यश्री ने रुकने का इशारा किया और उठकर बैठ गए, फिर क्रम से हम सभी ने नमोऽस्तु बोलकर आहार के समाचार देकर प्रत्याख्यान बोला तो आशीर्वाद दिया। फिर ईर्यापथ प्रतिक्रमण प्रारम्भ हो गया। केनोपी में सभी क्रियायें सम्पन्न हुईं। केनोपी के चारों तरफ हरी मेंट बाँध दी गई थी। समझदार सावधान मधुर देवरी सारी व्यवस्थाएँ करता था।

सामायिक से पूर्व, दोपहर में एवं शाम को दीर्घ शंका समाधान किया, शाम को सभी महाराज प्रतिक्रमण के लिए गुरु महाराज के पास पहुँच गए, आचार्य महाराज ने रुकने का इशारा किया, फिर ४.२५ पर प्रतिक्रमण का इशारा दिया, सभी ने एक साथ बोलना प्रारम्भ कर दिया। आचार्य वंदना-भक्ति के लिए मैं भी पहुँच गया। निरामयसागरजी ने आचार्य भक्ति करने का निवेदन किया, तो रुकने का इशारा किया, १० मिनट बाद आचार्यभक्ति हुई। प्रायश्चित माँगा तो आशीर्वाद दिया, हम सभी ने प्रायश्चित किया। नमोऽस्तु करने पर आशीर्वाद दिया। गुरुदेव को देखने से हम सभी को अहसास हो रहा था कि आचार्यश्री की विशुद्धि में कोई कमी नहीं है। अपने आवश्यकों का पालन में वे पूर्णतः सावधान हैं।

फिर आचार्यश्री को निरामयसागरजी ने पूछा देवदर्शन करना है, तो जागृत आचार्यश्रीजी ने हाँ में सिर हिलाया। धीरे से खड़े हुए १५ सेकण्ड खड़े रहे, इस बात का ध्यान उन्हें सदा रहा, खड़े होकर एक दम से नहीं चलना है। आगे बढ़े पकड़वाया नहीं, चन्द्रप्रभसागरजी और पूज्यसागरजी आजू-बाजू चलते रहे। चन्द्रप्रभसागरजी ने पकड़ने के लिए प्रयास किया तो मना कर दिया, ३ सीढ़ी चढ़ने से पूर्व लड़खड़ाए तो लकड़ी की कुर्सी पर बैठाया, एक मिनट बाद उठे और धीरे-धीरे सीढ़ी चढ़े, फिर लड़खड़ाए तो पूज्यसागरजी एवं चन्द्रप्रभसागरजी ने पकड़ लिया और पकड़कर ले गए श्रीजी की प्रतिमा के समक्ष पाटे पर बैठा दिया। इससे हम सभी समझ गए कि गुरुदेव पहले अपना पुरुषार्थ करते हैं, प्रमाद नहीं करते, बाद में शक्ति हीनता के कारण पकड़वाकर आगे बढ़ते हैं। देवदर्शन क्रिया कायोत्सर्ग पूर्वक करने के बाद, फिर मधुर ने फर्श ठण्डा होने के कारण चटाई बिछा दी, तब अहिंसा महाव्रती, आदान निक्षेपण समिति के जीवन भर पालक गुरुवर बोले–''बिना परिमार्जन के बिछा दी'', तब तत्काल मुनि श्री पूज्यसागरजी एवं हमने पिच्छी से भू परिमार्जन कर चटाई बिछाई, तभी आचार्यश्री उस पर चलकर भव्यों को-भक्तों को दर्शन देने गए। चारों तरफ देखकर आगे, आजू-बाजू में सभी को आशीर्वाद दिया, गुरु जी की दिन-प्रतिदिन गिरती स्वास्थ्य की स्थिति को देख सभी भक्तों को अत्यन्त दुख हो रहा था।

१३ फरवरी शाम को भक्तों को दर्शन देते हुए

एक मिनट तक आशीर्वाद देने के बाद पैर झुकने लगे तो तत्काल दरवाजा बंदकर दिया गया, दरवाजा बंद होते

ही आचार्यश्री वहीं नीचे बैठ गए, दोनों महाराज पकड़े रहे। वज्रासन से बैठे रहे, फिर उठे तो दोनों महाराज ने पकड़ लिया और कक्ष में ले चले। वहाँ पाटे पर लिटा दिया, हम लोगों ने वैय्यावृत्त्य प्रारम्भ कर दी। थोड़ी देर बाद दीर्घ शंका का इशारा दिया, व्यवस्था कक्ष में ही कर दी गई। निवृत्त हो, लेट गए, मैं और चन्द्रप्रभसागर जी वैय्यावृत्त्य करके कर्म निर्जरा करते रहे। खुजली उठती रही। तभी हमने धीरे से निवेदन किया गुरुदेव! यहाँ पर प्रशस्तता नहीं है आप मन बनाएँ स्थान परिवर्तन का, उससे प्रशस्तता आएगी, स्वास्थ्य में सुधार होगा। यह सुनते ही हाथ के इशारे से मना कर दिया। ब्र. विनय आए उन्होंने औषधीय घृत लगाना प्रारम्भ कर दिया, हमने भी लगाना प्रारम्भ कर दिया। पूरे शरीर में लगाने से गुरुदेव को खुजली से राहत मिलती है। बीच-बीच में आचार्यश्री के मुख से उच्चारित होता "हे वीतराग प्रभु!" ७ बजे घृत पौंछ दिया गया। उनकी अनुभव की घड़ी ने उन्हें बताया-चेताया सामायिक का समय हो गया है, बोले-"निरामय कहाँ हैं", हम बुलाकर लाये। वो आए तो आचार्यश्री बोले "स्वयंभू" मुनिश्री ने सुनाया गुरुदेव हम किसी साधु से कुछ भी सुनाने के लिए नहीं कहते। उन्होंने तो मात्र एक मुनि निरामयसागर को स्वीकार किया था।

सामायिक के बाद सामायिक पाठ सुनाया, फिर वैय्यावृत्त्य की गई। खुजली के कारण रातभर जागृत रहे। निरामयसागरजी ने बताया दो बार रात में दीर्घ शंका हुई, चार-पाँच बार कूल्हने की आवाज आई, घण्टे भर भी नींद नहीं आई।

## ❑ अंतिम द्वादशम पृष्ठ : आगम में बताए ४८ मुनियों की स्मृति आई—

१४ फरवरी, २०२४ का प्रातः पुनः नई उम्मीदों को लेकर आया। हम समय पर नीचे गुरु कक्ष में पहुँच गए, प्रतिक्रमण सामायिक, सामायिक पाठ हो चुका था, स्वयंभू स्तोत्र का पाठ चल रहा था। २१ वे भगवान नमिनाथ स्वामी की स्तुति पढ़ने के बाद आचार्यश्री जी ने दो अँगुली उठाकर दीर्घ शंका का इशारा किया, तो व्यवस्था कर दी गई, उसके बाद फिर लेट गए, ३ भगवानों की स्तुति पढ़ी गई। आचार्यश्री ने २४ तीर्थंकरों को हाथ जोड़कर सिर पर लगाकर नमोऽस्तु किया। सभी साधु उपस्थित हो गए तो आचार्यभक्ति का निवेदन किया गया तो गुरुदेव ने रुकने का संकेत किया, संभवतः गुरुदेव स्तुति आवश्यक में पहली बार दोष लगाने के कारण अपनी निंदा-गर्हा कर रहे थे। ५ मिनट बाद आचार्यश्री जी ने पूछा-"समय कितना हुआ" बताया-६.३० बज गए तो फिर रुकने का इशारा किया, लेकिन फिर बोले-"कर लो", गुरुदेव ने लेटे-लेटे ही की, हम लोगों ने प्रायश्चित कर लिया इसके बाद आशीर्वाद दिया।

बार-बार कूल्हने की आवाज आती रही किन्तु चेहरे पर प्रशान्त भाव, कहीं कोई आर्तभाव नहीं, खुजली उठ रही थी, हम लोग सहलाते, थोड़ी देर बाद लघुशंका के लिए १ अँगुली दिखाई। व्यवस्था की गई, किसी भी क्रिया में वो किसी से सहारा नहीं लेते। तत्पश्चात् योगसागर ने वैय्यावृत्त्य प्रारम्भ कर दी, हम भी पैरों की करने लगे। फिर पूज्यसागरजी भी आ गये तो मैं हट गया। अनुमोदना करता रहा।

मुनि निरामयसागरजी ने कमर की गरम पट्टी के लिए पूछा, तो मना कर दिया। दाएँ करवट ले ली। मैं जंगल जाकर आया तो पता चला कि गरम पट्टी करा ली किन्तु पेट की ठण्डी गरम पट्टी नहीं कराई। वैद्य स्वप्निल सिंघई ने एवं गौरव शाह ने चावल के माड़ को भात की पोटली से लगाने का निवेदन किया, तो आचार्यश्री बोले-इससे क्या होता है? तब स्वप्निल सिंघई जी बोले इससे जंघा बल को पोषक तत्त्व मिलते हैं, जंघा बल बढ़ता है, यह आयुर्वेद में

बाह्य उपचार में बताया गया है इसलिए हम लोग करना चाहते हैं, तो कुछ नहीं बोले। १० मिनट लगाया, गर्म पानी के कपड़े से पौंछ दिया।

गुरुदेव बड़ी ही निरीहता से तटस्थता पूर्वक सब कुछ देखते रहे। ९:२५ पर मुनि श्री निरामयसागरजी ने गुरु जी से निवेदन किया आप शुद्धि कर लीजिए आचार्यश्री, आहार का समय हो गया है। यह सुनकर बोले–"आहार? कैसा आहार? क्या हो रहा है उससे?" फिर आहार के प्रति कोई उत्साह नहीं! वो तो अपने आत्म स्वभाव रूप सहजानंद रूप समरसी भावों का आहार कर रहे थे। तभी निर्यापक मुनि श्री योगसागरजी महाराज ने, चन्द्रप्रभसागरजी महाराज ने एवं पूज्यसागरजी ने भी निवेदन किया, किन्तु अनसुना कर दिया। थोड़ी देर बाद पुनः निवेदन किया गया तो उठ गए, शुद्धि कराई गई, कक्ष के बाहर श्रीजी को विराजमान किया गया, गुरुदेव ने दर्शन किये और अँजुली बांधकर मुद्रा ली, मात्र तीन ब्रह्मचारियों ने पड़गाहन किया। नवधाभक्ति से आहार कराया। खड़े होते बन ही नहीं रहा था, बाएँ तरफ पूज्यसागरजी एवं दाएँ तरफ वैद्य गौरव पैर की जंघा पकड़े हुए थे, निरामयसागरजी कोमल वस्त्र से पीठ सहला रहे थे। निस्सीमसागरजी सिर को पकड़े हुए थे सिर लुढ़क न जाये। चन्द्रप्रभसागरजी अँजुली को सम्हाले हुए थे कहीं छूट न जाए। हम लोग बाहर खड़े होकर जाप कर रहे थे। ब्र. विनय ने आहार शुरू कराया। ९.३६ बजे आहार प्रारम्भ हुआ, जल, छाछ, ज्वार की लापसी, जल–जल। ९.४४ पर बन्द कर दिया, रुक–रुक कर लिया पानी ज्यादा लिया।

आहार के बाद बाहर पीछे नहीं गए, कक्ष में चले गये। कमजोरी अत्यधिक थी सो लेट गए। हम सभी ने नमोऽस्तु किया तो आशीर्वाद दिया। हम लोग आहार पर निकले, गुरु की सेवा में मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी, विनय ब्रह्मचारी, मधुर रहे।

मधुर ने आहार के बाद हमको बताया कि हमको आचार्यश्री बोले—बाहर जो हैं, उनको बाहर करो, मैं बाहर हॉल में देखने गया तो कोई नहीं था, तो हमने कहा गुरु जी वहाँ कोई नहीं है, तो बोले कमरे में है, मैंने जाकर देखा तो थे, उन सबको बाहर किया, जाकर बताया कर दिया गुरु जी बाहर।

गुरुदेव की इस प्रतिक्रिया को सुनकर हम सभी आश्चर्यान्वित हो गये। गुरु जी को पूर्व में भी कई बार ऐसा देखा गया कि उन्हें घटना होने से पहले ही सब दिख जाता था। अपने आप ही उन्हें सब दिख गया कि कक्ष में कौन बैठे हैं? इस प्रकार उनकी विशुद्धि दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी।

११:३० पर सभी साधु आ गये, ईर्यापथ प्रतिक्रमण करने का निवेदन किया तो रुकने का इशारा किया। फिर दो तीन मिनट बाद 'हूँ" कहा। हम लोगों ने आहार ठीक, प्रत्याख्यान किया और प्रतिक्रमण प्रारम्भ कर दिया वो लेटे लेटे सुनते रहे, खुजलाते भी रहे। समापन पर आशीर्वाद दिया। निरामयसागरजी ने कहा आचार्यश्री जी 'स्वयभू' तो 'हूँ' फिर सामायिक प्रारम्भ हो गई।

दोपहर में हम लोग वैय्यावृत्त्य के लिए गये, तो मना कर दिया। फिर बड़े निर्यापकजी ने कहा—बाहर धूप है, बाहर चलें, तो मना कर दिया। थोड़ी देर बाद योगसागरजी ने वैय्यावृत्ति प्रारम्भ कर दी। ४:३० पर प्रतिक्रमण सुनाया सभी मुनिराजों ने। उसके तत्काल बाद आचार्य भक्ति की, आज कमजोरी के कारण आचार्य भक्ति करते हुए हाथ नहीं जोड़े। आँख खोले रहे, भक्ति कर रहे हैं यह संकेत उनकी आँखों से मिल रहा था जब वे नमस्कार करने के लिए आँख बन्द कर थोड़ा–सा झुकाते थे तब। प्रायश्चित मांगा तो स्वयं करने लगे, अन्त में नमोऽस्तु किया सभी ने, तो आचार्यश्री

जी ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

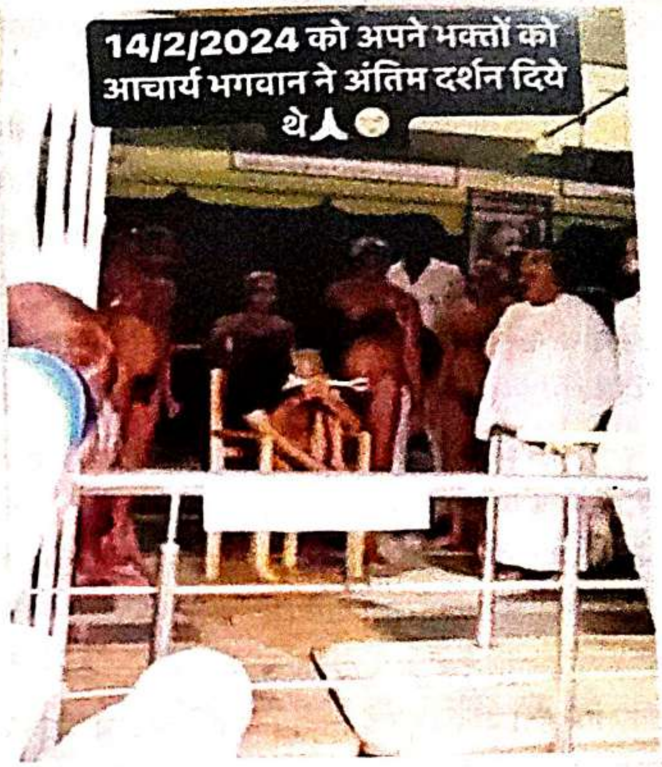


संध्याकालीन प्रभु-दर्शन के लिए कहा गया तो कोई प्रतिक्रिया नहीं की, फिर कुछ समय बाद कहा गया तो भी कोई प्रतिक्रिया नहीं की, फिर कुछ समय बाद कहा गया तो भी कोई प्रतिक्रिया नहीं की, थोड़ी देर बाद पुनः निवेदन किया गया, क्योंकि पहले उन्होंने कई बार कहा था कि मेरे आवश्यक कर्तव्यों में कभी कोई चूक न हो जाए, समय पर कराते रहना, मुझे समय पर समय का संकेत देते रहना, इसलिए जैसे ही तीसरी बार संकेत दिया तो उन्होंने आँख खोली फिर धीरे से स्वयं ही उठे, बैठे फिर खड़े हुए, बड़ी ही सावधानी बरत रहे थे हम सभी उनकी ओर देख रहे थे, वे कक्ष के द्वार पर लड़खड़ाये और बैठ गए, पूज्यसागरजी एवं निरामयसागरजी ने कुर्सी पर बैठाना चाहा तो किन्तु मना कर दिया, बैठे-बैठे ही वहीं से दर्शन कर लिए। फिर उठे, कुर्सी पर बैठने को कहा तो नहीं बैठे, आगे बढ़े, लड़खड़ाये तो पूज्यसागरजी एवं निरामयसागरजी पकड़े हुए थे तो उन्होंने कुर्सी पर बैठा दिया एवं कुर्सी चैनल गेट के पास रख दी। तब गुरुदेव ने हम लोगों को हटने का इशारा किया और दरवाजे की ओर देखा, तो तत्काल चैनल गेट एवं काँच का गेट खोल दिया गया। बाहर खड़ी-बैठी भक्तों की भीड़ दर्शन करने उतावली हो उठी, एक दूसरे के ऊपर गिर पड़े आचार्यश्रीजी ने एक बार हाथ उठाया फिर दोनों हाथों से पीछी पकड़कर सिर को उस पर रख लिया। मानों सबसे क्षमा-सबको क्षमा के भाव प्रकट कर रहे हों, क्योंकि शारीरिक स्थिति दिन-प्रतिदिन गिरती जा रही थी, अब आगे सबके बीच में आयें या नहीं इसलिए संभवतः अंतिम मानकर उन्होंने क्षमा का भाव प्रकट किया और हम लोगों ने देखा कि लोग एक-दूसरे को कुचल रहे, कोई अनहोनी न हो जाए अतः शीघ्र दरवाजा बंद कर दिया गया। फिर कुर्सी सहित उठाकर कक्ष में ले गए, तो उठकर तखत पर लेट गए, हम लोग वैय्यावृत्य करने लगे। मुख से कुछ-कुछ बोलने की आवाज आ रही थी। कौन सी गाथा या श्लोक था पकड़ नहीं पाये हम लोग।

मुनि श्री निरामयसागरजी ने समय पर आचार्यश्री को स्वयंभूस्तोत्र सुनाना प्रारम्भ कर दिया, जैसे ही उनकी आवाज सुनी आचार्यश्रीजी ने तत्काल हम लोगों को हटने का इशारा किया। इतने जागृत थे गुरुदेव और अपने आवश्यकों के प्रति उत्साहित होने की हम लोगों को भी शिक्षा मिल रही थी कि कैसी भी परिस्थिति हो अपने आवश्यकों के प्रति उत्साह कम नहीं होना चाहिए। फिर सामायिक में लीन हो गये, सुबह निरामयसागरजी ने बताया रात्रि में आचार्यश्री जी ने ३ बार लघु शंका, १ बार दीर्घ शंका का समाधान किया, खुजलाहट के कारण रात भर नींद न के बराबर आई। रात में मुनि श्री निरामयसागरजी, निस्सीमसागरजी गुरु सेवा में उपस्थित रहते, श्वान निद्रा लेते थे वो हर पल जागरुक रहते थे। प्रातःकाल उनसे हमें रात्रि सम्बन्धी सभी जानकारी मिल जाती थी। उन्होंने बताया कि रात्रि में ४-५ बार कूल्हने की आवाज आई तो हमने पूछा कूल्हने से मतलब, तो निरामयसागरजी ने बताया किसी प्रकार का

आर्तध्यान नहीं कूल्हने का मतलब, जैसे बुखार उतर जाने के बाद बहुत कमजोरी हो तो शरीर में हड़फूटन हो तो करवट लेते समय थोड़ी आवाज होती है ना वैसी आवाज आती थी, एक बार हमने पूछा आचार्यश्री तकलीफ हो रही क्या? तो कुछ नहीं बोले, जैसे ही हमने वैय्यावृत्त्य करना शुरू की तो मना कर दिया। पीड़ा को सहन करते रहे किन्तु आर्तध्यान नहीं किया और ना ही किसी को कोई परेशान किया।

❑ अंतिम त्रयोदशम पृष्ठ : विपरीत परिस्थिति में पूर्ण चैतन्य –

१५ फरवरी, २०२४ की सुबह होते ही हम सभी चातक पक्षी की तरह गुरु निश्रा में पहुँच गए। ६:३० वजे आचार्य भक्ति प्रारम्भ हुई गुरुदेव ने लेटे-लेटे ही की। प्रायश्चित किया, फिर हम सभी ने नमोऽस्तु किया तो आशीर्वाद दिया।

कर्म के दुष्प्रभाव के कारण बैचेनी सी कुछ हो रही थी किन्तु हम लोगों से कुछ नहीं कहा, धीरे-धीरे बोल रहे थे, कर्म के बारे में और हाथ को हिलाते जा रहे थे। बीच-बीच में "हे वीतराग प्रभु!" ऐसा सम्बोधन भी करते जा रहे थे। करवट लेने के लिए जैसे ही प्रयास करते तो हम लोगों में कोई पिच्छी लगा देते थे, तो तब करवट लेते थे, उस वक्त उनके मुख से कूल्हने की आवाज आती।

जिन गुरुदेव के मुख से जीवन भर कूल्हने की आवाज नहीं निकली, आज कर्मों ने निकाल दी। गुरुदेव की तकलीफ को देखकर बड़े निर्यापकजी ने पास में बैठकर बड़ी विनम्रता से पूछा–आचार्य महाराज! क्या हो रहा है? हम सभी काफी चिन्तित हैं, आप बताइये क्या हो रहा है? क्या तकलीफ है? तब आचार्यश्रीजी ने हाथ से नकारते हुए संकेत दिया कोई तकलीफ नहीं और धीरे-धीरे बोल रहे थे जो साफ समझ में नहीं आया, किन्तु उनके होठों के स्पन्दन से समझ पाया कि वो कह रहे हो "सब कर्मों की लीला है ना जाने कब के बांध रखे हैं। भोग रहा हूँ, चुका रहा हूँ।"

योगसागरजी, चन्द्रप्रभसागरजी, पूज्यसागरजी ने वैय्यावृत्त्य करना प्रारम्भ कर दिया, थोड़ी देर बाद ब्र. विनय आया तो आचार्यश्री को सुनाने के लिए जोर से बोला आचार्यश्री को आहार के लिए जल्दी उठाना है, बड़े महाराज योगसागरजी ने कहा ठीक है। फिर उन्होंने आचार्यश्री से कहा–जिससे उनकी भावना बन जाए, आचार्य महाराज, आहार पर आज जल्दी उठना है तो आचार्यश्री ने पूछा–" समय कितना हो गया है", बताया ७.४५ बज गये हैं। कमर पर गरम पट्टी, पेट की ठण्डी गरम पट्टी, औषधीय घृत, माड़ लगवाने के लिए मना कर दिया, वैद्य स्वप्निल गौरव ने निवेदन किया लगवा लीजिए, तो बोले "आज जल्दी उठना है।" पूर्ण जागृति के साथ गुरुदेव बोल रहे थे।

८:३० पर शुद्धि के लिए बोला गया तो वहीं पर शुद्धि कराई गई। फिर लकड़ी की कुर्सी पर बैठाया गया, कुर्सी को उठाकर बाहर प्रतिमा के सामने रख दिया गया। गुरुदेव ने बैठे-बैठे ही दर्शन क्रिया की, फिर अँजुली को दाएँ कंधे पर रख आहार की मुद्रा विधि बनाई, तभी कुर्सी को उठाकर पड़गाहन करते हुए ब्र. विनय, वैद्य स्वप्निल सिंघई, वैद्य गौरव शाह के सामने रख दी गई। पड़गाहन के बाद आहार कक्ष में रख दी गई, फिर दोनों वैद्यों ने पाद-प्रक्षालन पूजन की शुद्धि बोली, जल से हाथ की अँजुली की शुद्धि कराई। आचार्यश्री जी ने कायोत्सर्ग किया फिर खड़े हो गए। पूज्यसागर बाएँ, गौरव शाह दाएँ जंघा को मजबूती से पकड़े रहे, बाँया हाथ चन्द्रप्रभसागरजी, दाँया हाथ निरामयसागरजी पकड़े हुए थे। निस्सीमसागरजी सिर को सहला रहे थे। सभी लोग पूर्ण सावधानी के साथ णमोकार महामंत्र का जाप कर रहे थे। मैं पीछे से पीठ पर कोमल वस्त्र से सहला रहा था। तीन अँजुली पानी लिया और जोरदार

चक्कर आया, पित्त ऊपर की ओर चढ़ गया सिर गरम हो गया, शरीर ढीला हो लुढ़कने लगा, सभी ने पकड़ा हुआ था किन्तु सिर लटक गया। तो बैठा दिया गया, २ मिनट तक सामान्य नहीं हुए तो एक पाटा लाकर लिटा दिया गया। तभी हम सभी ने विचार-विमर्श किया कि थोड़ा स्थान परिवर्तन करके देखा जाए तो अच्छा रहेगा क्योंकि सभी वैद्य एवं मुनिसंघ आर्यिका संघों के समाचार आ रहे हैं स्थान परिवर्तन कराने के, यह विचार कर बाहर अतिथि भवन में ले जाने का निर्णय लिया गया। तत्काल ऊपर से पालकी उठवा कर लाया और प्रसादसागरजी ने हरी मैट बंधवाई फिर आचार्यश्री को धीरे से उठाकर पालकी में लिटा दिया गया। फिर हम लोगों और ब्रह्मचारियों ने पालकी उठाई और संतभवन छोड़ दिया, सुबह भक्तों की भीड़ कम थी। अतिथिभवन के १ नं. कक्ष में व्यवस्था बनाकर गुरुदेव को जैसे ही पाटे पर लिटाया उनकी तन्द्रा टूटी आँखें खोली, देखते ही 'हूँ' बोले और हाथ के इशारे से पूछा कहाँ आ गये, तब ब्र. विनय ने कहा, आचार्यश्री कक्ष बदल दिया, उस कक्ष में सफाई हो रही है तो खिड़की की ओर इशारा किया तो हमने तत्काल बंद कर दी। फिर हम लोग नमोऽस्तु करके आहार पर उठ गए, एक महाराज एवं ब्र. विनय आचार्यश्री के पास रुक गये।

गुरुदेव की तन्द्रा देख ईर्यापथ चुपचाप करने लगे, तो आवाज सुनते ही आँख खोलकर देखा हाथ जोड़कर मस्तक पर लगाए, तब हम लोग समझ गए, गुरुदेव ने भी ईर्यापथ प्रतिक्रमण शुरू कर दिया है, तो हम लोगों ने आवाज तेज कर दी। तत्पश्चात् निरामयसागरजी ने स्वयंभू स्तोत्र सुनाया, फिर सामायिक प्रारम्भ हो गई, उसके बाद समाधि पाठ सुनाया। बीच-बीच में कुछ कुछ बोल रहे थे।

सभी आवश्यकों के बाद मैं गुरुदेव के पास अकेला पहुँचा और धीरे से वैय्यावृत्त्य प्रारम्भ कर दी। तब गुरुदेव ने आँखें खोलकर देखा कौन कर रहा है, कुछ भी प्रतिक्रिया नहीं की, धीरे-धीरे विनय जी एवं मधुर भी आ गये वो भी पैर की कोमल वैय्यावृत्त्य करने लगे। थोड़ी देर बाद विनय बाहर चला गया, सभी लोग विचार-विमर्श करने लगे वैद्य स्वप्निल एवं गौरव के साथ मैं वैय्यावृत्त्य करता रहा, आचार्यश्री कुछ बोल रहे थे, तो मैं पीछे से आगे जाकर बैठकर वैय्यावृत्त्य करने लगा और सुनने की कोशिश की तो ४ गाथा सुनी-

**छिज्जदु वा भिज्जदु वा णिज्जदु वा अहव जादु विप्पलयं।**
**जम्हा तम्हा गच्छदु तहा वि ण परिग्गहो मज्झ॥**
**अरस मरूव मगंधं अव्वत्तं चेदणा गुण मसद्दं।**
**जाण अलिंग्गहणं जीव मणिद्दिट्ठ संठाणं॥**
**अचेतनमिदं दृश्यमदृश्यं चेतनं तथा।**
**क्व रुष्यामि क्व तुष्यामि माध्यस्थोहं भवाम्यतः॥**
**अपरिग्गहो अणिच्छो भणिदो पाणं दु णेच्छदे णाणी।**
**अपरिग्गहो दु पाणस्स य जाणदो तेण सो होदि॥**

जीवनभर गुरुदेव अपनी पसंदीदा गाथा श्लोक सूत्रों का चिन्तन-मनन, उच्चारण करते रहते थे सामायिक के पूर्व या बाद में, कक्षाओं में प्रेरणा देते थे। यूँ तो गुरुदेव को समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, इष्टोपदेश, समाधितन्त्र, मूलाचार, रत्नकरण्डक श्रावकाचार, तत्त्वार्थसूत्र, द्रव्यसंग्रह आदि ग्रन्थ मुखाग्र कंठस्थ थे किन्तु विशेष गाथा श्लोकों के माध्यम से वो चिन्तन-मनन करते ही रहते थे।

सभी महाराजों ने, वैद्यों ने विचार-विमर्श में निर्णय कर लिया कि यहाँ से आगे ले चलना है। करीब २.३०बजे हम सभी लोग गुरु कक्ष में पहुँचे। पालकी को दरवाजे पर रखली फिर ज्येष्ठ निर्यापकजी ने निवेदन किया—आचार्य महाराज! यहाँ पर प्रशस्तता नहीं है इसलिए यहाँ से आगे चलते हैं तो ठीक रहेगा, हम सभी ने ऐसा विचार बनाया है। आचार्यश्री ने कुछ नहीं कहा, तो निर्यापक प्रसादसागरजी ने कहा—हाँ आचार्यश्री स्वास्थ लाभ जल्दी हो जाएगा, चलो सभी लोग उठाओ, पकड़ो ऐसा बोलकर जैसे ही चटाई उठाने लगे तो आचार्यश्री जी एक दम से बोले—''ये क्या कर रहे हो, अपने मन से कुछ भी कर रहे हैं आप लोग'', फिर सिर नीचे कर लिया। पुनः बड़े महाराज योगसागरजी ने विनय निवेदित की—महाराज! हम लोग आपके स्वास्थ्य लाभ के लिए ऐसा कर रहे हैं, वैद्यों के भी समाचार आ रहे हैं, सभी मुनिसंघों, आर्यिका संघों के समाचार आ रहे हैं। सभी क्षेत्र परिवर्तन की बात कह रहे हैं, इसलिए कर रहे हैं आप विकल्प न करें। स्वास्थ्य ठीक हो जायेगा तो वापस आ जाएँगे। पूज्यसागरजी ने भी निवेदन किया—गुरु जी ज्यादा दूर नहीं, पास में ही ले जा रहे हैं, यह सुनकर कोई प्रतिक्रिया नहीं की। तब सभी ने एक दूसरे को उठाने का इशारा किया और उठा लिया एवं पालकी में लिटा दिया, प्रसादसागरजी ने हरी मैट चारों तरफ से बांध दी और गंतव्य की ओर बढ़ चले, डोंगरगाँव की सड़क पर, ब्रह्मचारी भाइयों ने पालकी उठा रखी थी, बीच-बीच में मैं भी उठाने का सौभाग्य लेता रहा। ४ किलोमीटर दूरी पर एक फार्म हाउस जो हरविन्दर सिंह जी का है, वहाँ ले गये।

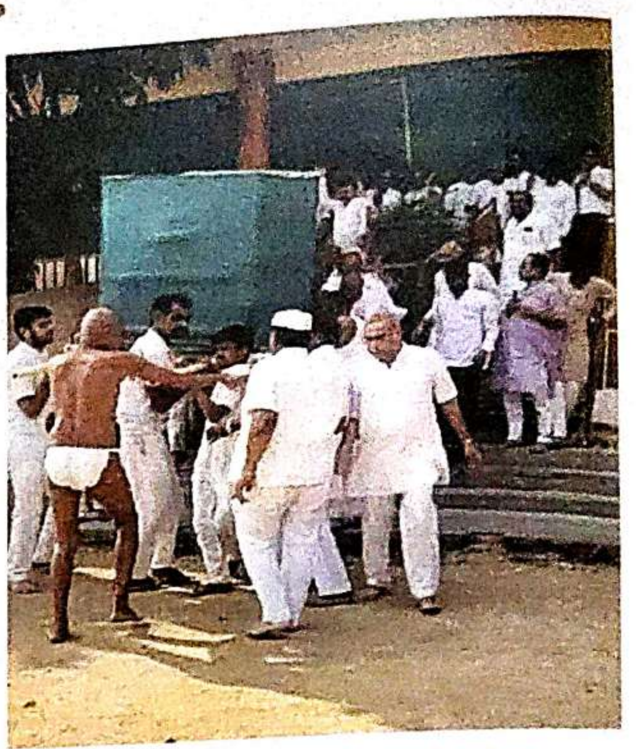

१५ फरवरी को डोली में बैठाकर ले जाते हुए

हरविंदर सिंह मंगे के फार्म हाऊस पर १५ फरवरी को साधना में लीन गुरुदेव

शाम को प्रतिक्रमण सुनाया सभी मुनिराजों ने, फिर हम सभी ने आचार्यभक्ति भी सुनाई और सभी ने भी की। तत्पश्चात् काफी देर तक मुझे वैय्यावृत्त्य करने का सौभाग्य मिला, सभी आवश्यक विचार-विमर्श करने में लगे थे। मैं जोर-जोर से मरोड़-मरोड़ कर वैय्यावृत्त्य करता रहा गुरु जी ने मना नहीं किया। उसके बाद खुजली नहीं चली या वो खुजला नहीं रहे थे सहन कर रहे थे।

समय पर निरामयसागरजी ने आचार्यश्रीजी को स्वयंभू स्तोत्र सुनाया, फिर सामायिक प्रारम्भ हो गई। निस्सीमसागरजी ने बताया कि रातभर बैचेनी दिखी, किन्तु बोले कुछ नहीं। करवट बदलने पर कूल्हने की आवाज आती थी किन्तु पिच्छी से परिमार्जन करने के बाद ही करवट बदलते थे। एक दो बार हमने लगा दी थी पीछी। तीन बार लघुशंका का इशारा किया, समाधान कराया गया। रात में ३-४ बार बहुत धीरे गुरु मुख से निकला-"हे वीतराग प्रभु!, हे भगवान!।"

### अंतिम चतुर्दशम पृष्ठ : दो अँगुली का रहस्य-

१६ फरवरी, २०२४ को सभी आवश्यक कार्य किये, तदुपरान्त आचार्य भक्ति की गई, किन्तु अन्त में आशीर्वाद नहीं दिया। उसके बाद हम लोग आचार्य गुरुदेव की वैय्यावृत्त्य करने लगे। घी लगाकर वैय्यावृत्त्य की गई। ८ बजे सभी मुनिराज जंगल चले गये, मैं और मुनि श्री निरामयसागरजी गुरु सेवा में रहे, मुनिश्री किसी काम से बाहर गये, उसी समय आचार्यश्री जी धीरे से उठे, तब हमने निरामयसागरजी को बुलाया, आचार्यश्री खड़े हो गये, लड़खड़ाये हम लोगों ने पकड़ लिया, बाहर कक्ष तक गये, पूछा जंगल जाना है? तो सिर हिलाया, निवेदन किया कमजोरी बहुत है, यहीं कक्ष में व्यवस्था है, तो मान गये, हम लोग उनको कक्ष में ले गए, वहाँ पर व्यवस्था की, निवृत्त हुए हमने बाहर ले जाकर प्रासुक स्थान पर क्षेपण किया तभी ब्र. विनय ने कहा-आज आचार्यश्री जी को ८:३० पर आहार पर उठाना है। समय आया तो निवेदन किया गया किन्तु कर्मों के दुष्प्रभाव ने उनको ऐसा जकड़ा कि उनका मन आहार लेने के लिए तैयार नहीं हुआ, जब जोर डाला तो दो अँगुली दिखाई। इन दो अँगुली का क्या अर्थ है, हम लोग समझ नहीं पाये, तब हमने निरामयसागरजी से पूछा तो बोले-हम भी नहीं समझ पा रहे हैं, तब उन्होंने आचार्यश्री से पूछा-आचार्यश्री जंगल जाना है क्या? कुछ नहीं बोले, न सिर हिलाया, न आँख खोली। हम लोगों ने सोचा शायद दो घण्टे बाद उठने का इशारा किया है, तो दो घण्टे बाद १०:३० बजे पुनः निवेदन किया तो मना कर दिया हाथ उठाकर। तब ११ बजे बड़े निर्यापक योगसागरजी से हम लोगों ने कहा महाराजश्री एक बार आप अच्छे से समझाकर मनायें, तो मुनिश्री ने बड़ी ही विनम्रता के साथ कहा-आचार्य महाराज! आप आहार पर उठ जायें, ऐसी हम सबकी विनती है, आप ऐसा करेंगे तो हम शिष्यों का क्या होगा, आपने दो दिन से कुछ भी नहीं लिया है, कल मात्र ३ अँजुली जल लिया है, वैद्यों का कहना है जल लेना जरूरी है, आप आहार पर उठिये। तब दृढ़ निश्चयी गुरुवर ने योगसागरजी को जो कहा, उससे हम सभी को संकेत दे दिया, दाएँ करवट से लेटे हुए थे पलट कर बाएँ हाथ को उठाकर बोले-"आपको शांति नहीं है क्या? शांति रखो।"

इसके बाद चार साधुओं को आहार पर उठा दिया गया, योगसागरजी, निरामयसागरजी, निस्सीमसागरजी आचार्यश्री के पास रुके। बाद में वो उठे।

प्रतिदिन की भाँति सभी आवश्यक समय पर हुए। १२.१५ बजे निर्यापक मुनि श्री समतासागरजी, मुनि श्री

महासागरजी, मुनि श्री निष्कंपसागरजी एवं ऐलक निश्चयसागरजी गुरु-दर्शनार्थ-सेवार्थ पधार गये। सामायिक के बाद आचार्यश्री के कक्ष में गये। नमोऽस्तु, भक्तिपूर्वक गुरु वन्दना की, चरण स्पर्श किए। आचार्यश्रीजी ने उनकी आवाज पहचान ली और आँख खोलकर एक हाथ को माथे के पास लगाकर देखा फिर सबको देखने के बाद सभी को आशीर्वाद दिया। फिर चारों महाराजों ने वैय्यावृत्त्य करना प्रारम्भ कर दिया।

हम लोगों ने दो बजे पुनः आहार का निवेदन किया क्योंकि दो अँगुली का अर्थ स्पष्ट नहीं हो पा रहा था। सम्भावना को देखते हुए निवेदन किया, किन्तु दृढ़ संकल्पी गुरुदेव तो अपने आत्म-चिन्तन आत्मभावना का आहार करने में रस ले रहे थे। हम सभी के आत्म-निवेदन को अनसुना कर दिया। तब प्रसादसागरजी ने उनका मन बनाने के लिए गुरुदेव के दोनों हाथों को पकड़ कर धुला दिया। फिर भी नहीं उठे, तो पूज्यसागरजी ने रोते हुए क्षमा माँगी हम लोगों से कोई गलती, अविनय हो गई हो तो क्षमा कर दें गुरुदेव, तो तत्काल 'उँहूँ' बोलकर रोने के लिए मना कर दिया और करवट ले ली। गुरुदेव को एक तरफ तो पित्त के कारण भारी दाह एवं खुजली की वेदना हो रही थी और हम लोगों के द्वारा बार-बार आहार पर उठने का निवेदन से हो रही बाधा के बावजूद सहन करते हुए, कोई हमारे कारण दुखी हो, यह उन्हें स्वीकार नहीं था इसलिए पूज्यसागरजी को मना किया।

शाम ४.३० बजे मुनिराजों के द्वारा प्रतिक्रमण सुनाया गया। फिर आचार्य भक्ति की गई, अन्त में नमोऽस्तु किया तो आशीर्वाद भी नहीं मिला। शाम को सामायिक से पूर्व मुँह से अम्लपित्त निकला। निरामयसागरजी ने स्वयंभू सुनाया, सामायिक, उसके बाद पाठ सुनाया। प्रतिक्रमण से पहले महासागरजी, निष्कम्पसागरजी ने योगि भक्ति, नंदीश्वर भक्ति का पद्यानुवाद सुनाया। रात में एक दो बार कूल्हने की आवाज आई किन्तु लघुशंका दीर्घशंका की बाधा उत्पन्न नहीं हुई।

- **अंतिम पञ्चदशम पृष्ठ : प्रकाश पूर्ण युग का समापन—**

१७ फरवरी, २०२४ की रात्रि में श्रमण संस्कृति के प्रकाश पूर्ण युग का समापन हो गया। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में एवं २१ वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में श्रमण संस्कृति को प्रकाश पूर्ण बनाने वाले संस्कृति शासक, अपराजेय साधक, सन्त शिरोमणि गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागरजी महामुनिराज ने पूर्ण जागृति पूर्वक होश और प्रीति पूर्वक स्वयं ही सल्लेखना विधि से समाधिधारण कर मृत्यु महोत्सव मनाया।

१६ फरवरी को प्रातः ३.४५ पर प्रतिक्रमण, निरामयसागरजी, निस्सीमसागरजी ने सुनाया, फिर सामायिक का इशारा किया तो 'हूँ' बोलकर शुरू कर दी। सामायिक के बाद पाठ, स्वयंभू स्तोत्र, नंदीश्वर भक्ति सुनाई गई। तत्पश्चात् आचार्यभक्ति की गई, अन्त में हम सभी ने नमोऽस्तु किया तो आशीर्वाद नहीं मिला, गुरुदेव अपने आप में लीन रहे। बीच में एक दो बार कूल्हने की आवाज आई। दो बार करवट बदली, पिच्छी से परिमार्जन करके समयसारमय जीवन जीने वाले गुरुदेव को अपनी स्थिति का अनुभव हो गया था, इसलिए वे अन्तरंग में रहने का पुरुषार्थ कर रहे थे, १५-१६-१७ तारीख तीन दिन तो वो पूरी तरह से भेदविज्ञान के माध्यम से स्व और पर का अनुभव करते हुए अपने आपको पर से अलहदा कर चुके थे। जब प्रातःकाल समतासागरजी, महासागरजी ने पूछा आचार्यश्री जी आप कैसे हैं? आँखें खोलकर देखें, हम सभी शिष्य कितने बेचैन हैं, आप थोड़ा मुस्कराओ तो। यह सुनने के बाद भी गुरुदेव ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, उनकी उदासीनता बता रही थी कि उनको अब शिष्यों से भी राग नहीं था, वो भेदविज्ञान के चिन्तन से कौन गुरु-कौन भक्त-कौन भगवान, सभी आत्मा बराबर हैं, मेरी आत्मा ही गुरु है, मेरी आत्मा ही शिष्य है, ऐसा

मनन कर रहे थे इसलिए कोई जवाब नहीं दिया।

थोड़ी देर बाद वैद्य स्वप्निल सिंघई एवं गौरव शाह ने आकर नाड़ी चैक की तो बहुत मन्द चल रही थी तो उन्होंने आचार्यश्रीजी के हाथ-पैरों के पंजों में सैंधा नमक एवं शक्कर का घोल तैयार कर लगाया, तब चिपचिपा होने लगा तो गुरुदेव ने बिना आँख खोले ही हथेलियों को बार-बार बन्दकर-खोलकर दिखाया, तो हम लोगों ने गीले कपड़े से पौंछ दिया। उनको लगा कि कहीं इस चैंप में कोई जीव चींटी आदि न चिपक जाए, इसलिए इशारा किया। गुरुदेव अपने कल्याण के साथ-साथ सूक्ष्म जीवों का भी ध्यान रख रहे थे। दयालु गुरुवर को अपने दुख-दर्द की चिन्ता नहीं थी सूक्ष्म जीवों के प्राणों की चिंता थी।

८:३० बजे सभी मुनियों ने आहार पर उठने का निवेदन किया किन्तु आहार के प्रति कोई उत्साह नहीं दिखाया, नहीं उठे। १०:३० बजे पुनः निवेदन किया गया, काफी निवेदन किया गया किन्तु नहीं उठे, आँख नहीं खोली, दो बार करवट बदली हम लोगों ने पीछी से परिमार्जन किया, कूल्हने की भी आवाज आई। उसी समय मुँह से पित्त निकला, तब वैद्यों ने चिन्ता जताई, हम लोग समझ गये इसीलिए आचार्यश्रीजी आहार पर नहीं उठ रहे हैं, वो अपनी स्थिति को भाँप गये हैं, संभवतः कल दो अँगुली दिखाने का मतलब दो उपवास हो सकता है इसलिए आज भी वो उठ नहीं रहे हैं और हम लोगों से बोल भी नहीं रहे थे, वो अपनी सल्लेखना स्वयं ही कर रहे थे क्योंकि परगण में नहीं जा पाये थे।

मध्याह्न ११:३० पर निरामयसागरजी ने स्वयंभू स्तोत्र सुनाया, फिर सामायिक शुरू हो गई, फिर सामायिक पाठ सुनाया। दोपहर में हल्की सी वैय्यावृत्त्य की कुछ महाराजों ने, तब मुनि श्री समतासागरजी ने आचार्यश्रीजी की शान्त मुद्रा को देखते हुए उनकी जागृति की परीक्षा की, जो भी पूछा सभी के उत्तर में सिर हिला मना करते रहे, यह मुनि श्रीजी ने अपने लेख में लिखा है, हम सभी गुरुजी की जागृति एवं उपयोग को आत्मस्थ देख प्रसन्न हुए।

ब्रह्मचारी मनीष भैया पूर्णायु जबलपुर से आया, उसने नमोऽस्तु किया तो आवाज को पहचानते हुए आँख खोली आशीर्वाद दिया, समतासागरजी ने कुण्डलपुर के बड़े बाबा के चरणों में लगाये गये पवित्र घी को जैसे ही गुरुदेव को लगाते हुए बताया और बड़े बाबा की जय बोली तो आचार्यश्रीजी के मुख पर थोड़ी प्रसन्नता आ गई एवं हाथ जोड़कर नमोऽस्तु किया। सन् १९७६ से अन्त समय तक बड़े बाबा की भक्ति करते रहे। बराबर आत्मा-परमात्मा का ध्यान करते रहे।

तभी हम सभी ने विचार-विमर्श किया कि जिस उद्देश्य से लाए थे उसमें सफलता नहीं मिली, स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हुआ, अतः वापस चन्द्रगिरि चलते हैं और ४ बजे वापस डोंगरगढ़ के लिए विहार कर दिया। डोली को हम और ब्रह्मचारी लोग उठाते हुए, बीच-बीच में मुनि श्री महासागरजी, निष्कम्पसागरजी, ऐलक निश्चयसागरजी भी उठा रहे थे। साथ ही कुछ श्रावक श्रेष्ठी भी सौभाग्य पा रहे थे, अशोकजी पाटनी किशनगढ़, राजाभाई सूरत आदि।

जैसे ही चन्द्रगिरि तीर्थ के अतिथि भवन के कक्ष नं. १ में गुरुदेव को पाटे पर विराजमान किया, आचार्यश्री जी ने आँखें खोलकर देखा, तभी बड़े निर्यापक योगसागरजी ने कहा—आचार्य महाराज अपन वापस चन्द्रगिरि आ गये हैं, सुनकर आचार्यश्रीजी ने प्रसन्नता व्यक्त की और धीरे से हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया।

मुनिराजों ने प्रतिक्रमण सुनाया, गुरुदेव बीच-बीच में बोलते जाते थे हाथ जोड़ते थे। फिर आचार्यभक्ति की गई किन्तु अन्त में आशीर्वाद नहीं दिया वो तो आत्मध्यान में लीन रहे। थोड़ी सी कोमल वैय्यावृत्त्य की गई। फिर समय पर

निरामयसागरजी ने स्वयंभू स्तोत्र सुनाया, फिर सामायिक प्रारम्भ हो गई।

हम सामायिक के बाद गये तो ज्ञात हुआ कि १०-१५ बार मुँह एवं नाक से काला, पीला पित्त सा निकला है। तब वैद्य स्वप्निल सिंघई एवं गौरव शाह से जानकारी ली तो बोले—गॉल ब्लेडर फट गया है, तो पित्त बह रहा है, यह क्रिटीकल स्थिति है, यदि रात निकल गई तो फिर अच्छा रहेगा।

रात में ९ बजे से णमोकार मंत्र सुनाना शुरू कर दिया गया, १२ बजे रात में डॉ. सौरभ जैन (एम.डी.) भाग्योदय को अन्दर बुलाया, उन्होंने देखा पैर की नाड़ी, हाथ की नाड़ी तो बहुत मन्द पड़ चुकी है, मस्तिष्क की नाड़ी चल रही है। बोले ज्यादा समय नहीं है। यह सुनते ही हम सभी ने विचार किया योगसागरजी को बताया जाये और बाजू वाले कक्ष में चले गये। वहाँ पर हम, निर्यापक श्रमण श्री योगसागरजी महाराज को बुलाकर लाये, तब मुनि श्री निरामयसागरजी, मुनि श्री चन्द्रप्रभसागरजी, मुनि श्री निस्सीमसागरजी एवं ऐलक निश्चयसागर की महाराज गुरुदेव की सेवा में रहे, निर्यापक श्री प्रसादसागरजी महाराज कक्ष से आ नहीं पाये थे, उस वक्त हम शेष साधु विचार-विमर्श करने लगे, मुनि श्री महासागरजी ने विनम्र निवेदन किया की महाराज श्री डॉक्टर और वैद्यों के अनुसार आचार्यश्री की स्थिति नाजुक है, प्रातःकाल हो पाना मुश्किल है। अतः जनता को बताना चाहिए कि आचार्यश्री की समाधि चल रही है। तब योग सागरजी महाराज बोले—अभी नहीं समय पर बताऊँगा। पूज्यसागरजी बोले—महाराजश्री जी अभी बताना उचित है अभी आचार्यश्री जी हैं। निष्कम्पसागरजी बोले—जनता को बताना पड़ेगा, कि आचार्यश्री जी पूर्णतः जागृत हैं, उनकी दो उपवास, एक जलोपवास पूर्वक समाधि हुई है। तब निर्यापक श्री समतासागरजी बोले—दरअसल बात यह है कि आचार्यश्री की चर्या-क्रिया आगमानुसार रही है, यह बालवृद्ध सभी जानते हैं, यहाँ तक कि अजैन विद्वान् भी जानते हैं कि आचार्य विद्यासागर जैन आगमोक्त मान्य आचार्य हैं। ऐसे में लोगों को जब यह समाचार मिलेगा कि उनकी समाधि हो गई तो सभी को खेद होगा कि वो सल्लेखना के बिना ही समाधिस्थ हो गये इसलिए हम सभी का विचार है कि आप बताएँ कि किस प्रकार आचार्यश्री की सल्लेखना चल रही है। तब हमने निवेदन किया पूज्य श्री

क्षपकराज गुरुदेव को णमोकार मंत्र सुनाते हुए संघस्थ मुनि गण

प्रामाणिकता की बात है, तब निर्यापक मुनि श्री योगसागरजी बोले अभी नहीं बोलूँगा क्योंकि हमको आचार्यश्री जी ने मौन रखने का संकल्प दिलाया है। उचित समय पर मैं सारी बातें जनता के समक्ष रखूँगा। आचार्यश्रीजी ने आगम के अनुसार सब कुछ त्याग कर सल्लेखना पूर्वक समाधि ली है और मेरी बात की प्रामाणिकता के लिए ये दो साधु हैं, एक मुनि निस्सीमसागरजी और दूसरे ऐलक धैर्यसागरजी, बाद में मुनि पूज्यसागरजी भी आ गये थे। गुरु जी ९ फरवरी को हमको सब कह चुके हैं। जैसा होना चाहिए वैसा आचार्य महाराज कर रहे हैं। बस आप सबको इतना ही कहना चाहता हूँ कि अपने गुरु पर श्रद्धान मजबूत रखो वो पूरी तरह से सावधान हैं बस!, तभी हम सभी ने कहा—इतना ही कह दो जनता के नाम पर एक शुभ संदेश, तो बोले नहीं कहूँगा, उचित समय पर ही कहूँगा, चलो आचार्य महाराज के पास।

हम सभी आचार्य महाराज के पास पहुँच गये। कुछ सम्बोधन मुनि श्री प्रसादसागरजी ने, मुनि श्री महासागरजी ने, मुनि श्री योगसागरजी ने मुनि श्री पूज्यसागरजी ने किया, फिर हम सभी ने क्षमायाचना की, उसी समय समतासागरजी निर्यापक श्री ने कहा—आचार्यश्री जी आप तो जागृत हैं, आप तो ज्ञायक स्वभाव में लीन हैं किन्तु हम लोगों के लिए कोई संकेत इतना बोला ही था कि आचार्यश्री जी ने दाएँ हाथ की ३ अंगुलियों को हिलाकर दिखाया। जो वीडियो में भी आ गया। लोगों ने देखा।

हम सभी पहले णमोकार महामंत्र सुनाते रहे, फिर ओंकाराय नमो नमः सुनाने लगे। फिर नमः सिद्धेभ्यः सुनाते रहे और अन्त में ॐ – ॐ – ॐ सुनाते रहे।

रात्रि २:१५ पर दूर–दराज स्थित मुनि संघों व आर्यिका संघों को ब्रह्मचारियों के माध्यम से समाचार दिए गए, उनको दर्शन कराए गए, सभी ने नमोऽस्तु कर क्षमायाचना की। हम सभी मंत्रों का धीरे–धीरे उच्चारण करते रहे। रात्रि २:२० पर क्षपकराज गुरुदेव की श्वास खिंचने लगी, जिसको उल्टी श्वास कहते हैं, जैसे ही श्वास रुकी तत्काल मुनि

श्री चन्द्रप्रभसागरजी ने मुझसे कहा–धैर्यसागर! समय, हमने बाजू में खड़े राजाभाई को पूछा–उन्होंने बताया २:३५। इस तरह क्षपकराज गुरु महाराज एक जलोपवास, दो निर्जल उपवास करके यम सल्लेखना पूर्वक आत्म-समाधि में लीन हो, मोक्ष की महायात्रा पर निर्गमन कर गये। अंतिम श्वासें लेते गुरुदेव के दर्शन करते हुए ब्रह्मचारी एवं श्रेष्ठी वर्ग ने भी क्षमायाचना की। अंतर्यात्री लोकोत्तर महापुरुष की महायात्रा गमन तिथि-वी. नि. सं. २५५० माघ सुदी नवमी दिनांक १७ फरवरी, ईस्वी सन् २०२४ इस युग के लिए स्मृति विशेष प्रेरणादायी बन गईं।

- **अंतिम षोडश पृष्ठ : महायात्री को विदाई दी न जा सकी–**

१७ फरवरी, २०२४ की रात्रि २:३५ के बाद की स्थिति अनिर्वचनीय है। ब्रह्मचारी भाइयों ब्रह्मचारिणी बहनों, क्षेत्र पर उपस्थित गुरु भक्तों के प्रशस्त राग के त्रिवेणी भक्ति संगम के प्रवाह को देखते हुए लगा कि ये महायात्री को विदाई देने को राजी नहीं है। जैसे-जैसे समय का प्रवाह आगे बढ़ता गया, प्रातः होते-होते तो गुरु भक्तों का अथाह प्रवाह हो गया।

१८ फरवरी को प्रातःकाल ७.३० बजे निर्यापक मुनि श्री सम्भवसागरजी मुनि श्री नीरजसागरजी, मुनि श्री निरोगसागरजी, थोड़ी देर बाद निर्यापक मुनि श्री अभयसागरजी मुनि श्री निरीहसागरजी और दोनों संघों के १८ क्षुल्लक महाराज सभी आ गये और अपने हीन पुण्य के कारण एवं गुरुदर्शन न हो पाने का मलाल उन्हें शालता रहा। उनकी पीड़ा को शब्दों में दे पाना किसमें शक्ति है। साक्षात् बृहस्पति भी असमर्थ हो सकता है। गुरु की पवित्र पार्थिव काया के समक्ष बैठकर सभी अन्तरंग वार्तालाप करते रहे। कोई भी गुरु जी को विदाई देने को तैयार नहीं था, उनके उमड़ते-घुमड़ते भावों की सरिता इतनी लम्बी हो चली थी कि मानो गुरु जहाँ पर हों वहाँ चरणों को पखार रही होगी।

रात्रि २:३५ पर देश भर में इंटरनेट बड़ी रफ्तार से व्यस्त हो गया। क्षेत्र पर पूर्व से प्रवासरत एवं चारों तरफ से आए

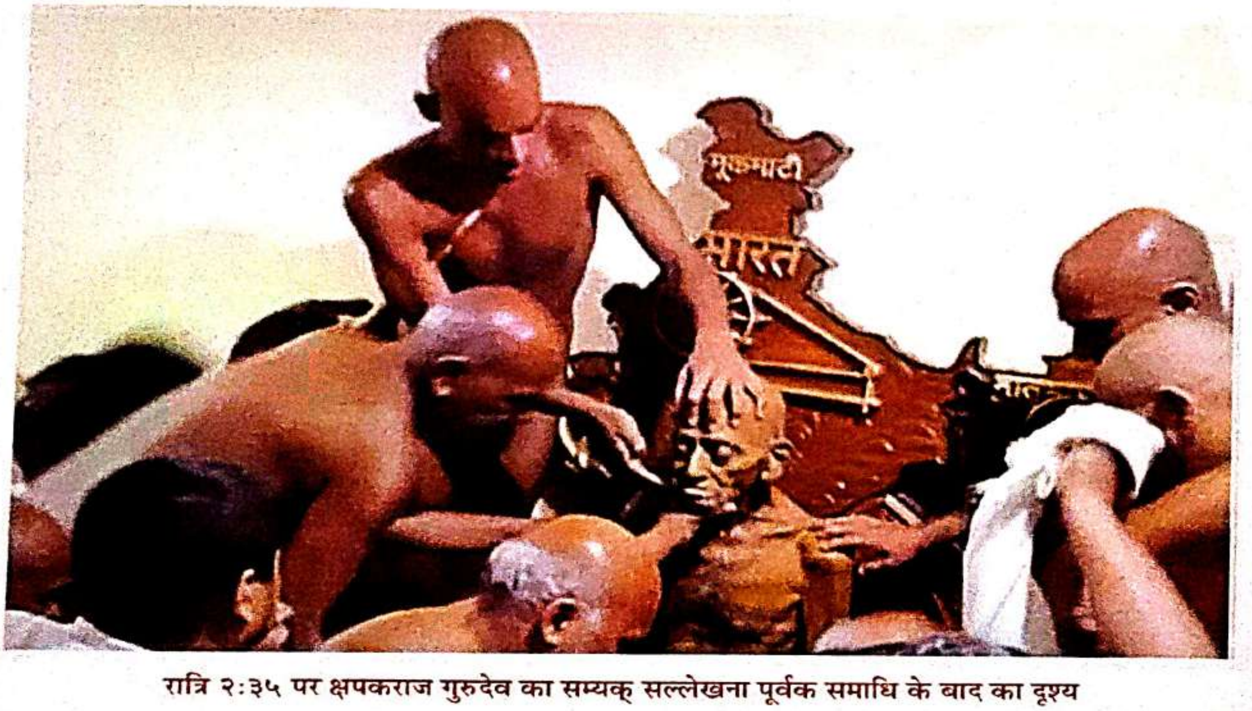


रात्रि २:३५ पर क्षपकराज गुरुदेव का सम्यक् सल्लेखना पूर्वक समाधि के बाद का दृश्य

आचार्यश्री के हजारों ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी शिष्य-शिष्याओं के भावों के उद्रेक से सभी भाव विह्वल हो उठे। सभी के जज्बात प्रकट हो रहे थे, गुरुजी जल्दी चले गये। कोई भी गुरुजी को विदाई देने को तैयार नहीं था।

कमेटी एवं उपस्थित श्रेष्ठियों के पास चारों तरफ से समाचार आ रहे थे, महायात्रा दोपहर में रखे, हम लोगों को भी अन्तिम दर्शन मिल जाएँ, तब उन सबने निर्णय लिया कि दोपहर १ बजे महायात्रा अंतिम यात्रा निकाली जाएगी। इस समाचार को पाकर भक्तों की भीड़ उमड़ते-उमड़ते कई हजार पार कर गई, प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया ५० हजार से ऊपर हैं। मध्यप्रदेश सरकार ने पूरे दिन का अवकाश घोषित कर दिया था एवं छत्तीसगढ़ सरकार ने आधे दिन का अवकाश घोषित किया था। इस कारण से जैन-अजैन जो भक्त थे, आना चाहते थे वो जैसे बने वैसे भागे आये। ३-४ किलोमीटर तक वाहन खड़े करने को जगह नहीं। प्रशासन व्यवस्था में लगा रहा।

१ बजे कमेटी ने मुनि संघ को बुलाया, गुरु काया को विमान में-पालकी में विराजमान किया गया। तब विमान जी को उठाने की होड़ ने नियंत्रण खो गया। अनियंत्रित भीड़ ने व्यवस्था को विवशता में परिवर्तित कर दिया, किसको क्या कहें सभी के प्राणों के देवता गुरुवर का वियोग जो हो गया, भीगे भावों से अश्रुपूरित भक्तों के कांधों पर जैसे ही गुरुकाया को लेकर विमान जी आगे बढ़ा तो प्रशस्तराग ने हम साधुओ की आँखों को भी नम कर दिया।

जैसे-तैसे विमान संस्कार स्थल तक पहुँचा तो प्रतिभास्थली की छात्राएँ अपने प्यारे गुरु को देख भाव विह्वल हो उठीं, उनके कोमल पवित्र भाव सुमनांजलि के अर्घ्य समर्पित होते रहे। मुनिसंघ ने अग्निसंस्कार स्थल पर पूर्वाचार्यों के अनुसार बताया गया आवश्यक भक्ति पाठ किया गया और नमन कर ३ परिक्रमा लगाकर आ गये। फिर मध्यप्रदेश सरकार के एवं छत्तीसगढ़ सरकार के मंत्री जी एवं पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी (छत्तीसगढ़) की उपस्थिति में ब्रह्मचारी विनय, ब्र. अशोक, ब्र. अनिल, ब्र. अभय, ब्र. नितिन, ब्र. धीरज आदि ने विधि-विधानपूर्वक श्रेष्ठी अशोक जी पाटनी, प्रभात जी मुम्बई, राजाभाई, विनोद जी बड़जात्या, विनोद जी कोयला के द्वारा अंतिम संस्कार कराया गया।

भारी मन भारी पैरों से लौटते नहीं बन रहा था। जनसैलाब और उनकी भक्ति का सौन्दर्य देख गुरु जी का ९ फरवरी को कहा हुआ वाक्य स्मृति में गूँजने लगा ''जब तक समाधि-चल रही है, तब तक जो बताया है वह किसी को नहीं कहोगे, किसी को नहीं बताना, कायोत्सर्ग कर लो'' इस बात का रहस्य आज प्रकट हो गया कि यदि गुरु जी के जीवित रहते भक्तों को पता चलता तो वो जो स्थिति बनाते वह गुरुजी को बाधा पहुँचा देती। वो एकान्त में निजानुभूति करते हुए ज्ञायक स्वभाव में रहते हुए, आत्मा परमात्मा को देखते हुए, इस नश्वर काया के पिंजड़े को छोड़कर महायात्रा पर जाना चाहते थे। वो नहीं चाहते थे कि कोई मेरी महायात्रा के अवसर पर आँसू बहाये। जो जीवन भर सबको प्रसन्नता-खुशियाँ लुटाते रहे, वो कैसे किसी को रुलाते।

पूरे देश दुनिया ने जब टी. व्ही. और वाट्स एप, यू ट्यूब चैनलों पर देखा कि युग महापुरुष गरीबों का मसीहा, भारतीय संस्कृति की पैरवी कर्ता सन्त, एक लाख से अधिक गौवंश की रक्षा करने वाला भगवान, भारत राष्ट्र की एकता प्रदान करने वाली हिन्दी भाषा का गौरव बढ़ाने वाले साहित्यकार, शिक्षाक्षेत्र के अभिनव शिक्षाविद् आचार्य श्री विद्यासागरजी हम सबके बीच से मोक्ष की ओर विहार कर गये, तब पूरे देश में आचार्यश्री के प्रति श्रद्धांजलियाँ प्रकट की जाने लगी। दिल्ली में सर्वप्रथम भारतीय जनता पार्टी के अधिवेशन में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रमोदी जी ने, गृहमंत्री अमितशाहजी ने, रक्षामंत्री राजनाथसिंहजी ने, बी.जे.पी. के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी.नड्डाजी ने भावभीनी

श्रद्धांजली अर्पित की। कर्नाटक विधान सभा के अध्यक्ष ने विधान सभा में शोक संदेश पढ़कर श्रद्धांजलि दी। वाट्सएप पर अनेक प्रमुख लोगों की श्रद्धांजलियाँ प्रस्तुत की गईं।

२१ फरवरी, २०२४ को माननीय प्रधानमंत्रीजी ने एक बड़ा लेख लिखा जो भारत के प्रत्येक प्रदेश के मुख्य अखबारों में सम्पादकीय पृष्ठ पर उनकी भाषा में छपा। जिसको पढ़कर पूरा देश भाव विह्वल हो उठा।

उसके बाद पूरे देश में गाँव, नगर, शहरों में जैन समाज ने एवं कुछ स्थानों पर वैष्णव, ब्राह्मण, सिख, सिन्धी, मुस्लिम समाज के लोगों ने सामूहिक रूप से श्रद्धांजलि सभायें आयोजित की। सभी के समाचारों से देशभर के अखबार भर गये। तब अनुभव हुआ कि यदि गुरुदेव का आयुकर्म एवं असाता कर्म पाँच से दस वर्ष का समय और दे देता तो देश, समाज, धर्म को बहुत कुछ मिलता। ऐसे धरती के देवता को कौन विदाई देना चाहता है, वो भले आँखों से ओझल हो गये हों किन्तु उनकी ज्ञान ज्योति जन-जन के हृदय में प्रज्वलित रहेगी उनकी प्रेरणा रोशनी सबकी आँखों में प्रकाश देती रहेगी, उनकी प्रवचन-निर्देश-आज्ञारूपी ऊर्जा सबके जीवन में उत्साह भरती रहेगी। वो जाकर भी, कहीं जा नहीं पायेंगे वो प्रत्येक शिष्य के, प्रत्येक भक्त के जीवन में घुल मिल गये। अंतिम भावना है कि सदा उनका और उनसा बना रहूँ।

## १८ फरवरी के अंतिम यात्रा के दृश्य

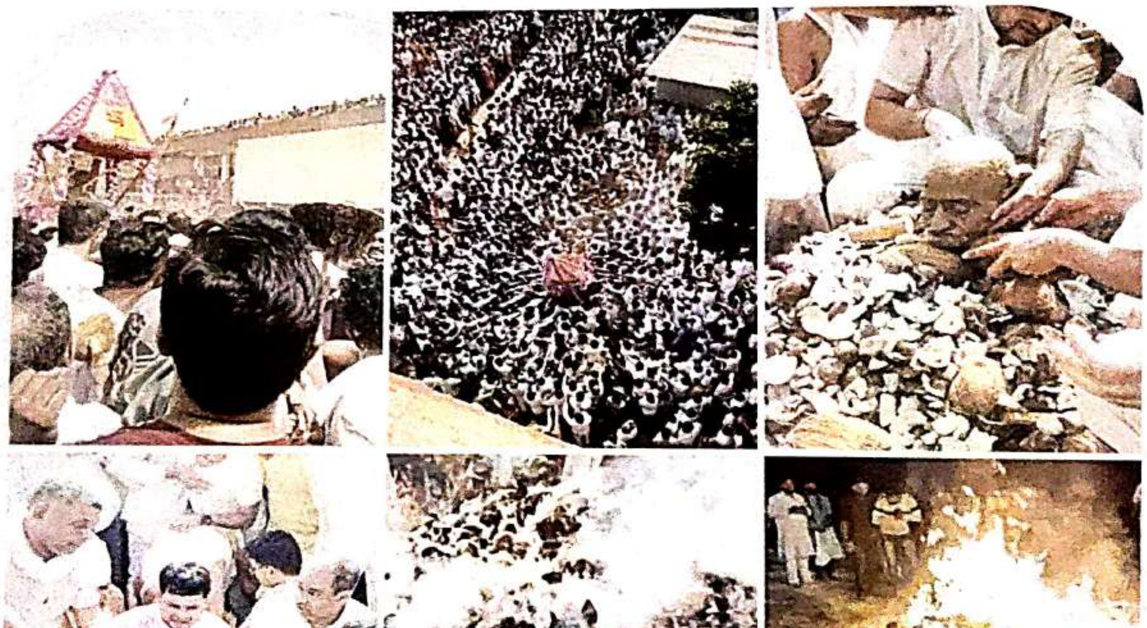

## आचार्यश्री जी के वात्सल्य और जागृति को प्रणाम

**यह लेख आध्यात्मिक महत्त्व को दर्शाता है। सन् १९८३ में मुनि दीक्षा प्राप्त करने वाले निर्यापक श्रमण श्री समतासागरजी मुनिराज ने इस अनुभव को शब्दों में पिरोया है। आप एक अच्छे चिन्तक हैं, एक अच्छे लेखक एवं कवि हृदय के साथ-साथ एक अच्छे प्रवचनकार भी हैं। आप १६ फरवरी, २०२४ को मध्याह्न १२:२० बजे गुरु के पास पहुँचने वाले सौभाग्यशाली हैं। आपके साथ मुनि श्री महासागरजी, मुनि श्री निष्कम्पसागरजी एवं ऐलक श्री निश्चयसागरजी भी अपने पावन पुण्य का अनुभव कर रहे थे। सभी के मन में गुरु के स्वास्थ्य को लेकर स्वाभाविक चिंता थी, जो उनके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी। आचार्यश्री जी के पास पहुँचने का यह क्षण उनके लिए अत्यन्त सौभाग्यशाली और प्रेरणादायक था। यह अनुभव न केवल आध्यात्मिक उन्नति का प्रतीक था, बल्कि गुरु-शिष्य परम्परा की गहराई को भी दर्शाता है। निर्यापक श्रमणजी ने इस पावन अवसर को संक्षिप्त शब्दों में साझा किया है, जो उनके अंदर की भावनाओं और गुरु के प्रति उनकी असीम श्रद्धा को प्रकट करता है।**

निर्यापक श्रमण तपस्वी मुनिराज श्री योगसागरजी महाराज का संदेश प्राप्त कर हमारे साथ मुनि श्री महासागरजी, मुनि श्री निष्कम्पसागरजी एवं ऐलक निश्चयसागरजी दिनांक १६ फरवरी २०२४ को चन्द्रगिरि क्षेत्र पर आहार चर्या सम्पन्न होने के बाद, विहार कर करीब १२:२० बजे फार्म हाऊस पहुँच गए थे। एक कक्ष में विराजमान जिनेन्द्र भगवान की वन्दना कर हम चारों वहीं पर सामायिक में बैठ गए। सामायिक के पश्चात् निर्यापक श्रमण श्री योगसागरजी आदि सभी मुनिराजों से वन्दना-प्रतिवन्दना हुई, सभी मुनिराज हम लोगों को गुरु महाराज के पास ले गए। उस समय आचार्य गुरुदेव दीवार की ओर मुँह करके शांत भाव से लेटे हुए थे। हम लोगों ने बैठकर वन्दना की तभी मुनि श्री प्रसादसागरजी ने बड़े उत्साह के साथ गुरुदेव से कहा–आचार्यश्रीजी निर्यापक श्रमण समतासागरजी महाराज, मुनि श्री महासागरजी महाराज, मुनि श्री निष्कम्पसागरजी महाराज, ऐलक निश्चयसागरजी आपकी वन्दना करने आए हैं, इतना सुनते ही आचार्यश्री अपने आप उठकर बैठ गए एवं हम चारों को अच्छे से देखने के लिए उन्होंने अपनी हथेली को माथे पर लगाकर हम चारों को बड़े गौर से, बड़े ध्यान से देखा, मुस्कराए, हम लोगों ने नमोऽस्तु बोला तो आशीर्वाद दिया। फिर लिटा देने का इशारा किया, तो हम लोगों ने पिच्छी से परिमार्जन कर उन्हें लिटा दिया। आशीर्वाद पाकर हम लोगों का जीवन धन्य हो गया। उनके चरणों में रखा माथा, रखा ही रह गया, जब तक की मोक्ष प्राप्त नहीं होता। हम चारों ही गुरुदेव की वैय्यावृत्त्य करने में लीन हो गए।

१७ फरवरी, २०२४ को मध्याह्न में हम और पूज्यसागरजी गुरुदेव की वैय्यावृत्त्य कर रहे थे, उस समय गुरुदेव की अन्तरंग स्थिति समझने के लिए मैंने गुरुदेव से पूछा–आचार्यश्री जी क्या आपको गर्मी लग रही है? तो आचार्यश्री ने सिर हिलाकर मना कर दिया, मैंने पुनः पूछा–आचार्यश्री आपको सर्दी लग रही है क्या? तो उन्होंने पुनः सिर हिलाकर मना कर दिया, पुनः तीसरी बार हमने पूछा–आचार्यश्री क्या आपको कोई बेचेनी हो रही है? तब आचार्यश्री

जी ने अपने दोनों हाथ जोड़ते हुए ऊपर उठाकर बार-बार नमस्कार जैसा भाव प्रकट किया। तब हम लोगों को गुरुदेव की जागृति देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। शरीर में अत्यधिक दाह और वेदना होने के बावजूद भी वो समता से सहन कर रहे थे। उनका जीवन भर भेदविज्ञान का चिन्तन अन्त समय में काम आया। पूछने पर भी वेदना को नहीं बताया, उनका उपयोग उसमें नहीं था। उपयोग में तो आत्मा-परमात्मा का ध्यान था, यही कारण है कि उन्होंने हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

१७ फरवरी दोपहर में ब्रह्मचारी मनीष पूर्णायु जबलपुर से आया तो मुनि पूज्यसागरजी ने उसे आचार्यश्री के समक्ष लाकर आशीर्वाद दिलवाया और बोले—आचार्यश्री जी बड़े बाबा के चरणों का घी आया है, तो हमने लेकर आचार्यश्री के मस्तक पर लगाया और कुण्डलपुर के बड़े बाबा की जय बोली तो आचार्यश्री प्रसन्न हुए, हाथ जोड़कर नमोऽस्तु किया।

इसी अंतिम दिन शाम की सामायिक के बाद रात्रि ९ बजे के बाद मैं गुरुदेव की वैय्यावृत्त्य में तत्पर था, तब मैंने अपनी जपमाला आचार्यश्री जी की अँगुलियों में लगा दी, आचार्यश्री जी उस स्पर्श को पहचान गये और धीरे-धीरे उनका उपयोग पंचनमस्कार महामंत्र णमोकार मन्त्र को जपने लगा, गुरिया खिसकने लगे, यह देख हम लोग जो उस समय उपस्थित थे, सभी प्रसन्न हुए कि इतनी अधिक वेदना के होने पर भी गुरु जी का उपयोग अपनी आत्मा-परमात्मा में जागृत है। चेतना पूर्णतः सावधान थी।

अंतिम दिन का अंतिम अवसर था, जब पूरा संघ गुरु चरणों के समीप णमोकार महामंत्र का बड़े ही मधुर ध्वनि में पाठ सुना रहे थे, तभी हमने सभी को रोका और गुरुजी से निवेदन किया गुरुदेव! आपका उत्तराधिकार बहुत अच्छे से चलेगा, आप निश्चिंत रहें, जो आपने आदेश दिए हैं, संघ के ज्येष्ठ निर्यापक मुनि श्री योगसागरजी महाराज को संघ का साक्षी में जो भी निर्देश, आदेश दिए हैं, उसका अक्षरशः पालन सम्पूर्ण संघ करेगा। वह हम सभी को मान्य है।

अन्यत्र जहाँ-जहाँ भी संघ हैं, सभी संघों की ओर से आपको नमोऽस्तु और क्षमायाचना के समाचार आपके चरणों में आए हैं। ज्येष्ठ श्रेष्ठ निर्यापक मुनि श्री समयसागरजी महाराज आदि सभी निर्यापक, सभी मुनि, सभी आर्यिकाएँ, सभी ऐलक-क्षुल्लक, सभी त्यागी व्रती भाई-बहनों की ओर से आपको नमोऽस्तु और क्षमा याचना करते हैं। आप उत्कृष्ट क्षपकराज हैं। आपकी साधना पर हम सभी को गर्व है, गौरव है।

हे गुरुदेव! आप तो अन्तरंग से जागृत हैं ही, आप तो चैतन्य अवस्था में हो ही, हम लोग इतना ही बोल पाये और आचार्यश्री जी ने ३ बार-ओम्-ओम्-ओम् बोलकर हाथ की अँगुलियाँ हिलाकर अपनी जागृति का, अपनी सावधानी का परिचय दिया।

धन्य हैं गुरुदेव! जिन्होंने अन्त समय तक आत्म-जागृति के साथ इस नश्वर शरीर का परित्याग किया और हम शिष्यों को ही नहीं वरन् सम्पूर्ण मानव जाति को जीना भी मरना भी सिखा दिया। बस यही कामना करते हैं कि जिस तरह गुरु ने एकान्त में पूर्णतः जागृत भाव से देह का विसर्जन किया, ऐसे ही हम भी करें, भावनापूर्ण हो इस भाव से-गुरु के पावन पवित्र चरणों में नमोऽस्तु करता हूँ।

❑❑❑

## महायात्री के चरणनिश्रा में खो जाना चाहता-तड़फता पंछी

यह लेख मुनि श्री निष्कम्पसागरजी द्वारा लिखा गया है, जो गुरुदेव के प्रति गहरी श्रद्धा और समर्पण का प्रतीक है। मुनिश्री ने सन् २०१३ में आचार्यश्री जी से दिगम्बर मुनि दीक्षा ग्रहण की, जो उनके आध्यात्मिक मार्ग में एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव था। इसके बाद उन्होंने सन् २०२२ और २०२३ में निर्यापक श्रमण समतासागरजी के संघ में साधना की। इस दौरान वे उनके साथ विहार करते रहे और उनका अनुभव मात्र साधना तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने १६ फरवरी, २०२३ को गुरुचरणों की सन्निधि में उपस्थित होकर गुरु-सेवा का पुण्यार्जन भी किया। इस लेख में मुनिश्री द्वारा अनुभवित आध्यात्मिकता, गुरु की साधना के गूढ़ रहस्यों का अनूठा वर्णन प्रस्तुत है, जो पाठकों को एक नई दृष्टि और प्रेरणा प्रदान करेगा। यही अनुभव यहाँ शब्दों में पिरोये हुए हैं, जो आपके सामने प्रस्तुत है।

कुण्डलपुर महोत्सव से चले तो एक ही भाव अंतरंग में हिलोरें मार रहा था, आत्मा का हर प्रदेश बस एक ही गान गुनगुना रहा था, हृदय की पीड़ा गुरु चरणों से दूर होने के गम में बस इतना कह रही थी कि बड़े बाबा के द्वार से बिछड़े उनके ही दरबार में मिलेंगे...।

**पर किसे पता था मन के ये उद्गार शायद अधूरे ही रह जायेंगे।**
**बड़े बाबा के द्वार से बिछड़ने के बाद गुरुदेव को हम इस तरह पाएँगे ॥**

उनकी आज्ञा और आशीष से बढ़कर इस निष्कम्प मन ने आज तक कुछ भी न उच्चारा, उन्होंने जो कहा, जब कहा और जैसा कहा मेरे लिए वही महामंत्र हो गया। कुण्डलपुर महोत्सव के समय उनकी क्षीण होती काया और उनकी स्थिति देखकर उनको एक पल छोड़ने का मन न मेरा था और न किसी और शिष्य का परन्तु उनकी आज्ञा से बड़ा क्या? इस वर्ष उनकी आज्ञा से कटनी चातुर्मास चल रहा था, तन तो भले कटनी में रहा हो, पर मन हर समय गुरु-चरणों में चन्द्रगिरि में ही रहा, जब सुनता कि आज उनका स्वास्थ्य थोड़ा-सा नरम-गरम है तो मन में सिहरन सी उठने लगती, लगता कि कब उनके चरणों में पहुँच जाऊँ परन्तु आज्ञा की डोर में बंधा शिष्य भले ही निर्बंध होना चाहता हो परन्तु इस प्रक्रिया में गुरु की आज्ञा ही बंध से निर्बंध की यात्रा में नितान्त आवश्यक है।

पहली बार इतने वर्षों के बाद उस आज्ञा रूपी उस प्रक्रिया से बाहर आने का मानस बनाया, यद्यपि उनकी ही आज्ञा से शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखरजी की यात्रा का आशीष प्राप्त हुआ था, मन तो कह रहा था चलते-फिरते ईश्वर की ओर अपने कदम को बढ़ाऊँ और सीधे चन्द्रगिरि चला जाऊँ परन्तु दुनिया में हर एक साधु और हर एक श्रावक जब शिखरजी का नाम सुनता है तो उसका उत्साह अनंत गुना हो जाता है फिर शिखरजी यात्रा की बात क्या की जाए वह तो अनिर्वचनीय है, तन ने भले कटनी से शिखरजी की यात्रा प्रारम्भ कर दी, पर मन ने तो मात्र गुरु चरणों की यात्रा पर चलने का विचार कर रखा था। इस बार युद्ध तन और मन दोनों के बीच चल रहा था कि यात्रा कहाँ की होगी?

कदम बढ़ते गए और मन भी, दोनों अपनी-अपनी यात्रा के लिए बढ़ रहे थे, चन्द्रगिरि से प्रतिदिन समाचार आते

थे, मन भावुक हो जाता था, तन उनकी आज्ञा पूरी करना चाहता था और मन उनके पास जाना चाहता था, एक रात्रि ज्ञात हुआ कि गुरुदेव का स्वास्थ्य चिंताजनक है। वे सोहलवें तीर्थंकर भगवन् के वर्ण में मिल जाना चाहते थे अर्थात् उनकी देह पीत होती जा रही थी। तब तन ने बगावत कर दी और अश्रु की धारा प्रवाहित हो गई। बेचारा मन करता भी क्या वह तो पहले ही उसी यात्रा का साथी था, दोनों ने संधि की और एक कठोर निर्णय लिया कि पहली बार गुरु की आज्ञा से इतर चलकर उन तक पहुँचना है। निष्कम्प मन को घड़ी की टिक-टिक भी और रात्रि का घोर अन्धकार भी पीड़ादायी हो रहा था कि कब यह प्रभात आए और ये कदम उन तक बढ़ें...।

प्रभात आयी कदम बढ़े, उन महामना की ओर...और बिना विश्राम के अथक-अरुक यात्रा उस महायात्री के सन्निकट पहुँच गई, जिसे छुई खदान कहते हैं। आने-जाने वाले, वहाँ रहने वाले, संघ के साधु, सभी एक ही बात कहते थे, गुरु जी बहुत अस्वस्थ हैं किन्तु उधर से एक संकेत मिल गया था, जो जहाँ है, वहीं रुक जाए। अब उन्हें ये बात कौन समझाए कि हम तो सिर्फ आपके चरणों में हैं मन से, न जाने कितने वर्षों से हैं, तो क्यों नहीं कह देते कि बस चरणों में रुक जाओ परन्तु पहले ही कहा है आज्ञा निर्बंध होने की प्रक्रिया में पहला बंधन है।

अब तो इतने करीब आकर उनसे पल-पल की दूरी तड़फन का कारण बन रही थी, मन नहीं माना उसने पुनः बगावत कर दी और चल दिए हम उस महायात्री के श्रीचरणों की ओर कदम दर कदम बढ़ाना, क्या था खुद से लड़ना ही चल रहा था, नेत्र सजल थे, अधर कंपित थे और हृदय अथाह दुख के सागर में था।

आज १६ फरवरी का दिन था और आज यात्रा पूरी होनी थी, उस महायात्री के दर्शन की, जैसे-तैसे आहार किए और सामायिक में उनको ही ध्याया और चल दिए....उस विराट व्यक्तित्व के श्री चरणों में।

जैसे किसी बड़े मेले में खोए हुए बच्चे को बड़ी पीड़ा के बाद माँ मिलती है तब उसका एहसास कैसा होता है? शायद तब मुझे भी वैसा ही लग रहा था। उनके श्री चरणों में पहुँचा तो देखा एक महायात्री संसार के सारे कार्यों से निवृत्त मात्र अपने आत्म-तत्त्व की जागृति में तल्लीन है, बाहर बड़ी शीतलता है परन्तु अंदर उस दिव्य नारायण के तेज के आगे सब कुछ निस्तेज लग रहा है, विश्राम अवस्था को प्राप्त उनकी देह से ये शब्द पहुँचे कि मुनि संघ दर्शनार्थ आया है तो इतनी अस्वस्थ्यता में जब मानव शरीर का एक अंग भी नहीं हिला पाता, वह महायात्री उठे, हाथ को आँखों पर लगाकर देखने का प्रयास किया और एक हाथ से भरपूर आशीष लुटाया, जैसे कह रहे हों, यही कार्य अब तुम लोगों को करना है और निर्लिप्त हो फिर उस आत्म-तत्त्व की गवेषणा में तल्लीन हो गए।

हम उस महायात्री के चरणों की निश्रा में खो जाना चाहते थे, तो एक पल के लिए भी उन्हें ना मन ने ना तन ने छोड़ने का विचार किया। ये नेत्र निष्कंपित होकर उन्हें देखते तो पाते एक गौरवर्णीय देह जिसने समूची मानवता को उस आत्म तत्त्व से परिचित कराया, वह आज उन सभी भौतिक बंधनों से दूर नेत्रों को मूँदकर मात्र उस परमात्मा रूपी आत्मा का दिग्दर्शन करा रही है।

मैं उन्हें अपलक देखता रहा कि कभी इन युग शिरोमणि गुरुदेव ने अपने स्वर्णिम ५० वर्षों में समाज को, संघ को, साहित्य को, धर्म को कितना दिया है, उसके बाद भी इन्हें किसी से इतनी सी भी अपेक्षा नहीं, मात्र एक ही भाव कि सबका कल्याण हो। इनमें कैसी निरीहता है, जो सब विषय-कषाय से ऊपर हो, मात्र स्वयं को पाने के लिए निकल पड़े।

मैंने निष्कंपित होकर उनके उस महान् पवित्र तन को स्पर्शित किया तो पाया यह तन मात्र तन नहीं है, ये तो वह

तन है जिसने साधना से इसे इतना शुचि बना लिया जैसे कोई तीर्थ होता है, अपनी साधना के काल के प्रारम्भ से ही उन्होंने कभी पाँचों इंद्रियों से दूर हटकर इस शरीर की सेवा सुश्रुषा नहीं की, जीवन भर भोग को नहीं योग को महत्त्व दिया, उनके उस क्षीण हो चुके इस देह से विदेही होने की अलग ही गंध मैंने महसूस की, कि ये महायात्री जिस महायात्रा के लिए निकले हैं, वह विदेही होने की यात्रा जल्द पूर्ण हो जायेगी।

मैं दिनभर देखता रहा बाहर होता भक्तों का कोलाहल और देखता रहा उनके अंदर का सन्नाटा जो दुनिया से दूर शान्ति से शान्ति की तलाश में फैल रहा था, मैं देखता कि वह पूर्ण चेतना के साथ निज आत्माराम से बातें कर रहे हैं। मैं देखता बीच-बीच में उनकी पूर्ण जागृति, जब कोई कहता गुरुदेव आप जागृत हैं, इशारा कीजिए तो उनकी अँगुली स्वयं हिल जाती और कह देते चिंता नहीं करना, मैं तुम सबसे दूर अभी मात्र अपनी आत्मा से बात कर रहा हूँ, पर तुम लोगों के बोल मुझे व्यवधान डाल रहे हैं।

मैंने उन्हें हर परिस्थिति में हर स्थिति में हर समय देखा वह पूर्ण जागृत थे और हमें भी जागृति का संकेत उपदेश और संदेश दे रहे थे। रात्रि का समय आया एक सूर्य चला गया प्रभात के इंतजार में एक सूर्य खोया है आत्म-विचार में, १७ फरवरी के प्रभात के साथ सूर्य नारायण धरातल पर आए, हम सभी ने चाहा कि गुरुदेव उठे और थोड़ा-सा अन्न जल लेकर हम सभी के नेत्रों को धन्य करें, हमारी थोड़ी सी सेवा स्वीकार करें, पर वह तो पक्के संकल्प के धनी, अंदर से कुछ और थाम कर बैठे थे इसलिए उन्होंने किसी के निवेदन को स्वीकार ही नहीं किया।

मैं देख रहा था उनकी निष्पृहता जैसी उनके गुरु ज्ञानसागरजी महाराज ने धारण की थी, वह भी अपने गुरु की तरह ही उस सल्लेखना को धारण कर मोक्ष की यात्रा करना चाहते थे, गुरुदेव की सल्लेखना के समय तो आपने अनुभव लिया था, अब आप अनुभवी बनकर जमाने को सिखा रहे थे कि अपना अंत समय इस तरह जीना की मरण भी जीने की कला बन जाए।

१७ की शाम आते-आते लगने लगा कि महायात्री अपनी यात्रा के इस पड़ाव से विदा लेने जा रहा है, हम सभी साधक उनके श्रीचरणों में एकत्रित होकर महामन्त्र का उच्चारण कर रहे हैं और उन समता के महा हिमालय, साधना के सुमेरु को पूर्ण जागृति के साथ विदा होते देख रहे हैं।

देख रहे हैं
एक यात्री महायात्रा पर निकला है
एक देही कैसे कुछ भव में विदेही बनेगा
एक आत्मा कैसे परमात्मा बनने के लिए अगले पड़ाव के लिए निकल गई है

वे महान् आत्मा महामना के हर कार्य अनियत थे, अंत कार्य भी उन्होंने अनियत किया, वह अध्यात्मयोगी भले ही तन से गए हों, लेकिन हम सब लोगों के मानसपटल से कभी नहीं जा सकते, उनके कार्य उनका अनुशासन चाहे

धर्म के लिए हो, चाहे राष्ट्र के लिए हो, चाहे संघ के लिए हो अनुकरणीय है।
शीघ्र ही वह तीर्थंकर बनेंगे और हम सभी लोग उनके समवसरण में रहेंगे।
देख रहे हैं भक्तों की भीड़
चंद्रगिरि में कुछ खोजने आई है।
पर किसे क्या मिला ये वही जाने

निष्कंपित मन
मुनि निष्कम्पसागर

## १६९ अखबारों में प्रधानमंत्री का संदेश।
## आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज को श्रद्धांजलि

यह लेख १९ फरवरी, २०२४ को भारत के १६९ अखबारों में एक साथ प्रकाशित हुआ था। यह एक ऐतिहासिक पहल थी, जहाँ एक ही दिन में भारत के विभिन्न हिस्सों और भाषाओं में प्रधानमंत्री का संदेश साझा किया गया। जिसमें प्रधानमंत्री ने आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के योगदान और उनके द्वारा दिए गए सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला। इस प्रकार की पहल का उद्देश्य लोगों को आचार्यश्री के जीवन और उनके विचारों से अवगत कराना और उन्हें राष्ट्रीय निर्माण के प्रति प्रेरित करना था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस लेख के माध्यम से आचार्यश्री की शिक्षाओं, उनके दृष्टिकोण और उनके राष्ट्र-निर्माण में योगदान को महत्त्व दिया, विशेष रूप से युवाओं और समाज के अन्य वर्गों को उनकी विचारधारा को अपनाने के लिए प्रेरित किया साथ ही राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समावेशिता को बढ़ावा दिया, ताकि विभिन्न भाषाओं और क्षेत्रों के लोग आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के योगदान को समझ सकें और उनके विचारों को आत्मसात कर सकें।

यह लेख हिंदी के १३४, अँग्रेजी के १३, उर्दू के २९, पंजाबी के ६, बांग्ला के १०, असमी के ७, नेपाली के २, उड़िया के १९, कन्नड़ के ७, तमिल के ४, तेलुगू के ७, मलयालम के ८, गुजराती के २६ और मराठी के २२ अखबारों में एक साथ १४ भाषाओं में प्रकाशित हुआ।

नवभारत टाइम्स, दिल्ली, २९ फरवरी, २०२४ में प्रकाशित

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज हमेशा स्वच्छ और स्वस्थ राजनीति के पैरोकार रहे

# लोकनीति लोभसंग्रह नहीं, लोकसंग्रह के लिए

नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री

**महाराज जी की जीवन ज्योति**

- आत्मबोध और लोकबोध, दोनों अहम है
- शब्दों और कर्मों की पवित्रता जरूरी है
- प्राचीन ज्ञान से जटिल समस्याओं के हल

**आचार्य जी से मिली प्रेरणा।**

**शिक्षा न्यायपूर्ण समाज का आधार।**

**प्रकृति के अनुरूप हो जीवनशैली।**

पिछले नवंबर में पीएम मोदी ने आचार्य विद्यासागर जी महाराज से मिलकर आशीर्वाद लिया था

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज हमेशा स्वच्छ और स्वस्थ राजनीति के पैरोकार रहे

# लोकनीति लोभसंग्रह नहीं, लोकसंग्रह के लिए

जीवन में हम बहुत कम ऐसे लोगों से मिलते हैं, जिनके निकट जाते ही मन-मस्तिष्क एक सकारात्मक ऊर्जा से भर जाता है। ऐसे व्यक्तियों का स्नेह, उनका आशीर्वाद, हमारी बहुत बड़ी पूँजी होता है।

संत शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज मेरे लिए ऐसे ही थे। उनके समीप अलौकिक आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होता था। आचार्य विद्यासागर जी जैसे संतों को देखकर अनुभव होता था कि कैसे भारत में अध्यात्म किसी अमर और अजस्र जलधारा के समान अविरल प्रवाहित होकर समाज का मंगल करता रहता है।

आचार्य जी से मिली प्रेरणा–

आज मुझे, उनसे हुई मुलाकातें, उनसे हुआ संवाद, बार-बार याद आ रहा है। पिछले साल नवंबर में छत्तीसगढ़ में डोंगरगढ़ के चंद्रगिरि जैन मंदिर में उनके दर्शन करने जाना मेरे लिए परम सौभाग्य की बात थी तब मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि आचार्य जी से मेरी यह आखिरी मुलाकात होगी। वह पल मेरे लिए अविस्मरणीय बन गया है। इस दौरान उन्होंने काफी देर तक मुझसे बातें कीं। उन्होंने पितातुल्य भाव से मेरा ख्याल रखा और देशसेवा में किए जा रहे प्रयासों के लिए मुझे आशीर्वाद भी दिया। देश के विकास और विश्व मंच पर भारत को मिल रहे सम्मान पर उन्होंने प्रसन्नता भी व्यक्त की थी। अपने कार्यों की चर्चा करते हुए वह काफी उत्साहित थे। इस दौरान उनकी सौम्य दृष्टि और दिव्य मुस्कान प्रेरित करने वाली थी। उनका आशीर्वाद आनंद से भर देने वाला था, जो हमारे अंतर्मन के साथ-साथ पूरे वातावरण में उनकी दिव्य उपस्थिति का अहसास करा रहा था। उनका जाना उस अद्भुत मार्गदर्शक को खोने के समान है, जिन्होंने मेरा और अनगिनत लोगों का मार्ग निरंतर प्रशस्त किया है।

भारतवर्ष की ये विशेषता रही है कि यहाँ की पावन धरती ने निरंतर ऐसी महान् विभूतियों को जन्म दिया है, जिन्होंने लोगों को दिशा दिखाने के साथ-साथ समाज को भी बेहतर बनाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। संतों और समाज सुधार की इस महान् परम्परा में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी का प्रमुख स्थान है। उन्होंने वर्तमान के साथ ही भविष्य के लिए भी एक नई राह दिखाई है।

महाराज जी की जीवन ज्योति–

- आत्मबोध और लोकबोध, दोनों अहम् हैं
- शब्दों और कर्मों की पवित्रता जरूरी है
- प्राचीन ज्ञान से जटिल समस्याओं के हल

उनका सम्पूर्ण जीवन आध्यात्मिक प्रेरणा से भरा रहा। उनके जीवन का हर अध्याय, अद्भुत ज्ञान, असीम करुणा और मानवता के उत्थान के लिए अटूट प्रतिबद्धता से सुशोभित है।

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज जी सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यक्चारित्र की त्रिवेणी थे। उनके व्यक्तित्व की सबसे विशेष बात ये थी कि उनका सम्यग्दर्शन जितना आत्मबोध लिए था, उतना ही सशक्त उनका लोक बोध भी था। उनका सम्यग्ज्ञान जितना धर्म को लेकर था, उतना ही उनका चिंतन लोक विज्ञान के लिए भी रहता था।

करुणा, सेवा और तपस्या से परिपूर्ण आचार्य जी का जीवन भगवान महावीर के आदर्शों का रहा, उनका जीवन, जैन धर्म की मूल भावना का सबसे बड़ा उदाहरण रहा। उन्होंने जीवन भर अपने काम और अपनी दीक्षा से इन सिद्धान्तों का संरक्षण किया। हर व्यक्ति के लिए उनका प्रेम, ये बताता है कि जैन धर्म में 'जीवन' का महत्त्व क्या है। उन्होंने सत्यनिष्ठा के साथ अपनी पूरी आयु तक ये सीख दी कि विचारों, शब्दों और कर्मों की पवित्रता कितनी बड़ी होती है। उन्होंने हमेशा जीवन के सरल होने पर जोर दिया। आचार्य जी जैसे व्यक्तित्वों के कारण ही आज पूरी दुनिया को जैन धर्म और भगवान् महावीर के जीवन से जुड़ने की प्रेरणा मिलती है।

शिक्षा न्यायपूर्ण समाज का आधार–

वे जैन समुदाय के साथ ही अन्य विभिन्न समुदायों के भी बड़े प्रेरणास्रोत रहे । विभिन्न पंथों, परम्पराओं और क्षेत्रों के लोगों को उनका सान्निध्य मिला, विशेष रूप से युवाओं में आध्यात्मिक जागृति के लिए उन्होंने अथक प्रयास किया। शिक्षा का क्षेत्र उनके हृदय के बहुत करीब रहा है। बचपन में सामान्य विद्याधर से लेकर आचार्य विद्यासागरजी बनने तक की उनकी यात्रा ज्ञान प्राप्ति और उस ज्ञान से पूरे समाज को प्रकाशित करने की उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दिखाती है। उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा ही एक न्यायपूर्ण और प्रबुद्ध समाज का आधार है। उन्होंने लोगों को सशक्त बनाने और जीवन के लक्ष्यों को पाने के लिए ज्ञान को सर्वोपरि बताया। सच्चे ज्ञान के मार्ग के रूप में स्वाध्याय और आत्म-जागरूकता के महत्त्व पर उनका विशेष जोर था। इसके साथ ही उन्होंने अपने अनुयायियों से निरंतर सीखने और आध्यात्मिक विकास के लिए निरंतर प्रयास करने का भी आग्रह किया था।

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज की इच्छा थी कि हमारे युवाओं को ऐसी शिक्षा मिले, जो हमारे सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित हो। वह अक्सर कहा करते थे कि चूँकि हम अपने अतीत के ज्ञान से दूर हो गए हैं इसलिए वर्तमान में हम अनेक बड़ी चुनौतियों से जूझ रहे हैं। अतीत के ज्ञान में वे आज की अनेक चुनौतियों का समाधान देखते थे। जैसे जल संकट को लेकर वे भारत के प्राचीन ज्ञान से अनेक समाधान सुझाते थे। उनका यह भी विश्वास था कि शिक्षा वही है, जो स्किल डिवेलपमेंट और इनोवेशन पर अपना ध्यान केंद्रित करें।

आचार्यजी ने कैदियों की भलाई के लिए भी विभिन्न जेलों में काफी कार्य किया था। कितने ही कैदियों ने आचार्यजी के सहयोग से हथकरघा का प्रशिक्षण लिया। कैदियों में उनका इतना सम्मान था कि कई कैदी रिहाई के बाद अपने परिवार से भी पहले आचार्य विद्यासागर जी से मिलने जाते थे। संत शिरोमणि आचार्यजी को भारत देश की भाषाई विविधिता पर बहुत गर्व था इसलिए वह हमेशा युवाओं को स्थानीय भाषाएँ सीखने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने स्वयं भी संस्कृत, प्राकृत और हिन्दी में कई सारी रचनाएँ की हैं। एक संत के रूप में वे शिखर तक पहुँचने के बाद भी जिस प्रकार जमीन से जुड़े रहे, ये उनकी महान् रचना 'मूकमाटी' में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। इतना ही नहीं, वे अपने कार्यों से वंचितों की आवाज भी बने।

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज के योगदान से स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में भी बड़े परिवर्तन हुए हैं। उन्होंने उन क्षेत्रों में विशेष प्रयास किया, जहाँ उन्हें ज्यादा कमी दिखाई पड़ी। स्वास्थ्य को लेकर उनका दृष्टिकोण बहुत व्यापक था उन्होंने शारीरिक स्वास्थ्य को आध्यात्मिक चेतना के साथ जोड़ने पर बल दिया, ताकि लोग शारीरिक और मानसिक, दोनों स्तरों पर स्वस्थ रह सकें। मैं विशेष रूप से आने वाली पीढ़ियों से यह आग्रह करूँगा कि वे राष्ट्र निर्माण के प्रति संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की प्रतिबद्धता के बारे में व्यापक अध्ययन करें। वे हमेशा लोगों से किसी भी पक्षपातपूर्ण विचार से ऊपर उठकर राष्ट्रीय हित पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया करते थे। वे मतदान के प्रबल समर्थकों में थे और मानते थे कि यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति है। उन्होंने हमेशा स्वस्थ और स्वच्छ राजनीति की पैरवी की। उनका कहना था–'लोकनीति लोभसंग्रह नहीं, बल्कि लोकसंग्रह है।' इसलिए नीतियों का निर्माण निजी स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि लोगों के कल्याण के लिए होना चाहिए।

आचार्य जी का गहरा विश्वास था कि एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण उसके नागरिकों के कर्तव्य भाव के साथ ही अपने परिवार, अपने समाज और देश के प्रति गहरी प्रतिबद्धता की नींव पर होता है। उन्होंने लोगों को सदैव ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और आत्मनिर्भरता जैसे गुणों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। ये गुण एक न्यायपूर्ण, करुणामय और समृद्ध समाज के लिए आवश्यक हैं। आज जब हम विकसित भारत के निर्माण की दिशा में लगातार काम कर रहे हैं, कर्तव्यों की भावना और ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

प्रकृति के अनुकूल हो जीवनशैली–

ऐसे कालखंड में जब दुनियाभर में पर्यावरण पर कई तरह के संकट मंडरा रहे हैं, तब संत शिरोमणि आचार्य जी का मार्गदर्शन हमारे बहुत काम आने वाला है। उन्होंने एक ऐसी जीवनशैली अपनाने का आह्वान किया, जो प्रकृति को होने वाले नुकसान को कम करने में सहायक हो। यही तो 'मिशन लाइफ' है जिसका आह्वान आज भारत ने वैश्विक मंच पर किया है। इसी तरह उन्होंने हमारी अर्थव्यवस्था में कृषि को सर्वोच्च महत्त्व दिया। उन्होंने कृषि में आधुनिक टेक्नोलॉजी अपनाने पर भी बल दिया। मुझे विश्वास है कि वे नमो ड्रोन दीदी अभियान की सफलता से बहुत खुश होते।

संत शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज जी, देशवासियों के हृदय और मन-मस्तिष्क में सदैव जीवंत रहेंगे। आचार्य जी के संदेश उन्हें सदैव प्रेरित और आलोकित करते रहेंगे। उनकी अविस्मरणीय स्मृति का सम्मान करते हुए हम उनके मूल्यों को मूर्त रूप देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह ना सिर्फ उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि होगी, बल्कि उनके बताए रास्ते पर चलकर राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

प्रकाशक
जैन विद्यापीठ
सागर (म० प्र०)

ISBN 978-81-963334-4-7